मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली



डा. ललिताझा

मैथिली-भाषी समाज ओ मैथिलीभाषाक एकटा सबसँ महत्वपूर्ण पक्ष भोजन सम्बन्धी लोकभाषिक ओ पारिभाषिक प्रकृतिक अजस्र शब्द-राशिक संचय, परिचय, अर्थनिर्वचन इत्यादिपर केन्द्रित प्रस्तुत ग्रन्थमे मैथिली भाषाक कोषकार, वैयाकरण एवं भाषातत्वज्ञ लोकनिकेँ पुष्कल परिमाणमे सामग्री भेटबे करतनि, अपितु मिथिलाक अतीत ओ वर्तमान कालक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवनक समाजशास्त्रीय अध्यय-विश्लेषणक हेतु समाज-शास्त्री लोकनिकेँ सेहो मूल्यवान् अभिनव उपादान सब भेटतनि। सारांशत: कहल जा सकैत अछि जे मिथिलाक अन्त:पुरीण असूर्यम्पश्य जीवनकेँ लगसँ देखबाक हेतु ई ग्रन्थ एकटा महत्वूर्ण दर्पण सिद्ध होयत। वास्तवमे ई ग्रन्थ मैथिली-साहित्य-मन्दिरमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दक महत्वपूर्ण उपाति सदृश अछि। लोकजीवन धरि जाय भौमिक अनुसन्धान कऽ मैथिली भाषा-साहित्यक ज्ञानकोषक समृद्धिमे महत्त्वपूर्ण योगदानक रूपमे **मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली** सदृश विशिष्ट ओ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक प्रणयन-प्रस्तुति हेतु एकर लेखिका डा. ललिताझा अशेष साधुवादक समुचित उत्तराधिकारिणी छथि।

मैथिली सेवी श्री गजेन्द्र ठाकुर जी कें
शुभाशिषक संग।
ललिता झा
20/6/2011

MAITHILIKA BHOJAN SAMBANDHI SHABDAVALI
By Dr. Lalita Jha

सर्वाधिकार : लेखिका

प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो.- 09430639249

पुस्तक प्राप्ति स्थान : श्रीशिवकान्त झा (अधिवक्ता)
मो.- बलभद्रपुर (बेंता रोड)
लहेरियासराय, दरभंगा- 846001
दूरभाष- 06272-244765, 09708254805

आवरण : अठारहम शताब्दीमे पूर्णिया हवेलीमे निर्मित माइका पेंटिंगक एकगोट चित्रक अनुकृति, अनुकृतिकार- शचीन्द्रनाथझा

प्रथम संस्करण : 2011

मूल्य : सात सय टाका (700/-)

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

उपाति : लोकभाषिक श्ब्दावलीक

मनुष्यक तीन गोट मूलभुत आवश्यकता होइत छैक- भोजन, वस्त्र, एवं आवास। एहिमे सबसँ पहिल एवं अनिवार्यतम आवश्यकता थिक भोजन । से मनुष्येक नहि अपितु प्राणीमात्रक जीवनक आधार होइत छैक भोजन । भोजनक बिना जीवनक समस्त क्रिया-कलाप समाप्त भऽ जाइत छैक । पैघसँ पैघ ओ लघुसँ लघुतम जीवक जीवनचर्या भोजनाश्रिते रहैत अछि ।

मिथिलाक एकटा विशिष्ट पाबनि मधुश्रावणीमे पूजा-पाठक क्रममे अनेक कथा सब कहल जाइत छैक । ओहि क्रममे एक गोट कथामे महादेव द्वारा जीव मात्रकेँ आहर बटबाक काजक वर्णन कयल गेल अछि ।

महादेव नित्तह दिन भोरे-भोर उठि कऽ कतहु चल जाइत छलाह । अबैत-अबैत बहुत अबेर भऽ जाइत छलनि । पूजा-पाठमे तेँ बेसी अबेर भऽ जाइत छलनि । पार्वती महादेवक नित दिनक एहि चरजापर मोने-मोन खौंझाइत रहैत छलीह । महादेव जखन आबथि तँ पार्वती बेर-बेर पुछथिन-अँय अओ महादेव ! अहाँ सब दिन भोरे उठि कऽ कतऽ चल जाइ छी ? कोन काजमे बाझि जाइ छी जे एते अपरहान भऽ जाइए।

महादेव चुपचाप सुनि लेल करथि। कोनो उतारा नहि देथिन । पार्वतीकेँ एहि पर तामस लहरि जाइनि, तैयो ओ मोन ममोड़ि कऽ चुप रहि जाथि ।

पार्वतीक सब दिन बेर-बेर पुछारिसँ अकछा कऽ एक दिन ओ कहलथिन जे- सब दिन आहर बँटैलय जाइ छी । आहर बँटैत-बटैत अबेर भऽ जाइए ।

पार्वती पुछलथिन जे ककरा-ककरा आहर बँटै छी जे एते अबेर भऽ जाइए ?

महादेव कहलथिन जे- सकल जीबा-जन्तु, चिड़ै-चुनमुन्नी, फर-फतिंगा, चुट्टी-पिपरी, कीड़ी-मकोड़ीकेँ आहर बँटै छिऐ ।

महादेवक बातपर पार्वतीकेँ विश्वास नहि भेलनि । ओ महादेवक बातकेँ परेखबाक विचार कयलनि ।

एक दिन पार्वती साँझिमे एकटा फतिंगा फकड़ि लेलनि । ओकरा एकटा कियौड़ी मे बन्द कऽ कोठीक खोधलीमे नुका कऽ राखि देलनि आ ओकरा पुरान – धुरान कपड़ा-लत्तासँ झाँपि-तोपि देलथिन ।

दोसर दिन, नित्तहु दिन जकाँ महादेव आहर बाँटि कऽ आँगन अयलाह । पार्वती महादेवकेँ पुछलथिन-अँय अओ महादेव ! आहर बाँटल भऽ गेल ? ककरा-ककरा आहर देलिऐ ?

महादेव कहलथिन-मनुखसँ लऽ कऽ जीव-जन्तु, चिड़ै-चुनमुन्नी, फर-फतिंगा, चुट्टी-पिपरी, कीड़ी-मकोड़ी सबके जथाजोग आहर बाँटि देलिऐ ।

पार्वती पुछलथिन केओ छुटबो कयल ?

महादेव कहलथिन- केओ अबंच नहि रहल । सबके आहर भेटि गेलै ।

पार्वती हँसैत कहलथिन – हे अओ महादेव ! एकटा फतिंगा तँ छुटिए गेल जकरा हम काल्हिसँ कियौड़ीमे बन्द कऽ नुका कऽ रखने छी ।

महादेवो बिहुँसैत कहलथिन – हे अय पार्वती ! ककरो आहर नहि छुटलैए । अहाँ देखियौ तँ जा कऽ । सब भरमाना छुटि जायत ।

पार्वती अनबिसबासू होइत जा कऽ कियौड़ी लऽ अनलनि । महादेवक सोझाँमे ओकरा खोललनि तँ देखैत छथि, ओहिमे बन्द फतिंगाक मुहमे दूभिक एकटा हरियर टुड़नी सटल । ओ देखि पार्वती छकित भऽ गेली । ओ महादेवकेँ कहलथिन धन्न छी अहाँ हे महादेव जे कियौड़ीमे बन्द फतिंगोक मुहमे आहर दऽ देलिऐ !

एहि मैथिली लोककथाक तात्पर्य ई अछि जे प्रत्येक प्राणीक जीवित रहबाक आधार आहार अर्थात् भोजन थिकैक जकर उपलब्धि – सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा कयल गेल अछि, से कही अथवा प्रकृति द्वारा कयल गेल अछि । प्रकृति प्रदत्त साधनकेँ विभिन्न प्राणी अपना-अपना रीतिएँ बुभुक्षातृप्ति हेतु उपयोगी बना लैत अछि ।

मानव जीवनक चिरन्तन सत्य थिकैक भूख ओ भोजन । एहि हेतु लोककेँ नाना प्रकारक कर्म-अपकर्म, सुकर्म-कुकर्म करऽ पड़ैत छैक । भारतीय चिन्तक लोकनि एहि तथ्यकेँ विभिन्न रूपमे अभिव्यक्ति दैत रहलाह अछि । कवीश्वर चन्दाझा बेर-बेर कहैत छथि-

'उदर भरन कारन भुमि घुमलहुँ
नीच ऊँच घर जतय ततय ।'
'उदर भरन कारन जन हिंसा
केओ हाकिम केओ दासा ।'
'दुख धन्धा मध सभ जन आकुल
केओ नहि रहित कलेश ।

जठरानल कारण जन हलचल
देखल नाना वेस'

एकटा गीतमे उदरभरणजन्य विवशताक वर्णन करैत कहैत छथि -

उदरभरण दुखभारी हे शिव विकल सकल संसारी ॥
करथि महीपति परजा रक्षा कोटि कोटि जिव मारी ।
स्वामी दास त्राससँ होइछ जठरानल दुखकारी ॥
कुकुरभाव जूठदाता गृह राति दिवस रखबारी ।
अपन प्रयोजन जन संयोजन के कर ककर पुछारी ॥
धन विनु रहथि गृहस्थ व्यस्त मन विरल पुरुष उपकारी ।
विश्वभरण कर विश्वम्भर हर चन्दचूड़ दुख टारी ॥

कबीरदास सन निर्गुण ब्रह्मक उपासक सन्त सेहो ईश्वरसँ न्यूनतम याचनामे भोजनेकेँ स्थान देने छथि; से ततबा, जतबामे अपने सकुटुम्ब तथा अतिथि रूपमे आयल साधु लोकनि भूखल नहि रहथि -

साँई इतना दीजिए जामे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा जाय ॥

मनुष्य जखने जन्म लैत अछि , तखने ओकरा सबसँ पहिल अनुभूति भूखहिक होइत छैक । कोनो नवजात शिशु जन्म लेलाक तुरन्त पश्चात् चिचिआय लगैत अछि । तखन ओकरा मायक दूध, बकरीक दूध अथवा चिकित्सकक निर्देशानुसार आने कोनो उचित पेय देल जाइत छैक । शिशु चिचिया कऽ वर्णहीन ध्वनि-भाषामे अपन आहारक आवश्यकताक अभिव्यक्ति करैत अछि । कहल जाइत छैक जे विनु कनने बच्चाकेँ मायो दूध नहि पियबैत छैक ।

भाषाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे भाषावैज्ञानिक लोकनि अनेक प्रकारक सिद्धान्त प्रतिपादित करैत रहलाह अछि । ओ सिद्धान्त सब कते दूर धरि संगत वा मान्य भऽ सकैछ, ताहि मीमांसासँ हटि एकटा नूतन धारणा स्थापित कयल जा सकैत अछि जे मनुष्यक कण्ठसँ जहिया वर्णात्मक शब्दमयी वाणीक स्फुरण भेल होयतैक अर्थात् चिचिआयबाक ध्वनि क्रमश: वर्णात्मक, शब्दात्मक एवं वाक्यात्मक रुप धारण कयने होयतैक, तँ निश्चये ओहिमे भूखक अनुभूति एवं ओकर शमनार्थ उपादानक भाव अवश्ये निहित रहल होयतैक । भाषाक पहिल प्रयोजन निश्चये भूख-भोजनक अन्तश्चेतनाक अभिव्यक्ति रहल होयतैक आ क्रमश: भूख ओ भोजन सम्बन्धी शब्दावली आवश्यकतानुसार गढ़ाइत चल गेल होयत ।

भोजनक प्रकार-वैविध्य ओ तदर्थ उद्भूत शब्दावली निर्भर करैत अछि कोनो

क्षेत्रक भौगोलिक संरचना, जलवायु, पर्यावरण, भोज्य-साधनक उपलब्धता, तत्क्षेत्रीय निवासीक संस्कृति, प्रकृति एवं रुचि पर ।

मिथिलाप्रदेश विविधतापूर्ण वानस्पत्य सम्पदा, अजस्र जलीय भंडार, भाँति-भाँतिक प्रभूत अन्नोत्पादन-क्षमता उर्वरा शस्यश्यामला धरतीसँ सम्पन्न अछि । कवीश्वर चन्द्रकृत मिथिला भाषा रामायणमे मिथिलाक प्रसंग कहल गेल उक्ति सर्वथा स्वाभाविके अछि-

की दिव्य फूल फल वृक्ष अनन्त धान ।
पक्षी विलक्षण करै अछि रम्य गान ॥
नदी मातृक क्षेत्र सुन्दर शस्यसँ सम्पन्न ।
समय सिर पर होय वर्षा बहुत सञ्चित अन्न ॥

मिथिलाक एहि प्राकृतिक सम्पदा-स्रोतसँ एहि ठामक आवासीकेँ विपुल परिमाणमे विविध प्रकारक भोज्याधार सामग्री उपलब्ध होइत रहलनि जाहिसँ निष्पन्न कतिपय खाद्य-सामग्री वा तत्सम्बद्ध वस्तु जेना मिथिलाक वैशिष्ट्यक रूपमे परिगणनीय भऽ गेल अछि । उनैसम शताब्दीक मध्यमे कवि-नाटककार भानुनाथझा प्रसिद्ध भानाझा **मिथिलाक लक्षण वैचित्र्य** शीर्षक एकटा प्रसिद्ध कवितामे मिथिलाक चिह्न-विशेष ओ अनूप वस्तुमे पटुआ साग, अमओट, फोका मखान, खिरसाक लड्डुबी-पकवान, दही, सब दुखक औषधिरूपमे फलहार, टटका खीर ओ पूड़ी इत्यादि हेतु प्रशस्त पाबनि चौठीचान तथा केराक थम्हक भोजन-पात्रक परिगणन कयने छलाह, जे सब औखन प्रशस्त मानल जाइत अछि-

तिरहुति-

सुनु सुनु देशक चिह्न विशेष ।
जे सुनि रहत 'ने पापक लेश' ॥ (पाप-कलेश सेहो कहा)
कोकटी धोती पटुआ साग ।
तिरहुति गीत बड़े अनुराग ॥
सुन्दर अमओट फोका मखान ।
खिरसा केर लड्डुबी पकवान ॥
जड़ी इसरगद करमे बान्ह ।
अपना अपनी कुल अभिमान ॥
देवी उपासना सभ केओ जान ।
पाबनि सराहथि चौठी चान ॥
थोड़हि खरच तृण भवन विराज ।
जे करु नृप मन्दिर सम काज ॥

कदली-थम्मक भोजन-पात ।
क्रिया-कर्ममे उज्ज्वल हाथ ॥
दहीक सौखी सकलो देश ।
धरम-करम रत रहथि नरेश ॥
गप्पक रसिया करय न कार ।
सभ दु:खक औषध फलहार ॥
जनीक सीकति घर-घर होय ।
लाज विभूषण भूषित जोय ॥
भाव भरल वर तरुणी रूप ।
एतबै मिथिला होइछ अनूप ॥
भानुनाथ वरनथि निज देश ।
कविगुन बुझथु सकल मिथिलेश ॥

की अमीर, की गरीब, की मध्यवर्गीय लोक-सकल मिथिलावासी खयबा-पीबामे जीहक बड़ पातर । भोजनक बड़ विन्यासी । मिथिलाक प्राकृतिक स्रोतसँ अथवा धरतीक उत्पादकताक स्रोतसँ, सहज रूपमे अथवा सप्रयत्न उपलब्ध भेनिहार भोजनक आधार सामग्री अन्न, फल-फूल, कन्द-मूल, साग-पातकेँ सहजहि, एतै धरि जे खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी , जंगल-झाड़मे अनायास उत्पन्न अनेकआ घास-पात, लत्ती-फत्ती- अमरोड़ा, अरिकोँच/अरिकोँछ / अरिकंचन, कन्ना, करमी, कौँओ, गदहपुरैनि/गजपुरैन/ गजपुरना, गजनोना, चिड़ैयाँ, चिरचीरी, झुरखुना झुम्मरि, तिलकोड़ा/तिलकोर/तिलकोरा, दुधिया, नोनी, पन्नापोठी, पलाँकी, पोड़ो/पोरो, फुटिया, बथुआ, भुटका/भुटकुइयाँ, सरहच्ची, हुरहुर इत्यादि पर्यन्तकेँ विभिन्न प्रक्रिया द्वारा रुचिकर, सोअदगर, चहटगर, झँसिगर व्यंजनक रूप दऽ कऽ उपभोग करबाक प्रवृत्ति मैथिल मात्रमे सदासँ विद्यमान रहल अछि । तेँ मड़ुआ सन कदन्नक उपभोग रोटिएक रूपमे नहि होइछ, अपितु ओकर चिक्कसकेँ गुड़ दऽ कऽ लपसीक रूपमे रान्हि सेहन्तगर खाद्य समग्री सेहो बना देल जाइछ । अत: स्वभावत: मिथिलभूमिक मातृभाषा मैथिलीमे भोजन सम्बन्धी शब्दक कोष सेहो समृद्ध होइत रहल अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अपना सीम छैक । खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी, बाड़ी-झाड़ी, दोकान-दौड़ी, हाट-बजार, कोहरिन-कुजड़िन इत्यादिसँ भोजनक आधार-सामग्री आवासीय परिसरमे उपभोगार्थ जखन पहुँचैत छैक, ताहि काल ओ ताहि ठामसँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक आयामक आरम्भ होइत छैक । से विभिन्न क्रिया - प्रक्रिया द्वारा तैयार विविध भोज्य सामग्री लोक द्वारा खयलाक बाद ऐंठारपर जाय हाथ अँचयबा धरि

जा कऽ सम्पन्न होइछ । एहि मध्य भोजनक आधार सामग्री, सहायक उपकरणादि, विभिन्न कार्य-व्यवहार निमित अजस्र भोज्य पदार्थक प्रकार, ओकर स्वाद, गन्ध एवं भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक सकल संज्ञापद एवं क्रियापद, सभक गुण-दोष इत्यादिक अर्थ-व्यंजक शब्द सभ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक सीमामे अबैत अछि ।

परिवर्तनशीलता भाषाक शाश्वत नियम थिकैक । मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे सेहो ई नियम घटित होइत रहलैक अछि । भोजनक आधार सामग्रीक उपलब्धता, अनुपलब्धता, बहुलब्धता, ऐतिहासिक घटनाचक्र, सांस्कृतिक परिवर्तन, विजातीय सम्पर्क, परभाषिक संक्रमण, रुचिपरिवर्तन इत्यादिक कारणे भोजन सम्बन्धी बहुतो शब्द अतीतक विस्मृति-गर्त्तमे विलीन भऽ गेल । बहुतोक प्राचीन रूप ओ अर्थमे परिवर्तन भऽ गेल । वर्णरत्नाकर इत्यादि प्रचीन साहित्यमे, विभिन्न प्रकरणमे उल्लिखित भोजन सम्बन्धी शब्द सबमे बहुतो आब अर्थहीन वा अनचिन्हार भऽ गेल । दोसर दिस भोजनसँ सम्बद्ध बहुतो नवीन शब्द सभक प्रचलन भऽ गेल ।

मध्यकाल वा आधुनिक कालक मैथिली साहित्यमे भोजन सम्बन्धी ओहने शब्द सभक प्रयोग साधारणतः देखल जाइत अछि जे सामान्य प्रकृतिक अछि । सामान्य भोजन सामग्रीक अतिरिक्त मिष्टान्न, पकवान, भोज-भात, वर-बरियात, पाहुन-परक इत्यादिक विशिष्ट भोजन-विन्यासक वर्णनमे विशेष प्रकारक भोज्य सामग्रीक नामावलीक समावेश एवं आचारादि विषयक शब्दक प्रयोग देखल जाइत अछि । किन्तु ओकरा सभक पूर्वमे प्रयुक्त उपादान, संयोजन, पाक विषयक विभिन्न कार्य-व्यापार सभक वर्णन प्रायः नहिएँ अथवा क्वचिते देखल जाइत अछि । मिथिला वासीक प्रिय एवं प्रसिद्ध भोजन- दही आ चूड़ा । लोक दही-चूड़ा सरपेटैत अछि वा चूड़ा-दही सानि कऽ खाइत अछि । साहित्योमे एकर बड़ चर्चा भेटत । परन्तु चूड़ाक पाछाँ कतेक साधन-उपकरण-क्रिया इत्यादि, यथा- **धान तारब, भाड़ब, भूजब, कूटब, फटकब, चूल्हि, जारनि, आँच, खापड़ि, लाइनि, उक्खरि, उक्खरिक कोथ, समाठ, समाठक नड़ौ, ठकुरा, लट्टा** अथवा दूधसँ दही बनयबाक दीर्घ प्रक्रिया- एहि सभक उल्लेख कहाँ भऽ पबैत अछि । एहन शब्द सभ लोकमुखे धरि सीमित रहैत अछि ।

मिज्झर अन्नकेँ परस्पर फराक करबाक हेतु अथवा अन्नमे मिश्रित गर्दा इत्यादि अपपदार्थकेँ फराक करबाक हेतु एकटा समतल वृत्ताकार वंशोपकरण **सूप** /डगराक प्रयोग होइछ । सूपक द्वारा अपपदार्थकेँ फराक कऽ अन्न परिशुद्ध करबाक क्रियाकेँ साधारणतः **फटकब** कहल जाइछ । किन्तु फटकब तँ एकेटा क्रिया मात्र थिक । वस्तुतः सूपकेँ दुनू हाथसँ पकड़ि बामा-दहिना, आगाँ-पाछाँ, ऊपर-नीचाँ, तिर्यक-वृत्ताकार गति दैत संचालित कयल जाइछ । सभ गतिक भिन्न-भिन्न क्रियार्थक नाम अछि **हिलोरब, ओलब, डोकब, डगरब/डगरायब/ढगारब/ढघरब/ढधारब, निछड़ब, पैंचब, फटकब,**

झटकब इत्यादि । एहि क्रियाक परिणामो भिन्न-भिन्न प्रकारक होइछ । परन्तु एहन-एहन शब्द सब साहित्यमे क्वचिते भेटि जाय से सम्भव अछि।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन-एहन कतोक सय पारिभाषिक प्रकृतिक शब्द अछि जे दैनन्दिन जीवनमे लोकमुखहि द्वारा प्रयुक्त भऽ लोकभाषिक शब्दावलीक रूपमात्रमे रहि जाइत अछि । शब्दकोषहुमे एहन कतोक लोकभाषिक शब्दावली स्थान पयबासँ वंचित रहि जाइत अछि । कोषमे यदि स्थान पबितो अछि तँ वैकल्पिक रूप सबकेँ अवडेरि देल जाइछ । कतोक अनेकार्थी शब्दमे भोजन-सम्बन्धी अर्थकेँ छोड़ि देल जाइछ । अनेक भोजन सम्बन्धी शब्दक अर्थ अशुद्ध दऽ देल जाइत अछि ।

मैथिलीमे नवीनतम प्रकाशित शब्दकोष अछि प.गोविन्दझा द्वारा सम्पादित **कल्याणी कोश** (1999) जकरा ए **मैथिली इंगलिश डिक्शनरी** सेहो कहल गेल अछि, कारण एहिमे अंगरेजीमे सेहो अर्थ देल गेल अछि । मैथिली भाषाक अद्यापि प्रकाशित सकल शब्दकोषमे ई सबसँ प्रतिष्ठित एवं मानक मानल जाइत अछि । **मैथिलीकोष** सबमे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक स्थितिक सम्बन्धमे ऊपर जे धारणा व्यक्त कयल गेल अछि तकर सम्पुष्टिमे **कल्याणी कोशक** किछु उदाहरण प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि ।

कल्याणी कोश (क.को.)मे **कचुरी** शब्दक एकटा अर्थ- एक माछ कहल गेल अछि तथा दोसर अर्थ लय **कचौड़ी** देखबाक निर्देश अछि । **कचौड़ीक** अर्थ कहल गेल अछि- **नोन आ फूटि दए बनाओल पूरी, बेसनमे काँच तरकारी सानि बनाओल बड़ी ।** परन्तु दुनू अर्थ असंगत । कचौड़ी वास्तवमे मेन दऽ कऽ **सानल चिक्कसकेँ** घी अथवा बनस्पति तेलमे छानल अत्यन्त छोटे-छोटे फूलल-फूलल सोहारीकेँ कहल जाइत छैक । **कचरी/कचुरी** सामान्यतः बेसनमे **पियाज/पियाजु/पेयाज/पियाजु**, काँच मिरचाइ ओ नोन मिला कऽ तेलमे छानि कऽ बनाओल जाइछ जकरा **पियजुआ/पेयजुआ** सेहो कहल जाइछ । **खलपटक** अर्थ होइत अछि भोजनाभावमे भूखसँ धसल सटकल पेट जे प्रायः **खाली पेटसँ** बनल बूझि पड़ैछ । परन्तु **क.को.**मे एकर अर्थ **खल्वाट** कहल गेल अछि । **खल्वाटक** अर्थ होइछ केश उड़ल चानि अथवा एहन माथवला जकरा चनैल कहल जाइछ ।

मैथिलीक एकटा खूब प्रचलित शब्द अछि-- बारिक । क.को.मे एकर अर्थ देल गेल अछि- **मुखिया, घरक मुखिया, भोजमे परसबाक व्यवस्था कयनिहार ।'** स्वतन्त्र रूपमे **मुखिया** वा **घरक मुखिया** अर्थमे एकर प्रयोग सुनल नहि जाइछ । अवश्य एकटा सामासिक शब्दक उत्तर पदक रूपमे **'बारिक'** प्रयुक्त होइछ से थिक **घरबारिक** । बाहरी व्यक्तिक दृष्टिमे परिवारक कोनो पुरुष सदस्य **घरबारिक** होइत छैक । दोसरो अर्थ भ्रमाह अछि । भोज कयनिहार **भोजी** कहल जाइछ । वास्तवमे भोज-भातमे विभिन्न भोज्य सामग्री पाँतिमे घूमि-घूमि कऽ परसनिहारकेँ **बारिक** कहल जाइछ । **सजवी** शब्दक अर्थ कोषमे देल अछि- **विशेष विन्याससँ पौरल शुद्ध दूधक ठोस (दही)** । दही पौरबामे

कोनो खास विन्यासक आवश्यकता नहि होइत छैक । ओहिमे जोरनक मात्रा ओ दूधक ऊष्णताक ताक देखल जाइछ जे कोनो अनुभवी महिला ई बात बुझैत छैक, से शुद्ध होइक वा दुद्धीक । **महुआ दही** वा **कलहा दहीसँ** भिन्नता सूचित करबाक हेतु शुद्ध दूधक दहीकेँ **सजबी** दही कहल जाइछ ।

अन्नकीट अर्थात् अन्नमे लगनिहार कीड़ा सभक सम्बन्धमे क.को. केहन धारणा रखैत अछि सेहो देखल जा सकैछ । एकटा कीड़ा होइत छैक **घुन** जे काठमे लगैत छैक । अत: क.को. ठीके कहने अछि– **काठमे लगनिहार एकटा छोट कीड़ा** । अन्नमे लगनिहार कीड़ाक रूपमे **सूड़ा/सूँड़ा** प्रसिद्ध अछि । क.को. कहैत अछि– **चाउरमे लगनिहार एकटा कीड़ा** । एकटा और अन्नकीट **फाँड़ाक** अर्थ क.को. कहल गेल अछि– **काठ आ अन्नमे लगनिहार एक कीड़ा, सूँड़ा, घुन** । घुन आ सूँड़ाक अर्थ अपना–अपना स्थानपर ठीके अछि । परन्तु **फँड़ाकेँ** 'काठ ओ अन्न–दुनूमे लगनिहार कीड़ा' तथा ओकर पर्याय सूँड़ा एवं घुन कहि कऽ अर्थकेँ और अस्पष्ट एवं भ्रान्तिजनक कऽ देल गेल अछि तेँ **फाँड़ा** तँ अपने अर्थहीन भऽ गेल । अन्नकीट अनेक प्रकारक होइछ । एकटा होइछ **धिकनी** जकर उल्लेख क.को. मे नहि अछि । ई लगभग अढ़ाइ–तीन मीलीमीटर नाम, कत्थीलाल रंगक गोलौन मुहवला कीट थिक जे चाउरमे फड़ैत छैक । ई चाउरकेँ क्षति नहि कऽ ओकरा चिक्कन बना दैत अछि । तेँ एकरा भगमन्ता सूड़ा कहल जाइछ । दोसर कीड़ा होइछ **सूड़ा/सूँड़ा** जे कारी रंगक लगभक चारि मिलीमीटर नाम ओ सूँढ़ युक्त हाइछ । ई चाउर, गहूम, मकैमे लगैत अछि । अन्नक भितरका भागकेँ खाय **फोकिला** बना दैत अछि । एकटा तेसर कीड़ा होइछ **भेड़बा** । कोषमे एकरहु नाम नहि अछि । ई गोल रंगक तीन–साढ़ेतीन मीलीमीटर व्यासक गोल आकारक एवं पाँखि युक्त कीड़ा होइछ जे दलिहनमे लगैत अछि । ई अन्नमे भूर कऽ ओकरा भीतरमे जा कऽ भितरका अंशकेँ खा जाइत अछि । **फाँड़ा** एक सेंटीमीटर नाम, पाँखियुक्त उज्जर रंगक फतिंगा कोटिक कीड़ा होइत अछि जे धानमे लागि जाइत अछि । ओ धानक भुस्सा–आवरणकेँ फाड़ि कऽ भितरका चाउरकेँ खा जाइछ, तेँ एकर नाम फाँड़ा पड़ि गेलैक । पुरान चाउरमे जल्ला लगैत छैक । ओही संग उज्जर वर्णक लगभग एक सेंटीमीटर नाम पिलुआ फड़ि जाइत छैक जकरा **पेटाढ़ी** कहल जाइछ । क.को. मे ई शब्द तँ अछि किन्तु अन्नकीट वला अर्थ नहि अछि । ओहि ठाम **पेटाढ़ीक** अर्थ कहल गेल अछि– **कटहरक पेटमे भरल फीता सन तन्तु** । वास्तवमे कटहरक **को/कोआक** पेटमे आँठीक संग सटल गुद्दासन बेदरंग अंशकेँ **पेटाढ़ी** कहल जाइत छैक जे पेटक लेल हानिकारक होइछ तेँ खयबा काल आँठीक संग ओकरो निकालि देल जाइछ । कन्तु कोआ सब जाहि फीता सन तन्तु सबसँ आवृत रहैछ तकरा **कमरी** कहल जाइछ । क.को. **कमरीक** अर्थ करैत अछि– **कटहर फलक खोईंचा** जे असंगत । कमरी कटहरक भीतरमे कोआकेँ आवृत कयने रहैत अछि । **कमरी** दू प्रकारक होइछ । एकटा तँ कोआसँ एकाकार भेल सटल । एहूमे मिठास रहैछ

तेँ कखनो काल लोक इहो खा गेल करैछ । ओकरा बादक जे सघन तन्तु–समूह रूपमे कमरी होइछ से अनुपयोगी होइछ । कटहर आ कमरीपर एकटा लोकोक्तियो अछि–

आदरे कनियाँ कटहर नहि खाथि,
कमरी चाटऽ पछुआइ जाथि ।

मैथिलीमे ध्वन्यनुकरण मूलक अथवा कही, ध्वन्यनुकरणात्मक शब्दक बाहुल्य अछि जे साधारणत: क्रिया–विशेषणक काज करैत अछि, तथापि अनेक ठाम विशेषण, भाववाचक संज्ञा एवं नामधातुक रूपमे सेहो अर्थवान् बनि जाइत अछि । कतोक एहन शब्द क्रियाविशेषणे रूपमे रहैत अछि ।

ध्वन्यनुकरणात्मक शब्द द्विवर्णात्मक एवं त्रिवर्णात्मक होइत अछि । एहि दुनूक दुइ वर्ग अछि । पहिल वर्ग ओहन ध्वन्यनुकरणात्मक शब्दक अछि जे एकल रूपमे अर्थहीन रहैत अछि, परन्तु पुनरावृत्ति भेलापर सार्थक भऽ जाइत अछि । एहन कतोक शब्द भोज्य सामग्रीक प्रकृति, स्वाद अथवा क्रिया–वैशिष्ट्यकेँ सूचित करैत अछि । क.कोषमे एहि कोटिक **कुड़कुड़, गुलगुल, सुड़सुड़, मुड़मुड़, घबड़-घबड़** सन शब्द तँ स्थान पौने अछि परन्तु **हड़हड़** (तीत/नीम/पानि/नोन), **चिटचिट, चिमचिम,** (तैल–विकृति–सूचक **चिटचिटाइन, चिमचिमाइन**), **कुचुर-कुचुर, कुटुर-मुटर, गजर-गजर, घसर-घसर, घुट्टुर-घुट्टुर, घुसुर-घुसुर, भुसुर-भुसुर, भुट्टुर-भुट्टुर, मुचुर-मुचुर** आदि नहि देखल जाइछ ।

दोसर वर्ग ओहन ध्वन्यनुकरणात्मक शब्दक अछि जे क्रियाक आकस्मिकता, निरन्तरता तथा द्रुततायुक्त निरन्तरताक स्थिति सूचित करैत अछि । ई एकल एवं पुनरावृत्त, उभयरूपमे अर्थवान् रहैत अछि । एकल रूपक प्रयोगमे **'सँ'** विभक्ति अथवा 'दऽ' अव्यय लगाओल जाइत अछि । पुनरावृत्ति भेलापर **'सँ'** अथवा 'दऽ' नहि लगैत अछि । भोजन सम्बन्धी क्रिया **खायब, पीयब, गीड़ब, घोंटब, फाँकब** इत्यादि क्रियाक संग एहि वर्गक ध्वन्यनुकरणात्मक क्रिया वैशिष्ट्य सूचक गटगट/गटागट शब्द तँ अछि । परन्तु एकर मूल एकल शब्द 'गट दऽ' नहि भेटैत अछि । एकर विस्तारित त्रिवर्णात्मक रूप **गटाक** दऽ वा **गटाक-गटाक** रूप सेहो नहि देल गेल अछि । द्रव पदार्थ **पीबाक/घोंटबाक** वैशिष्ट्य सूचक शब्द **घटघट, घटाघट** तँ अछि किन्तु **घटसँ/दऽ, घटाकसँ/दऽ, घटाक-घटाक** नहि भेटैछ ।

भोजन सम्बन्धी ध्वन्यनुकरणात्मक एहने अगृहीत अन्य शब्द सब सेहो अछि, यथा– **गपदऽ/सँ, गपगप, गपागप, गपाक दऽ/सँ, गपाक-गपाक, घुटदऽ/सँ, घुटघुट, घुटुक दऽ/सँ, घुटुक-घुटुक, टप दऽ/सँ, टपटप, टपाटप, टपाक दऽ/सँ, टपाक-टपाक, टुप दऽ/सँ, टुपटुप, लप दऽ/सँ, लपलप, लपालप, लपाकदऽ/सँ, लपाक-लपाक** इत्यादि ।

भोजनसँ सम्बद्ध विशेष अर्थक व्यंजक बहुश: सामासिक शब्द सब कल्याणी कोषमे स्थान पयबासँ वंचित रहि गेल अछि, जेना- **कओर-घोंट, खपड़भुन्जा, खपड़सुक्खू, गुड़चौरी, गुड़जाउर, घिपक्क, चिकनफट, जबुट्टा** (जओ-बूटक मिश्रण), **जलजोग, जलथम्हन, तेलचटका, तेलपक** (क्क), **दलिघोटना, दलिपिट्ठी, दहिबाड़ा, दुधमूँह** (मृतक संस्कारक पश्चात्‌क एकटा कर्म), **नोनपनियाँ, पनिछक्का, पेटकटारि** (-लगायब), **पेटचालक, पेटपकौना, भतरोटिया, भरिपेटा** (-जलखै), **मँड़गिल्ला, मँड़झोर, मँड़पसौना, मरिचदाना, रोटिपक्का** इत्यादि ।

कल्याणीकोषमे भोजन सन जीवनक महत्त्वपूर्ण पक्षसँ सम्बद्ध बहुश: प्रचलित महत्त्वपूर्ण शब्द, शब्दक वैकल्पिक रूप अथवा अर्थ अगृहीत रहि गेल अछि । पूर्वमे अ सँ क वर्ण धरिक चालिस-पैंतालिस गोट भोजन सम्बन्धी शब्द प्रसंगक्रमे अन्यत्र (**द्रष्टव्य : डा. योगानन्दझाक ग्रन्थ मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावलीमे अथातो शब्दजिज्ञासा**) उद्धृत कयल गेल अछि । एहि ठाम किछु आरो शब्द सब देखल जा सकैत अछि -

ऐलाइन- काँच सरिसो-रैंची मसल्ला बेसी पड़ि गेलासँ उत्पन्न तीत स्वाद

कुन्जा- छोट माटिक पात्र

कुमकुम- चिक्कस इत्यादिक बेसी दिन रहलापर उत्पन्न विकृति

कुमकुमाइन- कुमकुम होयबाक गन्ध-स्वाद

कुमकुमायब- कुमकुम होयब

कुहकुहायब- दूधेकेँ कनेक गरम करब

कोथ- उक्खरिक पेटक बीचमे बनल छोट खोधली

खटतुरस- फलक किंचित् अम्मत स्वाद

खबौनी- बच्चाकेँ अल्प भोजन रूपमे देल गेल खाद्य-वस्तु

खलपट- भूखसँ सटकल पेट

खाउ- खाधुर

खाँटी- अपमिश्रण रहित, शुद्ध

खिन्जा- अजोह(फल, तरकारी आदि)

खिरखुऔनी- महुअक

खुदिआयब- दूध फटबाक पूर्व रूपमे खुद्दी सन अकृति बनब

खोधली- कोठी वा भीतमे बनल छोट ताखा

खोर- पैघ तौला

खौरछाइन
खौरछाह }- बेसी नोनगर

गगरी- एक प्रकारक माछ

गजपुरना- गदह पुरैनि

गद
गद्द }-पूर्वहि कयल भोजनाधिक्यक कारणे उत्पन्न अमुक्ख

गन्हकाइन- गन्हकी कीड़ी सन गन्ध, विकृतिजन्य गन्ध, सड़ाइन

गरमा- नव विकसित प्रकारक धान

गलबलायब- अपरिपक्व मकै, बूट तथा महुअकेँ मन्द आँचमे भूजब

गलिआयब- अरुचिसँ खयबाकाल अन्नकेँ मुँहमे लाड़ैत रहब

गाभ- काँच(बिनु औंटल) दूध विशेषत: वासि दूधक सतहपर जमल नेनु- (गभकच्छू- गाभ काछल)

गाली- गाय-महीसकेँ दुहबाकाल धनक दूधक धारकेँ सोझे लोकक(विशेष कऽ बच्चाक) मुँहमे देब

गिलसी- छोट गिलास

गुड़चौरी- फुलाओल अरबा चाउर एवं गूड़क मिश्रण

गुड़जाउर- गूड़मे रान्हल खीर

गुड़ही- गूड़ मिला कऽ बनल (पकमान आदि)

गुड़ोँत- दुरगमनियाँ कनियाँकेँ गूड़ खुअयबाक विधि

गुढ़मा- एक प्रकारक लता-फल

गुब्दी- मोट रोटी

गुमब- काँच तोड़ल फल-आम, कटहर, बड़हर, केरा, अनरनेबा, आदिक राखल-राखल पाकब, प्रेरणार्थक-गुमायब

गुमसाइन- अन्न, चिक्कस आदिक गुमसबासँ उत्पन्न गन्ध-स्वाद

गुलठी- सातु, मैदा आदिकेँ पानिमे घोबारमे बिनु मीलल गोली बनल अंश; दालि, खिच्चड़ि, खीर रन्हबामे गोली बनि गेल उसिझल सन अंश

गुलाबखास- आमक एकटा प्रसिद्ध प्रभेद

गुड़ीबीड़ी- अत्यन्त छोट छोट गुलठी सब

गूनामूना- आठुरक आकारक पकमान जे दुरागमनक अवसरपर बिलहल जाइछ, ऐहबक फड़

गेन्हरी- एक प्रकारक साग, चतरी गेन्हारी

गोजै- फँटल-फाँटल अन्न; गहूम, जौ आदि अन्न; रब्बी अन्नक मिश्रण

गोफा
गोभा }-अँकुरल नारियर वा ताड़क फलक भीतरक कोमल उज्जर गुद्दा

गोलबत्ती- चाउरक खुद्दीकेँ नोन-हरदि दऽ कऽ रान्हल भातक गोली; रिन्हकी

गौरवाह- विलम्बसँ पचनिहार खाद्य पदार्थ

घटरा- आवश्यकतासँ बेसी सीझल; मथि कऽ बनाओल मिश्रण

घरुआर
घरुआरब }-घरक काज-धंधा भानस-भात आदि करब

घुरमा- गुढ़मा नामक लता फल

घुलब- द्रवमे ठोस वस्तुक गलि कऽ मीलब

घैला- घैल

घैलिया
घैली }- छोट घैल, बसनी

घोर- महल मक्खन काढ़ि लेलाक बाद अवशिष्ट द्रव; मट्ठा

घौदा- फलक गुच्छा

घौर- केराक हत्था सभक संलग्न समूह, गाछमे लागल कोनहु फलक गुच्छा

चरकी- चरक वर्णक मिरचाइ, अन्तिम छोहनिमे तोड़ल मिरचाइ

चलओँस- चाललाक बाद बचल अपशिष्ट

चलना- अन्न चालबाक पैघ चालनि

चलनियाँ- चालनि, चलनी

चाकी- जाँत बैसयबाक लेल दौड़ाक आकारक माँटिक आधार

चिकनी- चाउरमे फड़ि गेनिहार अन्नकीट

चिखना- ताड़ी-दारू पीबाक संग कनेक

कनेक खाइवला चहटगर वस्तु जेना-भूजा, कचुरी, घुघनी आदि

चिनुआर- भनसाघरमे भानस लेल बनाओल माँटिक ऊँच चबुतरा

चौड़चन- चौठचन्द्र पावनि, भादव मासक शुक्लपक्षक चतुर्थीकेँ भेनिहार प्रसिद्ध पावनि

चौरठ्ठा- चाउरक चिक्कस

टाँसब- मक्खनकेँ आँचपर गरम कऽ घी बनायब

टुक्का- रोटिक चारिम खण्ड

टूक- खण्ड, सुपारीक चारिम खण्ड

- (एक सुपारी कय टूक?

- चारि टूक ।

- हमरा तोरा कय आँखि?

- चारि आँखि ।)

ठिलिया- छोट घैल, बसनी

दूआ-ढक्का- तोलमे ने कम ने बेसी

डम्हक- फल(लताम)क पकबाक पूर्वक अवस्था, पकबायोग्य, पूर्ण जुआयल

ढक- अन्न रखबाक हेतु बाँसक बातीसँ बनल नमहर कोठी

ढकनी- छोट ढाकन

ढकिया- चाकर मुहवला पथिया, ढाकी

ढाकन- तौलाक मुँह झँपबाक लेल बनल माटि वा काठक विशेष आकारक उपकरण, ढकना

तक्कर- दहीकेँ घोरि कऽ बनाओल जीरसँ छौंकल नोनगर शर्वत, तक्र

दरबाइन- चिरकालिक बिनमाँजल दरब(धातु)क बासनमे राखल खाद्य वस्तुमे संसर्गात् उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

फिरनी- छोटा सनहकी, एकटा माटिक पात्र

फुफड़िआइन- फुफड़ीक कारणे उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

फोकड़ाइन- चिनुऔटल दूधक विकृतिजन्य गन्ध वा स्वाद

बंगला- रहड़िया(दलिहन)

बसिआइन- रान्हल वस्तुक बासि भेलापर उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

बारिक- भोजमे खाद्य सामग्री परसनिहार

भेड़बा- अन्नकीट, अन्नमे लागऽवला एक प्रकारक कीड़ी

महाउर- महल दूधक दही

महाली- ताड़ी रखबाक बड़का घैला

मही- घोर

मो- चिक्कस सनबामे मिलाओल जायवला घी; मैन; चूड़ापर देल जायवला पानिक हल्लुक छिच्चा

रै/रइ- पिरुकियामे भरल जायवला धुरहुर बनाओल मसल्ला, परसाद

लट्टा- सुखायल मोहुकेँ भूजल तीसी संग कूटि कऽ बनाओल खाद्य, डप्फा

रउही- दलिघोटना

रिन्हकी- बच्चा सबकेँ भिनसरमे खुअयबालेल अल्प मात्रामे रान्हल भात, रिन्हका

रीझम- खूब पैघ घैल

रोटियाहा- एकादशीव्रत दिन रोटी मात्र खायब

समयक परिवर्तनक संग रुचि, व्यवहार, उपलब्धता आदिमे नित्य परिवर्तन कारणे अन्ये भाषा जकाँ मैथिलीयो प्रभावित भऽ रहल अछि । मैथिलीभाषी बहुतो अभिनव अभिजात जन अपनाकेँ विशिष्ट वर्गक जनयबाक लेल शहरी हिन्दीक शब्दावली सब फैशनक रूपमे प्रयोग करऽ लगलाह अछि जकर कुप्रभावेँ गाम-देहातोमे काज-परोजन, भोजन-भात, बर-बरियातीक आगत-स्वागतमे नव पीढ़ी द्वारा भोजन सम्बन्धी अपन शब्दावलीक स्थानमे **खाना** (भोजन), **चावल** (भात), **डलना/डालना** (चर्चरी), **थाल** (थार/थारी) **नास्ता** (जलखै/जलजोग/जलथम्हन/जलपान/पनिपिआइ), **पतल** (पात), **बैगन** (भाँटा), **भिण्डी** (रामझिङ्गुनी/रामतोरै), **रसोइ** (भानस), **रसोइघर** (भनसाघर), **रसोइया** (भनसीया), **सब्जी** (तरकारी/तीमन), **सलाद** (झक्का/झक्खा) इत्यादिक प्रयोग कयल जाय लागल अछि ।

जँ अन्तरप्रादेशिक सम्बन्ध-सम्पर्कक कारणे अनेक नव मधुर-मिठाइ– **कलाकन्द, चमचम, रसकदम, रसमलाइ, सनपापड़ी, लवंगलता, लालमोहन** इत्यादि परम्परागत खाजा-मुङ्बाकेँ पछाड़ि अपन अपरिहार्य स्थान बना लेलक अछि; तँ दोसर दिस वैज्ञानिक आविष्कार, नव-नव खाद्य-उत्पाद, वैश्वीकरण, बाजारवादक संगहि अंगरेजीक प्रबल प्रभाव वृद्धिक कारणे आधुनिक भारतीय जीवन-पद्धतिक अनुगमन करैत मैथिलो-जीवन-पद्धतिमे-खास कऽ नगरीय-महानगरीय मैथिल जीवन-पद्धतिमे भोजन-सम्बन्धी अंगरेजी शब्द व्याप्त भेल जा रहल अछि । एकर किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि– **अमलेट / आमलेट / ओमलेट, आइसक्रीम, इसटोप / स्टोप / स्टोव, कटलेट, कप, किचन, कूकर, केक, कोल्डड्रिंक, कौफी/कॉफी, क्रीम, गलास/गिलास/ग्लास, गेस्टिंग, गैस, गैस-चूल्हा, गैस सिलिंडर, चॉप, जग, जूस, टप, टमाटर, टिफिन, टिफिन-कैरियर, टिफिन-बक्स, टी, टी-पाटी, टी-पॉट, टौफी/टॉफी, डाइनिंग-टेबुल, टोस्ट, डाइनिंग हॉल, डालडा** (ई ब्राण्ड नाम सब वनस्पति घीक लेल रूढ़ भऽ गेल अछि), **ड्रिंक, बरमस, पाटी/पार्टी, पिकनिक, पिलेट/पलेट/प्लेट, प्रेसर-कुकर, फास्ट फूड, फास्टिंग, फ्राइ, फ्रीज, बारली/बार्ली, बिसकुट, बूफे, ब्रेक फास्ट, ब्रेड, मग, मिक्सर, मीट, मेस, रासन, रिफाइन/रिफाइंड तेल, लंच, लेमनचूस/लेमनजूस, सैंडविच, होटल, होटलबाजी** इत्यादि । एकर सभक लसेढ़ गामो-देहात धरि पसरि रहल अछि ।

जेना पूर्वसँ प्रचलित बहुतो अंगरेजी शब्द तद्भव वा तत्सम रूपमे मैथिली शब्दकोषमे स्वीकार्य भऽ गेल अछि, तहिना कालक्रमे इहो शब्द सब मैथिली क्षेत्रमे अपन स्थान बनाइये लेत से किछु पर्यायवाची शब्दाभावक विवशतामे आ किछु मैथिली शब्दकेँ धकिया कऽ ।

नित्य नव-नव उपभोगक सामग्रीक प्रचार, नव उपकरण, अन्नक नव-नव प्रकारसँ मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्द सभ विलोपित होइत जा रहल अछि । स्टील, प्लास्टिक, फाइबर इत्यादिक प्रचारसँ पारम्परिक उपकरण सभक उपयोगिता समाप्त भेल

जा रहल अछि । धानक पारम्परिक प्रजाति समाप्त जकाँ अछि । साम, काउन, कोदो, चीन, गद्दरि, गम्हरी इत्यादिक तँ नवपीढ़ीकेँ दर्शनो दुर्लभ । धनकुट्टी-चुड़कुट्टी मील सभ ढेकी, उक्खरि, समाठ, ठकुराकेँ समाप्त कऽ देलक । आँटाचक्की आ मशालाचक्की तँ जाँत, चकरी, लोढ़ी-सिलौट इत्यादिकेँ अप्रासंगिके बना देलकैक अछि । बेसी विस्तारसँ परिवर्तनक कारण आ स्वरूपक विवरण देब अनावश्यक ।

आवश्यकता अछि भोजन सम्बन्धी सामान्य ओ पारिभाषिक प्रकृतिक लोकभाषिक शब्दावलीकेँ यथाशीघ्र समेटि लेल जाय । ई काज लोक-स्तरपर जाय अनुसन्धान करबामे अभिरुचि रखनिहारेसँ सम्भव ।

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे अपन अध्यापन-कालमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावली विषयक अनुसन्धानक योजना बनाय ओकर कार्यान्वयनक दिशामे प्रयत्नशील भेल छलहुँ । ताहि निमित्त मैथिलीक लोकभाषिक शब्दक आठ गोट विषय-वर्ग बनाय ओकर विस्तृत प्रारूप तैयार कयने छलहुँ । ओहिमे एकटा विषय मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली सेहो छल ।

भोजन तँ आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष सब करैत अछि । परन्तु भोजन-पात्रमे भोजनार्थ खाद्य-सामग्री प्रस्तुत होयबासँ पूर्व भोजन सम्बधी समस्त समचाक संचय, परिचय, उपयोग, प्रयोग,एवं यावन्तो कार्य-व्यापार महिलाश्रिते रहैत अछि । अतः मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक सत्तरि-अस्सी प्रतिशत भागक प्रामाणिक स्रोत ओ अर्थक प्रमाण मिथिलाक महिले लोकनि भऽ सकैत छथि, सेहो विशेषतः मिथिलाक गाम-घरक जीवनसँ पूर्णतः सम्पृक्त । मिथिलाक अन्तःपुरमे अपरिचित की, सुपरिचितो पुरुषक निर्बाध प्रवेश सम्भव नहि । अतः ओहने महिला गवेषिका मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली विषयपर शोधकार्य कऽ सकैत छलीह जे ने केवल उद्दिगर ओ उत्साही होथि अपितु स्वयं मिथिलाक ग्राम्य परिवेश एवं ओकर आभ्यन्तर जीवनचर्यासँ सुसम्पृक्त एवं सुपरिचित होथि ।

एहने स्थितिमे श्रीमती ललिताझा पी-एच.डी उपाधि हेतु अनुसन्धान करबाक ओ शोधप्रबन्ध लिखबामे हमरासँ मार्ग-निर्देशन मंगलनि । हिनका समक्ष अनेक विषय छलनि जाहिमे एकटा विषय मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली सेहो छलनि । हमर हार्दिक इच्छा छल जे एहि विषयक हेतु ई उपयुक्त गवेषिका भऽ सकैत छथि । किन्तु हम अपन विचार थोपऽ नहि चाहैत छलियनि । ई स्वयं एहि विषयक प्रति अपन उत्सुकता देखबैत कहलनि जे– श्रीमान् ! भोजन सम्बन्धी शब्दावली केहन होयतैक ?'

हम कहलियनि जे– ओना मिथिलाक प्रत्येक गाममे धी-पुतोहु होइत छैक । पुतोहुक रूपमे अनेक गाम जँ एक गाममे बसैत अछि, तँ धी रूपमे कोनो गाम अनेक गाममे

जीबैत अछि । तहिना प्रत्येक गाममे एकहि संग अनेक पीढ़ी जीबैत अछि । दू- चारियो गाममे नीक जकाँ लोक-सम्पर्क कयने भोजन सम्बन्धी शब्दावलीपर बहुत काज ससारल जा सकैछ, तथापि-

तथापि समाजक निचला धरातलपर जाय शोध-कार्यमे जे व्यावहारिक कठिनता भऽ सकैत छैक ताहिसँ अवगत करौलियनि । ललिताझा एहिसँ हतोत्साह नहि भेलीह, अपितु एहि विषयपर अनुसन्धानक हेतु अधिके उत्सुक भऽ उठलीह । हिनक विषयक शीर्षक छलनि **'मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययन'** ।

गवेषिका अत्यन्त श्रम ओ मनोयोग पूर्वक अपन शोधकार्य सम्पन्न कयलनि तथा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा हिनका पी-एच.डी उपाधि प्रदान कयल गेलनि । मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावली विषयक शोध कार्यमे तखन ई द्वितीय शोधप्रबन्ध छल ।

हमरा निर्देशनमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीसँ सम्बद्ध जाहि आठ गोट विषयपर विभिन्न अनुसन्धाता द्वारा शोधकार्य कयल जाय लागल छल, ताहिमे तिनियेँ गोट अनुसन्धाता शोधकार्य सम्पन्न कऽ शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कऽ सकलाह । ओहिमेसँ दूटा शोध-प्रबन्ध हालेमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । हमरा एहि बातसँ अत्यन्त सन्तोष ओ आह्लाद भऽ रहल अछि जे हमरा द्वारा निर्दिष्ट तेसरो शोध-प्रबन्ध ग्रन्थाकारमे प्रकाशित भऽ कऽ विद्वत् समाजक समक्ष आबि रहल अछि ।

डा. ललिताझाक जे मूल शोध-प्रबन्ध छलनि ताहिमे प्रकाशनसँ पूर्व बहुशः परिवर्तन कयल गेल अछि । दीर्घ बोझिल उद्धरण सबकेँ यदि अनेक ठाम हटा देल गेल, तँ अनेक नव सामग्री एवं शब्दावली जोड़लो गेल अछि । मूल शोध-प्रबन्धमे जे कोनो कमी बादमे दृष्टिमे आबि सकलनि तकर समुचित सम्मार्जन कऽ देल गेल अछि । यदि भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे कहल जाय तँ कहि सकैत छी जे लेखिका भोजन सम्बन्धी पूर्व शोधप्रबन्ध रूपी अन्नकेँ पुनः नीक जकाँ हिलोड़ि-ओलि, डगरि-निछड़ि, पैँच-फटकि, बीछि-बनाय परिशोधित रूपमे प्रस्तुत करबाक दिशामे सचेष्ट रहलीह अछि । अतः कहि सकैत छी जे वर्तमान स्वरूपमे प्रस्तुत ग्रन्थ मूल थीसिसक प्रतिकृति नहि, अपितु ओहिपर आधृत तथापि सर्वथा अभिनव ग्रन्थ थिक जकरा उचिते अभिनव अभिधान देल गेल अछि– **मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली** ।

एहि ग्रन्थमे आरम्भमे विषय-प्रवेश ओ अन्तमे उपसंहारक अतिरिक्त बारह गोट अध्याय राखल गेल अछि । आरम्भक प्रथम तीन अध्यायमे क्रमशः भारतीय भोजनक परम्परा, मैथिल भोजनक परम्परा एवं मैथिल रुचिपर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्तनपर विचार

कयल गेल अछि । मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक विकासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक परिचयक दृष्टिएँ ई तीनू अध्याय बड़ उपयोगी अछि । चारिमसँ छठम अध्यायमे मैथिली साहित्यमे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक साहित्यिक प्रयोगक निदर्शनक दृष्टिएँ क्रमश: प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास, मध्यकालीन मैथिली सहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास एवं आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यासक परिचय देल गेल अछि । एही अध्यायमे मैथिली लोक-साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यासक परिचयक संग दू सयसँ ऊपर भोजनसँ सम्बद्ध लोकोक्तिक महत्त्वपूर्ण संकलन अछि । यद्यपि ई लोकोक्ति परिशिष्टमे राखब अधिक उपयुक्त होइत ।

अग्रिम तीन अध्यायमे लोकव्यवहारमे निरन्तर प्रयुक्त विभिन्न कोटिक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक संकलन अछि । एहि तीनू अध्यायमे भोजन सम्बन्धी शब्दक वास्तविक अर्थक बोध करयबाक लेल रूप, आकृति, गुण, प्रयोग इत्यादिक द्वारा ओकर वाच्यार्थक परिचय देल गेल अछि । सातम अध्यायमे भोजनादिसँ सम्बद्ध उपकरण सम्बन्धी शब्दावलीक परिचय अछि जाहिमे धातु, पाथर, माटि, काठ, बाँस एवं तृणसँ निर्मित उपकरण सभ परिगणित अछि । आठम अध्यायमे भोजनक आधार सामग्री सम्बन्धी शब्दावलीक विस्तारसँ वर्णन कयल गेल अछि । नवम अध्यायमे भोजनसँ सम्बद्ध कार्य-व्यापार विषयक शब्दावलीक परिचय देल गेल अछि । आठम-नवम दुनू अध्यायमे प्रसंगत: मैथिलीमे प्रचलित विविध खाद्य-सामग्री, ओकर गुण-दोष इत्यादिक द्योतक शब्दावली स्वभावत: व्याख्यात भऽ गेल अछि । वास्तवमे ई तीनू अध्याय ग्रन्थक प्राण नहि अपितु महाप्राण अछि ।

अन्तिम तीन अध्यायमे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक व्याकरणिक स्वरूप ओ भाषातात्त्विक पक्षपर विचार कयल गेल अछि । दशम अध्यायमे ध्वनि सम्बन्धी, एगारहम अध्यायमे शब्द सम्बन्धी तथा बारहम अध्यायमे उपसर्ग ओ प्रत्यय सम्बन्धी विचार कयल गेल अछि । एहि सबने बहुत किछु अभिनव उदाहरणीय सामग्री सब वैयाकरण एवं भाषातत्त्वज्ञ लोकनिकेँ भेटि सकैत छनि ।

एहि तीनू अध्यायमे भाषा-सम्बन्धी अनेक रोचक तत्त्व सब देखबामे आबि सकैत अछि । उदाहरणार्थ एकटा **आइन** प्रत्यय लेल जा सकैत अछि । ई अत्यन्त जीवन्त प्रत्यय अछि तथा एहिमे नवीन शब्द निर्माण करबाक असीम क्षमता छैक । ई तद्धित ओ कृत् - उभय प्रत्ययक रूपमे क्रियाशील रहैत अछि । सामान्य भाषा-प्रयोगमे ई विशेषत: स्त्री प्रत्ययक काज करैत अछि, जेना **पितर-पितराइन, महतम-महत, माइन, गिरहथ-गिरथाइन, मालिक-मलिकाइन, ठाकुर-ठकुराइन, ओझा-ओझाइन, नौआ-नौआइन** इत्यादि । परन्तु **लोह** एवं **लोहारमे आइन** प्रत्ययक योगेँ **लोहाइन** एवं **लोहराइन** तदुद्भूत स्वाद ओ गन्धक द्योतक अर्थ दैत अछि । तेँ स्त्री प्रत्ययक रूपमे लोहमे

अइ(ऐ)न प्रत्ययक प्रयोग होइछ- **लोहैन** । एहिना **कुम्हैन, चमैन** बनैछ । परन्तु नीमसँ बनल **निमाइन** ने स्त्री-द्योतक थीक ने गन्ध-स्वादक व्यंजक, प्रत्युत ई एकटा कृत्यविशेष होइत अछि जाहिमे नीमक पात पीसि मैया (कोदबा, दामस, चेचक, गोटी)क मुरछल व्रणपर विधि-पूर्वक लेप लगाओल जाइछ ।

आइन प्रत्यय जखन भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे लगैत अछि तँ गन्ध-स्वादक अर्थ सूचित करैत अछि जकर सम्बन्ध मूल शब्दक अर्थक संग रहैत अछि । '**आइन**' प्रत्यययुक्त तद्धितान्त-कृदन्त उभय शब्दक प्रातिपदिक एवं ओकर मूल अर्थकेँ सहजे चीन्हल जा सकैछ । परन्तु मैथिलीक भोजन सम्बन्धी **आइन**-प्रत्ययान्त शब्दमे कतोक एहन शब्द अछि जकर मूल शब्द एवं ओकर अर्थ लुप्त भऽ गेल अछि । एहन आइन-प्रत्ययान्त किछु शब्द उदाहरणीय अछि, यथा- **बिसाइन, इछाइन, डढ़ाइन, ऐलाइन, फोकड़ाइन** ।

बिसाइनक सम्बन्धमे एहि ग्रन्थमे टिप्पणी कयल गेल अछि '**सम्भवत: ई शब्द बिसाँढ़ीसँ सम्बद्ध होयत**' । बिसाँढ़ी होइत अछि कमलक जड़ि जकर रूप भनहि विकृति होउक किन्तु ओहिमे दुर्गन्ध वा विकृत गन्ध नहि होइत छैक । **बिसाइन** होइत अछि सड़ल माछक गन्ध अथवा माछक कोनो प्रकारक संसर्गसँ उत्पन्न विकृत गन्ध । एहि **बिस** शब्दक मूल अर्थ विस्मृत भऽ गेल अछि । संस्कृतमे **विष्** एवं **विषा** शब्दक अर्थ-**मल, विष्ठा, लिद्दी** होइत छैक । एहिसँ **बिसाइनक बिसक** उद्भवक अनुमान कयल जा सकैछ । प्राय: दूध, भात, दालिक जरि गेलापर उत्पन्न स्वाद-गन्धकेँ **डढ़ाइन** कहल जाइत अछि । **डढ़** शब्दक मूल दग्धमे ताकल जा सकैछ जकर विकास दग्ध>डड्ढ>डाढ़ रूपमे भेल होयत । **डाढ़सँ** दुइ गोट क्रियापद विकसित भेल होयत-**डाढ़ब** एवं **डाहब** । **डाहब** क्रिया तँ जीबैत रहि गेल आ कालक्रमे **डाढ़ब** क्रिया लुप्त भऽ गेल । किन्तु ओहिसँ व्युत्पन्न दुइ गोट कृदन्त शब्द जीबैत रहि गेल अछि । प्रथम अछि **डाढ़ी** ('ई' प्रत्ययक योगसँ जेना- **आँटब-आँटी, बाँटब-बाँटी, सानब-सानी, खोँखब-खोँखी, खायब-खाँखी** आदि) तथा **आइन** प्रत्ययक योगसँ डढ़ाइन/डरहाइन ।

माछक वा माछक संसर्गसँ उत्पन्न गन्धकेँ **मछाइन** वा **इछाइन** कहल जाइत अछि । **इछ** वा **इछा** कोनो माछक नाम नहि होइछ । सम्भवत: इच्चा (इचना, झिंगा माछ)मे **आइन** प्रत्यय लगाय **इचाइन** बनल होयत आ कालक्रमे उच्चारणमे **च** केँ महाप्राण **छ** भऽ गेल । तेँ **इच्चाइन** बनि गेल **इछाइन** । **इच्चाक इच्छा** रूप चलैत रहल हो, सेहो सम्भव अछि । बिनु भूजल सरिसो-रैंचीक मसल्ला बेसी पड़ि गेलासँ व्यंजनमे एक प्रकारक तिक्तता आबि जाइछ जकरा **ऐलाइन** कहल जाइछ । काँच (बिनु औंटल) दूधक विकृतिजन्य गन्धकेँ **फोकड़ाइन/फोकराइन** कहल जाइछ । किन्तु आब **ऐल** एवं **फोकड़/फोकर** सर्वथा अर्थहीन भऽ गेल अछि । एहिना अनुसन्धेय अछि- **लोहराइन, लोहछराइन, नोनछराइन, खौरछाइनमे र, छर, छ** केर आगम । एहन अनेक उदाहरण सब

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे देखल जाइत अछि, जाहि विषयमे गम्भीर चिन्तन-अन्वेषणक आवश्यकता प्रतीत होइछ ।

मैथिली-भाषी समाज ओ मैथिलीभाषाक एकटा सबसँ महत्त्वपूर्ण पक्ष भोजन सम्बन्धी लोकभाषिक ओ पारिभाषिक प्रकृतिक अजस्र शब्द-राशिक संचय, परिचय, अर्थनिर्वचन इत्यादिपर केन्द्रित प्रस्तुत ग्रन्थमे मैथिली भाषाक कोषकार, वैयाकरण एवं भाषातत्त्वज्ञ लोकनिकेँ पुष्कल परिमाणमे सामग्री भेटवे करतनि, अपितु मिथिलाक अतीत ओ वर्त्तमान कालक आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवनक समाजशास्त्रीय अध्ययन-विश्लेषणक हेतु समाज-शास्त्री लोकनिकेँ सेहो मूल्यवान् अभिनव उपादान सब भेटतनि । सारांशत: कहल जा सकैत अछि जे मिथिलाक अन्त:पुरीण असूर्यम्पश्य जीवनकेँ लगसँ देखबाक हेतु ई ग्रन्थ एकटा महत्त्वपूर्ण दर्पण सिद्ध होयत । वास्तवमे ई ग्रन्थ मैथिली-साहित्य-मन्दिरमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दक महत्त्वपूर्ण उपाति सदृश अछि । लोकजीवन धरि जाय भौमिक अनुसन्धान कऽ मैथिली भाषा-साहित्यक ज्ञानकोषक समृद्धिमे महत्त्वपूर्ण योगदानक रूपमे **मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली** सदृश विशिष्ट ओ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थक प्रणयन-प्रस्तुति हेतु एकर लेखिका डा. ललिताझा अशेष साधुवादक समुचित उत्तराधिकारिणी छथि ।

आशा अछि जे मैथिली भाषा-साहित्यक विद्वान, प्रेमी ओ जिज्ञासु लोकनि एहि कृतिक अवश्य स्वागत करताह ।

श्रीरामदेवझा

माघ शुक्ल पंचमी
8 फरवरी 2011
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

सेवानिवृत्त विश्वविद्यालय प्राचार्य मैथिली
ल. ना. मि. वि. दरभंगा
पूर्व मैथिली प्रतिनिधि एवं सदस्य साहित्य अकादेमी
नई दिल्ली

आत्मकथ्य

शब्दक सत्ता ओहिमे निहित अर्थक कारणेँ रहैत छैक । शब्द ओ अर्थक पारस्परिक सहअस्तित्व अत्यन्त संश्लिष्ट अछि । रघुवंशक मंगलाचरणमे महाकवि कालिदास एहि सहअस्तित्वक तुलना शिव ओ पार्वतीक पारस्परिक सहभावसँ कयने छथि–

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिप्रतये ।
जगत: पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

स्वयंसिद्ध अछि जे अर्थवान् शब्दे कोनो भाषाक एकाइ होइत अछि । शब्दहिक माध्यमसँ साहित्यक महल ठाढ़ होइत अछि । मुदा शब्दक परिसीमा अत्यन्त व्यापक अछि । अनन्त शब्दराशि विभिन्न भाषा-उपभाषाक सीमा-खीमासे बान्हल अछि ।

भारतीय संविधानक आठम अनुसूचीमे समाविष्ट मैथिली एकटा स्वतन्त्र भाषा अछि । ई विपुल क्षेत्रमे वृहत् जनसंख्याक जनक मातृभाषा थिक । प्राचीने कालसँ एहिमे साहित्य-निर्माणक प्रक्रिया प्रवहमान रहलैक अछि । एहि प्रक्रियामे शब्द-ग्रहण, निर्माण, लोप आदि भाषातात्त्विक घटनासँ मैथिली भाषाक शब्द आने भाषा जकाँ परिवर्द्धित-संवर्द्धित होइत रहलैक अछि । एहि भाषिक शब्दक अध्ययन अनुशीलनसँ भाषाक प्रकृति एवं ओकर ऐतिहासिक विकास-क्रमक रूपरेखा उद्घाटित होइत अछि ।

भोजन मानवक मूलभूत आवश्यकता सबहिमे प्रथम ओ अनिवार्य अछि । मानव वन्य जीवन-प्रणालीसँ लऽ आधुनातन सुसभ्य जीवन-प्रणालीक अन्तरालमे भोजनक उपादान ओ प्रक्रियाक विषयमे दीर्घ विकास-यात्रा कयलक अछि । सम्भवत: भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक विकास मानव जीवनक विकासक प्रत्येक कड़ीमे आबद्ध-निबद्ध रहल अछि । संसारक समस्त जाति, समाज ओ भाषामे भोजन-विन्यास सम्बन्धी शब्दावली अपरिहार्य अंशक रूपमे वर्त्तमान रहल अछि । एहि शब्दावलीक रूप ओ अर्थ-परिवर्त्तन एवं विकासक इतिहासमे कोनहु जाति, देश ओ समाजक सभ्यता-संस्कृतिक ऐतिहासिक तत्त्व सन्निहित देखि पड़ैत छैक । अपन प्राथमिक आवश्यकता-पूर्ति हेतु मानव जे नित्य नव उपकरण, आधार-सामग्री ओ कार्य-व्यापारक विकास करैत रहल अछि, से

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक क्षेत्र-विस्तारक कारण रूप रहल अछि । क्षेत्रविशेषक भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक स्थितिसँ निरन्तर प्रभावित होइत रहबाक कारण ओकर भोजन-सम्बन्धी शब्दावली विशिष्ट ओ पारिभाषिक कोटिक रहल अछि ।

समाज ओ भाषाक महत्त्वपूर्ण उपादान होयबाक कारणेँ साहित्यहुमे भोजन-विन्यासक अभिव्यक्ति तथा भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग होयब स्वाभाविक अछि । अतः साहित्यमे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक भाषातात्त्विक अध्ययन ने केवल भाषाक शब्द-सामर्थ्य, भाषावैज्ञानिक तथ्य, प्रकृति ओ ऐतिहासिक विकासक्रमकेँ उद्घाटित करैत अछि अपितु सांस्कृतिक ओ समाजशास्त्रीय महत्वक परिणामकेँ सेहो प्रस्तुत करैछ । अध्ययनक ई परिणाम अवश्ये ज्ञानक क्षेत्रकेँ विस्तृत करबामे सर्वथा सक्षम सिद्ध होइछ ।

शब्दावलीक दोसर स्रोत अछि लोकजगत । लोकजगतसँ प्राप्त शब्दावली अत्यन्त जीवन्त होइत अछि । ई निरन्तर-परिवर्तित-परिवर्द्धित होइत रहैत अछि । तेँ एकर भाषातात्त्विक अध्ययन भाषिक विकास-क्रमक अभिज्ञानक संगहि अर्थ- निर्वचन, मानक स्वरूप-निर्धारण ओ कोष-निर्माणमे महत्त्वपूर्ण आधार सिद्ध होइत अछि ।

मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी बहुसंख्यक शब्दक अर्थ दुरूहे नहि भऽ गेल अछि, अपितु कतोक शब्दक अर्थ तँ विलुप्ते भऽ गेल अछि । सम्प्रतियो विभिन्न प्रकारक सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन-संक्रमणक कारणेँ भोजन-सम्बन्धी पारम्परिक शब्दावली अप्रचलित ओ अप्रयुक्त होइत क्रमशः विलोपमान अछि । दोसर दिस मैथिली भाषामे नित्य भोजन-सम्बन्धी नव शब्दावलीक प्रवेश होइत जा रहल अछि । स्वभावतः संक्रमणक एहि अवधिमे जँ मैथिली भाषा ओ साहित्यमे प्रयुक्त कतोक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अर्थ दुरूह भेल जा रहल अछि, तँ लोकजगतक कतोक पारम्परिक शब्द संक्रमण-प्रक्रियामे समाप्त भेल जाइछ आ गृहीत शब्दावलीक परिमाण बढ़ले जा रहल अछि । अतः एकर सभक संकलन-अध्ययन नितान्त आवश्यक अछि । एहि प्रयोजनकेँ समक्ष राखि एहि ग्रन्थक निर्माण भेल अछि ।

ई ग्रन्थ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगामे पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्धक परिवर्तित-परिवर्धित रूप थिक । ग्रन्थक आरम्भमे विषय प्रवेश ओ अन्तमे उपसंहारक अतिरिक्त कुल बारह गोट अध्याय राखल गेल अछि । भोजन सम्बन्धी शब्दावली विषयक एहि ग्रन्थमे शब्दक स्वरूप ओ अर्थक व्याख्यामे जतऽ कोष ओ साहित्य असमर्थ देखल गेल अछि, ओतऽ लोककेँ प्रमाणस्वरूप स्वीकार कयल गेल अछि । आन ठाम जे कहल गेल अछि से सप्रमाण । तथ्यानुशीलनक हेतु तुलनात्मक परीक्षण-पद्धतिक आश्रय लेल गेल अछि । शब्दावली-संकलन हेतु समस्त मैथिली क्षेत्रकेँ लक्ष्यमे राखल गेल अछि तथा विभिन्न जिलाक सूचनादातासँ शब्द ग्रहण कयल गेल अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रकृति लोकभाषिक ओ पारिभाषिक कोटिक होयबाक कारणेँ अधिकांश शब्दक व्याख्या अल्प शब्देँ असम्भव । एहना स्थितिमे आकार, कार्य, स्थिति, गुण, प्रयोग आदिक विवरण द्वारा शब्दकेँ व्याख्यात करबाक प्रयत्न भेल अछि ।

प्रस्तुत ग्रन्थ मैथिली भाषाक विशिष्ट क्षेत्रक शब्दतत्वक भाषातात्त्विक अध्ययनक दिशामे आरम्भिक चरण थिक तथा एहिसँ मैथिली शब्द-भंडारक ज्ञानक सीमाक यत्किंचित् विस्तारक संगहि भाषातात्त्विक पर्यवेक्षणक दुआरि फूजल अछि । भाषा विषयक ज्ञानक दिशामे नव योगदान भेल अछि ।

प्रस्तुत ग्रन्थ ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक सेवानिवृत्त प्राचार्य डा. रामदेवझाक कृपापूर्ण निर्देशन ओ पर्यवेक्षणक परिणाम थिक । विषय निर्धारण, सामग्री संकलन, प्रतिपादन, विवेचन-विश्लेशणमे सहजहि प्राप्त हिनक उदार व्यक्तित्वक लाभसँ एहि ग्रन्थकेँ पूर्ण करबामे हम सफल भऽ सकलहुँ वर्तमानमे प्रकाशनहुक समयमे गुरुवरक गम्भीर मार्जनीय दृष्टि एहिपर पड़ल अछि जाहि कारणे ई ग्रन्थ औरो बेसी उत्तम बनि सकल अछि । मैथिलीक एहि विश्रुत आचार्यक शिष्या होयबेमे हमरा ततेक बेसी गौरवक बोध भऽ रहल अछि जे हिनका प्रति आभार ओ कृतज्ञताक कोनोटा शब्द हिनक अगाध पण्डित्यक समक्ष झुस बुझना जाइत अछि । तेँ हिनक आशीर्वाद सतत हमरा माथपर बनल रहय, भगवतीसँ एतबे प्रार्थना अछि ।

एहि शोध ग्रन्थक प्रणयनसँ लऽ कऽ एकर प्रकाशन धरिमे हमरा गुरुआइन डा. योगामायाझाक जे स्नेह आ आशीर्वाद भेटैत रहल तकरा हम शब्दमे अभिव्यक्त नहि कऽ सकैत छी । तेँ हिनका प्रति कृतज्ञा छी ।

गुरुपुत्र डा. शंकरदेव झा जे पत्रकार ओ प्रखर साहित्यकार दुनू छथि, से नहि केवल एहि ग्रन्थक प्रकाशन हेतु चरियबैत रहलाह अपितु एकरा उत्तमोत्तम रूपमे प्रस्तुत कऽ सकबामे जे ओ अपन अकथनीय योगदान देलनि अछि ताहि हेतु हम हुनका हृदयसँ अशीर्वाद दैत छियनि । पोथीक आवरण चित्रक परिकल्पना सेहो हिनके थिकनि जे अठारहम शताब्दीमे पूर्णिया हवेलीमे निर्मित माइका पेंटिंगक एकगोट ठेँठ मैथिली जीवनसँ सम्बद्ध चित्रक अनुकृति थिक ।

मैथिलीक पारिभाषिक शब्दप्रज्ञ ओ मनस्वी विद्वान डा. योगानन्दझाक कतोक संकलित सामग्रीक उपयोग एहि ग्रन्थक निर्माणक क्रममे कयल गेल, संगहि हुनक अनुभवक लाभ ओ वैयक्तिक सुझाव जे भेटैत रहल ताहि हेतु हुनका प्रति आभारी छी ।

एखन मोन पड़ैत छथि अपन पिता स्व. श्याम किशोर चौधरी (पनिचोभ) दरभंगा, जनिक एकशब्द आइयो हृदयमे बसल अछि । ''सोनाक गहना की लेब, नीकसँ

पढ़ू जे जिनगी भरि काज देत, केओ छीनत नहि ।'' ई ग्रन्थ हुनके आशीर्वादक प्रतिफल थिक । तहिना मातातुल्य भाउज स्व. सुशीला देवी (पनिचोभ) जे गुरु सेहो छलीह । जेठ बेटीक दर्जा देने छलीह । सतत् अपन आशीर्वादक आँचर सँ झपने रहलीह । हुनका ई असीम स्नेह जीवनपर्यन्त अविस्मरणीय रहत ।

दिवंगत डा. देवचन्द्रझा (विद्यालंकार) भतिजजमाय जे एहि ग्रन्थकेँ छपयबाक प्रयास कयने रहथि । संयोगवश हुनक समयमे ई कार्य नहि भऽ सकल । मुदा जेठ बेटीक समान भतीजी नीलमझा (पटना) से अवश्ये एहिसँ अति प्रसन्न होयतीह ।

आभारी छी हम पति शिवकान्त झा ''अधिवक्ता'' (लहेरियासराय-बेनीपुर) (दरभंगा) जे मौनभावेँ हमरा निरन्तर आगाँ बढ़यबामे प्रोत्साहित करैत रहलाह ।

हमर सन्तान लोकनि जेठ बेटी डा. पूनम भारद्वाज (व्याख्याता) एंग्लो संस्कृत विक्टोरिया जुबली सिनियर्स सेकेण्डरी स्कूल, दरियागंज, दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली)। जेठ जमाय डा. राधामाधव भारद्वाज प्रधान एसोसिएट प्रो. ऑफ हिस्ट्री डिपार्टमेन्ट, दिनदयाल उपा. कॉलेज दिल्ली । छोट जमाय जितेन्द्र व्याख्याता गुजराती स्कूल दरियागंज सिनियर्स लाइन दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार) । छोट कन्या नूतन (कारपोरेट कार्यमंत्रालय दिल्ली, भारत सरकार) जेठ पुत्र संजयकुमार झा (पत्रकार) दिल्ली । पुत्रवधु-अभिलाषाझा एवं कनिष्ट पुत्र प्रभाकरझा लोकनिकेँ एहि ग्रन्थकेँ प्रकाशनक लेल अतिशय उत्कंठा रहलनि अछि । हिनका लोकनिक सहयोगसँ ई ग्रन्थ आइ प्रकाशित भऽ रहल अछि तेँ सभ गोटाकेँ हमर अशेष आशीर्वाद ।

शोध प्रबन्धक निष्पादनमे प्रेरक ओ सहायक गुरुजन ओ सुहृद्‌जनक प्रति आभारी छी । हम ओहि सहयोगिनी वरिष्ठ महिलालोकनिक प्रति अतिशय कृतज्ञ छियनि जे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक संकलन, अर्थबोधमे महत्त्वपूर्ण सूचनात्मक योगदान कयलनि । आभारी छियनि चित्रकार श्रीरजत दत्तक जे भोजन सम्बन्धी उपकरण सभक चित्रांकन कयलनि अछि ।

माघ शुक्ल पूर्णिमा — ललिताझा
18 फरवरी 2011

विषय-सूची

संकेत सूची

अ.	-	अरबी
अं.	-	अङरेजी
क्रि.	-	क्रिया
ग्रि.	-	बिहार पीजेन्ट लाइफ-ग्रियर्सन
जि.	-	जिला
दे.	-	देशी
पृ.	-	पृष्ठ
फा.	-	फारसी
फा.मै.लै.	-	द फार्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज - डा. सुभद्रझा
बुक.	-	एन एकाउन्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया इन 1809-10, फ्रांसिस बुकनन
मि.भा.को.	-	मिथिला भाषा कोष-दीनबन्धुझा
मै.	-	मैथिली
सं.	-	संस्कृत, संपादक, संख्या
हि.	-	हिन्दी
*	-	परिकल्पित शब्द

विषय-प्रवेश

शब्द कोनो भाषाक आधार होइत छैक । ई भाषाक एकाइ थिक । एकरे माध्यमसँ वैचारिक अभिव्यक्ति एवं साहित्यक निर्माण होइत छैक । शब्द सामर्थ्यक आधारपर कोनो भाषाक समृद्धिकेँ आँकल जा सकैछ ।

कोनो भाषाक शब्द-सामर्थ्य ओकर जनसंख्या, भौगोलिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवेशपर निर्भर करैछ । भाषिक क्षेत्रक विस्तृति, भाषा-भाषीक संख्याक विपुलता एवं अन्य अनेक कारणेँ भाषाक शब्द-सामर्थ्य प्रभावित होइत रहैत छैक ।

कोनो जीवन्त भाषामे सामान्यत: शब्दक दुइ गोट कोटि पाओल जाइछ । एक प्रकारक शब्द सामान्य कोटिक होइछ जे दैनन्दिन जीवनमे व्यवहारक हेतु प्रयोग कयल जाइछ । मुदा किछु शब्द विशिष्ट एवं पारिभाषिक कोटिक होइछ, जकर प्रयोग विशेष अवसरपर विशेष प्रयोजनसँ विशेष वस्तु अथवा अर्थक द्योतनक हेतु होइछ । एहि प्रकारक शब्द-प्रयोग एक गोट विशेष सीमामे आवद्ध रहबाक कारणेँ सामान्य प्रयोगसँ पृथक रहि जाइछ । यद्यपि ई कोनो भाषाक अमूल्य शब्द-सम्पदा थिक, जकर अनुशीलनसँ विशिष्ट भाषावैज्ञानिक तथ्यक उद्घाटन सम्भव अछि ।

मैथिली सेहो एकटा जीवन्त भाषा थिक । एहुमे विभिन्न प्रकारक पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयोग होइत रहल अछि । एहन शब्दावलीमे अधिकांश तँ आर्य-सभ्यताक आरम्भिक कालहिसँ प्रयुक्त अछि- कखनो मूल रूपमे आ कखनो किञ्चित् विकृत रूपमे । मुदा ई शब्द समूह मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययनक विशिष्ट सामग्री अछि ।

निरन्तर आर्थिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिवर्त्तनक कारणेँ एक भाषा-क्षेत्रक लोकक दोसर भाषा-क्षेत्रक लोकक संग सहज सम्पर्कक सुविधा एवं पारस्परिक शब्दग्रहणक प्रक्रियाक कारणेँ एक भाषाक शब्द दोसर भाषाक शब्दकेँ संक्रमित करैछ । क्रमश: सबल शब्द जनप्रचलित भऽ मूल शब्दकेँ निर्वासित कऽ दैछ । एहि तरहेँ कोनो भाषाक शब्दावलीमे नव शब्द-ग्रहण ओ शब्द-लोपक प्रक्रिया निरन्तर चलैत रहैछ । मैथिली सेहो एहि संक्रमण-प्रक्रियासँ बाँचल नहि अछि । तेँ ई सहजहिँ अनुमान्य अछि

जे यदि मैथिलीक पारिभाषिक शब्दावलीक अध्ययन-अनुशीलन नहि कऽ लेल जाय तँ भाषाक कतोक अमूल्य सम्पदा कालक्रमे नष्ट भऽ जायत तथा भाषाक मूल शब्द-लोपसँ एकर प्रकृतिगत अध्ययनमे सेहो वाधा होयत ।

डा. अम्बाप्रसाद सुमन शब्द-लोपक समस्यापर विचार करैत ब्रजभाषाक कृषक जीवन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रसंग कहने छथि जे- **वर्त्तमान युगक भारत वर्षमे नागरिक संस्कृति ओ सभ्यता दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि । विज्ञानक नव आविष्कार प्रत्येक दिन गामक दिस बढ़ल जा रहल अछि । एहना स्थितिमे हमर कृषक ओ शिल्पकारकेँ औजार ओ कार्यपद्धति बदलबामे अधिक समय नहि लगतनि जखन कृषकक सभ खेत ट्रेक्टरसँ जोतल जाय लागत आ पटौनी बिजलीसँ होअऽ लागत तँ देशी हर आ ढेकुलसँ सम्बद्ध जनपदीय शब्दावली गामक लोकक जीहपरसँ सर्वदाक हेतु उठि जायत ।**[1]

ई स्थिति मैथिलीक विभिन्न पारिभाषिक शब्दावलीक सम्बन्धमे सेहो देखि पड़ैछ । नित्य नव अनुसन्धान, शब्द-विनिमय ओ संक्रमण मैथिलीक शब्दावलीकेँ प्रभावित करैत जा रहल अछि । तेँ समय अछैत एहि शब्दावलीकेँ संकलित कऽ ओकर भाषातात्त्विक अध्ययन कऽ लेब आवश्यक । अन्यथा भाषाक मौलिक प्रकृतिओक अनुशीलन कालक्रमे बाधित भऽ सकैछ ।

मनुष्यक तीन गोट मूलभूत आवश्यकता-भोजन, वस्त्र ओ आवासमे पहिल स्थान भोजनेक अछि । जन्म ग्रहणक पश्चात मानव शिशुकेँ पहिल अनुभूति भूखेक होइत छैक जकर अभिव्यक्ति चिचिया कऽ करैत अछि । जीवन-रक्षण ओ विकासमे भोजनक अन्यतम स्थान छैक ।

मानवक जीवनयापनक स्तर, सभ्यता ओ सँस्कृतिक मानदण्ड बहुत दूर धरि ओकर भोजन-व्यवस्थहिपर आँकल जाइत रहलैक अछि । मानव जन्मसँ लऽ कऽ मृत्यु पर्यन्त एहि आवश्यकताक पूर्त्ति-नियमनमे संघर्षरत रहैछ । यद्यपि भोजन सामान्यत: प्राकृतिक साधनसँ सम्प्राप्त अछि, तथापि स्रोत ओ प्रकारक दृष्टिएँ एकर आयाम अत्यन्त विस्तृत छैक । मानव सभ्यताक विकासक विभिन्न चरणमे यावन्तो प्रगति होइत रहल अछि, तकर कारणेँ भोजन-सामग्री, भोजन तैयार करबाक उपकरण तथा भोजन व्यापारमे क्रमिक विकास होइत रहलैक अछि । शब्दक आगम, निर्गम, निर्माण, लोप, ध्वनि-परिवर्तन, अर्थ-परिवर्तनक प्रक्रिया निरन्तर चलैत रहल अछि । स्वभावत: भोजन सम्बन्धी शब्दावलीओक विस्तार निरन्तर होइत रहलैक अछि । भोजन-सम्बन्धी शब्दावलीक मानव-जीवनमे उपयोगिताक दृष्टान्त स्वरूप कहल जा सकैछ जे मानव-शिशु सर्वप्रथम अपन एहि प्राथमिक आवश्यकतासँ सम्बद्ध शब्द ग्रहण करैत अछि । कोनो भाषाक शब्द-सम्पदाक निर्माणमे प्राथमिक स्थान भोजन सम्बन्धी शब्दावलीएक रहल होयत, से अनुमान कयल जा सकैछ । कहल जा सकैछ जे भोजन सम्बन्धी शब्दावली कोनो भाषाक शब्द-सामर्थ्यक विशिष्ट क्षेत्र अछि ।

भोजन-सम्बन्धी शब्दावली मानव जीवनक अत्यन्त निकट होयबाक कारणेँ साहित्योक समस्त विधामे सामान्यत: प्रयुक्त होइतहि अछि । भाषामे तँ एकर दैनन्दिन प्रयोग सर्वत्र स्वभाविके । मैथिलीयोक आदिकालीन साहित्यसँ लऽ अधुनातन साहित्य धरिमे एहि शब्दावलीक पुष्कल प्रयोग होइत रहल अछि ।

मैथिलीक पारिभाषिक शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्याक दिशामे मैथिल विद्वान लोकनिक ध्यान बहुत पूर्वहिसँ रहल अछि । डा अमरनाथझा कहने छलाह जे- **बहुतो शब्द एहन अछि जे बनिया, लोहार, सोनार, कुम्हार, चमार, डोम, कमार, खेतिहर, पजियार, पुरोहित, नटुआ, बजनियाँ, धोबि, नापित इत्यादि अपन-अपन व्यवसाय विशेषमे व्यवहार करैत छथि । तकर संग्रह आवश्यक ।**[2]

आचार्य सुमन सेहो पारिभाषिक शब्दावलीक महत्त्वकेँ स्वीकार करैत एकर संग्रह हेतु विद्वान लोकनिक आह्वान आइसँ करीब अर्द्ध शताब्दी पूर्वहि कऽ चुकल छलाह ।[3]

वस्तुत: शब्दावली संकलन क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण कार्यक श्रेय ओहि यूरोपीय विद्वान लोकनिकेँ छनि जे एहि ठामक भाषा ओ संस्कृतिसँ परिचय करबाक हेतु विभिन्न शब्द-सूची तैयार कयलनि । एहि दिशामे पैट्रिक कारनेगीक[4] शब्द-सूची तथा विलियम क्रूकक[5] शब्द-सूची मानक सिद्ध भेल अछि ।

एहि दुनू ग्रन्थमे विद्वान सूचीकार लोकनि भारतक विभिन्न प्रदेशमे प्रचलित शब्द एवं ओकर अर्थ, लोकोक्ति एवं ओकर प्रयोग आदिकेँ व्याख्यात कयलनि जाहिसँ तत्कालीन अंग्रेज प्रशासनकेँ भारतीय जन-जीवनक परिचय पयबामे सुविधा भेलैक । एही उद्देश्यकेँ लऽ कऽ सर्वप्रथम सर जी.ए. ग्रियर्सन अपन **बिहार पीजेन्ट लाइफ**[6] नामक ग्रन्थमे बिहारक विभिन्न भागमे जनजीवनसँ सम्बद्ध शब्दावली सबकेँ संकलित ओ व्याख्यात कयलनि । हिनक शब्द-संग्रहक क्षेत्र तत्कालीन सम्पूर्ण बिहार राज्य छल तथापि मैथिलीक भोजन सम्बन्धी कतोक शत शब्द एहि ग्रन्थमे भेटि जाइछ ।

मैथिलीमे जतेक कोषनिर्माण होइत रहल अछि ओहि सबमे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक संचयं भैये गेल अछि से नहि कहल जा सकैत अछि । जतेक शब्द आबियो सकल तकर अर्थ-कथन सेहो पूर्णरूपमे नहि भऽ सकल । कोषमे ओकर समक व्याख्या सम्भवो नहि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावली क्षेत्र विशेषक भौगोलिक पर्यावरण ओ सांस्कृतिक परम्परा-परिवेशपर अत्यधिक निर्भर करैछ । तँ एहि शब्दावलीक ऐतिहासिक विकास-क्रमक अध्ययनक हेतु स्थानीय भोजन परम्परापर विचार करब आवश्यक । तँ प्रस्तुत ग्रन्थमे भारतीय भोजन परम्परा, मैथिल भोजन परम्परा तथा मैथिल रुचिपर प्रभाव एवं तज्जन्य परिवर्त्तनपर सेहो विचार करब अपेक्षित अछि । आधुनिक कालमे ई मैथिल भोजन

पद्धतिकेँ प्रभावित करैत रहल अछि । तेँ मैथिलीक ग्रन्थमे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अनेक पक्ष स्पष्ट भेल अछि ।

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक संकलनक दृष्टिएँ दुइ गोट विशिष्ट शब्द-क्षेत्र अछि ।

(1) मैथिली साहित्य (2) मैथिली भाषा

मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्याससँ सम्बद्ध शब्दावलीक संकलन हेतु साहित्यक कालानुसारी विभाजन एहि रूपेँ स्थिर कयल जा सकैछ –

(क) प्राचीन मैथिली साहित्य । (ख) मध्यकालीन मैथिली साहित्य । (ग) आधुनिक मैथिली साहित्य ।

आधुनिक मैथिली भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक संकलन हेतु एहि शब्दावलीकेँ उपयोगक आधारपर तीन वर्गमे बाँटल जा सकैछ –

(क) उपकरण-सम्बन्धी शब्दावली (ख) आधार-सामग्री सम्बन्धी शब्दावली (ग) कार्यव्यापार-सम्बन्धी शब्दावली

एहि तरहेँ प्राप्त सामग्रीक आधारपर मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीकेँ संकलन कऽ ओकर व्याख्या सहित प्रकृति विश्लेषण द्वारा अध्ययन एहि ग्रन्थक उद्देश्य थिक ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली-डा. अम्बाप्रसाद सुमन, हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद, उ.प्र., भूमिका ।
2. भाषणत्रयी-सम्पादक देवेन्द्रझा, मैथिली अकादमी पटना, 1983, पृ.-13 ।
3. मिथिलामिहिर, 27 मइ, 1944, पृ.-7 ।
4. कचहरी टेकनिकलिटीज ऑर ए ग्लोसरी ऑफ हिन्दुस्तान, पैट्रीक कार्नेगी, सेकेण्ड एडीशन, इलाहाबाद, मिशन प्रेस, 1877 ।
5. रूरल एण्ड एग्रीकल्चरल ग्लौसरी फौर द नौर्थ इस्टर्न प्रोभिन्सेज एण्ड अवध, विलियम क्रूक, सेकेण्ड एडीशन, सुपरिन्टेन्डन्ट आफ गोभर्नमेंट प्रिंटिंग इण्डिया, कलकत्ता, 1888 ।

●

प्रथम अध्याय

भारतीय भोजनक पारम्परिक स्वरूप

कोनहु स्थानक निवासीक भोजन ओहि ठामक भौगोलिक पर्यावरणपर निर्भर करैछ । भोजनक मूल आधार अछि वनस्पति जे स्थान-स्थानक भौगोलिक स्थितिक अनुसार उपजैत अछि । भोजनक दोसर आधार होइत अछि प्राणी वर्गसँ प्राप्त मांस, दुग्धादि आ प्राणी-वर्ग सेहो भौगोलिक स्थितिक अनुसार उपजल वनस्पतियेपर आधारित रहैछ । तेँ भौगोलिक पर्यावरणक विशेष प्रभाव ओहि ठामक मानवीय खाद्यपर पड़ैछ ।

भारत मिश्रित भौगोलिक पर्यावरणसँ युक्त देश रहल अछि । एकर उत्तरी क्षेत्र जतऽ गंगाक समतल भूभागक रूपमे अत्यन्त उपजाउ क्षेत्र रहल अछि, ओतहि दक्षिणक पठारी भू-क्षेत्र जंगली वनस्पति हेतु प्रशस्त रहल अछि । भारत भूमि अहिंसक मांसवला पशु उत्पादित करैत रहल अछि तँ वन्य क्षेत्रमे हिंसक ओ विशालकाय जानवर सेहो पाओल जाइत रहल अछि । एतावता विभिन्न भौगोलिक पर्यावरणक कारणेँ एहि ठामक भोजनपरम्परामे विविधता रहल अछि ।

भोजनकेँ प्रभावित करऽवला दोसर तत्त्व अछि स्थान विशेषक सामाजिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमि । प्राचीन सिन्धु सभ्यताक कालहिसँ भारत एकटा सुसभ्य ओ उच्च संस्कृतिवला देश रहल अछि जकर प्रभाव एहि ठामक भोजन-प्रणालीपर पड़बे कयल अछि । बादमे विविध सांस्कृतिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक संक्रमणक कारणेँ सेहो भारतक भोजन-प्रणाली प्रभावित भेल अछि मुदा संस्कृतिक प्रति कट्टरताक कारणेँ अल्प परिवर्तनक संग भारतीय भोजन-परम्परा एखनहुँ अपन निजी अस्तित्व रखने अछि ।

भोजनक भारतीय परम्परा

भारतीय भोजन-परम्पराक अन्तर्गत विभिन्न कालखण्डमे भोजनक विधि-निषेधपर विचार करब आवश्यक अछि । भारतीय भोजनक वर्णन एहि ठामक आदि साहित्यहिसँ भेटऽ लगैत अछि । संसारमे एहन कोनो स्थल नहि जतऽ खाद्य-अखाद्यक विचार एहि ठाम जकाँ भेल हो ।[1]

सिन्धु-सभ्यताकालमे मुख्यतः जौ, गहूम, चाउर, तिल, मटरक उत्पादन होइत छल तेँ ओहि समयमे खाद्य पदार्थ एही सभसँ बनैत होयत । ओहि समय दुधगर पशु अत्यधिक संख्यामे लोक पोसैत छल, तेँ दूध ओ ओहिसँ बनल विविध भोज्य पदार्थ तत्कालीन भोजनमे सम्मिलित रहल होयत ।[2]

वैदिक युगमे आबि कऽ भोज्य पदार्थक चयन बल, वीर्य एवं सात्त्विकताक दृष्टिसँ कयल जाय लागल । भोजनक गुण-वर्णन करैत ओकर परिभाषा देल गेल जे जाहिमे वीर बनयबाक सभ गुण वर्त्तमान हो ।[3] महान् ओ यथेष्ट बलसँ युक्त अन्नक कामना कयल गेल ।[4] अन्धकारकेँ दूर करऽवला ज्योतिर्मय अन्नक कल्पना सेहो भेटैत अछि ।[5]

ऋग्वेदमे **क्षीरपाक ओदनक** प्रशंसा भेल अछि[6] जे दूधमे चाउरकेँ सिझा कऽ बनाओल खीर छल । **ओदन** अनेक प्रकारक वस्तुक सम्मिश्रणसँ तैयार होइत छल जकरा परवर्त्ती वैदिक साहित्यमे **क्षीरौदन, दध्योदन, मुद्गौदन, तिलौदन, मांसौदन** ओ **घृतौदन** कहल गेल अछि । पाँच वस्तुक मिश्रणेँ पंचौदन बनैत छल । भोजनमे दही ओ घृतक स्थान छल । दूधसँ नवनीत बनैत छल । वैदिक आर्यलोकनिक मुख्य भोजन **करम्भ अपूप, पुरोडाश, धाना** छल । चाउर ओ तिलक संयोगसँ **कृसर** नामक खाद्य पदार्थ बनाओल जाइत छल । चाउरकेँ भूजि **परिवाद** बनाओल जाइत छल । **वाजिन** आइ काल्हुक **रइता** छल । **पयस्या** सेहो एहने खाद्य छल ।[7]

ऋग्वेदमे यवक उल्लेख अनेक स्थानपर अछि मुदा चाउरक नहि । एहिसँ इतिहासकारलोकनि ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे एहि काल धरि आर्यलोकनि पूर्व धरि नहि पहुँचल छलाह जतऽ चाउरक बहुलता छल ।[8] वैदिक साहित्यमे फलक चर्चा सेहो भेल अछि । गुलरिक फलक मधुरता प्रशंसित छल । **आण्डिक** नामक गाछक उल्लेख भेल अछि । नोनक प्रयोग सेहो होइत छल । वैदिक युगमे देवताकेँ समर्पित मांस-भोजन करबाक प्रथा छल ।[9]

पेय पदार्थक रूपमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान तँ जलक रहल अछि आ जीवन-संरक्षणमे एकर विशेष महत्त्व रहबाक कारण एकरा **जीवन** कहल गेल अछि । प्राणकेँ जलमय कहल गेल अछि ।[10]

दोसर पेय रूपमे दूध छल । प्रिय पेयक रूपमे एकर खूब प्रशंसा भेल अछि ।[11]

आर्य जातिक प्रमुख पेयक रूपमे **सोमरसक** विशद वर्णन वेदमे भेल अछि । ई सोमलतासँ बनैत छल जे पहाड़पर भेटैत छल । सोमलताकेँ कूटि रस निकालल जाइत छल आ ओहिमे दूध, दही, यव आदि पदार्थ मिलाय मनोरम गन्धयुक्त पेय बनाओल जाइत छल जे देवताकेँ समर्पित कयलाक बाद पिउल जाइत छल । सोमक गुणगानसँ ऋग्वेद भरल अछि । एकरा पापकेँ नाश करऽवला, स्वास्थ्यवर्द्धक, रोगनाशक, दीर्घ जीवन ओ

अमरत्व देबऽवला, धनार्जनक योग्यता बढ़बऽवला आध्यात्मिक प्रकाश, सद्विचार प्रकट करऽवला कहल गेल अछि ।

मुदा सोमलता वैदिके कालमे अप्राप्य होबऽ लागल । शनैः शनै एकर प्रचार समाप्त भऽ गेल । पश्चात् आयुर्वैदिक ग्रन्थमे जीवनशक्ति प्रदान करऽवला चौबीस लताकेँ सोमलता नाम दऽ देल गेल तथा एकरो गुण पूर्वक सोम जकाँ वर्णित भेल ।[12]

दोसर प्रकारक पेयमे **सुरा** सेहो अबैत छल । सुराकेँ नीक नहि मानल जाइत छल । यज्ञमे सोमक प्रधानता छलैक मुदा सुरा त्याज्य छल । सोमकेँ सत् ओ सुराकेँ असत् कहल जाइत छलैक ।[13]

वैदिक युगमे दुइ प्रकारक भोजनक प्रचार छल- 1. सामिष 2. निरामिष

मांस युक्त भोजनकेँ सामिष ओ मांस विरहित भोजनकेँ निरामिष कहल जाइत छल ।

उपनिषद् कालमे आबि कऽ यज्ञकर्म द्वारा प्राप्तव्य स्वर्ग ओ मोक्षक स्थान तप ओ तत्त्वज्ञान लऽ लेलक । एहि काल धरि समाजमे आश्रम धर्मक स्थापना भऽ गेल छल आ मुनिलोकनिक संख्या आ प्रभाव समाजपर विशेष भऽ गेल छल । एहि कालमे आबि मांस-भक्षणक विषयमे दृष्टिकोणमे किछु परिवर्त्तन देखल जाइछ । स्वास्थ्य ओ स्वादक दृष्टिएँ प्रशंसित होइतो सात्त्विकताक दृष्टिएँ मांसकेँ हेय रूपमे देखल जाय लागल । तथापि वेदक आप्त वचन होयबाक कारण याज्ञिक हिंसाक स्पष्ट विरोध ने उपनिषद्मे भऽ सकल ने स्मृतिएमे ।

मनुस्मृतिमे ब्राह्मणोकेँ पशुपक्षीक वधक अनुमति देल गेल अछि जे यज्ञसम्पादनक हेतु हो ।[14] यद्यपि मनुस्मृति मांस भोजनक पक्षमे नहि अछि, कारण बिनु प्राणी हिंसा मांस नहि भेटैछ । आ हिंसा कयने स्वर्ग असम्भव तेँ मांस नहि खयबाक चाही[15] मुदा देवता ओ पितरकेँ अर्पित कयल मांस खायल जा सकैछ ।[16] तहिना छान्दोग्योपनिषद्मे सभ प्राणीक प्रति अहिंसा भाव देखाओल गेल अछि मुदा तीर्थ (यज्ञ)केँ छोड़ि कऽ ।[17] एहि तरहेँ स्मृति, उपनिषद्मे पूर्ण अनुमति नहि, तँ कतहु मांसभक्षणपर पूर्णतः प्रतिबन्धो नहि लगाओल गेल ।

पौराणिक युगमे सेहो अधिकांश पुराण मांस भक्षणक पक्षपातीए रहल ।[18] मुदा श्रीमद्भागवत पुराणमे मांस-भक्षणक तीव्र विरोध कयल गेल । भागवत पुराण द्वारा मांस भोजनक निषेधक प्रभाव वैष्णव मतानुयायीपर पड़ल । भागवतमे मृग, ऊंट, गदहा, बानर, मूस, साँप, पक्षीकेँ अपन पुत्रक समान देखबाक हेतु कहल गेल एवं ओकर मांस-भक्षण अपन पुत्रक मांस-भक्षणक सदृश कहल गेल ।[19] धर्म जानऽवला व्यक्ति ने तँ स्वयं मांस खाय आ ने श्राद्धमे पितरकेँ समर्पित करय । मुनि अन्नसँ जते सन्तुष्ट होइत छथि तते

पशुक हिंसासँ नहि। स्कन्दपुराणमे सेहो आयुर्वेदक एहि मतक खण्डन कयल गेल जे मांस खयने लोक पुष्ट ओ दीर्घजीवी होइत अछि। एकरा मांस-लोभी ओ पापात्माक मत कहल गेल। विभिन्न पुराणमे मांस-भक्षणक कारण रौरव नरकक यातना देखाओल गेल आ लोककेँ मांस-भक्षणसँ विरत करबाक प्रयास कयल गेल।[20]

एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे तत्कालीन समाजमे दूटा वर्ग भऽ गेल छल जाहिमे एकटा मांस-भक्षणक पक्षपाती नहि छल।

रामायण कालमे **कुसियार, मधु, लावा, कृष्ण भात, मीठ अन्न** (पोलाव), **सूप**, दही, **खाण्डव** ओ गुड़क बनल वस्तु एके संगे परसल जाइत छल।[21] भोजनक संगहि पायस ओ पेय परसल जाइत छल। मट्ठा, रइता, दूध, चिन्नी सेहो भोजनक अंग छल। भोजनक स्वादक आधारपर **षटरस, मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त** ओ **कषाय** मानल गेल। भोजनक पाँच प्रकार मानल गेल- **भक्ष्य, चर्व्य, चोष्य, लेह्य** ओ **पेय**।

एहि कालमे अनेक प्रकारक सुराक प्रयोग होइत छल जेना- **मैरेय, आसव, शर्करासव, माधविका, पुष्पासव** ओ **फलासव**।[22] **सुरा, वारुणी, सौवीरक** आदि सुराक अन्य भेदोपभेद छल। एहि युगमे आर्य ओ अनार्य सभ सुरापायी भऽ गेल छल।[23] सुरा-ग्रहण करबाक कारणेँ आदित्यकेँ सुर ओ दैत्यकेँ असुर कहल गेलैक।[24] सुरा पीबाक स्थान **पानभूमि** अथवा **आपाक** कहल जाइत छल जतऽ सहचरक संग मनोरंजन करैत समृद्ध लोक अनेक पकवान्नक संग सुरापान करैत छल।[25] ओना रामायणमे सुरापानकेँ निषिद्ध मानल गेल अछि। सुरापानकेँ धर्मार्थकामक नाशक कहल गेल अछि।[26] सुरापायी ब्राह्मण धिक्कारक पात्र होइत छलाह।[27]

महाभारत कालमे स्वादक दृष्टिसँ निरामिष भोजनमे अपूप, अनेक प्रकारक मिठाइ, **शाक, षडव, रसयोग** आदि छल। अन्य खाद्य मूल, फल, शक्कर ओ हरिणक मांस, दूध, घीसँ बनल मधुमिश्रित खीर **कृसर, तिलौदन, शाक** आदि छल। एहि सभक वर्गीकरण **भक्ष्य, हविष्य, चोष्य, पेय, खाद्य** आदि कोटिमे छल। किछु भोज्य पदार्थ आप, कुसियार, शाक, दूधकेँ सड़ा कऽ बनाओल जाइत छल। सातु, खीर, खिच्चड़ि, मलपुआ, मोदक, पूरिक, **शष्कुली, मृद्वीका** आदि अन्य प्रकारक खाद्य सामग्री छल।[28]

गीतामे सात्त्विक, रजोगुणी एवं तमोगुणी व्यक्तिक प्रिय खाद्य ओ तकर गुणक वर्णन भेटैछ। रसयुक्त, स्निग्ध, स्थिर ओ आह्लादक आहार सात्त्विक वृत्तिक मनुष्यकेँ प्रिय होइत छनि जाहिसँ आयु, सात्त्विक प्रवृत्ति, बल, आरोग्य, सुख ओ प्रीतिक वाढ़ि होइछ। कड़ू, खट्टा, नोनगर, गर्म ओ तीत, रुक्ष, दाहक भोजन राक्षसी प्रवृत्तिक लोककेँ प्रिय होइत छनि जे दुख ओ शोक उत्पन्न करैछ। तामसी व्यक्तिकेँ बासि, रसहीन, दुर्गन्ध युक्त, ऐंठ ओ अपवित्र भोजन प्रिय होइत छनि।[29]

एहिसँ स्पष्ट अछि जे भोजनक स्वाद स्वास्थ्यक अतिरिक्त सात्त्विकताक अभिवृद्धिक हेतु सेहो चुनल जाइत छल।

वेदकालीन समाजमे सहभोजक परम्पराक रूपरेखा देवता लोकनिक यज्ञमे एकत्र भऽ हवि ग्रहण करबामे भेटैत अछि। सहभोज ओ सहपानकेँ मैत्री भावक प्रतिष्ठापक कहल गेल अछि।[30]

महाभारतमे युधिष्ठिरक राजसूय यज्ञक अवसरपर ब्राह्मण लोकनिकेँ जे सहभोज भेल छल, ओहिमे **'दीयतां दीयतां भुज्यताम् भुज्यताम्'** क कोलाहल होइत छल। एहिसँ निश्चित अछि जे खायवला ओ खोआबऽवला दुनू सहभोजक आनन्द लैत छलाह।[31] मद्यपान प्रचलित छल मुदा नीक नहि मानल जाइत छल। पेय पदार्थक प्रचलन सेहो भऽ गेल छल।[32]

वैद्यक ग्रन्थमे तत्कालीन पाकविधिक विश्लेषण सेहो भेटैत अछि। चाउरकेँ मांस, शाक, तेल, घी, मज्जा, फलक संगे रान्हल जाइत छल। उड़ीद, तिल, मूंगक संगे भात बनाओल जाइत छल। **कुल्माष** बनयबाक हेतु जओक चिक्कस इनहोर पानिमे दऽ रोटी जकाँ पकाओल जाइत छल। **शष्कुली** आइकाल्हुक कचौड़ी जकाँ होइत छल। चाउरक चिक्कससँ **पूप** (पूआ) ओ **पुपलिका** (टिकड़ी) बनाओल जाइत छल। मांससँ हड्डी निकालि ओकरा उसीनि कऽ शिलापर पीसि पिप्पली, मरीच, गुड़, घी, मिला कऽ रान्हल जाइत छल।

दहीसँ **रसाला** बनाओल जाइत छल। दही गुड़क संगे खायल जाइत छल। भोजनमे दाख, खजूर, कोल, बैर, मधु तथा गुड़ मिलाओल जाइत छल। काँच आमकेँ भूजि ओहिमे चीनी, तेल, सोंठि, आद मिला कऽ **रागषाडव** बनाओल जाइत छल। आम ओ औराक चटनी बनैत छल। तेलमे तिलक तेल प्रशस्त छल। भोज्य पदार्थ बनयबामे घी, सरिसो, चिरोंजी, तीसी, कुसुम्भ, मज्जा, वसा, सोंठि, मरीच, हींग, नोन काजमे अबैत छल। कारी जीर, मेथी, जमाइन, धनी आदि रसायन उपयोगमे अबैत छल।[33]

भोजनमे फलक प्रमुख स्थान छल। आम, दाड़िम (अनार), **बदर, सिवितिका** (सेप), **कपित्थ** (कऽथ), **मातुलिंग** (नेबो), **पियाल** (चिरौंजी), **लकुच, वड़हर, पनस, कदम्ब, नारंगी, इमली, गुल्लरि, जामुन, ताल,** नारियर, केरा, खजूर, बदाम, अक्षोट (अखरोट), पिस्ता, जायफल, लवंग आदिक प्रयोग होइत छल।[34]

मुखशुद्धिक रूपमे पान, सुपारी, लौंग, कपूर, इलायचीक प्रयोग होइत छल।

पाणिनि कालमे भोजनकेँ दू भागमे विभाजित कयल गेल। भोज्य ओ भक्ष्य। भोज्यमे ठोस ओ तरल दूनू पदार्थ अबैत छल आ भक्ष्यमे दाँतसँ चिबा कऽ खायवला भोजन मात्र। एहि समय मिश्रीकरणक प्रक्रिया वर्तमान् छल। गुड़ आ धान (चाउर)केँ पानि

कऽ एकटा भोज्य सामग्री बनैत छल जकरा **गुड़धानी** कहल जाइत छल। ऐच्छिक रूपसँ कोनो वस्तु मिलयबाक प्रक्रिया **संसृष्टीकरण** कहल जाइत छल। दही मिलाओल वस्तु **दधिक** मेरचाइ मिलाओल **मारीचिक**, आद मिलाओल **शार्ङ्गवेरिक**, पिपरि मिलाओल **पैप्पलिक** कहल जाइत छल। अपूप अनेक विधिसँ बनैत छल जेना- **भ्राष्ट्र अपूप**, **कालशामपूप**, **कौम्भअपूप** आदि।

भोजनकेँ निम्नलिखित पाँच वर्गमे विभाजित कयल गेल अछि– 1. **धान्य** 2. **कृतान्न** 3. **मधुरपदार्थ** 4. **गव्य** 5. **फल–कालशाक**।

धान्यमे **शालि**, अगहनी धानक वर्णन अछि। साओन भादवमे उपजऽवला धान **व्रीहि** कहबैत छल। उत्तम कोटिक व्रीहि **महाव्रीहि** कहबैत छल। एकर अतिरिक्त **यवक**, **हायन**, **षष्टिका**, **नीवार** आदि धानक वर्णन भेटैछ। दालिमे मूंग, माष, कुरथीक प्रयोग होइत छल। अन्य धान्यमे **जौ**, **यवानी**, **अणु**, **गवेधुका**, **कसेई** आदिक वर्णन अछि।

कृतान्नमे ओदन प्रमुख छल। ई एखनुक भात छल। ई ओहि कालक प्रिय भोजन छल। पानिमे उसिनल शुद्ध चाउर **उदकौदन** कहल जाइत छल।

जओक लपसी **यवागु** कहल जाइत छल। जओकेँ उक्खरि-समाठसँ कूटि भुस्सी फराक कऽ पानिमे औँटि दूध-शक्कर मिला कऽ **यावक** नामक खाद्य पदार्थ बनाओल जाइत छल। **पिष्टक** सेहो प्रचलित खाद्ये छल। घी, गुड़, दूध ओ गहूमक चिक्करसँ बनल भोजन **संयाव** कहल जाइत छल। जओ-गहूमक बालिकेँ आगिमे भूजि कूटि गुड़ मिला कऽ **हाबुस** बनैत छल। पानिमे घोरि कऽ खायल सक्तु **उदसक्त** अथवा **उदकसावक्त** कहल जाइत छल। दहीमे सेहो सतुआ फेंटि खायल जाइत छल। भूजल धानक सातु **मन्थ** कहल जाइत छल। **कुल्माष** एकटा गरिष्ठ भोजन छल। **वटक** खयबाक प्रथा छल। तिल ओ गुड़केँ कूटि कऽ **पलल** नामक मधुर बनैत छल। आटा ओ घीकेँ भूजि शक्कर मिला कऽ चूर्ण बनाओल जाइत छल तथा चूर्ण भरि कऽ **चूर्ण अपूप** सेहो बनैत छल। मधुक उपयोग सेहो होइत छल। कुसियारक खेती होइत छल। कुसियारक रससँ **फणित** (राव) बनैत छल। रावसँ शक्कर बनैत छल।

दूधसँ बनल वस्तु **गव्य** अथवा **पयस्य** कहल जाइत छल। दूध, दही, मट्ठाक उपयोग होइत छल। पहिल दिन दूधकेँ मथि निकालल नेनु **फाण्ट** कहल जाइत छल। दोसर दिन मथि निकालल नेनु **हैयङ्गवीन** कहल जाइत छल। मट्ठाकेँ **मथित** कहल जाइत छल। भोजनमे शाकक उपयोग होइत छल। फलमे मात्र **आम** ओ **जामुन**क नाम आयल अछि।

पेयक रूपमे नव प्रकारक मद्यमे **मैरेय** ओ **कापिशायन** शब्दक प्रयोग भेल अछि। अनेक प्रकारक कषाय उत्तेजक पेय रूपमे व्यवहृत छल।

पतञ्जलि कालमे **षष्ठिक** नामक साठि दिनमे तैयार होअऽवला धान उपजैत छल। सम्प्रति ई **साठी धान** कहल जाइछ। **तण्डुल** भारतक मुख्य भोजन छल। रान्हल चाउरकेँ **ओदन** कहल जाइत छल। ओदनकेँ **भक्त** सेहो कहल जाइत छल। **ओदन** अनेक प्रकारक चाउरसँ बनैत छल। ओ दू प्रकारसँ बनैत छल। **मृदु ओदनमे** गुड़ अथवा शक्कर मिलाओल जाइत छल। **विशदओदनमे** घी अथवा दूध दऽ देल जाइत छल जाहिसँ दाना फरहर भऽ जाइत छलैक। जओसँ **यवागु** बनैत छल जे व्रतकालमे सेहो प्रयुक्त होइत छल। यवागु नोनगर बनैत छल। यवागुमे अधिक दूध मिला देने **पयस्कल्पा** अथवा **बहुपया** कहल जाइत छल। **आमिक्षा** नामक पेय काँच दूधमे दही मिला कऽ बनाओल जाइत छल। फलमे **दाड़िम**, **दाख**, **बिम्ब**, **अंगूर**, **बैर** आदि भोजनक अंग छल। मांस भोजनक प्रमुख अंग छल। **माछ**, **परबा** आदि खाद्य छल। **मधु** मुख्य पेय छल। भोज्य ओ पेय पदार्थ पाँच भागमे बाँटल छल- **भोज्य**, **भक्ष्य**, **व्यञ्जन**, उपसिक्त ओ **संस्कृत सुरापान** वर्णित छल।

" परवर्ती बौद्ध ओ जैन संस्कृतिमे अहिंसाक प्रधान रूपसँ प्रतिपादन भेल। अहिंसाक सिद्धान्तक अनुसार कोनो प्राणीक वध नहि करबाक चाही। एहि दूनू संस्कृतिमे अनुयायी गृहस्थक मांस भोजनपर पूर्ण प्रतिबन्ध लागि गेल। अहिंसाक संग जाहि दयाभावक प्रतिष्ठा भेल ओहिमे मांस-भोजन सर्वथा त्याज्य बूझल गेल।[35]

जैन साहित्यमे चारि प्रकारक भोजनक उल्लेख भेटैत अछि- **अशन**, **पान**, **खाद्य** आओर **स्वाद्य**। भोज्य पदार्थमे **दूध**, **दही**, **मक्खन**, **घी**, **तेल**, **मधु**, **मदिरा**, **गुड़**, **मांस पक्वान्न** ओ **गाहिधर्गशष्कुली** (लूची), **राब** (फाणिउ), भूजल गहूमसँ बनल पदार्थ (पूय) और **श्रीखण्ड** (शिखरिणी)क नाम भेटैत अछि। **मोदक** प्रिय खाद्य पदार्थ छल। नव चाउरकेँ दूधमे दऽ कऽ **खीर** रान्हल जाइत छल। खीरमे **घी** आओर **मधु** मिला कऽ ओकरा स्वादिष्ट बनाओल जाइत छल। नोनक अनेक प्रकारक उल्लेख भेटैत अछि- **सौंपर्चल**, **सैन्धव**, **लवण**, **रोम** (खानसँ बहार कयल), **समुद्र**, **पोसुखार** (माटिसँ बनाओल) आओर **कालानून** (कालालोण)। जाहि देशमे नोन उपलब्ध नहि छल ओतऽ क्षारभूमिक माटि (ऊस) कार्यमे आनल जाइत छल।

एकर अतिरिक्त **ओदन**, **कुल्मष** आओर **सातुक** सेहो उल्लेख कयल गेल अछि। निम्नलिखित अठारह प्रकारक व्यञ्जनक नाम भेटैत अछि- **सूप**, **ओदन** (चाउर), **यव**, तीन प्रकारक मांस (जलचर) नभचर आओर थलचर जीवक), **गोरस**, **झूस** (मूंग आदिक रस), भक्ष्य (खण्डखाद्य) जाहिमे **मिश्री**क उपयोग बेसी कयल गेल हो, **गुललावठिया** (गुजरातीमे गोलपापड़ी), **मूलफल**, **हरयिग** (जीर आदि), **शाक रसालू** (राजाक योग्य बनाओल भोजन), **पान** (मदिरा), **पानीय** (पानि), **पानक** (द्राक्षासव), **शाक**, **दहिबाड़ा** आदि।

अन्य खाद्य पदार्थमे **गुड़** आओर **घीसँ** पूर्ण **रोट्टगर** (बड़की रोटी), पेय

(पीयायोग्य मांड़, रस आदि), **हविपूत** अथवा **घृतपूर्ण** (घयपुरण-हिन्दीमे), **पालंगमाहुरय** (आम वा नेबोक रससँ बनाओल मीठ शरबत), **सीह केसर**, **मोरण्डक**, **गुलपाणिय** (तिलक बनल मिठाइ), **भंडक** (गुड़ भरि कऽ बनाओल रोटी), **पूरंपूरी**, **घी**, **इद्दगा** (सेवइ), आओर **पापड़** (पप्पडिम), **बड़**, **पूआ** आदिक उल्लेख भेटैत अछि ।

कल्याण (कल्लणग) चक्रवर्तिक उत्तेजक भोजन होइत छल । **आटडिया** एक खास प्रकारक मिष्टान्न होइत छल ।

विवाहक पश्चात् वरक घरमे वधूकेँ प्रवेश कयलापर कयल जायवला भोजनकेँ **आहेणग** तथा अपन नैहरसँ वधूद्वारा आनल भोजनकेँ **पहेणग** कहल जाइत छल । श्राद्ध आदिक समय मृतक भोजनकेँ **हिंगोल** कहैत छल । सरसम्बन्धीकेँ एकत्र कऽ कराओल जाय वला भोजनकेँ **संभेल** कहैत छल । **पुलाक** एक विशेष प्रकारक भोजन छल । **गुटिका** (गुलिया) कसाइन झाड़सँ तैयार होइत छल ।[16]

भारतक स्वर्णयुग गुप्तकालीन भोजन परम्पराक सम्बन्धमे बहुविध ज्ञान कालिदासक साहित्यसँ प्राप्त होइछ । कालिदासक समयमे सेहो कात्यायनक समय जकाँ पञ्च विध आहार व्यवस्था छल । कालिदास यद्यपि छोट-छोट वस्तुक वर्णन नहि कयलनि अछि । मुदा **जओ**, **चाउर**, **तिल**, आदि अन्न, **दूध**, **दही**, **मक्खन**, **मधु**, **गुड़** ओ **मोदक** **मत्स्यंडिका** आदि मिठाइक परिचय देलनि अछि ।

भनसाघरमे पाँचो प्रकारक पकमान देखने हमर उदासी दूर भऽ जायत[37] विदूषकक एहि कथनसँ स्पष्ट अछि जे तत्कालीन मनुष्य खयबा-पीबामे सौखीन छलाह ।

अन्नमे मुख्यत: जओ, चाउर ओ तिलक वर्णन भेल अछि । मुख्य अन्न गहूमक कतहु संकेत नहि अछि जे वर्णित प्रदेशमे ओकर उत्पत्ति नहि होयबाक कारणेँ भऽ सकैछ । चाउरमे **शालि**, **नीवार**, **कलम**, **श्यामा** आदि चाउरक वर्णन भेटैछ । दालिक वर्णन नहि अछि मुदा दालिक प्रयोग अवश्य ओहि समयमे होइत छल होयत ।[38]

कालिदासक समयमे दूध-दही ओ मक्खनक प्रचार खूब छल । रघुवंशमे गो-पूजाक वर्णन अछि । दूधक संग एहिसँ निर्मित-वस्तु खीरक[39] वर्णन सेहो भेटैछ । मक्खनक हेतु **नवनीत** ओ **हैयंगवीन** शब्द भेटैत अछि । दहीसँ **शिखरिणी** खाद्य बनैत छल । वैवाहिक अवसर ओ अतिथिक स्वागतमे मधु, चाउर ओ दूधिक **मधुपर्क** कयल जाइत छल । ग्रन्थमे कुसियारक प्रसंग बहुधा भेटैत अछि । एहिसँ गुड़ ओ शक्कर बनैत छल । गुड़सँ गुड़विकार बनाओल जाइत छल । मालविकाग्नि मित्रमे **मत्स्यंडिका**[40] शब्दक प्रयोग भेल अछि । ई विशेष प्रकारक चीनीक लड्डू छल जकर आकार माछक अंडा सन होइत छल होयतैक[41] । मोदक सेहो मिष्टान्न छल । कालिदासक कालमे माछ-मांस भोजनक प्रचार छल ।

परवर्ती मुस्लिम संस्कृतिक विकासक संग भारतीय भोजनक पारम्परिक स्वरूपमे यद्यपि कोनो खास अन्तर नहि आयल तथापि मदिरादिक पेय ओ मांसाहार अपेक्षाकृत निषिद्धाहार नहि रहि सकल । ब्रिटिशकालमे सेहो भारतीय भोजनक पारम्परिकता यथावत् रहल । मुदा सांस्कृतिक आदानक कारणेँ वृहत व्यावहारिक परिवर्तन भेल जे आधुनिक भारतीय समाजक भोजन विन्यासकेँ प्रभावित करैत रहल अछि ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका- रामजीउपाध्याय, देवभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966, पृ.-783
2. वेदकालीन समाज-डा. शिवदत्तज्ञानी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 1, 1967, पृ.-21
3. ऋग्वेद-1 / 5 / 9
4. तत्रैव,- 1 / 43 / 7
5. तत्रैव, 1 / 46 / 6
6. तत्रैव- 8 / 77 / 10
7. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका- पृ.-791
8. वेदकालीन समाज, पृ.-44
9. ऋग्वेद- 8 / 43 / 11; 10 / 27 / 2
10. छान्दोग्योपनिषद्- 6/7/1/ आपोमय: प्राण: ॥
11. ऋग्वेद- 5/19/4/ प्रियं दुग्धं न: काम्यम् ।
12. सुश्रुत संहिता-चिकित्सस्थान, अध्याय- 29
13. ऋग्वेद-7 / 104 / 12
14. मनुस्मृति- 5 / 22 / 2; 5 / 22 / 42
15. तत्रैव- 5 / 48 / 52
16. तत्रैव- 5 / 48 / 52
17. छान्दोग्योपनिषद्- 8 / 15 / 1
18. विष्णुपुराण- 3 / 16, वायुपुराण- अध्याय 83, अग्निपुराण- 16 / 30 / 32
19. श्रीमद्भागवत- स्कन्ध 7 / अध्याय 14 / श्लोक 9
20. तत्रैव, स्कन्ध 7 / अध्याय 15 / श्लोक 7
21. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, पृ.-793 ।
22. रामायण -5 / 11 / 5- 36 ।
23. तत्रैव-1 / 53 2; 2 / 91 / 15; 6 / 12 / 40; 3 / 42 / 45
24. तत्रैव- 4 / 30 / 79; 6 / 12 / 40
25. तत्रैव- 1 / 45 / 36-38
26. तत्रैव- 4 / 33 / 46
27. तत्रैव- 2 / 12 / 79
28. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, पृ.-193
29. भगवद्गीता- अध्याय 17 श्लोक 8-10
30. अथर्ववेद- 3 / 30 / 16
31. महाभारत-वनपर्व- 222 / 40
32. महाभारत, सभापर्व- 5 / 56
33. चरकसूत्रस्थान- 27 / 265-272
34. सुश्रुतसंहिता-अध्याय-46
35. प्राचीन भारतीय साहित्यमे भारतीय संस्कृति, पृ०-784
36. जैन आगम साहित्यमे भारतीय समाज -डा. जगदीशचन्द्रजैन, चौखम्बा, वाराणसी, 1965, पृ.-193-201
37. विक्रमोर्वशीय- अंक-2
38. कवि कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति-डा. गायत्रीवर्मा-हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी-1967, पृ.-153 ।
39. रघुवंश- 10 / 51
40. मालविकाग्निमित्र-पृ०-296
41. इण्डिया इन कालिदास, पृ. 193

द्वितीय अध्याय

मैथिल भोजनक परम्परा

भोजनक भारतीय परम्परा आ मैथिल परम्पराक आधारभूत तत्त्व एके अछि तथापि मैथिल भोजन परम्पराक किछु खास विशिष्टता रहल अछि जे एहि ठामक भौगोलिक ओ सांस्कृतिक पर्यावरणक अनुरूप अछि। मिथिला क्षेत्रक प्रधान उपजा थिक धान तेँ **धान** प्रधान खाद्यक रूपमे व्यवहृत अछि। धानसँ मुख्य रूपेँ भात ओ चूड़ा तैयार कयल जाइत अछि। एहि ठामक लोक भातसँ ततेक संपृक्त अछि जे दूनू साँझ आ अल्पाहारो पर्यन्तमे भाते ग्रहण करबामे कठिनताक अनुभव नहि करैछ। भात अत्यन्त प्रिय भोजनक रूपमे एतऽ प्रचलित अछि। अन्नक राजाक रूपमे धानकेँ प्रतिष्ठित बूझल जाइत अछि। धानसँ यावन्तो खाद्य पदार्थ तैयार होइछ ताहिमे चाउरक संगहि चूड़ाक महत्त्व मिथिला मध्य बड़ बेसी। **दहीक** योगसँ चूड़ा ग्रहण करबाक परिपाटी एहि ठाम अछि आ एहि गुरुपाकी भोजनकेँ लोक प्रशस्त मानैत रहल अछि। चूड़ा अल्पाहार ओ सम्पूर्ण आहार दुहुक हेतु प्रशस्त बूझल जाइत रहल अछि। **गहूम** मिथिलामे प्रशस्त नहि मानल जाइत रहल अछि। **कदन्नमे मड़ुआ** ओ **मकइ** अबैत अछि आ एहि दूहू अन्नक रोटी मध्य निम्नवर्गीय मैथिल समाजमे रुचिपूर्वक ग्रहण करबाक परिपाटी रहल अछि।

दालिमे एहि ठाम राहड़िक दालिकेँ अधिक प्रशस्त मानल जाइत रहल अछि। बदाम, कुर्थी, उड़ीद, खेसारी, मसुरी ओ खेढ़हीक दालि लोक खाइत रहल अछि। भातक संग जतऽ राहड़िक दालिक प्रशस्ति अछि, ओतहि **रोटीक** संग बदामक दालिक। तहिना **खिच्चड़िमे उड़ीदक** दालिक योग नीक मानल जाइत अछि। खेढ़हीक दालि पथ्यक हेतु प्रशस्त बूझल जाइत अछि। कुर्थी ओ खेसारी सामान्य आर्थिक वर्गक उपयोगमे विशेषतया आनल जाइछ। खेसाड़ीकेँ रोगाह मानल जाइछ। मसुरीकेँ अशुद्ध बूझल जाइत अछि।

मिथिलाक समाजमे शनि दिन कऽ **खिच्चड़ि** खयबाक प्रथा देखल जाइत अछि। ई चाउर-दालिक मिश्रित पाकरूपमे तैयार कयल जाइछ। भात बनला उत्तर जे

अतिरिक्त जलीय पदार्थ बहराइत छैक से **माँड़** कहल जाइछ। माँड़ पीबाक ओ माँड़-भात खयबाक प्रचलन समाजमे देखल जाइछ।

दालिक स्थानमे मिथिला-समाजमे **अदौड़ी, अरिकोंछ, ओल,** आदिक **झोर, बड़ी, आलू, पटुआसाग, कुम्हरौड़ी, भाँटा** आदिक झोर सेहो अत्यन्त प्रिय ओ रुचिगर बूझल जाइत अछि। झोरमे **आमिल** देबाक परिपाटी रहल अछि। आमक पर्याप्तिक कारणेँ एहिसँ बनल आमिल पदार्थक वर्षोभरि कोनो घरमे अभाव नहि रहैत अछि।

मिथिलाक धार्मिक आचारमे अन्न-दानक अत्यधिक महत्त्व देखल जाइछ। दैनन्दिन व्यवहारमे लोक भिखारि आदिकेँ तँ अन्नदान करितहि छथि। संगहि अवसर विशेष ओ यज्ञादिमे **सतञ्जा** आदिक दान कयल जाइछ।

एतावता कहल जा सकैछ जे मैथिल भोजन परम्पराक एकटा विशिष्ट विधान रहल अछि जे भारतीय चिन्तनधाराक अनुकूल होइतो किछु अर्थमे अत्यन्त पृथक अछि जे एहि ठामक भौगोलिक पर्यावरणपर आधृत रहल अछि।

फलक रूपमे **आम** मिथिलामे पर्याप्त पाओल जाइत अछि आ ई समइया खाद्य फलक रूपमे पर्याप्त प्रयोग कयल जाइत रहल अछि। एकर **अमओट** मिथिलामे प्रसिद्ध रहल अछि। आमक अतिरिक्त **लताम, जामुन, कटहर** आदि फल मिथिलाक जनजीवनक आनुषंगिक आहार रहल अछि। विभिन्न प्रकारक जलीय फल ओ **कन्द- भेंट, सारुख, कढ़हर** आदि सेहो खाद्य रहल अछि। **पानक** व्यवहार मिथिलामे परम्परासँ प्रचलित रहल अछि। समस्त शुभ अवसरपर पानक व्यवहार होइत अछि।

तीमनक दुइ गोट प्रभेद मिथिलामे प्रचलित रहल अछि- **तरुआ** ओ **लटपट**। **तरुआ** तेलमे छानल जाइत अछि आ **लटपट तीमन** जलक योगसँ तैयार कयल जाइत अछि। तीमनमे आलू बरहमसिया होइत अछि तेँ अत्यधिक प्रशस्त रहल अछि। आलूक अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक लत्तीसँ प्राप्त तीमनक एतऽ विशिष्ट महत्त्व अछि। ई तीमन-तरकारी सभ एहि ठामक घरैया उत्पादन होयबाक कारण अत्यन्त लोकप्रिय रहल अछि जेना-**सजमनि, कदीमा,** सीम इत्यादि। **सागक** महत्त्व मिथिलामे बड़बेसी। **पटुआक** साग अत्यन्त प्रशस्त अछि मुदा **बथुआक** सागो सहज उपलब्ध रहने लोकप्रिय अछि। **बूट** ओ **खेसारीक** साग सेहो खूब प्रचलित अछि। एहि दूनू सागसँ **बिड़िया** बना कऽ आलूक संग रान्हि कऽ खयबाक परिपाटी अछि। सागकेँ लज्जानिवारक बूझल जाइत अछि। एकरा उच्छिष्ट कऽ दूरि करबकेँ अधलाह मानल जाइत छैक। सागक अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक फूल ओ पातसँ सेहो तीमन-तरकारी बनाओल जाइछ। **तिलकोरक** पातक तरुआ मिथिला संस्कृतिक प्रतीक बूझल जाइत रहल अछि।

मैथिल भोजन परम्परामे **अँचार** ओ **चटनीक** विशेष महत्त्व अछि। मिथिलाक

प्रसिद्ध फल आमसँ अँचार बनाओल जाइत रहल अछि । आ मैथिल भोजन विन्यासमे एहि अँचारक अनिवार्यतें जकाँ रहल अछि । **ओल, कौल, मिरचाइ, अमरा, करौना, कटहर** आदिक अँचार सेहो प्रचलित रहल अछि । नेबोक निमकी पाचकक रूपमे व्यवहृत होइत अछि । **धात्री, आम, तेतड़ि** आदिक गुद्दावला अंशकेँ थकुचिकेँ **नोन ओ मसल्ला** मिला कऽ **चटनी** तैयार कयल जाइछ ।

मिथिला भूक्षेत्रमे गाय-महींस पर्याप्त रहबाक कारणेँ एतऽ दूध पर्याप्त भेटैत रहल अछि । तेँ दूध ओ घी एहि ठामक खाद्य पदार्थमे प्रमुख रूपेँ व्यवहृत रहल अछि ।

एहि ठाम सामान्यतया तीन बेर भोजन करबाक परिपाटी अछि ।

प्रातःकाल **चूड़ादहीक** अल्पाहार लेल जाइछ । गरीब परिवारक लोक एहि समयमे रातुक बचल वस्तु खा लेल करैत छथि । पूर्वदिनक तैयार एहि भोजन सामग्री तथा एहि अल्पाहारकेँ **बाइस/बसिया** कहल जाइछ । दिनक समय मुख्य आहारकेँ **कलउ** आ संध्या कालीन अल्पाहारकेँ **बेरहट** कहल जाइत रहल अछि । **कलउ** बेरमे भात-दालि ओ तरकारी ग्रहण करबाक प्रचलन अछि । भोजन ग्रहणसँ पूर्व **डाँओ-पीढ़ी** कयल जयबाक विधान अछि । भोजन ग्रहणमे नैष्ठिकता राखल जाइत अछि । भात ओ दालिमे भोजनपूर्व **घृत** देबाक विधान रहल अछि । भोजनान्तमे **दही** खयबाक विधान अछि । रात्रिकालमे सेहो कलउए जकाँ भोजन करबाक परिपाटी अछि । **चाउर, चूड़ा, बदाम, मकइ** आदिक भूजाक प्रति एहि ठामक जनसामान्यक रुचि रहैत अछि ।

माछ मिथिलाक प्रसिद्ध खाद्य अछि । नदीमातृक देश होयबाक कारण, बाढ़ि ग्रस्त क्षेत्र होयबाक कारण तथा जलाशय ओ पोखरिक बहुलताक कारण एतऽ माछक बहुलता रहल अछि । सामान्यो जनकेँ माछक सुविधा प्राप्त रहैत छैक । माछक भोजन सेहो मिथिलाक संस्कृतिक प्रतीक भऽ गेल अछि । **रोहु** ओ **बोआरी** माछकेँ सर्वाधिक प्रशस्त मानल जाइत अछि । निम्न आर्थिक वर्गमे **डोका, काछु, काँकोड़, अन्हइ** आदि सेहो खाद्य रूपमे व्यवहृत रहल अछि । अनेक वर्गमे **मूसक** मांस खाद्य बूझल जाइत रहल अछि । नशायुक्त पेयक रूपमे ग्रहण करबाक वस्तुमे **भाँग** मिथिलामे शिवक प्रसाद बूझल जाइछ । निम्नवर्गमे **ताड़ी-दारूक** प्रचलन अछि ।

मधुर-मिष्टान्न ओ विविध प्रकारक **पकमान** सेहो परम्परासँ मिथिलामे विशिष्ट अवसर सभपर ग्रहण कयल जाइत रहल अछि । खास कऽ **ठकुआ, पूड़ी** आदि पकमान एवं **पेड़ा, लड्डू, जिलेबी** आदि मिष्टान्न ओ भोजमे **सकरौड़ीक** प्रयोग होइत रहल अछि । **झिल्ली-कचुरी, भटबड़, गुलगुल्ला** आदि एहि ठाम निम्न आर्थिक वर्गक अत्यन्त प्रिय पकमान रहल अछि ।

मिथिलाक भोजन-परम्परामे सहभोजक महत्त्व अत्यधिक छैक । खास कऽ

श्राद्ध, उपनयन आदिक अवसरपर सहभोज होइत अछि । असवर्णमे तँ विवाहोक अवसरपर भोजक परिपाटी अछि । सहभोज टोल, गाम अथवा जवार भरिकेँ देल जाइछ । असवर्णमे समाज भरिक लोककेँ भोज देल जाइछ । सहभोजक सबसँ पैघ विशिष्टता ई अछि जे एहिमे समस्त गृहस्थ सम्बद्ध व्यावसायिक वर्गकेँ अवश्ये समेटि लेल जाइछ । अनेक ठाम तँ **बरहबरना भोज** सेहो होइत अछि जाहिमे विभिन्न वर्णक लोककेँ भोज खुआओल जाइछ ।

मिथिलाक धर्मशास्त्रीय वाङ्मयमे मैथिल भोजन

मिथिलामे सामान्यतः वैदिक ओ स्मृतिविधि-निषेधक अनुसरण भोजनव्यवहारमे होइत रहल अछि । मिथिलाक भोजन विषयक विधि-निषेधक आरम्भिक परिचय **याज्ञवल्क्य स्मृतिमे** ताकल जा सकैत अछि । याज्ञवल्क्य मिथिलावासी छलाह । अतः हुनका द्वारा रचित स्मृतिमे मैथिलत्वक अन्वेषण कयल जा सकैत अछि । परवर्ती कालमे अनेक निबन्धकार सबहिक विविध निबन्ध ग्रन्थ सभमे भोजन सम्बन्धी शब्दावली स्वतः सन्निविष्ट भेल भेटैत अछि । वीरेश्वर, चण्डेश्वर, विद्यापति, रुद्रधर इत्यादिक ग्रन्थ सब एहि दृष्टिजे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जा सकैत अछि । स्थाली पुलाकन्यायेन एकरा सभक अवलोकन उपयोगी सिद्ध भऽ सकैत अछि ।

मध्यकालमे मिथिलामे प्रचलित भोजन सम्बन्धी विभिन्न विधि-व्यवहार एवं ग्राह्य-अग्राह्य भोज्य पदार्थक परिचय ओहि कालमे रचित विविध निबन्ध ग्रन्थ, विभिन्न व्रत ओ पूजापद्धति, वर्षकृत्य, दान सम्बन्धी ग्रन्थमे प्रचुरतया उपलब्ध होइत अछि । एहि ग्रन्थ सभमे उल्लिखित अन्नादि भोज्य सामग्रीसँ मिथिलाक भोजन परम्पराक ओ रुचि-अरुचिक एकटा ऐतिहासिक क्रमसँ परिचय भेटि जाइत अछि ।

विद्यापति कृत **दानवाक्यावलीमे** विभिन्न प्रकारक अन्नदानक उल्लेख अछि । अन्नदानकेँ प्राणदान सदृश मानल जाइत छल । एहि ग्रन्थमे विभिन्न प्रकारक अन्नक गणना दान योग्य अन्नक रूपमे कएल गेल अछि जाहिसँ ई सहजहिं बोद्धव्य अछि जे ई अन्न सभ मिथिलाक प्रसिद्ध खाद्य रहल होयत । सङहि इहो स्पस्ट होइत वे ई अन्न सभ **सुअन्न** मानल जाइत छल तथा एकर उपयोग लोकक हेतु विहित छल । धान प्रमुख दानीय अन्न छल । एकर विभिन्न प्रभेद जेना- **रक्तशालि, सुगन्धशालि, षष्टशालि, व्रीहि, कमला** इत्यादिक उल्लेख **दानवाक्यावलीमे** भेल अछि । **रक्तशालि** लालरंगक धानक प्रभेद छल । **सुगन्धिशालि** आधुनिक **बासमती, तुलसीफूल** आदि **गमकौआ** ओ मेही धानक हेतु प्रयुक्त छल होयत । **कलनाधान** सम्प्रतिक कलमदान वा कलमखोराक नाम छल । **षष्टिशालि** एखनुक **साठीधान** थिक । **व्रीहि** शरद ऋतुमे उत्पन्न होअऽवला अगता धानक प्रभेद छल ।[1]

धानक अतिरिक्त **जओ, गहुम, प्रियङ्गु-कङ्गु-काङ्गनी-काउन, श्यामा-साम,**

माष-उड़ीद, मुद्ग-मूङ-खेरही, कलाय-केलाइ वा केराओ, चणक-चनअ- चना[1] बदाम, बूट, राजमाष-(मटर), सर्षप-सरिसो, तिल आदि सेहो दानीय अन्न छल ।

अन्नक अतिरिक्त भक्ष्य, पक्वान्न सेहो दान करबाक उल्लेख अछि । महाकवि विद्यापति देय भक्ष्यकेँ स्पष्ट करैत भक्ष्य पदसँ **पूआ**, **पूड़ी** इत्यादि अर्थ लेलनि अछि ।[2] सक्कहि ओ भक्ष्य मध्य फल-मूलकेँ सेहो रखलनि अछि । **सतुआ** सेहो दानीय भक्ष्य छल । विभिन्न प्रकारक लेह्य ओ चोष्य पदार्थ जेना- **पिण्डीकृत दूध** (पेड़ा), **आम** आदि, **मधु**, **धृत**, **दूध**, **दही**, **तेल**, **शर्वत**, **शक्कर**, **कुसियारक रस**, **नोन**, **कस्तूरी**, **कर्पूर**, **पान** (**ताम्बूल**) इत्यादि सेहो दान देल जाइत छल ।

शैव सर्वस्वसार प्रमाण भूत पुराण संग्रहमे शिवकेँ **गहूम**, **बूट**, **मटर** (राजमाषा) इत्यादि अन्नकेँ सुसिद्ध कऽ अथवा भूजि कऽ सेहो निवेदित करबाक उल्लेख अछि ।

इष्टदेवकेँ सिद्ध अन्न, व्यञ्जन, घृत संयुक्त नैवेद्य, घृत संयुक्त **पायस**, **साग** ओ **भात** इत्यादि देबाक विधान छल । कहल गेल अछि-

घृत सूपयुतैः सिक्थैः पुण्यं दशगुणोत्तरम् ।
अब्दशं युतेर्ज्ञेयं पुण्यं दश गुणाधिकम् ॥[3]

अर्थात् दालि-भातमे घिउ मिलाकऽ दान कयल जाइत छल । एकर संगहि **मुरइ** सेहो दान कयल जाइत छल । अवश्ये भातक सङ दालि आ दालिमे घिउ दऽ कऽ भोजन करबाक परिपाटी छल तथा मुरइकेँ सेहो उत्तम खाद्य मानल जाइत छल । **खीर**, **शक्करयुक्त दही**, **रशाला**, **हरदियुक्त खिच्चड़ि**; **जओ**, **घिउ**, **मिश्री** ओ **गुड़क** संयोगसँ बनल खाद्यान्न, शर्बत, सुवासितजल, नोनमरीच युक्त आद-गूड़ सेहो प्रसिद्ध खाद्य छल ।

घिउ, तेल अथवा तिलक तेलमे अठारह अन्नक संयोगसँ निर्मित **पिट्ठी** सेहो प्रशस्त मानल जाइत छल । अठारह अन्नमे -**धान**, **साठीधान**, **जओ**, **गहूम**, **चीन**, **तिल**, **काउन**, **देवधान्य**, **कोदो**, **केराव**, **उड़ीद**, **मटर**, **मूङ**, **मसुरी** (मसुराणि), **कुर्थी**, **राहड़ि** (आढ़क), **बूट** ओ **सामकेँ** परिगणित कयल जाइत छल । ई समस्त अन्न मध्यकालीन मिथिलाक खाद्यान्न छल । अन्नक अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक वनस्पति पदार्थक दानक सेहो उल्लेख भेल अछि । व्यञ्जनकेँ **शाक** कहल जाइत छलैक । विभिन्न प्रकारक शाक ओ फलक दानक महत्त्वक व्याख्या दानवाक्यावलीमे भेल अछि, यथा- **सुपारी** (पुङगीफल), **दाख-अङ्गुर**, **जातिफल-जाफर**, **मूल-मुरइ** इत्यादि ।

शैव सर्वस्वसार प्रमाणभूतपुराण संग्रह ग्रन्थमे तँ शिवकेँ चढ़यबा योग्य विभिन्न प्रकारक फल ओ ओकर महात्म्यक वर्णन भेल अछि । अवश्ये ई फल सभ तत्कालीन समाजक प्रसिद्ध, उत्तम खाद्य फल रहल होयत, जेना-पाकल **बेल**, **कपित्थ**, **आम**, **केरा**, **दाड़िम**, **खजूर**, **नारंगी**, **जम्बीरीनेबो**, **तरकुन**, **खिरनी** (**क्षिरीका**), **काँकड़ि**

(**बालुकी**), **करौना** (**करमर्दक**), **बइर** (**वदरी**), **तेतड़ि** (**तिन्तड़ी**), **धातरी** (**आमला**) इत्यादि । पान ओ सुपारी सेहो मुखशुद्धिक रूपमे व्यवहृत होइत छल । ओहि समयमे किछु विशेष प्रकारक खाद्य पदार्थ गर्हित मानल जाइत छल । जेना-**लहसुन**, **पेयाजु** । **गृहस्थ रत्नाकरमे** पेयाजुक लेल **'पराडु'** देशी शब्दक उल्लेख कयल गेल अछि । सम्प्रति ई शब्द लुप्त भऽ गेल अछि । एहिना **'करका'** नामक एकटा खाद्य पदार्थ सेहो वर्जित कहल गेल अछि । रत्नाकरकार एकर देशीशब्द **'कनक्षत्रि'** देने छथि ।[5]

याज्ञवल्क्य स्मृतिमे मांस भक्षणकेँ अत्यन्त निकृष्ट कहल गेल अछि[6] । तथापि विशिष्ट प्रयोजनपर मांसकेँ खाद्य कहल गेल अछि, जेना- जखन मांसक बिना प्राण बाँचब कठिन हो, श्राद्धक अवसरपर, देवताक आहुतिसँ अवशिष्ट, ब्राह्मण भोजनक अथवा देवता-पितरक लेल बनाओल मांसकेँ देवता-पितरक अर्चनाक पश्चात् खाद्य कहल गेल अछि ।[7] मांस त्यागकेँ एहि स्मृतिमे अत्यन्त प्रशंसा भेल अछि तथा कहल गेल अछि जे मांस त्यागी ब्राह्मण अपना घरोमे रहैत मुनि तुल्य होइत अछि ।

परन्तु मध्यकालक मिथिलामे मांस भक्षणक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि । एकरा पाछाँ एहि ठामक धार्मिक ओ सांस्कृतिक परिवेशक आधार छल । एहि ठाम शाक्त ओ शैव मतक प्राबल्यक कारणेँ यज्ञ बलि देल जाइत छल । यज्ञार्थः पशवः सृष्टाः मनुक वचनक अनुसरण मिथिलामे होइत रहल अछि । शिवकेँ साधित मांसक नैवेद्य देबाक विधान छल ।[8] एहिना दुर्गाकेँ सेहो पशुबलि चढ़ाओल जाइत छल तथा ओकर मांसु ग्रहण कयल जाइत छल । खाद्य पशुमे **छागर** (सं.अज), **भेँड़ा**, सिंहरहित **मृग**, जंगलमे शिकार कयल हरिण इत्यादिकेँ राखल गेल अछि । पंचनखप्राणीमे **काछु**, **खरहा**, **शाही** इत्यादिकेँ खाद्य कहल गेल अछि । किन्तु मिथिलाक निबन्ध ग्रन्थमे अनेक जन्तुक मांसक निषेध सेहो कयल गेल अछि, जेना-ऊंट, घोड़ा, हाथी, सिंह, बाघ, गदहा, मूस, बिलाड़ि, सपनौर, ग्रामशूकर, सियार, मृग, भालु इत्यादिक मांस बर्जित श्रेणीमे अछि । एकचरप्राणी अर्थात् सर्पादिक मासु खायब वर्जित छल ।

विना यज्ञक पशुवध अत्यन्त गर्हित मानल जाइत छल । यज्ञ कार्यक अतिरिक्त रोगग्रस्त भऽ गेलापर सेहो मासु खायब अघलाह नहि मानल जाइत छल । चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी ओ पावनिक दिन मासु खायब वर्जित छल । मिथिलामे मासु भक्षण अघलाह तँ नहि मानल जाइत छल मुदा एहि दिस आसक्तिकेँ अवश्य अघलाह मानल जाइत छल । तँ एहिसँ निवृत्तिक प्रयत्न कयल जाइत छल ।

माछ मिथिलामे प्राचीने कालसँ अत्यन्त लोकप्रिय खाद्य रहल अछि । **गृहस्थ रत्नाकरमे** चण्डेश्वर खाद्य ओ अखाद्य माछक विवेचन कयने छथि । तदनुसार मकर, नक्र, सर्पशीर्ष आदि विकृत माछकेँ अखाद्य कहल गेल अछि । एहिना डोड़िया साँप, खयर पक्षी, साँपक सदृश आकृतिक वामी (सं.वर्मिक:) माछकेँ अभक्ष्य मानल जाइत

छल । रत्नाकरकार राजीव (सं.राजीवः) **रहु, सिंहतुण्ड, चिलचिम** (चिलचिमः) **वासु** (वासुरिति) आदि माछकें खाद्य कहलनि अछि ।[9] तहिना याज्ञवल्क्य स्मृतिक अनुसार-**सिंघी, रहु, पाठीन, राजीव** आदि माछ खाद्य कहल गेल अछि ।[10]

चिड़ैक मासु सेहो मिथिलाक प्रचलित खाद्य रहल अछि । मुदा अनेको पक्षीक मासु अखाद्य मानल जाइत छल । खास कऽ मासु पर आश्रित रहनिहार गिद्ध आदि पक्षीक मासु वर्जित छल । तहिना हंस, सुग्गा, मैना, सारस, कठखोधी (सं. काष्टकुट्टकः)क मासु वर्जित छल । कठखोधीक हेतु रत्नाकरमे देशी कठक शब्द भेटैत अछि ।[11] डाहुक (सं०दात्युहः) पक्षीक मासु वर्जित छल[12] । जालपादा-जलवा[13] नामक एक गोट पक्षीक मासु सेहो वर्जित छल । तहिना बगुला, टिटही, रतिचर, तित्तिर आदि पक्षी अखाद्यक श्रेणीमे राखल गेल छल । खास कऽ नऽहसँ तोड़ि भोजन करऽवला पक्षीक मासु, गर्म ओ शुष्क मांसु अखाद्य छल । गृहस्थरत्नाकरमे कोटा, कोकालक, कुन, करास, धनक्षुआ, चेतक, कङ्कारी, बादुर, उल्लू, खटमोरा, बटइ आदि विभिन्न पक्षीक नाम अखाद्य पक्षीक मध्य गनाओल गेल अछि ।

भोजन करबासँ पूर्व पैर धोयब आवश्यक छल । एहि सम्बन्धमे निबन्धकार चण्डेश्वरक गृहस्थ रत्नाकरमे यमस्मृतिक उल्लेख करैत कहल गेल अछि-

आर्द्रपादस्तु भुञ्जानः शतंवर्षाणि जीवति[14]

निबन्धकार लोकनि किछु विशिष्ट परिस्थितिमे भोजनक वर्जना कयने छथि जेना- लोह पात्रमे भोजन करब, फूटल वासनमे भोजन करब, शयनक आसनपर तथा दक्षिणाभिमुख भऽ भोजन करब । तहिना अर्द्धरात्रिक पश्चात्, एकेटा वस्त्र पहिरि कऽ, दाँतसँ काटि कऽ, बिना आसनक, बिना ठाँओं कयल स्थानपर, अजीर्ण रहलापर अत्यन्त बुभुक्षित रहलापर, हाथमे लऽ कऽ, मध्याह्न आओर संध्याकालमे पलङ्गपर बैसि कऽ भोजन करब वर्जित छल । अन्नकें ऐंठ कऽ छोड़ब अधलाह मानल जाइत छल ।

भोजनसँ पूर्व नैवेद्य देबाक विधान छल-

आत्मार्थं भोजनं यस्य रत्यर्थं यस्य मैथुनम् ।
वृत्त्यर्थं यस्य चाधितिर्निष्फलं तस्य जीवितम् ॥[15]

तेँ पञ्च यज्ञक पश्चाते भोजनकें विहित बूझल जाइत छल ।

धीया-पुता द्वारा साकांक्ष भऽ देखल गेल भोजन, अत्यन्त ऊष्ण भोजन; रातिमे तिलसँ निर्मित भोजन, अत्यन्त ऊष्ण खाद्य तथा सतुआ खायब वर्जित छल । कोविदार, बड़-पीपर एवं सनक साग, भार्याक संग भोजन करब, शून्य घर, भनसा घर एवं मंदिरमे भोजन करब निषिद्ध छल । आँजुर लऽ कऽ पानि पीअब, पसरल समस्त वस्तु उदरस्थ

करब, आसनपर पैर राखि चुक्की-माली भऽ भोजन करब, यात्राक अवधिमे, हँसैत काल, गाममे ककरो मुइलापर भोजन ग्रहण करब, भोज्यान्नकें वाम हाथें छुइब, एहिना माथ तथा अधोभागसँ भोजनमात्रकें छुअब अधलाह मानल जाइत छल । वामा हाथें पानि पीअब सुरापान सदृश बूझल जाइत छल ।

गृहस्थ रत्नाकरमे भोज्य ओ अभोज्य अन्नपर वृहत् विचार भेल अछि । भोजनमे वर्ण विचार सेहो छल । ब्राह्मणक अन्न सदैव ग्राह्य बूझल जाइत छल । क्षत्रियक अन्न सेहो मंगलक अवसरपर ग्राह्य छल । मुदा शूद्रान्न सर्वथा वर्जित छल । तथापि विशिष्ट परिस्थितिमे शूद्रसँ प्राप्त दानक रूपमे प्राप्त अन्नकें ग्राह्य बूझल जाइत छल । एकर अतिरिक्त दास, गोआर, शत्रुमित्र, बटइदार, कुम्हार, नौआ आदिक देल अन्न तँ रन्हलो रहलापर आपत्तिक समयमे ग्राह्य बूझल जाइत छल । बनियाँ एवं शिल्पीक अन्न सेहो ग्राह्य बूझल जाइत छल । शूद्रक देल सतुआ, तेलपक पूआ, दूध, लड्डू इत्यादि ग्राह्य छल । चण्डेश्वर तँ पराशर एवं यमस्मृतिक वचनक उल्लेख कयने छथि जाहिमे ई स्पष्ट अछि जे- शूद्रान्नो ब्राह्मण द्वारा स्पर्श कऽ देला पर भक्ष्यान्न भऽ जाइत अछि ।[16] अवश्ये भोजनक आदान-प्रदानमे शुचि-आचारक बन्धनक विशेष महत्त्व रहैत छल, नहि कि जाति प्रभेदक महत्त्व । सङहि भोज्यान्नपर जे विचार भेल अछि ताहिमे ब्राह्मणेटाक उल्लेखसँ ई स्पष्ट अछि जे भोज्य ओ अभोज्यक विचार ब्राह्मणें धरि सीमित छल । आन वर्गकें वर्जनाक सीमा ततेक कठोर प्रायः नहि छलैक ।

अध्ययन-शून्य ऋत्विक अथवा यजमानक देल अन्न, पुरोहितक अन्न, स्त्री अथवा नपुंसक होमकर्ताक अन्न, शराबी एवं क्रोधी द्वारा देल गेल अन्न तथा पैरसँ छुइल ओ केश, कीड़ासँ युक्त अन्न अग्राह्य बूझल जाइत छल । एहिना भूखल लेल राखल अन्न, वेश्या द्वारा देल अन्न, विद्वान द्वारा निन्दित अन्न, गायक एवं कृपण द्वारा प्रदत्त अन्न, व्यभिचारिणी द्वारा प्रदत्त अन्न, कृतघ्न, जोलहा, चुगिला, नर्तक, विक्रेता, लोहार, निषाद, नटुआ, सोनार, शस्त्र-विक्रेता, शूड़ी, धोबि, नृशंस आदिक अन्न अग्राह्य मानल जाइत छल । परसौतीक हेतु बनल अन्न, अवहेलनापूर्वक देल अन्न, देवपितर आदिकें बिना समर्पण कयने राखल अन्न, विधवाक अन्न, मौगियाहक अन्नकें अग्राह्य बूझल जाइत छल । कुम्हार, चमार, मालि, अभिशप्त, पतित, भ्रूणहन्ता, तेली, लेखक, व्याध, रखैल, ब्रह्मचारी, भनसिया, दण्डाधिकारी, चण्डाल, चिकित्सक आदि व्यवसायीक अन्न अखाद्य मानल जाइत छल । राजा, गुरु, मूर्ख, दुर्वृत, चोर द्वारा प्रदत्त तथा श्रद्धाहीनतासँ दत्त अन्न वर्जित छल । असपिण्डक अनिमन्त्रित रहलापर अन्न अखाद्ये मानल जाइत छल । सपिण्डक ओहि ठाम श्राद्धान्न ग्राह्य छल । देवता-पितर ओ अतिथिकें जतऽ भोजन सामग्री अर्पण नहि होइत छल ओहू स्थानक अन्न अग्राह्य छल । जामाता (जमाय)कें विष्णुएँ मानल जाइत छल तथा हुनको घरमे भोजन करब वर्जित छल । अमावास्या

इत्यादिक अवसरपर परान्न ग्रहण करब तथा अपना घरमे भोजन बनल रहलापर दोसराक घरमे भोजन करब वर्जित छल ।

खाद्य पदार्थक प्रदूषणपर अत्यधिक ध्यान देल जाइत छल । प्रदूषण अनेक प्रकारक कहल गेल अछि, जेना- जातिदुष्ट, क्रियादुष्ट, कालदुष्ट तथा संसर्गाश्रयदुष्ट । जातिदुष्ट एहन विशिष्ट खाद्य छल जे अभक्ष्य मानल जाइत छल । क्रियादुष्ट एहन खाद्य छल जे निर्माण क्रममे अखाद्यक श्रेणीमे आबि जाइत छल । कालदुष्ट समय व्यतीत होयबाक कारणेँ प्रदूषित अन्न छल तथा संसर्गदुष्ट एहन अन्न छल जे सम्पर्कजन्य प्रदूषणक कारणेँ अखाद्यक श्रेणीमे आबि जाइत छल ।

मिथिलावासी भोजनमे शुद्धताक कतेक ध्यान रखैत छलाह से एहि प्रदूषण विवेचनसँ स्पष्ट अछ । खीर, पायस, पूआ इत्यादि निर्माणक दिने धरि खाद्य छल । दधि, गोधूम इत्यादिसँ निर्मित विकृत खाद्यान्न ग्रहणीय नहि मानल जाइत छल । ब्राह्मणक हेतु क्षत्राक (सं.छत्रीक) नामक साग सर्वथा वर्जित छल । ई भूमिपर तथा गाछपर जनमल कोनो साग विशेष रहल होयत जे ताहि समयमे द्विज जातिक अतिरिक्त सामान्य जनमे खाद्य बूझल जाइत छल होयत । सम्भवत: ई साम्प्रतिक गोबरछत्ता भऽ सकैछ । घिउक मैली अर्थात् डाढ़ीकेँ अखाद्य मानल जाइत छल । कुसुम (सं.कौशुम्भ:) नामक साग सेहो अखाद्य मानल जाइत छल । कुम्हड़क (सं.कुष्माण्ड) हेतु देशी कुम्भार[17] शब्द छल । इहो अखाद्ये मानल जाइत छल । कोविदार, बड़ ओ पीपरक साग एवं मुनिगा वर्जित छल । निजी उपयोगक हेतु पायस, पूआ आदिक निर्माण वर्जित छल । ई सभ देव-पितरक हेतु निर्मित होइत छल होयत । पूआकेँ रत्नाकरमे **पौलिका** कहल गेल अछि ।[18] तील, गुड़, चाउर इत्यादिक संयोगसँ निर्मित अन्नकेँ **कुसर** कहल जाइत छल । प्राय: ई आधुनिक खिच्चड़िक स्वरूपक कोनो खाद्यान्न छल होयत । घिउ, दूधक संयोगसँ गहूमक चूर्णकेँ सिद्ध कयल अन्न सेहो देवार्थ कयल जाइत छल । एकरा **संयाव** कहल जाइत छलैक । एकर देशी शब्द छल **तकोरिका**[19] । दूधमे सिद्ध कयल जओक चिक्कससँ निर्मित खाद्यान्नकेँ **पायस** कहल जाइत छल । मूङक चूर्णसँ निर्मित एकटा पकमान **शष्कुली**[20] कहल जाइत छल । इहो देवार्थ निर्मित होइत छल । बीयाक हेतु राखल अन्न आपत् कालोमे अखाद्य बूझल जाइत छल । कौआ, मुर्गा द्वारा छुइल अन्न अखाद्य बूझल जाइत छल । राजमाष-(मटर-देशी-**बवली**), स्थूल मूद्ग (देशी-मेथी), शतपुष्प-(दे० शौक), मसुरी (-सं.मसुराणि)[21] आदि अखाद्य ओ अपेय । बवलीक अर्थ आब लुप्त भऽ गेल अछि । मेथी ओ मसुरी तँ आधुनिको मैथिली भाषामे प्रचलित अछि । शतपुष्प प्राय: सौंफ रहल होयत जकरा रत्नाकरकार **शौक** कहने छथि । **करिहन** अर्थात् कारीधान, अपन उच्छिष्ट तथा बासि अखाद्य मानल जाइत छल ।

बिलाड़ि, कुकुर, मूस आदि द्वारा छुइल; माछी, कीड़ा, केश पड़ल अन्न

अखाद्य मानल जाइत छल । किन्तु मिठाइ, शक्कर इत्यादि एहू स्थितिमे खाद्य मानल जाइत छल । हाटसँ बेसाहल वस्तु अखाद्य मानल जाइत छल मुदा गूड़, मासु, मधु, नोन आदि क्रेतव्य बूझल जाइत छल । एक हाथसँ देल पायस, पेय ओ भीख अग्राह्य बूझल जाइत छल । भोजन निर्माणक पात्रमे भोजन ग्रहण करब, आङुरसँ प्रत्यक्ष लवण ग्रहण करब तथा मरिआयब बर्जित छल ।

प्रसवक पश्चात् गायक दूध साधारणत: दस दिन धरि, स्त्रीक दूध, ऊँटक दूध, भेड़ीक दूध, विवत्सा गाइक दूध, गाभिन गाइक दूध, बकरीक दूध बर्जित छल । ओना गायक दूध दू मास धरि दूहब वर्जित छल । तेसर मासमे मात्र दूटा स्तन दुहबाक प्रावधान तथा चारिम मासमे मात्र तीनटा स्तन दुहबाक प्रावधान छल । महीसक अतिरिक्त समस्त वन्यप्राणीक दूध अग्राह्य बूझल जाइत छल । फेन युक्त, सिहरल दूध तथा दूधक सङ नोन खायब वर्जित छल । कपिला गाइक दूध देवताकेँ उत्सर्गक पश्चात् केवल ब्राह्मणे द्वारा ग्राह्य बूझल जाइत छल ।

इन्द्रकान्तझा विद्यापति कालीन मिथिलाक खान-पानपर विचार करैत कहने छथि जे– तत्कालीन समाजमे द्विजक हेतु जतेक प्रकारक भक्ष्य पदार्थ छल, ओहिमेसँ अत्यधिक पदार्थ देवी-देवताकेँ कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य अर्पण कयल जाइत छल । द्विज एवं अन्य जातिक खानपानमे अन्तर छल । ब्राह्मणक हेतु सभ प्रकारक भोजन भक्ष्य नहि छल । भोज्य पदार्थमे भात-दालि, तीमन-तरकारी, माँछ-मांस, चूड़ा-दही, फल-मूल आदिक प्रधानता छल । मादक पदार्थक प्रयोग नीच वर्णमे अत्यधिक छल ।[22] ब्राह्मण लोकनिक हेतु मद्य अपेय बूझल जाइत छल । मुदा ई बन्धन आन जातिक हेतु नहि छल । एतावता निबन्धकार लोकनि जे भक्ष्याभक्ष्य विवेचन कयलनि अछि से खास कऽ द्विजजातिक हेतु छल । सामान्य जनमे खाद्याखाद्य विवेचनक पारिसीमा नहि छल ।

मैथिल भोजन परम्पराक एकटा उल्लेखनीय पक्ष अछि, एहि ठाम विभिन्न मासमे मनाओल जायवला पावनि-तिहार । मिथिलाक जनजीवनमे एकर बहुत महत्त्व अछि । भरि वर्ष समय-समयपर पावनिक आयोजन एहि ठामक सांस्कृतिक विशिष्टता रहल अछि । एहि पावनि सबमे पूजाक संगहि संग भोजन व्यापारक अत्यन्त क्रमबद्ध व्यवस्था देखि पड़ैछ । पावनि लाथेँ समस्त जन उपभोग्य वस्तु सभक सरमजाम करैत छथि तथा गरीबो-गुरबाकेँ सामयिक भोज्य पदार्थकेँ प्राप्त करबाक अवसर भेटैत छैक । सङहि दैनन्दिन भोजनक एकरसतामे भिन्नता सेहो अबैत छैक आ रुचि परिवर्तन सम्भव भऽ पबैत छैक ।

खाय-पिबऽबला पावनि मध्य फगुआ सर्वाधिक प्रशस्त मानल जाइछ । एहिमे पूआक प्रधानता रहैत छैक । मांसाहारी लोकनि एहि पर्वक अवसरपर मांसक सेहो व्यवहार अनिवार्य रूपेँ करैत छथि । एहि दिन मिथिलाक लोकप्रिय पेय भाङक सेहो प्रधानता देखि पड़ैछ ।

जूड़शीतल पावनि वैशाख मासक संक्रान्तिक दोसर दिन मनाओल जाइछ। एहि पावनिक अवसरपर **बासि भात, बड़ी ओ दलिपूड़ी** खयबाक विधान अछि। एहिसँ एक दिन पूर्व सतुआनि मनाओल जाइछ। सतुआइन दिन **सतुआ** खयबाक विधान अछि। एहि तरहेँ सतुआइनि ओ जूड़शीतलक माध्यमे ग्रीष्म ऋतुमे सातु सेवनक अनिवार्यता तथा बासि छोड़बाक बाध्यता संकेतित अछि।

अषाढ़क पूर्णिमा दिन अषाढ़ी अथवा अरदरा पावनि होइछ। एहि पावनिक अवसरपर खीरक पातरि देल जाइछ। तथापि एहि समय धरि आम-कटहर उपलब्ध रहैछ आ एकर व्यवहार सेहो अनिवार्य बूझल जाइछ।

साओन मासक कृष्ण पक्ष पञ्चमी दिन नागपञ्चमी मनाओल जाइछ। नागपञ्चमीमे **खीर ओ घोरजाउरक** पातरि देल जाइछ तथा नागपूजा कयल जाइछ। नागपूजाक अवसरपर धानक लाबा ओ काँच दूधक व्यवहार होइछ। नीमक-पात ओ नेबोक व्यवहार सेहो होइछ।

भादव मासक शुक्ल पक्षक **चौठकेँ** मिथिलामे चन्द्रपूजन कयल जाइछ। एहि अवसरपर **खीर-पूड़ी द्वारा मडुर** भरल जाइछ तथा विभिन्न पकमान, फल ओ दहीक छाँछीक अर्घ देल जाइछ। चन्द्रमाक पूजामे भदैआ आम, मकइक बालि, खीरा इत्यादि अनिवार्य बूझल जाइछ।

आसिनमे **कृष्ण पक्षक** अष्टमी दिन जितिया पावनि मनाओल जाइछ। एहि पावनिक एक दिनपूर्व ऐहब द्वारा **माछ** ओ **मडुआक रोटी** खयबाक विधान अछि तथा भोरुक पहरमे व्रती द्वारा **चूड़ा-दही, मिठाइ** इत्यादि आहार लेल जाइछ जकरा **ओठगन/ओठघन** कहल जाइछ। आश्विन मासक पूर्णिमाकेँ कोजागरा होइछ जाहिमे पान-मखान प्रशस्त मानल जाइछ।

एही मासक शुक्ल पक्षक आरम्भिक दस दिन धरि नवरात्रा पूजन होइछ। एहि अवसरपर छागरक बलि-प्रदान होइत छैक तथा ओकर मांस प्रसाद रूपेँ ग्राह्य होइछ।

कातिक मासक अमावास्याकेँ दियाबाती मनाओल जाइछ। एहि दिन सेहो पर्वोत्साहक रूपमे सुअन्न ग्रहण करबाक परिपाटी अछि। दियाबातीक दोसर दिन गोवर्द्धन पूजा होइत छैक। एहू दिन गोपूजनक अवसरपर सुअन्न ग्रहण करबाक परिपाटी अछि। कार्तिक शुक्ल पक्षमे षष्ठीकेँ छठि व्रत मनाओल जाइछ। एहि व्रतक पूर्वदिनकेँ **खरना** कहल जाइछ। खरनामे खीरक व्यवहार अनिवार्य बूझल जाइछ। अर्घ्यक हेतु विभिन्न प्रकारक पकमान जेना- **ठकुआ-भुसवा** आवश्यक मानल जाइछ। एहि अवसर पर केराक घौड़ सूर्यकेँ समर्पित कयल जाइछ। नारियर सेहो एहि व्रतक अनिवार्य फल थिक। एही मासमे सामा-चकेबाक पावनि सेहो होइछ। ई पावनि भाइ-बहिनिक पारस्परिक स्नेहक प्रतीक थिक। जाहिमे पूर्णिमाक राति मसानक अवसरपर बहिन द्वारा भाइकेँ विभिन्न

प्रकारक खाद्यान्न जेना चूड़ा-मुरही, गूड़, मिठाइ, बतासा इत्यादि प्रदान कऽ फाँफड़ भरल जाइछ।

अगहनमे रवि-शनि पावनि मनाओल जाइछ। एहि पावनिमे विभिन्न प्रकारक पकमान, फल आदि सूर्यकेँ समर्पित कयल जाइछ। यैह पावनि वैशाखमे पुनः सम्पन्न होइछ। एहू अवसरपर ओही प्रकारक खाद्यान्नक उपयोग होइछ।

माघक मकर संक्रान्तिकेँ तिलासंक्रान्ति पावनि कहल जाइछ। एहि पावनिमे **चूड़ा-दही, खिच्चड़ि** आदि प्रमुख खाद्यान्नक उपयोग होइछ तथा **चूड़ा, मुरही ओ तीलसँ** विभिन्न प्रकारक मिष्टान्न सेहो बनाओल जाइछ।

एहि तरहेँ वर्षोपरि विभिन्न प्रकारक पावनि-तिहारक माध्यमे मिथिलामे भोजन सामग्रीक विविध प्रयोग होइछ।

पावनि-तिहारक अतिरिक्त विभिन्न संस्कार ओ व्यवहारक अवसरपर सेहो मैथिल भोजन-परम्पराक विशिष्टता देखि पड़ैछ। एकर सर्वाधिक प्रशस्त विन्यास सहभोजक रूपमे देखि पड़ैछ। सहभोज-मूड़न, उपनयन, विवाह, यज्ञ आदि शुभ कर्म तथा श्राद्धादि कर्मक अवसरपर आयोजित होइछ। सहभोज दुइ प्रकारक होइछ- **कच्ची** तथा **पक्की**। कच्ची भोजमे विभिन्न प्रकारक व्यञ्जन तथा भात-दालि, बड़ी, दही-चीनी एवं सकरौड़ी सामान्यतः व्यवहृत होइत अछि। पक्की भोजमे चूड़ा-दही, चीनी तरकारी तथा विभिन्न प्रकारक मधुर अथवा पूड़ी-तरकारी तथा मिष्टान्नक योगसँ आयोजित होइछ। दही दूनू प्रकारक भोजमे सामान्य मानल जाइछ। माछ-मांस, खीर-पूड़ी इत्यादि सेहो भोजनक विभिन्न उपादान सभ अछि। सहभोज मिथिलामे अत्यन्त प्रशस्त अछि। गामक स्तरसँ लऽ कऽ जवार तथा ताहूसँ वृहत परिसरमे निमन्त्रित व्यक्तिकेँ खोअयबाक व्यवहार अछि।

ब्राह्मण-भोजन, कुमारि-भोजन तथा ऐहब-भोजन सेहो सहभोजे होइत अछि।

भार-दोरक सेहो मिथिलाक विशिष्ट सांस्कृतिक परम्परा अछि। कुटुम्बीजनकेँ समय-समयपर भार-दोरक व्यवहारसँ आपकताक रक्षा कयल जाइछ एवं सम्बन्धक क्रम विन्यस्त कयल जाइछ। निमन्त्रण पाबि कुटुम्ब द्वारा अवसर विशेषक अनुकूल अन्न, पकमान, फल इत्यादि एक दोसराक ओहि ठाम पठयबाक परम्परा अछि। खास कऽ वैवाहिक प्रकरणमे भारदोरक महत्ता बढ़ि जाइछ। विवाहक चारिम दिन वरपक्ष द्वारा कन्या पक्षक ओहि ठाम चतुर्थीक भार देल जाइछ। एहिमे दही ओ माछ अनिवार्य रूपेँ देल जाइछ। मधुश्रावणीक अवसरपर कन्या द्वारा सासुरेक भोज्य पदार्थ ग्रहण करबाक व्यवहार अछि। एहि अवसरपर वरपक्ष द्वारा विभिन्न खाद्यान्न, जेना-चाउर, चूड़ा, बूट, पकमान, मिठाइ, फल, दही इत्यादि कन्यापक्षक ओतऽ पठाओल जाइछ। एही प्रकारक सामग्री

कोजागराक अवसरपर कन्या पक्षक द्वारा वरक ओतऽ पठयबाक विधान अछि । कोजागरामे वर पक्ष द्वारा मखान-पान बाँटल जयबाक परम्परा अछि जे कन्ये पक्ष द्वारा पठाओल जाइछ । एही तरहेँ विभिन्न पावनिक ओ व्यवहारक अवसरपर वर पक्ष ओ कन्या पक्ष पारस्परिक भोजन सामग्रीक आदान प्रदान निरन्तर करैत रहैत छथि ।

आसन्नप्रसवाकेँ लक्ष्य कऽ जे भार पठाओल जाइछ से **सधोरिक भार** होइछ । एहिमे खीर-पकमान आदिक प्रधानता रहैछ । प्रसवोत्तर प्रसविनीकेँ जे भार पठाओल जाइछ से **पीरीक** भार कहल जाइछ आ जे खाद्य पदार्थ दवाइक रूपमे देल जाइछ से **सुठौरा** कहल जाइछ । नव प्रसूत शिशुक आगामी पूसमासमे बगिया द्वारा हाथ-पैर ओ गाल सेदबाक परम्परा अछि । एहि अवसरकेँ **पुसौठ** कहल जाइछ । विदाकाल ऐहबकेँ खोइछ देबाक परिपाटी अछि जाहिमे धान अनिवार्य सामग्री रहैछ । दूर्वाक्षतक व्यवहारमे सेहो चाउर वा धान आवश्यक सामग्री रहैत अछि । विवाहमे वर-वधूकेँ संग-संग खीर खयबाक विधान अछि । एकरा **महुअक** कहल जाइछ । द्विरागमनक अवसरपर कन्यापक्षक ओतऽ केरा-दही ओ माछक शुभसूचक भार पठाओल जाइछ जकरा माछ-दहीक भार अथवा **कहाइत / कहौतिया** भार कहल जाइछ ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवन अन्नादि द्वारा बहुशः समञ्जित अछि ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. दानवाक्यावली-पृ.-214
2. गृहस्थ रत्नाकार-चण्डेश्वर, सम्पादक-कमल कृष्णस्मृतितीर्थ, रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल कलकत्ता चणको देशे चूट इति प्रसिद्धः ।
3. दानवाक्यावली-पृ.-225
   मत्स्यमपूपपूरिका पिष्टकादि ।
4. शैव सर्वस्वसार प्रमाण भूत पुराण संग्रह-श्लोक संख्या-599
5. गृहस्थ रत्नाकार-पृ.-353
   करका काष्ठश्रत्रिका कनश्रत्रि इति यस्य प्रसिद्धिः ।
6. याज्ञवल्क्य स्मृति-श्लोक-180
   वसोस्र नरके घोरे दिनानि पशुरोमपिः । संमितानि दुराचारो यो हन्त्यविधिना पशून् ॥
7. तत्रैव-श्लोक सं.-179
8. शैव सर्वस्वार प्रमाणभूतपुराणसंग्रह-पृ.-130, श्लोक संख्या-607
9. गृहस्थरत्नाकर पृ-379 बर्भिवार्यवो वासुरिति प्रसिद्धः ।

10. याज्ञवल्क्य स्मृति-श्लोक सं.-177-172
11. गृहस्थरत्नाकर- पृ.-369
12. तत्रैव, पृ.-371
13. तत्रैव, पृ-371
14. तत्रैव, पृ०-313
15. तत्रैव, पृ.-327
16. तत्रैव, पृ.-338
17. तत्रैव, पृ.-355
18. तत्रैव, पृ.-357
19. तत्रैव, पृ.-358
20. तत्रैव, पृ.-358
    शष्कुली मुद्गादिपूर्णसिद्धा सतिला स्नेहपक्वा ।
21. तत्रैव, पृ.-359
22. विद्यापतिकालीन मिथिला-इन्द्रकान्तझा, मैथिली अकादमी पटना-1986, पृ.-345

तृतीय अध्याय

मैथिल रुचिपर प्रभाव ओ तज्जन्य परिवर्त्तन

आधुनिक कालमे यद्यपि पारम्परिक मैथिल भोजन-विन्यासक स्थिति बनले अछि तथापि संस्कृतिक संक्रमणक ओ औद्योगिक विकासक कारणेँ मैथिल भोजन-विन्यासमे कतिपय परिवर्त्तनो भेल अछि । ई परिवर्त्तन मैथिल रुचिपर सांस्कृतिक आदान-प्रदान जन्य प्रभावक कारण भेल अछि ।

मैथिल रुचिपर ई प्रभाव भोजन-विन्यासक क्षेत्र यथा-उपकरण, आधार सामग्री तथा भोजन व्यापारमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ । पहिने सामान्यत: गृह-उपकरणक माध्यमे भोजन सामग्री तैयार कयल जाइत छल । मुदा आब गृह-उपकरण क्रमश: यान्त्रिक भेल जा रहल अछि । पारम्परिक उक्खरि-मूसर तथा ढेकी-जाँतक बदला कलक प्रयोग सामान्य भऽ गेल अछि । कोठीक स्थान ड्राम ओ टीन लेने जा रहल अछि । पाकल माटिक विभिन्न बासनक उपयोग क्रमश: समाप्तप्राय: भेल जा रहल अछि । कोहाक स्थान अलमुनियाक डेकची लऽ लेलक अछि तथा सम्प्रति प्रेशरकूकर डेक्चीयोकेँ विस्थापित कयने जा रहल अछि । लोटाक स्थान स्टीलक जग लऽ लेलक अछि । माटिक चुका, ग्लास द्वारा प्रतिस्थापित भेल जा रहल अछि । दोनाक स्थान कपटी (प्याली) लेलक । थारीकेँ प्लेट विस्थापित कयने जा रहल अछि । घैल, बसनी ओ ठिलियाक स्थानपर बाल्टी तथा ड्रामक उपयोग बढ़ल जा रहल अछि । पीढ़ीक स्थान कुर्सी-टेबुल लेने जा रहल अछि । चालनि सेहो वंश निर्मित नहि रहि लौह निर्मित भेल जा रहल अछि । टोकनाक स्थान नादि लऽ लेलक अछि । जारनिक स्थानपर कोइला, कुन्नी, मटियातेल, गैस लऽ लेलक अछि । तदनुरूप चूल्हाक विभिन्न प्रभेद देखि पड़ैछ । मटिया तेलक चूल्हा स्टोव कहल जाइछ । विद्युत् चूल्हाक प्रयोग सेहो होअऽ लागल अछि । एहि तरहेँ विभिन्न प्रकारक नव उपकरण आधुनिक मिथिलामे वैज्ञानिक प्रगतिक फलस्वरूप दृष्टिगोचर होइछ जकर प्रयोग पारम्परिक नहि अछि ।

भक्ष्याभक्ष्यक विचारमे सेहो पर्याप्त परिवर्त्तन देखि पड़ैछ । पहिने देव, पितृ,

मनुष्य ओ कीटादिक विभाग छोड़ि कऽ पाँचम अंश गृहस्थ द्वारा ग्राह्य छल ।[1] मुदा आब एकर विचार नहि देखि पड़ैछ । एहिना अनर्चित मांस[2] अर्थात् यज्ञपशुक अतिरिक्त पशुक मांस अखाद्य मानल जाइत छल । मुदा आब हलाली मांस सेहो ग्राह्य बूझल जाइत अछि । स्नेहरहित बासि भोजनक जे वर्जना शास्त्रोक्त रहल अछि[3] तकर विचार आब नहि देखल जाइछ । गाभिन, एक साँझ दूध देबऽवाली गायक दूध सेहो ग्राह्य बूझल जाइत अछि । सोहिजन सेहो खाद्य अछि । पियाजु ओ लहसुन जे पहिने अखाद्यक श्रेणीमे छल आब सर्वथा व्यवहृत अछि । सुकटी माछ सेहो खाद्यमे परिगणित अछि । माछमे भक्ष्याभक्ष्यक विचार नहि देखल जाइछ । सब प्रकारक माछ खाद्यक श्रेणीमे आबि गेल अछि । एते धरि जे अन्डइ सेहो किछु वर्गमे खाद्य भऽ गेल अछि ।

भोजनसँ पूर्व पैर खखारब आब अनिवार्य नहि देखल जाइछ । भोजन काल नैवेद्य देब, पचग्रास करब, पत्रशेष छोड़ब, भोजनक हेतु बैसबामे दिशा-विचार, भोजनसँ पूर्वस्नान, भोजनकालमे मौन रहब आदिक विचार लुप्त भेल जा रहल अछि । पहिने शयनक आसनपर भोजन अग्राह्य बूझल जाइत छल । मुदा आब तकर विचार नहि कयल जाइछ । लौह पात्रमे भोजन पहिने वर्जित छल मुदा आब सामान्यत: लौहपात्रे भोजन ग्रहणक प्रधान पात्र भऽ चुकल अछि । अपवित्र माटिक पात्रमे भोजन अग्राह्य बूझल जाइत छल । मुदा आब चिनामाटीक पात्र बहुश: प्रयुक्त होइछ । भोजन कालक विचार सेहो नहि देखि पड़ैछ । भोजन काल शुक्ल वस्त्र धारण करबाक विधान छल ।[4] जे आब आवश्यक नहि देखि पड़ैछ । पूआ, फल, कन्द, मूल, मांस इत्यादिकेँ दाँतसँ काटि कऽ खयबाक विधान नहि छल ।[5] मुदा आब एकर विवेक नहि रहल अछि । बाम हाथसँ खाद्य भोजनकेँ छुअब वर्जित छल ।[6] आब तकर विचार नहि देखल जाइछ । बामा हाथे पानि पीब सामान्य देखि पड़ैछ । पहिने ई वर्जित छल ।[7] पारम्परिक भोजन देब-लेबमे यद्यपि गाम-घरमे कट्टरता एखनो वर्त्तमाने अछि मुदा शहरी क्षेत्रमे ई बहुत किछु शिथिल भऽ गेल अछि अर्थात् भोजन ग्रहणमे सिद्धासिद्धक विचार नहि देखि पड़ैछ ।

अन्नमे खाद्याखाद्यक विचार मिथिलाक विशिष्ट परम्परा रहल अछि । सामान्यत: उच्च ओ उच्च मध्यवर्गीय परिवारमे सुअन्नेक व्यवहार होइत छल । एहि सुअन्न मध्य धान सर्वाधिक प्रमुख मानल जाइत रहल अछि । धानोमे हल्लुकधना ओ सुगन्धित धानकेँ प्रशस्त मानल जाइत छल । धानक गद्दरि प्रभेद असामयिक अर्थात् अगहनी नहि होयबाक कारण अशुद्ध मानल जाइत छल । मुदा आब धानक भोज्याभोज्यतामे ओकर प्रभेदपर विचार नहि देखि पड़ैछ । एकर एकटा विशिष्ट कारण जनसंख्याक बोझ सेहो कहल जा सकैछ तथा धानक जे विभिन्न प्रभेद सब वैज्ञानिक कृषि द्वारा उपलब्ध भेल अछि तकर शुद्धाशुद्धिक विचार नहि देखल जाइछ आ ने से आधुनिक परिवेशमे सम्भवे बुझना जाइछ । स्वभावत: मडुआ, मकइ, जनेर, चीन, कोदो, कुर्थी, मसुरी, खेसारी,

इत्यादि जे अखाद्यक श्रेणीमे छल, आब खाद्यान्न मध्य परिगणित अछि । एहि तरहेँ कुम्हड़ सेहो खाद्य तरकारी भऽ गेल अछि । घेरा, पोरो, नोनी साग, उजरा भाँटा, गजरा, लालमुरइ, इत्यादि जे अशुद्ध मानल जाइत छल, आब सामान्य खाद्य पदार्थ अछि ।

मिथिलाक भोजन सम्बन्धी शब्दावली दोसर-दोसर भाषा-भाषीक सम्पर्क-सान्निध्यक कारणेँ निरन्तर विकास पथ पर अछि । पहिने भोजन रन्हबा हेतु निर्धारित घरकेँ **भनसाघर** कहल जाइत छल मुदा आब एकर स्थान रसोइघर वा किचेन लऽ लेलक अछि । ई परभाषिक प्रभाव परिणाम थिक । एहिना भोरुका भोजनक हेतु **जलखै** शब्द जलपानमे बदलि गेल अछि । **पनपियाइसँ** बेसी नाश्ता प्रचलित भऽ गेल अछि । दैनिक भोजन जे कलउ छल से आब खानामे परिणत भऽ गेल अछि । **खाएक** शब्द तँ आब मात्र दोसर ठामसँ पठाओल भोज्यान्नैक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । भोजनक हेतु तँ आब प्रचलितो अल्पे अछि । **बेरहट** सेहो जलपाने द्वारा विस्थापित भऽ गेल अछि । भोज्य पदार्थहुक विभिन्न नाम बदलल अछि । बङलाक प्रभावेँ **चर्खरी** शब्द **डालना/डलना** द्वारा प्रतिस्थापित देखि पड़ैछ । मिथिलाक जे पारम्परिक मिठाइ सब **जेना-खाजा, मुगवा** इत्यादि छल जे आधुनिक कालमे छेनाक विविध आकृति-प्रकृतिक मिठाइ द्वारा जनरुचिक प्रभावक कारणेँ प्रतिस्थापित भेल जा रहल अछि । दोसर दिस बङलाक प्रभावेँ **रसगुल्ला, चमचम** आदि बहुश: मिठाइ प्रचलित भेल अछि । **घठिहनसँ** निर्मित **झिल्ली, कचुरी, बड़ी** आदि क्रमश: विलुप्त ओ अप्रचलित भेल जा रहल अछि । ई सब जनताक अवधारणामे निम्न कोटिक तथाकथित गमैया जनताक खाद्य बूझल जा रहल अछि । एकर स्थानमे **सिंघारा, डोसा, पकौड़ी** प्रयुक्त भेल जा रहल अछि । **घुघनी** शब्दकेँ **छोला** प्रतिस्थापित कऽ देलक अछि । **फुलकी** शब्द **कचौरी** द्वारा प्रतिस्थापित भेल अछि । **चिक्कस** शब्द **अँटामे** बदलि गेल अछि । साना ओ **चोखा, भर्त्ता** द्वारा प्रतिस्थापित अछि। **तरूआ** शब्द **बचका** द्वारा सेहो अभिव्यक्त होअऽ लागल अछि । आयातित खाद्य पदार्थक रूपमे **तिलकुट, टौफी, बिस्कुट, दालबूट, दालमोट, पावरोटी** इत्यादि जनसामान्यमे पूर्ण प्रचलित भेल जा रहल अछि । एहि तरहेँ भारतीय ओ अभारतीय, मैथिल तथा अमैथिल सम्पर्कसँ एवं भोजन सामग्रीक निर्माण व्यापारक सम्पर्क-सौकर्यक कारणेँ बहुतो शब्दावली गृहीत भेल जा रहल अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे होअऽवला ई परिवर्तन अनेक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक ओ सामाजिक कारणसँ व्युत्पन्न अछि । ऐतिहासिक कारणमे विदेशी आक्रमण ओ राजनीतिक स्थिति प्रधान रहल अछि । भारतमे मुसलमान-शासन दीर्घ काल धरि रहल तेँ बहुतो भोजन सम्बन्धी शब्दावली मुसलमानी प्रभावक कारणेँ मैथिली भाषामे आबि गेल । एहिना अंग्रेजी शासन, शिक्षा इत्यादिक प्रभावक कारणेँ सेहो अनेकश: नव शब्दावली मिथिला भाषामे प्रचलित होअऽ लागल अछि । स्वभावत: पुरान शब्द **पियाली**

ओ छीप आधुनिक गिलास, प्लेट द्वारा स्थानापन्न भऽ गेल अछि । आधुनिक औद्योगिक ओ वैज्ञानिक प्रगति सेहो भोजन विन्यासकेँ प्रभावित कयलक अछि । सभ्यताक नवीन उपकरण ओ साधनक कारण बहुतो पारम्परिक शब्द अप्रचलित भऽ कऽ लुप्त होयबाक क्रममे अछि । दोसर दिस ओकरा स्थानपर नवीन शब्दावली स्थान ग्रहण कयने जा रहल अछि ।

मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास–

साहित्य कोनो देश-प्रदेशक माटि-पानिसँ प्रभावित समाजक व्यक्तिक मौलिक उद्भावनाक प्रसाद थिक । समाजक व्यक्ति समाजक कोनो विशेष घटनासँ प्रभावित एवं प्रेरित भऽ ओकर जे सरस चित्र मौखिक वा लिखित रूपमे प्रस्तुत करैत अछि सैह थिक साहित्य ।

कोनहु भाषाक साहित्यकेँ ओहि समाजक दर्पण कहल जाइत अछि जाहि समाजसँ ओ रसग्रहण करैछ । सामाजिक लोकनिक सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, रीति-नीति, आचार-व्यवहार ओ संस्कृतिक प्रतिच्छवि साहित्यमे प्रतिबिम्बित होइत अछि ।

चिन्तन ओ भावनाक अतिरिक्त साहित्य मनुष्यक सामाजिकताकेँ सेहो विज्ञापित करैछ । कारण, साहित्य मनुष्यक सामाजिक जीवनक स्थिति तथा सामाजिक जीवनधारापर अवलम्बित रहैछ । मनुष्य अपन अनुभूतिकेँ जाहि शब्दात्मक माध्यमसँ अभिव्यक्त करैत अछि तकरे भाषा कहल जाइत अछि । साहित्यक माध्यमसँ जीवनक सत्य ओ युगधर्मक अभिव्यञ्जना होइछ । साहित्यक अस्तित्व मानवीय सामाजिक सत्तासँ पूर्णरूपेण आबद्ध रहैछ । साहित्यक-निर्माण प्रक्रियाक मूलमे मानवक सामाजिक सत्ता अछि । कहल जा सकैछ जे साहित्यमे जाहि वस्तु सभक अभिव्यञ्जना होइत अछि ओ सभ मानव जीवनक कोनो ने कोनो पक्षक रूपमे अवश्य रहल करैछ ।

जीवनशैली साहित्यकेँ प्रभावित करैत रहलैक अछि । मैथिली साहित्य सेहो मिथिलाक जन जीवनसँ रसग्रहण करैत रहल अछि । मिथिलाक माटि-पानि, आचार-विचारक अविकल चित्रांकन एहि मध्य होइत रहल अछि । मानव जीवनक मूल आवश्यकतामे सर्वाधिक प्रमुख भोजनक आवश्यकता अछि आ मैथिल भोजन-परम्पराक अपन खास विशिष्टता एहि ठामक भौगोलिक-आर्थिक पर्यावरणक अनुकूल बनैत रहलैक अछि । प्राचीने कालसँ भोजनक प्रति मिथिलाक दृष्टिकोण, ओकरा ग्रहण करबाक हेतु ओकर विन्यास-प्रक्रिया आदिकेँ साहित्यमे स्थान भेटैत रहलैक अछि । मैथिली साहित्यमे परिगृहीत एहि भोजन विन्यासक वर्णनकेँ अध्ययनक दृष्टिएँ चारि वर्गमे बाँटल जा सकैछ–

1. प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

2. मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास
3. आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास
4. लोकसाहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

सन्दर्भ निर्देश-

1. गृहस्थ रत्नाकर- पृ.-309
2. याज्ञवल्क्य स्मृति-पृ.-72
3. तत्रैव, पृ.-73
4. गृहस्थ रत्नाकर- पृ.-316
5. तत्रैव, पृ.-219
6. तत्रैव, पृ.-330
7. तत्रैव, पृ.-331

चतुर्थ अध्याय

प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्याससँ तात्पर्य ज्योतिरीश्वर ओ ताहिसँ पूर्वक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यायाससँ अछि। एहि कालक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदिक साहित्यमे मिथिला देशीय ठेठ शब्दक उल्लेख अनेकशः भेल अछि जाहिमे भोजनसँ सम्बद्ध शब्द सेहो उल्लिखित होइत रहल।

मिथिला क्षेत्रमे **चर्यापदकेँ** छोड़ि **वर्णरत्नाकरसँ** पूर्वक कोनो विशिष्ट मिथिलापभ्रंश-साहित्य उपलब्ध नहि होइछ। चर्यापदक भाषाक विशिष्टता ई सिद्ध करैछ जे एकर रचनाकारमे अधिकांश सिद्ध लोकनि विदेह वा विदेह जनपदक सन्निकट प्रान्तक वासी छलाह। स्वभावतः एहिमे विदेह जनपदक आहार-व्यवहारक चित्रण होइत रहल जेना-

सिद्धिरत्थु मइ पढमे पढ़िअउ
मण्ड पिबन्तो बिसरअ एमइए[1] -सरहपाद

मिथिलामे एखनहु ई लोकमान्यता अछि जे माँड़ पिठनिहार बिसरभोर भेल करैछ। भोज्य पदार्थ मण्ड-माँड़क प्रयोग द्वारा सरहपाद मिथिलाक एहि मान्यताकेँ जे साहित्यिक स्वरूप देलनि अछि ताहिसँ तत्कालीन समाजहुमे अहितकर होइतो माँड़ पीबाक परम्पराक संकेत भेटैत अछि।

एहिना बौद्धगान ओ दोहामे सिद्धाचार्य ढेण्ढणपादक एक गोट पद्य अछि-

टालत मोर घर नाहि पड़वेशी।
हाड़ीत भात नहि नित आवेशी॥[2]

एहु दोहामे मिथिलाक प्रमुख खाद्यान्न **भातक** ओ भात रन्हबाक उपकरण **हाड़ीक** उल्लेख भेल अछि।

आचार्य हेमचन्द्रक प्राकृत व्याकरण ओ तकर परिशिष्ट स्वरूप देशीनाममालामे

भोजनसँ सम्बद्ध अनेक ठेठ मैथिली शब्दक प्रयोग देखि पड़ैत अछि । उदाहरणक हेतु **उड़िद**[7] (उड़ीद), **कुसण**[8] (प्रदत्त अर्थ तीमन आधुनिक मैथिलीमे ई शब्द **कसौनी** अर्थात आमसँ बनाओल तीमनक विशेष प्रकार थिक, **बासन-कूसन** युग्म शब्दमे सेहो एकरा देखल जाइछ । **कुरकुरिअ**[9] (रणरणक अर्थमे देशीनाममालामे प्रयुक्त) आधुनिक मैथिलीमे **कुरकुर** शब्दक रूपमे खाद्य पदार्थकेँ दाँत तर देलापर निकलल ध्वनि विशेषक अर्थमे प्रयुक्त होइछ । **कोहली**[4] (तापिका अर्थमे देशीनामालामे प्रयुक्त) आधुनिक मैथिलीमे छोट कोहाक अर्थमे प्रयुक्त जकरा कनसारमे भूजा भुजबाक तापिकाक रूपमे प्रयोग कयल जाइछ । **अग्घाण**[7] (तृप्तिक अर्थमे गृहीत) आधुनिक मैथिलीमे अघायब तृप्तिबोधक क्रिया ओ भाववाचक संज्ञा अछि । **रोट्ट**[8] (तण्डुल पिष्टअर्थमे गृहीत) आधुनिक मैथिलीमे रोट-मोट रोटी अर्थमे विद्यमान अछि ।) प्राकृत व्याकरणक एक गोट दोहा अछि-

लोणु विलिज्जइ पाणिएण, अरिखल मेहम गुज्जु ।
बालिउ गलिउ सुझुम्पड़ा, गोरी तिम्मइ अज्जु ।।[9]

एहू दोहामे उद्धृत **लोणु** शब्द **लोन** अर्थात अर्थात **नोनक** अर्थमे आजुक मैथिलीमे प्रचलित अछि ।

डा. दुर्गानाथझा श्रीश प्राकृत व्याकरणमे स्थित मिथिलापभ्रंश शब्द सबहिक सम्बन्धमे विचार करैत लिखलनि अछि जे-हेमचन्द्र मैथिल नहि छलाह, परन्तु जैन धर्मक उद्भव ओ विकास मिथिलामे भेल छल एवं जैन धर्मक आदि ग्रन्थ अर्द्धमागधीमे रचित भेल छल । अत: अन्य देशीय जैन विद्वानक लोकभाषामे हुनका लोकनिक अपन धर्मक भाषा-विदेह जनपदक भाषाक समाहार सर्वथा स्वाभाविक थिक । एहि मध्य उद्धृत अपभ्रंश दोहामे सबटा हेमचन्द्रक रचना नहि थिक । ओ अपनासँ पूर्वक अनेक रचनाकेँ प्रमाणक हेतु उद्धृत कयने होयताह, जाहि मध्य कतोक अज्ञात मैथिल कविक सुप्रचलित रचना छल होयत ।।[10] तेँ ई कहल जा सकैछ जे प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन सम्बन्धी शब्दावलीकेँ हेमचन्द्रोक रचनामे ताकल जा सकैछ ।

प्राक् ज्योतिरीश्वर मैथिली साहित्यमे **प्राकृत पैंगलमूकेँ** सेहो समाविष्ट मानल जाइत अछि । एहि रचनामे मिथिलाक विशिष्ट भोज्य सामग्रीक अत्यन्त सरस वर्णन भेल अछि-

ओग्गर भत्ता रंभअ पत्ता गाइक घिता दुद्ध सजुत्ता ।
मोइणिमच्छा णालियगच्छा दिज्जइ कंता खा पुणवंता ।।[11]

अर्थात् केराक पात पर कर्पूर मञ्जरी, क्षीरोदक, लोहरी प्रभृति सुगन्धित प्रकारक मेंही धानक चाउरक भात, गाइक घी ओ दूध, भुन्ना माछ ओ पटुआ साग प्रिया द्वारा देल जाइत अछि आ पुण्यवाने व्यक्ति ओकर भोजन करैत छथि ।

एहि दोहामे मिथिलाक भोजन-विन्यासक अत्यन्त रोचक वर्णन भेल अछि । आधुनिको समयमे मैथिल भोजन विन्याससँ सम्बद्ध ई पद सर्वथा यथार्थ अछि । भात, माछ, घी, दही, पटुआक साग (सागक एहि प्रभेदकेँ पूर्णियाँ दिस नालियगच्छा कहल जाइछ) आइयो मैथिल भोजन परम्परामे अपन स्थिर स्थान रखने अछि ।

चण्डेश्वर ठाकुरक विभिन्न रत्नाकर ग्रंथमे संस्कृतक कठिनाह शब्दक अर्थ विज्ञापित करबाक हेतु मैथिली शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि । उदाहरणक हेतु **स्थूलमुद्गो मैथी इति प्रसिद्ध:**[12] केँ देखल जा सकैछ । एहि ठाम मिथिलाक प्रसिद्ध खाद्य मसल्ला मेथीक उल्लेख भेल अछि ।

एहि तरहेँ ज्योतिरीश्वर कालीन साहित्यमे यत्र तत्र मैथिल भोजन-विन्यास ओ तत्सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग देखि पड़ैछ ।

प्राचीन मैथिली साहित्यमे भोजन विन्यासक वर्णनक दृष्टिएँ जाहि दुइ गोट ग्रन्थकेँ आधारक रूपमे मानल जा सकैछ, से थिक ज्योतिरीश्वरकृत **धूर्त्तसमागम प्रहसन** ओ मैथिली साहित्यक आदि गद्य ग्रन्थ **वर्णरत्नाकर** ।

धूर्त्तसमागम ज्योतिरीश्वरक प्रसिद्ध संस्कृत प्रहसन थिक । एहि प्रहसनक महत्त्व मैथिली साहित्यक निधिक रूपमे एहि लऽकऽ अछि जे एहिमे संस्कृत-प्राकृत कथोपकथनक बीच मैथिली गीतक समावेश अछि । अनेक ठाम संस्कृत श्लोकक मैथिली पदावलीक माध्यमे भावानुवाद सेहो कयल गेल अछि ।

एहि प्रहसनमे असज्जातिमिश्र नामक धूर्त्त पञ्चक एहि उक्तिमे भोजनप्रियताक अभिव्यक्ति भेल अछि- **त्रैलोक्ये भोजनं श्रेष्ठं ।।**[13]

धूर्त्तसमागमक एक गोट मैथिली गीतमे भोजन-विन्यासक अत्यन्त रोचक वर्णन भेल अछि-

मासु माछ बल बड़िका साजथि, बथुअनि साग परोले आ ।।
मुद्ग दितले परकार करब, सबे सङ्गिनि कहओ थोले आ ।।
तहि दिन जनमाओल दथि, सुनु सत्वर सोन्य दूध बड़ घीवे ।।
केरा साङ्कर सबे जुगुताओब, कविशेखर जोतिक एहु गावे ।।[14]

एहि गीतमे मिथिलाक भोजन-विन्यासमे **मासु, माछ, बल (बड़), (बड़िआ /बड़ी), बथुअनि (बथुआसाग), परोले (परोड़), मुद्ग दितले (अर्थात् खेरही दालि), दथि (दही), सोन्ध (सोन्ह), घीव (घिउ), साङ्कर (साँकर/शक्कर)** इत्यादिक उल्लेख अछि ।

वर्णरत्नाकर ज्योतिरीश्वरठकुर रचित मैथिली साहित्यक आदि गद्य ग्रन्थक रूपेँ प्रख्यात अछि । एहिमे एके ठाम विविध सामग्रीक संकलन कयल गेल अछि । अनेक विद्वान एकरा मैथिलीक प्रथम भाषाकोष कहलनि अछि । तद्युगीन मैथिली रचनाकारक हेतु ई दिशा-निर्देशक ग्रन्थक रूपमे रचित भेल छल जाहिसँ रचनाकारकेँ विविध वस्तुक विशद् वर्णन करबामे कठिनता नहि हो । विभिन्न काव्योपयोगी वस्तुक वर्णनक संगहि एहिमे मैथिल भोजन-विन्यासक सेहो नीक वर्णन ठाम-ठाम दृष्टिगोचर होइछ ।

वर्णरत्नाकरमे तीन गोट स्थल एहन अछि जाहि ठाम भोज्य सामग्री ओ भोजन-प्रक्रियाक विस्तृत वर्णन उपलब्ध अछि । एकरा अतिरिक्त प्रसंगात् अन्यहु स्थलपर भोजन विषयक अनेक शब्दक प्रयोग देखल जाइत अछि-

(क) प्रथम कल्लोलक नगर वर्णनमे बिकाइवला भोज्य सामग्रीक उल्लेख अछि ।

(ख) तेसर कल्लोलमे दिनक भोजनक वर्णन जेओनार वर्णनाक रूपमे भेटैत अछि ।

(ग) राज्य वर्णना कल्लोलमे बिआरी कहि कऽ रातुक भोजनक वर्णन अछि ।

प्रथम कल्लोलमे नगर वर्णनक क्रममे विभिन्न वस्तुक पसार देखाओल गेल अछि जाहिमे भोजनसँ सम्बद्ध वस्तु सभक निम्नलिखित नामावली भेटैत अछि-

खुसा, चुसा, फरुही, भुजा, वीची, वोवलि, करहल, क्रूर, कातोलि, मेथी, मगरैल, मनइचा, मद्य, नसून, पोस्त, पयाजु, सेओफ, सिधरी, सारुक, भेट प्रभृति अनेक कुवस्तु कुखाधरक पसार देषु ।[15]

क्रमश: अर्थ द्रष्टव्य-

खुसा- शुष्क (सुखाएल) खाद्य जे चर्व्य होइत अछि जेना- जमाइन थिक ।

चुसा- चोष्य, चुसबा योग्य खाद्य ।

फरुही- अकादमी संस्करणमे एकरा मुरही वा लाबा कहल गेल अछि । मुदा धानकेँ विशिष्ट विधिसँ तैयार कयला उत्तर एकर चाउरक जे विशिष्ट विधिसँ तैयार कयला उत्तर एकर चाउरक जे विशिष्ट कोमल भूजा बनैछ तकरा मुरही कहल जाइछ नहि कि फरुही । जओंक भूजाकेँ अवश्य फरुही/फरही कहल जाइछ ।

भुजा- भुजल अन्न ।

वीची- विच्ची (सारुकक बीज जे सारुकेमे सटल रहैत छैक ।

वावलि- चेंचुलि (एक प्रकारक खाद्य कन्द) ।

करहल- अकादमी संस्करणमे करहलकेँ संस्कृत करहाट, कमल वा कुमुदक कन्द कहल गेल अछि । मुदा मैथिलीमे ओही जातिक कन्दकेँ करहड़ कहल जाइछ जे चउर-चाँचरक धनखेतीमे स्वत: होइछ ।

क्रूर- (1)- अर्थ अज्ञात ।

कातोलि- (1)- अर्थ अज्ञात ।

मेथी- प्रसिद्ध खाद्य मशाला ।

मंगरैल- प्रसिद्ध खाद्य मशाला ।

मलइचा- मिरचाइ ।

मद्य- नशायुक्त पेय पदार्थ ।

नसुन- लहसुन ।

पोस्त- पोस्तादाना ।

पयाजु- पेयाजु ।

सेओफ- सोँफ ।

सिधरी- (1) अर्थ अज्ञात ।

सारूक- सारुख । प्रसिद्ध जलीय कन्द । एकर छोट आकृति सौरखी कहल जाइछ ।

भेंट- श्वेत कुमुदक बीज जकर लाबा बनैत छैक ।

एहि ठाम विभिन्न प्रकारक बाजारू मसाला, खाद्य, चोष्य ओ भोज्य पदार्थक वर्णन अछि । अनेक शब्दक अर्थ तँ सम्प्रति विलुप्त बुझना जाइछ मुदा फरुही, भुजा, मेथी, मङरैल, मद्य, नसून, पोस्ता, पेयाज, सौंफ, सारुक, भेंट आदि आइयो मिथिलाक भोज्य पदार्थक अर्थमे प्रचलित अछि ।

वर्णरत्नाकरक तेसर कल्लोलमे दिनुक भोजनक वर्णन अछि । गृहस्थ पहिने स्नान एवं पूजा-पाठ करैत छलाह तदुपरान्त भोजन । चण्डेश्वरक अनुसार सेहो गृहस्थ पहिने पंचयज्ञ करैत छलाह आओर तदुपरान्त यज्ञावशिष्ट पदार्थ भोजन ।[16] ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरसँ सेहो ज्ञात होइत अछि जे दिनुक भोजन पूजोपरान्त कयल जाइत छल ।

वर्णरत्नाकरक तेसर कल्लोलक किछु अंश खण्डित अछि । एहि हेतु ओहिमे दिनुक सम्पूर्ण भोजनक अंश नहि भेटैत अछि । एहिमे दही देबाक प्रकरणसँ भोजनक विधानक वर्णन अछि । दिनुक भोजनकेँ जओनार कहल जाइत छल । सम्प्रति ई शब्द छोट जातिक बरियातीक प्रधान भोजनक लेल जओनार रूपमे प्रयुक्त होइछ । गोप जातिमे पूजाक अवसरपर जे भगताकेँ दूधक छाँकी देल जाइछ तकरा जेओनार कहल जाइछ ।

वर्णरत्नाकरमे जेओनार वर्णनक आरम्भिक भाग खण्डित अछि । अत: भोजनमे कतेक प्रकारक सामान्य सामग्री ओ व्यञ्जनादि होइत छल से नहि भेटैत अछि । जखन नायक भोजन आरम्भ करैत छथि तदुपरि जे जे सामग्री उपनीत कयल जाइछ अर्थात् परसल जाइछ तकर वर्णन मात्र भेटैत अछि ।

मिथिलाक दहीक प्रसंगमे कविशेखराचार्य उपमाक पथार लगा देलनि अछि । दहीक स्वच्छता, कठोरता, ओकर छओक सौंदर्य ओ गुणक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

शरतक चान्द पृथ्वीतल खसल अइसन आकार, कँचा कर्प्पूरक शीली अइसन कंठ, जनि पदिमीनीक पत्र दक्षिणावर्त शङ्ख सुताओल ऐसन छेओव, जनि अमृतक सरोवर सओ पङ्क उद्धरि आनल अछ अइसन ये दधि उपनीत करु ।[17]

भात-दालि एवं अनेकानेक प्रकारक व्यंजन खयलाक उपरान्त दही देबाक प्रथा छल जे एखन धरि प्रशस्त अछि । ज्योतिरीश्वर दहीक पात्रक संग-संग दहीक वर्णन बड़ उत्तम एवं सूक्ष्म ढंगसँ कयने छथि ।

ओहि कालमे दहीक पश्चात् दूध परसबाक परिपाटी छल । आब ओ सकरौड़ी रूपमे भोजादिमे परसल जाइछ । कविशेखराचार्य आठ गुणसँ संयुक्त दूधकेँ प्रशस्त कहलनि अछि । दूधक गुणक वर्णन एहि प्रकारक अछि–

तदनन्तर चलक, चाउल, चीकन, चमत्कारी, जुड़, मीठ, सोन्ध, आप्यायक आठहु गुणे सम्पूर्ण ये दूध से आनि उपनीत करु ।[18]

अर्थ द्रष्टव्य

चलक- छाल्हीवाला ।

चाउल- अर्थ अज्ञात ।

चीकन- चिक्कन, स्वच्छ ओ समतल । चिकनइ युक्त, तैलीय अथवा बसायुक्त ।

चमत्कारी- आनन्द प्रदायक ।

जुड़- सम्भवत: शीतल अर्थमे ।

मीठ- मिट्ठ ।

सोन्ध- सोन्हगर ।

आप्यायक- तृप्तिकारक ।

मैथिल भोजन-विन्यासमे दूध-दहीक संगहि विविध प्रकारक पकवान ओ मिष्टान्नक सेहो प्रधानता रहल अछि । कविशेखराचार्य सेहो विविध प्रकारक पकवानक उल्लेख करैत कहलनि अछि– **ता पाछे खिरओला, खिरिसा, खड़नी, खण्डउति, झिलिया,**

मेतिआ, फेना, फिनी, अमृतकुण्डी, मुगवा, माठ, सरुआरी, नड़िवी, प्रभृत पक्वान आनि उपनीत करु ।[19]

क्रमश: अर्थ द्रष्टव्य–

खिरओला- क्षीरगोलक-क्षीरोदक, क्षीरओदन-ई प्राय: क्षीरगोलक केर अपभ्रष्ट रूप थिक । ई दूधकेँ फाड़ि कऽ बनाओल जाइत छल । एहन सन बुझाइछ जे आइ-काल्हिक रसगुल्ला वा खीरमोहनक कोनो रूप छल होयत ।

खिरिसा- खिरसा (क्षीरसार)- इहो दूधक फाटल रूप अर्थात् छेनासँ बनाओल गेल विशेष पदार्थ बुझना जाइछ । आइ-काल्हि सद्य: प्रसूता गाय आदिक दूधक फटोनक हेतु एकर प्रयोग देखना जाइछ ।

खड़नी- ई केवल चीनीसँ बनल कोनो मिठाइ छल ।

खण्डउति- ई चीनीक चासनी दऽ बनाओल जाइत छल होयत ।

झिलिआ- झिल्ली । दू अर्थमे व्यवहारमे अबैत अछि । एकटा तँ बेसनक आँगुर एते मोट बत्ती बनाय चीनीक पागमे पागि कऽ बनल खाद्य लकठाक रूपमे तथा दोसर कचरीक सदृ‌श खाद्य वस्तु बेसन सँ बनल झिल्लीक रूपमे ।

मेतिआ- मिथिलामे मोतीचुरक लड्डू पूर्ण लोकप्रिय अछि । प्राय: ओहू युगमे एहि लड्डूक प्रचार छल होयतैक । एहि लड्डूक बुनियाँ बहुत छोट होइछ ।

फेना- ई मैदाक सेवइ सदृश गोलाकार मिष्टान्न थिक, जकरा घीमे छानि कऽ राखल जाइत अछि आओर भोजनक समयमे दूध एवं चीनीक संग खायल जाइत अछि । सम्भवत: ई आइ काल्हिक बतासाक कोनो रूप छल होयत । एकर कारण ई छल जे समुद्रक फेन सदृश ओ स्वच्छ होइत छल होयत आओर बतासाक रंग ओहने होइत अछि । वर्णरत्नाकरक मैथिली अकादमी संस्करणक अनुसारेँ फेना एक मिष्टान्न छल जे चीनी बरकाय बनाओल जाइत छल । संस्कृतमे ई फाणित कहबैत छल जकर चर्चा चण्डेश्वर गृहस्थरत्नाकरमे एहि रूपेँ कयने छथि- फाणितमिक्षु रस-विकार: **पाकसाध्योद्रव: खण्डविकृति: फेना यस्य प्रसिद्धि:** (दे.मि.मिहिर 16-3-75)

फिनी- फेनी-फेनाक छोट आकार वलाकेँ फिनी कहल जाइत अछि । मुदा ई सर्वथा असंगत बुझाइत अछि । उर्दूमे फिनी शब्दक प्रयोग भेटैत अछि । ई दूध एवं चाउरक आँटासँ बनल विशेष प्रकारक खीरकेँ कहल जाइत अछि । अत: एहने पदार्थकेँ फिनी कहल जाइत होयत ।

अमृत कुण्डी-आइ-कालिह एतऽ मिठाइमे **अमिरतीक** महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । प्राय: वैह अमृतकुण्डीक विकृत रूप अमिरती भऽ गेल होयत ।

मुगबा- मुद्गपाक, मुङ्वा- ई आइ-कालिहक मुगबासँ साम्य रखैत अछि । एकर आकार पैघ होइत छैक । ई लड्डूक एक रूप थिक । ई मुंगक बेसनसँ बनैत अछि ।

माठ- अँटाक बत्तीक कुण्डली बनाय घीमे छानि सिरकामे पागल मिष्टान्नकेँ माठ कहल जाइत अछि । मुदा ककरहु-ककरहु मतेँ ई केवल चीनीक बनैत अछि । चीनीकेँ पानिमे औंटि ओकरा कोनो वासनमे पौरलजाइत अछि । ओ ओहि वासनक आकार बनि जाइत अछि । उपनयनादिक अवसरपर एखनहु खाजा-माठ बनैत अछि तथा सप्ताडोरा बन्धन पावनिमे झिल्ली-माठ प्रसादक रूपमे चढ़ाओल जाइत अछ । ई झिल्ली-माठ सिरकामे पागल नहि होइछ । मात्र गूड़ वा शक्कर दऽ पक्वान्नक रूपमे बनैत अछि ।

सरुआरी- गाढ़ दूधमे बुनियाँ आओर चीनी दऽ बनाओल जाइत अछि जे सम्प्रति सकरौढ़ीक नामसँ अभिहित कयल जाइछ ।

लड़िबी- लड़िबी/लड्डू (लडुबी) चीनीक चासनीमे अँटाकेँ भूजि कऽ ओकरा मिलाओल जाइत अछि । ओहिमे किसमिस, दाख, छोहारा आदि कटुक मशाला दऽ कऽ गोलक बनाओल जाइत अछि ।

भोजनक अन्तमे दूध देबाक प्रथा छल ।[20] चण्डेश्वर सेहो कहने छथि जे भोजनक अन्तमे दूध भोजन करी ।[21] निबन्धकार वाचस्पतिक सेहो कयने छनि जे भोजनक अन्तमे दूध पान करी ।[22] आइ कालिह सेहो भोजनक अन्तमे दूध वा सकरौढ़ी देल जाइत अछि । दूध तथा दही खयलाक उपरान्त आचमन कऽ भोजन समाप्त भऽ जाइत अछि ।

भोजनक पश्चात् हाथ धोअब, मुँह साफ करब, खड़िका करब, इत्यादिक सेहो वर्णरत्नाकरमे वर्णन भेल अछि –

जेओनार निर्वहल, हथहला कए पानी नारी उपनीत करु, आचमन करु चतु:सम लए हाथमाण्डु मुह पषालल, खलिका देल, शुद्ध्याचमन भेल ।[23]

मिथिलामे भोजनक बाद मुखशुद्धिक प्रथा अछि । मुखशुद्धिक रूपमे पानक व्यवहार एतऽ अत्यन्त प्रचलित अछि । मैथिल विन्यस्त पान खयबाक अभ्यस्त रहलाह अछि । वर्णरत्नाकरमे सुन्दर पानक वर्णन भेल अछि । पानमे चून, कङ्कोला, इलायची, जाफर, कपूर, सुपारी इत्यादि मिला कऽ खायल जाइत छल । पानक विभिन्न मशाला आयातित होइत छल । पानक मशालाक विविध स्वाद ओ पानक विभिन्न गुणक वर्णन

सेहो कविशेखराचार्य कयलनि अछि ।[24] पानकेँ सराइमे प्रस्तुत करबाक व्यवहार छल । वर्णन एहि प्रकारक अछि–

ताम्बूल लए देल । से कइसन ताम्बूल, रूपाक सीप दुवे चुम्बाओल अइसन आकार । आषाढ़क छवीक काटल, बीर, पतरल झोल, चून, सिन्धुक कङ्कोला श्रीहट्टक एला, सिंहलद्वीपक जातीफल, काञ्चीक मुखमेन, मलय वाञ्चैरक भीमसेन कर्प्पूर, लषनावतीक सरसा पुग, तिरहुतिक साहर एकरेँ संयोगेँ लगाओल पञ्चफल संयुक्त, कटु, तिक्त, कषाय, क्षार, उष्ण, मधु, मुखशोभक, सुरसस्वादु, सरस, सन्दीपक, कामाग्निक सम्मानक पवित्र तेरह गुण सम्पूर्ण, देवराज भोग्य देले पाबिअ, स्वर्गहु दुर्लभ अइसन पान, सुवर्णक सराइ एक कए आगाँ धएल, नायकेँ पान लए मुखशुद्धि कएल ।[25]

वर्णलाकरक आठम कल्लोलमे ज्योतिरीश्वर दोसर कालक रातिक भोजनकेँ बिआरी कहलनि अछि । एकर अवसर प्रहर रात्रि बितलाक उपरान्त होइत छल । ज्योतिरीश्वरक प्रस्तुत **पुनर्भोजनवर्णनासँ** रातुक भोजनक भान होइत अछि । तद्युगीन समाजमे प्राय: रातुक भोजनमे चूड़ा-दहीक प्रचार-प्रसार छल होयत । अद्यपर्यन्त मिथिलावासी जे वैद्यनाथ धामक अगल-बगल वा ओही ठाम रहैत छथि-हुनकामे रातुक भोजन चूड़ा-दही खयबाक प्रचलन देखल जाइत अछि ।

बिआरीक वर्णनमे ठाओँ-पीढ़ीक उल्लेखसँ मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक समेकित चित्र भेटैत अछि– **चोरगाहि ठाओ नीपल, तदनन्तर अपूर्व पीढ़ी एक ठाम धरल ।[26]**

भोजनार्थी द्वारा भोजनपर बैसबासँ पूर्व खराम लऽ हाथ पैर धोयबाक वर्णन भेल अछि– **वथा रत्नमण्डित नायकेक देल......तदनन्तर अठपहरि पानि वासल सुन्दरी देल । नायके पएर पखालल ।[27]**

पश्चात् ज्योतिरीश्वर चूड़ाक उल्लेख कयने छथि । चूड़ाक अपूर्व सौन्दर्यक वर्णन एहि प्रकारक अछि– **तदनन्तर कर्पूरमञ्जरी, क्षीरोदक, लोहरी, प्रभृति ओगर हेमन्तक पीटल, बटइक नहतह छोट सुग पाषितह मोट, तेनतरिक पत्रप्राय अइसन सुगन्धे अति उपगत कक ।[28]**

अर्थात् ई चूड़ा अगहनमे कूटल बटेरक नह सन-सन मेही, सुगाक पाँखि सन पातर, तेतरिक पात जकाँ चप्पत ओ महमह करैत छल । बंगालमे ओगरा खिच्चड़ि कहबैत अछि । मुदा एहि अर्थमे एतऽ ओगर शब्दक समीचीनता स्पष्ट नहि अछि । पश्चात् दूधक वर्णन अछि । ई दूध तेरिआ प्रभेदक महिससँ प्राप्त होइत छल जे **बकेन** होयबाक कारणेँ कोनो दिन लागि जाइत छल तैं दू दिन धरि नहिओँ लगैत छल । स्वभावत: एकर दूध अत्यन्त मधुर ओ मोट प्रकृतिक होइत छल होयत । पुनश्च ई दूध वृद्धगोप द्वारा दूहल जाइत

छल । खढ़क मीठ आँचमे साढ़े बारह वर्षक नवयौवना गोप-बालिका द्वारा औंटल जाइत छल । एहि दूधसँ दही पौरइत देरी एगारह आङ्गुर बरड़ी पड़ि जयबाक अत्यन्त चमत्कार पूर्ण वर्णन अछि । एहन दही देखबामे पवित्र आ स्वादमे अमृतोपम कहल गेल अछि–

तेरिआ महिसि पाड़ी कम सात हाथ थागल ओराए था दिन एक लाग, दिन द्वि लागए नहि । तीनि काण्ठ बरहखुरि महिसि । वृद्ध गोपक दुहलि । अथतेरह वर्षक वेटिआ तें औंटल । चलाओल लेवारी षढ़कज्वाला । अडी डीठि । वाङ्का पीठि । घने लालें । मधुरे ज्वालें । दूध औंटल जाहि सुन्दरीक पाछू भए कन्दर्प टोकार पालल अछ गए भावाभाव विवर्ज्जित वे सुन्दरी । ते उष बिचलि दूध पौरल । हृदयक सरिकए तिनि हाथ चाकर निमुठ हाथ ठाढ़ गंगा फेण प्राय पौरइतें मात्र एगारह आंगुर बरली पललि । काँचे कर्प्पूरें लेसन देल । तैसन दधि शरतक चन्द्रमा पूर्णिमा प्राय । अमृतहु जिन स्वादे, दर्शने पवित्र दूध उपगत कइ ।[19]

लेवारी खढ़क मधुर आँचमे औंटल गेल एहि दूधकेँ तीन हाथ चाकर आ निमुठ हाथ ठाढ़ पात्रमे देल जयबाक तथा पौरला उत्तर गंगाक फेन सदृश भऽ जयबाक वर्णनसँ स्पष्ट अछि जे पात्रमे दूधकेँ खसबैत काल ऊँचसँ खसाओल जाइत छल होयत जाहिसँ उपरमे अधिक छाल्ही पड़ि सकय । एगारह आङ्गुर बरलीसँ तात्पर्य होयत छाल्हीक अत्यन्त मोट ओ कठगर होयबासँ । लेसन / जोड़नक रूपमे काँच कर्प्पूरक व्यवहार होइत छल होयत ।

कविशेखरक एहि वर्णनसँ मिथिलाक जनजीवनमे चूड़ा-दहीक प्रति आसक्तिक सेहो बोध होइछ । दहीक वर्णन करैत कविशेखराचार्य कहलनि अछि जे ई ततेक स्निग्ध अछि जे जीह आ तारुमे विवाद भऽ गेल छैक । जीहसँ छूटैछ तँ तारुमे लटपटाय जाइछ आ तारुसँ छूटैछ तँ जीहमे सटि जाइछ । एहन सुन्दर दहीकेँ ठेकान लगयबाक हेतु देवचीनी (दिव्य चीनी) खाँड़क प्रयोग होइछ अर्थात ओकरे संयोग भेलापर ई द्वन्द्व समाप्त होइत छल । अवश्य चूड़ा-दहीक संग चीनी सेहो खयबाक व्यवहार होयत । एहिसँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे जखन दही-चूड़ा किछु भोजन कऽ लेल जाइत छल तखन चीनी देल जाइत छल होयत । ई युक्ति संगत बुझना जाइछ कारण, दही-चूड़ा आओर चीनी यदि एके बेर खायल जाय तँ दहीक स्वाद नीक जकाँ नहि बुझा सकैत अछि । वर्णरत्नाकरमे चूड़ा दही परसबाक तथा भोजन करबाक विवरण एहि प्रकारक अछि–

सुवर्णक चौरा, दूधे तेओल,चिउला उपर सुन्दरी दधि देल । कटइते कान्ति, टुटइते कपित, पात्र देइते थभति । सुन्दरीक करकमल पल्लव प्राय सोनाक छीपें छेओल । शंखप्राय दधि देल । नायके पञ्चग्रास कएल । कारी चलकि । चलकीक चिक्कणताह जिह्वाहि वीवाद । तारु छडाविअ जिह्वा न छाडए । जिह्वा छाडाविअ तारु न छाडए । देवचीनी खाण्डक संयोगे नायका विवाद त्यजल ।[20]

सुवर्णक चौरा– सोनाक वाटी, दूधे तेओल– दूधसँ भरल गेल । चिउला– चूड़ा, कटइते कान्ति– कान्द-दही कटबाक काल सुन्दरीक पल्लव सदृश करकमल कानऽ लगैत अछि । टुटइते कपित– छाल्हीक टुटबाकाल काँपऽ लगैत अछि । पात्र देइते थभति– पात्रमे देबाक काल स्तम्भित भऽ जाइत अछि । सोनाक छीपेँ छेओल– सोनाक छीप (सीप वा चम्मच)सँ छीलि कऽ अर्थात उपरे तरासि कऽ शङ्ख सदृश दही देलथिन। नायक पञ्चग्रास कयल अर्थात् मंत्रक उच्चारणपूर्वक पाँच कओर लऽ कऽ भोजन प्रारम्भ कयल । चलकी-छाल्हीक चिकनाइक कारणेँ जीह आ तारुमे विवाद आरम्भ भेल जे चीनीक प्रभावेँ समाप्त भेल ।

एकर उपरान्त पक्वान्न देल जयबाक वर्णन अछि । किछु पकमान दिनुक भोजनसँ समता रखैछ तेँ शेष पक्वान्नादिक एतऽ वर्णन कयल जा रहल अछि ।

मधुकुपी- ई मधुक संयोगसँ बनैत छल । एकर आकार कुप्पीक आकारक होइत छल होयत । इहो बेसन सँ बनैत छल ।

तिलबा- तील एवं गुड़क संयोगसँ बनल विशेष खाद्य पदार्थकेँ तिलबा कहल जाइत छल । तिलबाक प्रचार-प्रसार आजुक मिथिलामे सेहो खूब अछि । तिलासंक्रान्ति पाबनिमे तील-चाउर-गूड़ मिला कऽ तिलबा सहित देवताकेँ नैवेद्य चढ़ाओल जाइत अछि आ ओ प्रसादरूपमे ग्रहण कयल जाइत अछि ।

अन्तमे दुग्ध-पानक वर्णन अछि । पश्चात् नायक चुरू लऽ हाथ धोय खड़िका कऽ कपड़ासँ हाथ पोछि मुखशुद्धि पूर्वक भोजनसँ विराम लैत वर्णित भेलाह अछि ।

वर्णरत्नाकरक अनुसार- दुग्धपान नायके कएल । चुरूलेल । खाण्डे हाथ रुषाओल । अञ्चाओल । षलिकाजे दन्तधवन कएल । नेते हाथ रुषाओल तेरह गुणे संयुक्त पञ्चफल सहित देव रूपाक सराजि कए पान देल । नायके पान लेल । मुखशुद्धि उद्यमल ।[21]

एहि तरहेँ कविशेखराचार्य मिथिलाक प्रधान लोकप्रिय भोजन चूड़ा-दही, चिन्नी, मिष्टान्न ओ पक्वान्नक अत्यन्त रम्य चित्र उपस्थित कयलनि अछि ।

प्रस्तुत दूनू कालक भोजन देखला सन्ताँ स्पष्ट भऽ जाइछ जे ई भोजन राजा महाराजाक वा धन-सम्पन्न व्यक्तिक छल होयत तथा इहो स्पष्ट होइछ जे दिनुक भोजन भात-दालि एवं रातुक भोजन चूड़ा-दही छल । एतेक तँ निश्चिते जे साधाररण कोटिक लोकक भोजनक विधान एतेक बढ़िया नहि होइत छल होयत ।

खाद्यमे जे अन्तर हो मुदा विन्यासमे सुघरता मिथिलाक भोजनक संग प्राचीनकालसँ रहल अछि । ठाँओ-पीढ़ी, भोजनसँपूर्व पैर धो, आचमन, खड़िका ओ मुख-शुद्धिक व्यवहार मिथिलाक भोजन विन्यासक अभिन्न अंग बनल रहल अछि ।

प्रस्तुत वर्णनक अतिरिक्त अन्यत्रहु अनेक ठाम प्रसंगात् भोजन सम्बन्धी शब्दावली उल्लिखित अछि ।

ग्रीष्म वर्णनामे बेलक पकबाक,[32] तथा वारिभक्तक (पानिमे राखल बासि भात) भक्षणक[33] उल्लेख कयल गेल अछि । मिथिलामे पनिआओल बासि भात खायब जूड़शीतल पावनि दिन (मेषसंक्रान्तिक परात)सँ आरम्भ होइत अछि । हेमन्तवर्णनामे नव अन्नक प्रचार[34], शिशिर वर्णनामे **ब्रीहिक**-(धानक) सञ्चय, दधिक काठिन्य[35], वनवर्णनामे विभिन्न प्रकारक फल ओ तरकारीक वृक्षक जेना-रसाल-आम, **सोहिजन-मुनिगा, बेल,** बदर-बैर, कदम्ब, इत्यादिक[36], उपवन वर्णनामे विभिन्न प्रकारक खाद्यफलक गाछक जेना- गुआ, नारिकेर, नारङ्ग-नारंगी वा समतोला, दाख-किसमिस, दालिम्ब-दाडिम, छोलङ्ग-छोहारा, लवङ्ग, जम्बीर, जम्बू, कटहर, (सं.पनस), कङ्कोला (सं.-कक्कोलो) -सुगन्धित फलवला एक वृक्ष, एला (अड़ाँची), सुखमेला, (छोटकी अड़ाँची), कनककदली, कर्प्पूरकदली, रामकदल (केराक अनेक विशिष्ट प्रकारसभ) इत्यादिक वर्णन भेल अछि ।[37]

सरोवर वर्णनामे विभिन्न प्रकारक माछक उल्लेख भेल अछि जेना वाउसि (?) बसाँढ़ (बसाँढ़ी), बोआर (बोआरीक पैघ प्रभेद), बचा (बचवा) बामु (बामी) अरि(?), मोत्रे (मोदिनी), कोन्धु......(?), नयना (नयन/नैनी), नायर.........(?), सौर (सौरा) मिलिन्धि...........(?), सफरी (छोटकी माछ) इत्यादि ।[38]

ऋष्याश्रम वर्णनामे सात प्रकारक ब्रीहिक उल्लेख भेल अछि यथा- यव, (जौ), गोधूम (गहूम), नीवार......(?), चरण............(?), देवधान्य (धानक प्रभेद विशेष), कङ्गु (काउन), श्यामाक (सामा) आदि ।[39]

एहि तरहेँ प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन-विन्यासपर दृष्टिपात कयने परिलक्षित होइछ जे प्राक्-ज्योतिरीश्वर कालीन मैथिली साहित्यमे संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंशक साहित्यिक ग्रन्थमे भोजन सम्बन्धी मैथिलीक ठेठ शब्द लोकजीवनसँ ग्रहण होइत रहबाक परिपाटी आठम नवम शताब्दीसँ सुरू भऽ गेल छल मुदा प्राकृत पैङ्गलम्, धूर्तसमागम ओ वर्णरत्नाकरमे मैथिली भोजन विन्यासक अत्यन्त विशद्, सरस, सजीव ओ यथार्थपरक वर्णन भेल अछि ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. मैथिली साहित्यक इतिहास- दुर्गानाथझा श्रीश, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1977, पृ.-21
2. बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त, जयधारीसिंह, मधुबनी, 1969, पृ.-160 ।
3. देशीनाममाला- हेमचन्द्र, सं. आर. पिशेल, गोवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई, 1880, 1 । 198
4. तत्रैव, 2 / 35
5. तत्रैव, 2 / 42
6. तत्रैव, 2 / 46
7. तत्रैव, 1 / 19
8. तत्रैव, 7 / 11
9. मैथिली साहित्यक इतिहास- दुर्गानाथझा श्रीश, पृ.-14
10. तत्रैव, पृ.- 14
11. तत्रैव, पृ.-16
12. गृहस्थरत्नाकर-चण्डेश्वरठाकुर, एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1928,पृ०-359 ।
13. मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, सं. -शशिनाथझा, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, 1985 धूर्तसमागम, अंक-2, श्लोक 26, पृ.-65
14. एहि गीतसँ सम्बद्ध संस्कृतश्लोक निम्नस्वरूपक अछि-

    मांसं माष-पटोल-तक्र वडिका वास्तूकशाकं वटः

    संजीवन्यथ मत्स्य-मुद्ग विदलप्रायः प्रकारोत्करः ।

    स्वादिष्टन्व पयो घृतं दधि नवं रम्भाफलांशर्करा

    संक्षेपादिति साध्यतां सुवदने भिक्षा मदीया द्रुतम् ॥
15. वर्णरत्नाकर-ज्योतिरीश्वरठाकुर, सं० सुनीतिकुमारचटर्जी एवं बबुआमिश्र, एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, 1940 पृ. -1-2 ।
16. विद्यापति कालीन मिथिला- इन्द्रकान्तझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1983, पृ.-321-328 ।
17. वर्णरत्नाकर, पृ.-12-13
18. तत्रैव, पृ.-13
19. तत्रैव, पृ.-13
20. विद्यापतिकालीन मिथिला-पृ.-325
21. तत्रैव, पृ.-325
22. तत्रैव, पृ.-325
23. वर्णरत्नाकर पृ.-13
24. तत्रैव, पृ.-13
25. तत्रैव, पृ.-13
26. वर्णरत्नाकर पृ.-68
27. तत्रैव, पृ.- 68-69
28. तत्रैव, पृ.-69
29. तत्रैव, पृ.-69
30. तत्रैव, पृ.-69
31. तत्रैव, पृ.-69-70
32. तत्रैव, पृ.-19
33. तत्रैव, पृ.-19
34. तत्रैव, पृ.-20
35. तत्रैव, पृ.-20
36. तत्रैव, पृ.०-30
37. तत्रैव, पृ.-38
38. तत्रैव, पृ-40
39. तत्रैव, पृ.-43

पंचम अध्याय

मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यास

मध्यकालीन मैथिली साहित्यसँ तात्पर्य अछि विद्यापति ओ हुनक परम्परामे रचित मैथिली साहित्यसँ। विद्यापति मैथिली साहित्य-प्रासादक एक गोट प्रशस्त स्तम्भक रूपमे विद्यमान छथि। चौदहम शताब्दीमे आविर्भूत एहि महाकविक रचनासँ मैथिली साहित्याकाश आइ धरि अत्यन्त जाज्वल्यमान अछि। विद्यापति संस्कृत काव्य सरणीक व्यामोहकेँ तोड़ि देसिल वयनाकेँ प्रतिष्ठापित कयलनि। स्वभाषा, मातृभाषामे रचित हिनक गीति-साहित्य ततेक लोकप्रिय भेल जे परवर्ती लगभग पाँच शताब्दी धरि हिनक काव्यक अनुसरणमे रचना होइत रहल।

महाकवि विद्यापति संस्कृतोमे विविध विषयक ग्रन्थक रचना कयने छलाह। तत्कालीन देसिल वयना अवहट्टमे महाकविक दुइ गोट ग्रन्थ उपलब्ध अछि-कीर्तिलता ओ कीर्तिपताका।

कीर्तिलतामे वर्णनक क्रममे महाकवि प्रसंगतः भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग कयने छथि। एहि ग्रन्थक प्रथम पल्लवमे प्रस्तावनाक क्रममे भृंग कहैत अछि-

पुरिस कहानी हओं कहओं जसु पत्थावे पुन्न।
सुक्ख सुभोअन सुभवअण देवहा आइ सपुन्न ॥[1]

अर्थात् हम ओहन पुरुषक कथा कहैत छी जकर प्रस्ताव मात्रसँ पुण्यक प्राप्ति होइत अछि, सुख, सुभोजन (सुभोअन), नीक वचन ओ पुण्य-जन्य देवलोकक प्राप्तिक कारण होइछ।

कीर्तिलताक दोसर पललवमे एकटा पद अछि-

मान विहूना भोअना सत्तुक देअल राज।
सरण पइट्ठे जीअना तीनू काअर काज ॥[2]

अर्थात् मान रहित भोजन करब, शत्रुक देल राज्य प्राप्त करब, शरणागत भऽ जीब- ई तीनू कायरक काज थिक, अर्थात् वीर पुरुषकेँ एहि तीनूसँ बचबाक चाही।

एहि ठाम भोजन ओ सम्मानक पारस्परिक सम्बन्धक चर्चा भेल अछि।

कीर्तिलताक दोसर पल्लवमे जौनपुर नगरक वर्णन भेल अछि। जौनपुरक वर्णन करैत महाकवि ओहिमे आम्रवाटिकाक वर्णन कयलनि अछि।[3] जौनपुरक हाटक वर्णनक क्रममे पनहटा, पक्वानहटा, मछहटा आदिक वर्णन भेल अछि।[4] बजारक वर्णनक क्रममे तुरुक लोकनि द्वारा कबाब, सालन इत्यादि खयबाक वर्णन भेल अछि।[5]

- भोज्य पदार्थसँ सम्बद्ध पात्र कूजा, तबेल्ला एवं मुसलमानक प्रिय खाद्य लहसुन, पियाजक बिक्रीक प्रसंग एहि पाँतीमे द्रष्टव्य अछि -

कहीं तत्थ कूजा तबेल्ला पसारा। कहीं तीर कम्माण दोक्काणदारा ॥
सराफे सराहे भरे बेवि बाजू। तौल्लन्ति हेरां लसूना पेयाजू ॥[6]

- शराव पीबाक उल्लेख सेहो एहि ग्रन्थमे अछि- **अबे बे भणन्ता सरावा पिबन्ता।[7]**

कओरक हेतु नेवाला शब्दक प्रयोग भेटैत अछि- **पहिल नेवाला खाइ जाइ मुह भीतर जबही।[8]**

सअद (शहद, मधु), सेरणी (चिन्नीक लड्डू) सन मधुर पदार्थक बिलहबाक तथा परस्पर उच्छिष्टान्न (जूठ) खयबाक वर्णनक माध्यममे तत्कालीन नगर-व्यवस्थामे भोजनक प्रति दृष्टिकोणक पता एहि पाँतिसँ लगैत अछि-

सअद सेरणी बिलह सब्बको जूठ सब्बे षा।[9]

तेसर पल्लवमे इब्राहिम शाहक सेनामे भोज्य पदार्थक कमीक ओ महार्घताक वर्णन भेल अछि-

सेरँ कीनि पानि आनिअ। पीवए षणे कापड़े छानिअ ॥
पानक सए सोनाक टङ्का। चान्दनक मूल इन्धन बिका ॥
बहुल कौड़ि कनिक थोड़। घीवक बेचा दीअ घोर ॥
करुआक तेल आङ्ग लाइअ। वाँदी बड़ दासओ छपाइअ ॥[10]

अर्थात् पानि सेरक भावमे कीनऽ पड़ैत छल आ कपड़ासँ छानि कऽ पीबऽ पड़ैत छल। एक सय सोनाक टकामे पान भेटैत छल। चन्दनक भाव इन्धन बिकाइत छल। बहुतो कौड़ी देलापर कनेक कनिक (अन्नकण) भेटैत छल। घीवक बेचमे घोर मात्र भेटैत छलैक। अनेक दासदासीकेँ गमौलापर देहमे लगयबा योग्य कड़ु तेल भेटैत छल।

कीर्तिपताक' य आरम्भिक पद्यमे विद्यापति अर्जुनरायक प्रशंसामे कहने छथि जे ओ भोगद्रव्यकें भण्डारमे जमा कऽ नहि छोड़ल अर्थात ओकरा सेवक लोकनिक बीच बाँटल । वस्तुत: अन्नदानक प्रति उदार व्यक्तित्वक प्रति जे सामाजिकक श्रद्धाभावपूर्ण विज्ञप्ति अछि, से एहि माध्यमे कवि कीर्तित कयलनि अछि ।

विद्यापति द्वारा बहुश: गीतमे प्रयुक्त विविध उपलक्षणमे अनेक भोजनसँ सम्बद्ध अछि जेना-

दूधे पटाइअ सीचिअ नीत ।
सहज न तेज करइला तीत ॥[11]
दिवसक भोजन वरष न आट ॥[12]
पठओले कौड़ि पाव नहि घोर ।
घीव उधार माङ मति मोर[13]
बेडेओ भुखल नहि दुहु करे खाय ॥[14]
नीर-खीर दुहु करय समान ।
बानर मुँह की सोभय पान ॥[15] इत्यादि ।

हिनक एकगोट प्रभात कालीन गीतमे नायक नायिका द्वारा मुखसुद्धिक रूपमे पानक सेवनक चर्चा भेटैत अछि-

मुख केर पान सेहो रे मलिन भेल, अवसर भल नहि मन्दा ॥[16]

हिनक विभिन्न पदमे घृत, मधु, दूध, डाढ़ी, घोर इत्यादिक वर्णन अछि-

कनक कलश बम दूधक धार ॥[17]
घृत मधु दुध दए नेते बाति कए चौदिस देलक दिपमाला ॥[18]
बिरला के घर खिरहर सोम्पलह दूध बहल अछि डाढ़ी ।
दधि दुध घोर धिउ सबे खयलक सगर रयनि सुखे काढ़ी ॥[19]

एतऽ खिरहरक प्रयोगसँ ई स्पष्ट होइछ जे ताहि युगमे दूध-दहीक भण्डार घरकें खिरहर कहल जाइत छल होयतैक ।

एकटा खण्डिता नायिकाक वर्णनक क्रममे कवि ओकरा द्वारा नायकक सम्मानमे भोजनक हेतु राखल विभिन्न सामग्रीक उल्लेख कयलनि अछि जाहिमे क्षीर-भोजन ओ पकमान सेहो अछि-

चीर कपूर पान हमे साजल पायस ओ पकमाने ।
सगरि रयनि हमे जागि गमाओल खण्डित भेल मोर माने ॥[20]

एकटा विरहिणी नायिकाक वर्णनक क्रममे कागकें खीर-खाँड़ अर्थात् दूध चीनीसँ निर्मित स्वादिष्ट भोजन देबाक वर्णन भेल अछि-

काक भाख निज भाखह रे पहु आओत मोरा ।
खीर-खाँड़ भोजन देब रे भरि कनक कटोरा ॥[21]

एहि तरहें विद्यापतिक शृंगार पदावलीमे भोजन विन्यासक यत्र-तत्र वर्णन भेटैत अछि । शृंगार पदावलीक अतिरिक्त हिनक भक्तिकाव्य शैव साहित्यवला भागमे शिव-पार्वतीक पारिवारिक जीवनमे भोजन जन्य संघर्षक अत्यन्त सरल चित्रण भेल अछि । महादेव स्वयं तँ भांग-धथूरपर आधारित छथि, वासुकीनाग पवने पीबि कऽ रहि जा सकैत छथि, मुदा गौरी आ हुनक नेनाक की होयतनि ! भोजनक प्रति पारिवारिक जीवनक एहि संघर्षकें अभिव्यक्त करैत महाकवि लिखलनि अछि-

अमा किने गमावति गोरि ।
सकल संपति मइ जोहि अइलाहु पावल भसम झोरि ॥
न घर संबर न पिठि अंबर न मिल पँच उधारे ।
तनय बापुर भूखे बेआकुल किने मए देब अधारे ॥
वासुकी जीउत पवन पीउत हरे जिअब विष खाइ ।
सेवक स्वामि दुहु भल मिलल हमर कओन उपाइ ॥[22]

एही प्रकारक एकटा अन्य गीतमे **भोजन, उपास, भूख, कदन्न, पथार** तथा **जेमब** (भोजन करब) आदि शब्दावलीक प्रयोग द्वारा शिवक पारिवारिक जीवनक चित्र उरेहल गेल अछि ।-

खेतो न करथि भिखि न माङथि बालक भोजन चाही, गे माइ ।
एक दिना भुख सहलो ने जाइक मासक मास उपास गे माइ ॥
कोदो आनि पथार जे देलनि बाघक छाल ओछाय गे माइ ।
गौरी सोहागिनि जल लय गेली फूजल बसहा खाइ गे माइ ॥
पाँच मुखे शिवशंकर जेमथि छौ मुख जेमनि बेटा गे माइ ।
सहस्रकला लय वासुकि जेमथि केओ ने कहय भरि पेटा गे माइ ॥[23]

विद्यापतिक समकालीन ओ परवर्ती काव्य-परम्परामे सेहो गीतमे विभिन्न खाद्य पदार्थक उल्लेख देखि पड़ैछ जेना-

गोरस बिरसा बासि बिसेषल छिकेहुँ छाडल गेहा ।
मुरलि धुनि सुनि मन मोहल बिकेहुँ भेल सन्देहा ॥[24]
साठिक चाउर अम्बक पात, कंकण बाधब शंकर गात ॥[25]

गोधूम चूर्ण पूर्ण थारी पर कनक कटोरि भरि घीउ ।
करजोरि रान्हि लैह करि पुकारह ताहि हेरि थर-थर जीउ ।।[26]

एहि तरहेँ महाकवि विद्यापति ओ हुनक काव्य-परम्परामे भोजन विन्यासक शब्दावलीक प्रयोग सौन्दर्यवर्णनक उपमान ओ नायकक-भोज्य पदार्थक वर्णनक क्रममे यत्र-तत्र उल्लिखित भेल अछि ।

अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे विद्यापति-काव्यपरम्परासँ पृथक चौपाइ छन्दमे मैथिली साहित्य परिवर्तित भाव रुचि, वेष-भूषाक संग कविवर मनबोधक कृष्णजन्मक रूपमे अवतरित भेल । लोकनायक श्रीकृष्णक एहि चरितकाव्यमे अनेक स्थलपर भोज्य पदार्थक चर्चा भेल अछि । बाल कृष्ण दही बूझि कऽ चूने खाय लगैत छथि-

कय बेरि साप धरय पुनि जाथि । कय बेरि चून दही बदि खाथि ।।[27]

पञ्चम अध्यायमे खररूप धेनुक राक्षसक कृष्ण द्वारा वधक वर्णन अछि । एहि वर्णनक क्रममे कवि श्रीकृष्ण ओ हुनक संगी लोकनि द्वारा ताड़क फल तोड़ि खयबाक वर्णन अछि । मिथिलाक नेना वर्ग खास कऽ चरवाह वर्गक नेना द्वारा वनप्रान्तरमे फलादिक तोड़ब ओ खेड़ि करैत दिन बितयबाक प्रसंगक अत्यन्त सहज चित्र प्रकट भेल अछि-

एक दिन हरि हलधर दुहु भाए । शिशुगन संग लए तरु बन जाए ।।
तारक सौरभ पहुँचल आए । लागल सबहुक जिह पानिछाय ।।
केकरहु झटहा केकरहु चेप । तार न खसय खसय मुह सेप ।।
से देखि हँसय लागल कमलाछ । हलधर धएल हिलाओल गाछ ।।

....

तखन सबहु मिलि खयलन्हि तार । आँगन लयला एकहक भार ।।[28]

एही अध्यायमे श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्द्धन-पूजाक सेहो विवरण आयल अछि । पूजामे नैवेद्यक रूपमे भोज्य पदार्थ देबाक विवरण अछि ।[29]

छठम अध्यायमे बहुतो उपाय कयलाक बादो श्रीकृष्णकेँ मारि सकबामे असफल कंसक चिन्ताक वर्णन अछि । नित्यप्रति महिसक दही, दूध, घी, खीर, आदिक भक्षणसँ वर्द्धिष्णु श्रीकृष्णक बलवीर्यसँ सशंक कंस अक्रूरकेँ कहैत छथि-

महिसिक दधि दुध घृत खिरि खाए । बढ़नुक दिन-दिन बढ़ले जाय ।।[30]

सातम अध्यायमे हयरूपधारी केसी राक्षसक श्रीकृष्ण द्वारा बधक वर्णन भेल अछि । केसीक मृत्युपर नारद अपन हर्ष अभिव्यक्त करैत सुरगणक मानसिक सन्त्रासक वर्णन करैत कहलनि अछि-

एहि असुरक डर इन्द्र डेराथि । पचइन्हि नहि डर जे किछु खाथि ।[31]

एहि अध्यायमे श्रीकृष्णक मथुरा प्रस्थानक संगहि नन्दमहर द्वारा दही ओ घृतक भार पठयबाक वर्णन अछि-

बाइस सए फरमाइस भार । दधि घृत लय कहु चलल गोआर ।।
नन्दमहर जेठरैयति ताही । एको दधि नहि लेथि अधलाही ।।[32]

आठम अध्यायमे अक्रूरक ओहि ठाम श्रीकृष्णक पहुनाइक विवरण अछि-

हरि पहुनाइ कहय के पार । छओ रस भोजन छतिस प्रकार ।।[33]

एही तरहेँ मनबोधकृत कृष्णजन्ममे भोजन विन्यासक विविध प्रकारक, जेना शिशु अज्ञानतावश अखाद्यो वस्तुक भक्षण करबाक, चरवाहआदिक द्वारा विभिन्न बनैया फलक जोगाड़ करब, पूज्य प्रतीककेँ नैवेद्य चढ़यबाक, मानसिक तनावक स्थितिमे भोज्यो पदार्थक अरुचिकर होयबाक, मन्दाग्निक शिकार होयबाक, परिजनक हेतु उपहारक रूपमे भार सैंठबाक तथा पहुनाइमे विन्यस्त भोजनक व्यवस्था करबाक विवरण भेटैत अछि ।

मुदा मध्यकालीन काव्य परम्परामे जाहि कविक भोज्य वस्तुक विवरण अत्यन्त हृदयग्राही, यथार्थपरक तथा सामयिक अछि से छथि कवि फतूरी । ई अपन अकाली कवितामे फसली वर्ष 1281 (1873-74)क अकालक वर्णन कयने छथि जाहिमे दीनहीन वर्गक दुर्दशाक अत्यन्त सूक्ष्म ओ यथार्थपरक वर्णन भेल अछि-

दैब बेपच्छ पच्छ नहि राखल, जड़ि कटौलक धान ।।
कोदो मड़ुआ एको न उपजल, नहिँ उपजल किछु साम ।
गम्हरी गद्दर खेतहिँ सुखायल, भेल विधाता बाम ।।
मर्तभुवनमे के कर रच्छा, कहाँ जाय केँ भागि ।
सुखल पताल हाल नहि ओतहुँ, सर्गहु लागल आगि ।।
धृक जीवन ओहि नृपति इन्द्रकेँ, जे रोकल महि पानि ।
जीवाजन्तु विकल पुहवीमे, ताकेँ हो नहिँ आनि ।
रबी-राय एको नहि उपजल, ने खेढ़ी औ चीन ।।
घर-घर सोच करै नर-नारी, दुरदिन भेल अन बीन ।।
धनिक लोक सभ मनहिँ मगन छथि, राखथि बहुतो ढेरि ।।
हसोथि रुपैया घर कै राखथि, मँहगी भेल अब सेर ।।
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहल, जाहि कौड़ि छल अपना ।।
कतेक जना हरिवासर ठानल, भात बहुत कै सपना

कतेक जना मिलि जनेर बेसाहल, निरधन बइसल तकइ ।
भेल धनन्तिरि दुइ फसल जग, राहड़ि आओर मकइ ॥
काल पइल तिरहुतमे भारी, तेँ ई बहि गेल हाबा ।
घर-घर मगन करै नर-नारी फाँकि मकइ केर लावा ॥
मालिक और महाजन सबकेँ, घर-घर ढेरी अन्न ।
लोक बुझाओन ओहो तकै छथि, मुँह गरीबक सन्न ॥
समय देखि बनिआ सभ सनकल, डरेँ लगओलक टट्टी ।
सुन्न दोकान सहरमे पड़ि गेल, सुन्न भेल सभ चट्टी ॥[34]

एहि अकाली कविताक माध्यमसँ कवि फतूरीलाल रौदी जन्य दुर्भिक्षक अत्यन्त मार्मिक चित्र उपस्थित कयलनि अछि । उपजाक अभावमे सुअन्न तँ सामान्य लोककेँ उपलब्ध नहिये रहलैक, कदन्नोपर आफदि उपस्थित भऽ गेल छलैक । मुदा एहू अवस्थामे शासक ओ सामन्तवर्ग अपना घरमे अन्नक बखार रखने छल । जनसामान्यक बुभुक्षाक प्रति ओकरा कोनो दरेग नहि छलैक ।

एहि कविताक माध्यमे कवि मिथिलामे उपजऽवला विभिन्न प्रकारक अन्न जेना-धान, गम्हरी, गद्दरि, मकइ, मड़ुआ, साम आदिक सूची जकाँ उपस्थित कयने छथि जाहिसँ मिथिलाक खाद्यान्नक सम्बन्धमे जानकारी भेटैत अछि ।

एहि तरहेँ मध्यकालीन काव्य परम्परामे भोजन-विन्याससँ सम्बद्ध पदक रचना होइत देखि पड़ैछ । महाकवि विद्यापति ओ विद्यापति-परम्पराक अन्य कवि अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन काव्यमे भोजनकेँ स्थान देलनि अछि । अठारहम शताब्दीमे मनबोधक कृष्णजन्ममे खाद्यक चर्चा भेल अछि ओ फतूरलाल अकाली कवितामे अकालक मर्मस्पर्शी चित्र खीचि मिथिलाक विभिन्न खाद्यान्नक सूची ओ अन्नाभावमे मिथिलाक अधोगतिक वर्णन कयलनि अछि ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. कीर्तिलता-विद्यापति, स. बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1929, पृ.-8
2. तत्रैव, पृ.-20
3. तत्रैव, पृ.-26
4. तत्रैव, पृ.-30
5. तत्रैव, पृ.-40
6. तत्रैव, पृ.- द्वितीय पल्लव
7. तत्रैव, पृ.- द्वितीय पल्लव
8. तत्रैव, पृ.- द्वितीय पल्लव
9. तत्रैव, पृ.- द्वितीय पल्लव
10. तत्रैव, पृ.-68
11. विद्यापति गीतावली- सं. गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पद सं.-311
12. तत्रैव, पद सं.-177
13. तत्रैव, पद सं.-307
14. तत्रैव, पद सं.-686
15. तत्रैव, पद सं-
16. तत्रैव, पद सं.-293
17. तत्रैव,
18. तत्रैव, पद सं.-141
19. तत्रैव, पद सं.-622
20. तत्रैव, पद सं.-431
21. तत्रैव,
22. हरगौरी विवाह नाटक-जगज्ज्योतिर्मल्ल, सं. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, 1982, पृ.-54
23. तत्रैव (सं०1970), पृ.-69 ।
24. लोचनकृत राग तरंगिणी, सं. शशिनाथझा, मैथिली अकादमी पटना, 1981 पृ०-170-171
25. हरगौरी बिवाह नाटक, पृ.-48
26. गोविन्द गीतांजलि-सं सुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, दरभंगा पद सं-336 ।
27. कृष्णजन्म-मनबोध, सं सुरेन्द्रझासुमन, मैथिली मन्दिर, दरभंगा 1970, पृ.-6 ।
28. तत्रैव, पृ.-10
29. तत्रैव, पृ.-11
30. तत्रैव, पृ.-14
31. तत्रैव, पृ.-16
32. तत्रैव, पृ.-17
33. तत्रैव, पृ.-19
34. मैथिली क्रेस्टोमैथी -जी.ए.ग्रियर्सन, पृ.25-26

षष्ठ अध्याय

आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यास

मैथिली साहित्यमे आधुनिक युगक सूत्रपात चन्दाझाक द्वारा साहित्यिक गतिविधिमे नवोन्मेषक संग मानल जाइछ । कवीश्वर मैथिली काव्य-परम्पराक गत्यवरोधकेँ तोड़ि ओहिमे नवीनता प्रदान कयलनि आ देश ओ समाजक संग मैथिली साहित्यकेँ जोड़ि एकरा युगप्रवृत्तिक अनुकूल बनौलन्हि । हिनक द्वारा रोपल आधुनिक मैथिली साहित्यक बीज आइ विशाल वटवृक्षक स्वरूप धारणा कऽ लेने अछि आ एहिमे युगानुकूल विभिन्न विधापरक रचना भऽ रहल अछि ।

भोजनसँ सम्बद्ध शब्दावली ओ भोजन विन्यासक निवेश आधुनिक मैथिली साहित्यक विभिन्न विधामे दृष्टिगोचर होइछ । मैथिल जीवन ओ संस्कृतिक एहि अभिन्न अंगक प्रति कवि-लेखक लोकनि अत्यन्त सचेष्ट देखि पड़ैत छथि आ विभिन्न विधामे रचित मैथिली साहित्यमे एकर वर्णन अनेक स्थलपर विन्यासपूर्वक तथा अनेक ठाम प्रसंगतः होइत रहल अछि । सुविधाक हेतु आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यासकेँ विधाक आधरपर निम्नलिखित खण्डविभाजन कयल जा सकैछ-

(i) महाकाव्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

(ii) मुक्तक काव्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

(iii) कथा-उपन्यासमे वर्णित भोजन-विन्यास

(iv) नाटकमे वर्णित भोजन-विन्यास

(v) निबन्धमे वर्णित भोजन-विन्यास

(i) महाकाव्यमे वर्णित भोजन विन्यास-

महाकाव्यक वृहत्तर वर्ण्य परिधिमे मानव जीवनक सम्पूर्ण व्याख्या लक्ष्य रहल अछि । स्वभावतः एहिमे भोजन विन्यासक अत्यन्त स्फुट वर्णन होइत रहल अछि ।

कवीश्वर चन्दाझा ओ लालदासक **रामायण**, सीतारामझाक **अम्बचरित**, तन्त्रनाथझाक कीचक वध ओ बबुआजीझा अज्ञातक **रुक्मिणी परिणय**मे भोजन विन्यासक वर्णन एहि दृष्टिमे महत्त्वपूर्ण अछि ।

कवीश्वर चन्दाझाक **मिथिला भाषा रामायण**मे मैथिल भोजन-विन्यासक पर्याप्त चर्च भेल अछि, यथा- पुत्रक कामनासँ जखन दशरथ यज्ञ कयलनि तँ दिव्यपुरुष यज्ञाग्निसँ बहार भऽ हुनका पायसक थार देलथिन -

पायसपूर्ण पात्र कर लेलय कहि गुण नृपकेँ देले ।[1]

गौतम ऋषि द्वारा अहल्याकेँ शाप दैत कहल गेल अछि-

जल जनु पीबह अन्न न खाह । आश्रम छोड़ि कतहु जनु जाह ।।[2]

मिथिलाक वर्णन करैत कवि कहलनि अछि-

की दिव्य फूल-फल वृक्ष अनन्त थान ।[3]

रामक राज्याभिषेक प्रसंगमे मुनि लोकनि द्वारा एहि अवसरपर ओरिआओनक विविध वस्तुक चिट्ठा देल गेल अछि जाहिमे दही ओ माछक उल्लेख सेहो अछि-

कनक कलश नाना तीर्थोदक पूरित रहै हजारे ।
दधि दूर्व्वाक्षत कुङ्कुम चाही मत्स्य प्रशस्तक भारे ।।[4]

रामक वन-गमनक प्रसंगमे दशरथक मूर्च्छितावस्थाक कारण पुछलापर कैकेयी हुनका तकर कारण सुनबैत कहैत छथिन जे-

शुनु गुणधाम राम कहइत छी दण्डक वन अँह जाउ ।
चौदह वर्ष बनी भय रहुगय कन्द मूल फल खाउ ।।[5]

शृंगवेरपुरमे निषादराज गुह द्वारा रामक स्वागतमे भोज्य पदार्थक व्यवस्थाक वर्णन करैत कहल गेल अछि-

गुहजन यदपि निषादक जाति । साँठल भारहि भार उपाति ।।[6]

पञ्चवटीमे डेरा देलाक बाद राम लक्ष्मण द्वारा भूख मेटयबाक वस्तुक वर्णन करैत कहल गेल अछि-

केरा कटहर बरहर आम । फल अनेक वन कत कहु नाम ।।
कन्द मूल फल लक्ष्मण आन । भोज्य वस्तु हो अमृत समान ।।[7]

सम्पाति द्वारा शरीर-धर्मक अत्यन्त विलक्षण व्याख्या करैत जन्म-जन्मान्तरसँ

विविध शरीरक प्राप्तिक क्रममे विविध प्रकारक भक्ष्य-ग्रहण करबाक वर्णन अछि-

मातृयुक्त अन्नादिक खाथि । वर्धित गर्भ विकल पछताथि ॥
पूर्व जन्म मन पड़लय ताप । देखल विविध माय ओ बाप ॥
विविध भक्ष्य नाना स्तन पान । कयल कतहु नहि पावल ज्ञान ॥[8]

लंकाकाण्डमे रावणक दूत शुकक पूर्व जन्मक वृत्तान्तक वर्णन अछि । एहिमे शुकक द्वारिपर आतिथ्य ग्रहण करबाक हेतु आयल अगस्त ऋषिक स्वरूप धारण कऽ वज्रदंष्ट्र नामक राक्षस द्वारा छाग-मांस बनयबाक अनुरोधक ओ पछाति शुक-वधूक स्वरूप धारण कऽ मानुषमासु परसबाक वृत्तान्तक उल्लेख अछि ।[9]

अंगद जखन लंकापुरी पहुँचैत छथि तखनुक रावण- प्रजाक भयावह अवस्थाक चित्रण करैत कवीश्वर कहलनि अछि-

के कर भानस खायत भात । ह्रदय काप जनु पीपर पात ॥[10]

रावणक मृत्यु भेलापर लक्ष्मण द्वारा विभीषणकेँ प्रकृतिस्थ करयबाक क्रममे कहल गेल अछि-

सभ जनि घुरिकेँ लंका जाथु । पानि पिबथु गए अन्नो खाथु ॥[11]

उत्तर काण्डमे दुर्वासा द्वारा रामक आतिथ्य ग्रहणक क्रममे हुनक बुभुक्षाक विवरण एहि प्रकारक अछि-

कहल उपासल छलहु हम सुनु नृप वर्ष हजार ।
सिद्ध अन्न भोजन करब मानल मुख्य विचार ॥
कहयित कथा पाक सम्पन्न । भोजन कयल अमृत सन अन्न ॥[12]

एहि तरहेँ रामकथाक विविध प्रसंगमे कवीश्वर भोजन सम्बन्धी विविध शब्दावलीक उल्लेख कयलनि ।

भोजन बिन्यासक वर्णनक दृष्टियेँ कवियर लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि । मिथिलाभाषा रामायणहि जकाँ एहू मध्य विविध प्रसंगमे विभिन्न भोज्य पदार्थक विवरण आयल अछि ।

शृंगीऋषिकेँ लोभयबाक हेतु प्रमदालोकनि हुनका विभिन्न प्रकारक खाद्य पदार्थ अर्पित करैत छलीह-

मेवा मधुर अनूप खोआय । गुल्म लता लड्डू लटकाय ॥[13]

प्रसंगत: पक्व तालक फलक उल्लेख अछि-

उर पर दुइ दुइ गोलाकार । पक्व ताल फल सन विस्तार ॥[14]

पुत्रेष्टि यज्ञ कयलापर अग्निदेव द्वारा पायस प्रदान करबाक कथा एहि रूपेँ वर्णित अछि -

सभ विधि अनल भेला सन्तुष्ट । बहरयला लय पायस पुष्ट ॥[15]

सीताक जन्मक बाद मिथिलाक विभव विस्तारक खाद्य पदार्थक समुपलब्धताक आधारपर कवि चित्रण कयलनि अछि-

सुख सम्पति शस्यादिक धान्य । मिथिला आबि भेल सब मान्य ॥
अन्नादिक तृण जल दल फूल । रस सम्पन्न मधुर फल मूल ॥[16]

सीताक बाल्यावस्थाक चित्रण करैत नेनाक मधुरक प्रति लौलक वर्णन करैत कहल गेल अछि-

खेलथि बाजथि तोतर बात । हमरा कहथि मधुर दिअ तात ।[17]

रामादिक चारू भाइक बाल्यावस्थाक चित्रण करैत हुनक भोजनक सेहो वर्णन कयल गेल अछि-

भोजन वस्तु सुधारस सानि । चारू भाव खाथि सुखमानि ॥[18]

जनकपुरमे रामक आगमन भेलाक बाद हुनका द्वारा मिथिलापुरीक वाटिकाक शोभाक वर्णनक क्रममे अनेक फलवृक्षक चर्चा भेल अछि -

आम्र सुकानन पनसोद्यान । सुभग सुशीतल छायावान ॥[19]

सीताक विदागरी भऽ गेलाक बाद राजा जनकक मोहावस्थामे कन्याक बाल्यावस्थाक चरित्रक स्मरणक क्रममे कहल गेल अछि-

तात देल नहि मधुर घँगाय । आइ माइ नहि देल खोआय ॥[20]

वनगमनक समय सीताकेँ वनगमन करबासँ मना करैत राम कहैत छथि-

वन जनु जाइ अहाँ सुकुमारि । नहि तँह अन्न न निर्मल बारि ॥
कन्द मूल फल नित्य अहार । भेटत न कतहु सुखद आगार ॥[21]

एहि प्रकारक छिटपुट वर्णन तँ अन्यान्यो ग्रन्थमे आयल अछि मुदा कविवर लालदासक वर्णनक विशिष्टता अछि अवसर विशेषसँ सम्बद्ध भोजन-विन्यासक मैथिल रीति-नीतिकेँ अपन रामायणक मध्यमे समाविष्ट करबामे । बिपटा-बिनोद, डहकन, महुअक, उचिती, नैहरसँ पुछारिक क्रममे भार आदिक वर्णन कऽ कवियर मैथिल भोजन-विन्यासक अनेक विशिष्ट पद्धति सभकेँ वितृत कयलनि अछि ।

विपटा-विनोदक क्रममे लालदास मिथिलाक भोज-पद्धतिक संकेत मात्र देलनि अछि । शुभ अवसरपर परिजन-पुरजन लोकनिकेँ निमन्त्रित कऽ सहभोजन करयबाक प्रक्रिया भोज कहबैछ आ सहभोजक विशिष्ट आनन्दवर्द्धक अवसर संयोगहि होइत छैक । लालदासक बिपटा, रामक चारू भायक एके संग विवाह करा देलासँ एके भोजसँ चारू विवाहक निर्वाह करौनिहार अवध महाराजक संग चुटकी लैत अछि–

मैथिल विपटा लगबय ताल । कहय कृपण बड़ अवध भुआल ॥
चारि बेर खैतहुँ जे भोज । पबितहुँ दान होइत नहि ओज ॥
खर्चक डरेँ अवध महराज । कयल एकहि बेर चारू काज ॥[22]

मिथिलामे बेटीक विवाहक अवसरपर आगत समधिकेँ भोजन करयबा काल बेटी पक्षक नारी लोकनि द्वारा **डहकन** गीत गाओल जयबाक परिपाटी अछि । एहि गीतक विशिष्टता छैक जे एहिमे वर पक्षक समधिनकेँ गारि पढ़ल जाइत छैक । एहि तरहेँ सद्यः भेल सम्बन्धकेँ गारिक मधुर तागसँ बान्हि जेना सुस्थिर कयल जाइत होअय । लालदासक रामायणमे एहि मनोरंजक विधिक उल्लेख भेल अछि–

बैसथि भोजन करय नरेश । डहकन गाबथि नारिगण वेश ॥
सुनि समधिनि-मुख सौं सुख गारि । हँसथि खाथि पुनि बुझथि बिचारि ॥
एहि विधि अति प्रसन्न अवधेश । बड़ प्रिय लगथिनि मिथिला देश ॥[23]

एहिना मैथिल भोजन विन्यासक विशिष्ट परम्परामे अबैत अछि विवाहक बाद चारि वा पाँच दिन धरि वर-कनिञाकेँ गोसाउनिक घरमे पायस भोजन करायब । एहि विधिकेँ **महुअक** कहल जाइछ ।

उक्ति प्रसिद्ध अछि– **भुखले मोन पड़य कोबराक खीर** । महुअकक एहि विधिमे गाम भरिक नारी लोकनि जमा होइत छथि, गीत होइत अछि, वरक संग हँसी-चौल होइत अछि आ वरकेँ छकयबाक-हारि मनयबाक उपक्रम चलैत रहैछ । वरो अपन वर्चस्विताक प्रति सन्नद्ध रहैछ आ भोजनसँ बेसी वातावरणक मधुरताक आनन्द लैत अछि । कविवर मिथिलाक एहि विशिष्ट परिपाटीकेँ अपन रामायणमे अत्यन्त विशद रूपेँ प्रस्तुत कयलनि अछि–

विधिकरि लयलिह महुअक खीर । देल परसि लेलनि रघुवीर ॥
जौँ जौँ भोजन रघुवर करथि । सखि मिलि हँसी करथि कटु कहथि ॥
अहँक वंश केर अद्भुत कर्म । सुनल पुरुषकेँ प्रसवक धर्म ॥
पुनि सुनलहुँ पायसकेँ खाय । लै अछि नारि पुत्र जनमाय ॥
राम अहाँ जनु पायस खाउ । वैदेहिक उपहास बचाउ ॥[24]

मैथिल भोजन विन्यासमे बरियातीकेँ भोजन करयबाक सेहो विशिष्ट स्थान छैक । सरियाती पक्षक ई खास विचार रहैत छैक जे बरियाती पक्षकेँ छप्पनो प्रकारक नीक-निकुतसँ परितुष्ट आ अघौं करा देल जाय । बरियाती पक्षक ई इच्छा रहैत छैक जे सरियाती पक्षकेँ कोनो खास वस्तुमे देखार कयल जाय आ ताही वस्तु दिसि सभ झुकि जाइछ । राजा जनक द्वारा बरियातीक विखड़ी ओ भोजनक व्यवस्थाक वर्णन द्रष्टव्य-

उठि प्रातहि आबथि जनवास । बरियाती कौं कहथि प्रकाश ॥
चलु चलु सभ जन करु असनान । भेल विलम्ब करिय जलपान ॥
मेवा मधुर अनेक प्रकार । विखड़ी आबय भारहि भार ॥
अमरितमय गोरस पकवान । करथि मुदित सभ जन जलपान ॥
जावत हो विखड़ी व्यवहार । ततबहिमे पाको तैयार ॥
प्रमुदित जनक सबहि लय संग । करबाबथि भोजन कति रंग ॥
ऋद्धि सिद्धि जहँ मानस करथि । सुधा स्वादु फीका अनुसरथि ॥
कति भोजन व्यंजन कतिरंग । खाथि सबहि जन हर्ष-तरंग ॥
जेहि व्यञ्जनमे रुचि बढ़िआय ॥ खाय लेथि भरि पेट अघाय ॥
दोसर व्यंजन पड़ले रहय । मन ललचय क्यो खा नहि सकय ॥
कहथि हाय विधि की कय देल । सुधा देखाय क्षुधा लय लेल ॥[25]

नीकसँ नीक व्यवस्था रखलाक पश्चातो कन्याक पिता बरियातीसँ यशःकामी होइछ आ निरन्तर ओकर अनुनय-विनयमे लागल रहैछ । भोजनक संगहि एहि अनुनय-विनयक प्रक्रिया उचिती कहल जाइछ । कविवर बरियातीक भोजन- विन्यासक एहि प्रकरणकेँ सेहो अस्पृष्ट नहि छोड़लनि । हुनक रामायणमे उचितीक वर्णन निम्नस्वरूपक अछि–

तेहि पर जनक आबि बेरि-बेरि । परसि प्रकार लगाबथि ढेरि ॥
उचिती कहथि अनेक प्रकार । सभकाँ बढ़ आनन्द अपार ॥[26]

कन्याक द्विरागमन ओ आनहु अवसरपर माता-पिता द्वारा भोज्य पदार्थ भारक रूपमे पठयबाक मैथिल परिपाटी अछि । कविवरक वर्णनमे एकरो उल्लेख भेल अछि । सीताक द्विरागमनक अवसरपर भारक वर्णन एहि रूपक अछि-

वस्तु अनेक भार कति भार । लादल गाड़ी चलय हजार ॥

बाटमे सभक भोजनार्थ सेहो–

पाथे भोजन वस्तु अपार । लादल लाखो लाख बेगार ॥
दधि चूड़ा साँठल बितपन्न । मंगल भार चलय सम्पन्न ॥[27]

सीताक द्विरागमनक बादो भार-सम्भार जाइत रहबाक वर्णन निम्नरूपक अछि -

सीता हेतु मधुर संदेश । दधि चूड़ामे चाफल वेश ॥
भरि-भरि भार सौंठि मिथिलेश । नित्य पठाबथि कोसल देश ॥[28]

एहि तरहेँ कविवर लालदास मैथिल भोजन विन्यासक विशिष्ट प्रथा-परम्परा, जेना- महुअक, उचिती, विखझो, भार आदिक वर्णन कयलनि अछि ।

कविवर सीतारामझाक अम्बचरित महाकाव्यमे विभिन्न स्थलपर भोजन-विन्यासक वर्णन भेल अछि । प्रथम सर्गमे सद्य:प्रसवाक हेतु विभिन्न विवर्जित नवान्न ओ अन्य खाद्यक चर्चा करैत कविवर कहने छथि-

नहि पुनि ठंढा पानिसँ उषमहु समय नहाथि ।
हमरा सरदिक भीतिसँ दही भात नहि खाथि ॥
नहि अगहनमे भात नव, नहि अषाढ़मे आम ।
नहि चैतहु नव जव चना नहि भादवमे साम ॥[29]

मायद्वारा अपन शिशुक हेतु भोजन-जलपानक ओरियान करबाक वर्णन करैत कवि कहने छथि –

जायबमे चौपाड़िपर हो न कनेको देरि ।
ई बुझि दोसर काज तजि भानस करथि सबेरि ॥
दिनमे साँझक हेतु नित राखथि कय ओरिआन ।
साँझहि प्रातक हेतु पुनि हमरा लय जलपान ॥[30]

मिथिलाक आतिथिपरायणताक चर्चा करैत कविवर एहि क्रमक विभिन्न खाद्य वस्तुक विवरण देलनि अछि-

घर-घर अतिथिक हेतु पृथक राखल गेल आसन ।
चाउर चूड़ा दही दालि तरकारी बासन ॥[31]

मिथिलाक दिव्य उद्यानक वर्णन करैत कविवर विभिन्न फलवृक्षक सूची देने छथि-

सरस सेब सहतूति नासपाती समतोला ।
अनानास अङ्गूर मुसब्बी पैध मझोला ॥
किसमिस दाख अनार नारियर विविध सुपारी ।
पिस्ता ओ अखरोट मनक्का वृक्षक धारी ॥
बर बदाम अंजीर अरोंची मरिच लवङ्गक ।
ताल तमाल खजूर आदि तरु रंग विरंगक ॥

जामुन आम लताम सरीफा केरा कटहर ।
लीची खीरी बेल सतालू डुम्मरि बरहर ॥
अमली अमरा कत्थ करौना कमरख नेबो ।
फलित देखि ललचाथि सदा इन्द्रादिक देवो ॥[32]

एहिना विभिन्न लत्ती ओ तरकारी सभक सेहो वर्णन कयने छथि –

मञ्च-मञ्चपर कुम्हर कदीमा सजमनि लतरल ।
बारी-बारी विविध साग सोआ अछि चतरल ॥
आलू ओल खम्हारु आरु अरिकोँचक धारी ।
कोबी भाँटा मूर आद आदिक तरकारी ॥[33]

बरियातीक सम्मानमे राजा जनक द्वारा परम्परित भोज्य पदार्थक इन्तिजामक वर्णन एहि प्रकारक अछि-

नव बसन विविध जलपान हेतु । मेवा मिसरी जलपान हेतु ॥
माखन दधि औंटल दूध गाढ़ । तरु तरुतर छल हलुआइ ठाढ़ ॥
घृतमे टटका पूरी छनैत । छल सरस विविध व्यञ्जन बनैत ॥[34]

सीताक द्विरागमनक अवसरपर साँठल गेल भारक वर्णन एहि प्रकारक अछि-

छाँछक छाँछ दही ओ माछक डाली छल असुमार ॥
केरा चूड़ा कूड़ा भरि-भरि लागल ततय कतार ॥
पूरी ओ पकमान पिरुकिया मधुर अनेक प्रकार ।
भरल चङेरा मेवा मिसरी नाना विधिक अँचार ॥[35]

काशीकान्तमिश्रमधुपक राधाविरह महाकाव्यमे भोजन विन्यासक वर्णनकेँ विशेष स्थान नहि भेटि सकलैक अछि । तथापि अनेक स्थलपर प्रसंगवश भोज्य पदार्थक चित्रण भेल अछि, यथा– भगवतीकेँ गोढ़नीक रूपमे चित्रण करैत माछक, मोदिआनिक रूपमे चित्रण करैत बतासाक उल्लेख भेल अछि-

युगसँ राखल खल संहारक फेकल जाल घुमाय ।
कहियो राघव माछ-काछ पुनि कहियो लैह बझाय ॥[36]
स्वयं बैसि परदेमे संध्या होइतहि खोलि दोकान ।
मखत बतासा नील थारमे सजा राखि अम्लान ॥[37]

गोपलोकनिक मधुरागमनक प्रसंगमे दूध, दही, घी तथा ओकर बासनक (माट) वर्णन भेल अछि-

तथा नन्द आदिक गोपो सब लादि शकट पर माटक माट ।
दूध दही घृत माखन भरि भरि चलला तखने माटो-माट ॥[38]

यशोदाक वात्सल्यजन्य विरह वर्णनक अवसरपर कवि शिशुकेँ भोजन करयबाक अत्यन्त उत्कृष्ट वर्णन कयलनि अछि-

सुगबा मैनमा कौर बना कऽ के खुअबैत हेतैक दुलारि ।
पय बकेन गायक जगाय भोरे पिअबैत हेतै पुचकारि ॥
माख न ककरो गाम घरिक माखन लुटि खा-खा भोज करैत ।
गोकुल जकाँ स्वतन्त्रताक अवसर बिनु मुहठा हैत बनैत ॥[39]

एहि ठाम मैनाकेँ सुग्गा बदला, मैनाक बदला कौर बना-बना कऽ फुसिआय-फुसिआय दुलारपूर्वक खोअयबाक मृदुल मैथिल रीति स्फुट भेल अछि ।

एहि महाकाव्यमे गोवर्द्धन-पूजाक अवसरपर विविध प्रकारक नवेद चढ़यबाक एवं भोजन-दानक परम्पराक उल्लेख सेहो भेटैत अछि । भारतीय भोजन विन्यासक परम्परामे भगवानकेँ नैवेद्य ओ ब्राह्मणकेँ दानक रूपमे भोज्य पदार्थ देबाक उल्लेखसँ देवकर्ममे सेहो भोजनक विशिष्ट स्थान सूचित भेल अछि-

मेवा मधु पकवाने । दूध दही घृत मधुर मखाने ॥
दऽ नवेद गिरि अर्चा । कऽ द्विज गायक करू समर्चा ॥
खोआ विप्र कऽ दाने । गिरिक प्रदक्षिण कऽ अम्लाने ॥[40]

तन्त्रनाथझाक **कीचक वध** महाकाव्यमे राजकीय भानसगृहमे सोपकरण विभिन्न प्रकारक भोजन रन्हबाक सामग्रीक विवरण आयल अछि-

नृपक महानस आलय कर आमोद
दूरहि मृगमद-केसरि-हिङ्ग घृतादि
मिश्रित नाना अतरक गन्ध समान
शाल शरर सहकार पलाशक काष्ठ
इन्धन हेतु धएल छल चीरि प्रभूत ।
विविध द्रव्य-निर्मित अनेक लघु दीर्घ
यत्र-तत्र छल पसरल रन्धन-पात्र ।
छल कतिपय पुनि झँझ करछु अति दीर्घ,
अस्त्रागारक जे कर हरण गुमान
छल लघु कन्दर तुल्य चुल्हिका शान्त
त्यक्त अस्त्र हारल योद्धाक समान

मुख भरि धरल छार पावक कए छन्न,
अर्द्ध दग्ध इन्धन छल पड़ल अनूष्ण ।
शिलापट्ट छल पर्वत-खण्ड समान
ताहि चतुर्दिग खसल जीर-मरिचादि ।
इन्धन शेष व्यञ्जनादिक छल ढेर
ठाम-ठाम छल औंधराएल कए गोट
वारि-पात्र, जनि आनल कूप उखारि
प्राङ्गण व्याप्त भेल जल तकर हेराए
ताहि विमिश्रित व्यञ्जन अन्नक शेष
भए पर्युषित करए तत गन्ध विचित्र ।
छल आलय-उपान्त डबकल बहुगण्ड
दिन-दिन डबकि भेल लघु-पल्वल-रूप
क्षिप्त चतुर्दिग-पात्र-शेष सिद्धान्न
व्यञ्जनादि ।[41]

बबुआजीझा 'अज्ञात' रचित **रुक्मिणी परिणय** महाकाव्यमे अगहन मासक वर्णनक क्रममे दही संग नवका चूड़ा, नवका भात, कुरथीक दालि, सरिसबक साग इत्यादिक सहजोपलब्धि ओ सुधा समान एकरा सभक स्वाद-ग्रहणक मैथिल प्रवृत्तिक वर्णन भेल अछि-

कूटथि चूड़ा गृहवनितागण करथि दहिक ओरियान ।
नव कुसियारक गूड़ भूर पुनि बाड़िक स्वच्छ महान ॥
नवका धानक भात दालि नव कुरथिक सरिसो शाक ।
महिषिक छल्हिगर दही भीतसन की पुनि स्वाद सुधाक ॥[42]

एहिने भरदुतिया पावनिक वर्णनक क्रममे पकमानक भारक सेहो वर्णन द्रष्टव्य-

गहना साड़ी पकमानक लय भार सहोदर जाथि ।
बहिन पानसँ पूजि हुनक कर हर्षक सिन्धु समाथि ॥[43]

हेमन्तक वर्णनक क्रममे कवि विभिन्न प्रकारक समैया तरकारीक वर्णन कयलनि अछि-

कुम्हर सजमनि घेरा झिंगुनी तरकारी सभ आन ।
टाट-फड़क पर लतरि फड़ै अछि चढ़ि चढ़ि चार मचान ॥

कवि विभिन्न प्रकारक माछक सेहो उल्लेख कयने छथि-

टेङरा पीठी गडइ माछ छै हेंजक हेंज चलैत ।
रोहु बोआरी छरपि-छरपि छै जलमे तुरत खसैत ॥
माछक छवरा गोल बनओने छै चमचम चमकैत ।
कयल नयन शत प्रगट जलाशय अछि सभ दृश्य देखैत ॥[45]

एहि तरहें मैथिली महाकाव्यमे प्रसंगवशात् स्वतः भोजनविन्यासक वर्णन होइत रहल अछि ।

(ii) मुक्तक काव्यमे वर्णित भोजन-विन्यास

मैथिलीक आधुनिक मुक्तक काव्यमे सेहो भोजन विन्यासक पुष्कल निवेश देखल जाइछ । युग प्रवर्तक चन्दाझाक पदावलीमे भोजन विन्यासक चित्रण भेल अछि । हिनक महेशवाणी ओ नचारीमे मिथिलाक पेय भांग शिवक अत्यन्त प्रिय अछि । सासुरमे सामान्य जमायहि जकाँ हुनका एहि पेयक त्यागक आग्रह कयल जाइत छनि-

भांगक व्यसन त्यागू हे शिव ।
रहू सजल सासुर सतत सासु ससुरक आगू ॥[46]

धनिकक बेटी गरीब सासुरमे जा कऽ कोना बसती, तकर चिन्ता माता-पिताकें होयब स्वाभाविक । खास कऽ ससुरवस्नू बेटीक हेतु एतबा विभवक तँ चिन्ता माय-बाप करिते छथि जाहिसँ दूनू साँझ भोजनमे ओकरा विघ्न नहि होइ । नीक-निकुत खोआ कऽ पोसलि गौरीक सासुरबास भेलापर भिखारि शिवक संग हुनक गुजरहेतु माय-बाप अत्यन्त चिन्तित छथि जे कोना कऽ गौरी कदन्नपर जीवन धारण कऽ सकतीह-

की फल भांग धथूर चिबायब खायब नहि भल अन्न ।
नृपतिक बेटि भिखारिक घर बसि कोन विधि खाइति कन्न ।[47]

उदरपूर्तिक चिरन्तन समस्यासँ आदि कालहिसँ मानव जुझैत रहल अछि । भोजनक हेतु समस्त कर्म-कुकर्मपर आधृत होमऽ पड़ैत छैक । मानवक जीवनक एहि विवशताक संकेत करैत कवीश्वर कहलनि अछि-

कुकुर भाव जूठदाता गृह राति दिवस रखवारी ।
अपन प्रयोजन जन संयोजन के कर ककर पुछारी ॥[48]

एहि भावकें अभिव्यक्त करैत अन्य पद अछि-

उदर भरण कारण जन हिंसा केओ हाकिम केओ दासा ॥[49]

मानव जीवनक अनित्यतासँ विरक्त कवीश्वरक भोजनक प्रति भावना जीवनक एक गोट व्यवहारपक्ष मात्र अछि ।-

नितनित भोजन विविध प्रयोजन नारी शयन विलासा ।[50]

कवीश्वर अन्नक महार्घताक कारण अधर्म ओ धर्महानिकें कहलनि अछि -

मेल अन्न ढेर बाढ़ि पानि सौं दहाय । फेरि अन्न आशु सूर्यदेव सौं सुखाय ॥
आम ग्राम-ग्राममे बिहाड़ि तोड़ि जाय । धर्महानिसँ अनन्त कष्ट भेल हाय ।[51]
महार्घ सौं महार्घ अन्न धर्महीक फेर । अनेक अन्नभावसे बिकाय भाव सेर ॥
मालभोग भोग्यमे अभाग्यसँ जनेर । कहैक योग्य बात की अन्धेरसँ अन्धेर ।[52]

तत्कालीन अकालक वर्णन सेहो कवीश्वरक अनेक रचनामे भेटैत अछि, यथा-

अचार योग्य आम नै कहाँ सौं हो अमोट ।
समस्त लोकमे अधर्म कर्म्म नित्य छोट ॥
मरीच भाव अन्न भेट से जनेर गोट ।
उपायहीन लोककें सुखाय गेल घोट ॥[53]
दूध ओ दही नही फड़ैछ आब आम ।
अस्थि चर्म लोककें देखैछि गाम-गाम ॥
अन्नमे जनेरकें प्रधान ठाम-ठाम ।
धर्म त्याग सौं अवश्य कष्ट आउयाम ॥[54]
दूध ओ दही नही स्वकण्ठकें सुखाउ ।
अन्न ई महार्घ तँ जनेर कीनि खाउ ॥
नीच कर्ममे रहैछि धर्म्मकें बढ़ाउ ।
की अहाँ छलौं भेलौं से सोचिकें लजाउ ॥[55]
धदड़ दहायल धान दहाय ।
गरिब किसान कि करत उपाय ॥
कोना दिन काटत खिउत कि खाय ।
बालबचा मिलि कए हाय हाय ॥
हृदय जनु फाटत ॥[56]

अन्नक हेतु मानवक नैतिक पतनक पराकाष्ठाक चित्र उपस्थित करैत कवीश्वरक पद अछि-

चूड़ादही बाभन सोंटथि गट गट रे ।
बिनहि नोत बैसि जाथि निरहट रे ॥

धनहा आँसुक चूड़ा खाय मुहफट रे ।
राति भरि निन्द कहाँ पेट भट भट रे ।[57]

मिथिलाक विभिन्न माछक सूची कवीश्वरक बाताह्वानमे भेटैत अछि । एहिमे एकटा बगुलाक यात्राक विवरण अछि जे एक गामसँ दोसर गाम जाइत अछि आ प्रत्येक गामक एक गोट गाछपर विश्राम करैत अछि । ओहि ठामक कोनो व्यक्तिक आतिथ्य ग्रहण करैछ । आहारकरूपमे कोनो माछकेँ ग्रहण करैछ आ कोनो नदीक शीतल जल पिवैत अछि । कवर्ग ओ टवर्गक सानुनासिक व्यंजनकेँ छाड़ि प्रत्येक व्यंजन तथा क्ष संयुक्ताक्षरसँ आरब्ध प्रत्येक षट्पदीमे गाम, गाछ, व्यक्ति, माछ ओ नदीक नाम देल अछि । कवीश्वरक एहि कृतिमे मिथिलाक तीस गोट माछक सूची भेटैत अछि जे क्रमशः **कवइ, खेसरा, गरइ, धिनसी, चेल्हबा, छही, जासर, झिंगा, टेंगरा, ठकुरा, डेड़बा, ढलोइ, तीर्थदन्त, थर, दरही, धोली, नयन, पोठी, फोकचा, बामी, भाकुर, मोदिनी, योगनाचिल, रेवा, लपची, सिंगी, षड्दरही, सौरा, हुड्डा** ओ **क्षुद्रमीन** अछि ।

एहि तरहेँ कवीश्वर चन्दाझाक मुक्तक रचनामे अन्न ओ धर्म, अन्न ओ जीवन, अन्न ओ अकाल, अन्न ओ नैतिकता आदि विविध विषयकेँ उठाओल गेल अछि । संगहि हिनक बाताह्वानमे मैथिल मानसक मत्स्याहारी प्रवृत्तिक संकेत अछि ।

जनार्दनझा 'जनसीदन'क विभिन्न रचनामे भोज्य पदार्थसँ सम्बद्ध शब्दावलीक पुष्कल निवेश भेल अछि । अयोग्य पत्नीक लक्षणमे हुनक भोजन निर्माणक अपटुता तथा फुहरपनीक वर्णन एहि रूपक भेल अछि-

करथि पाक बहलैल तकर हम करू प्रशंसा कोन ।
भात असिद्ध, दालि जरले सन व्यञ्जनमे बहु नोन ॥
खैनिहार भोजन की करता कहुना गिड़ने जाथि ।
नहि लजाथि फूहरि ओ अपने परसि पेट भरि खाथि ।[58]

कविवर सीतारामझा छुलाहिक लक्षणकेँ निम्न पाँतीमे दरसौलनि अछि ।

चट मुँहमे दै देथि कतहु घरमे किछु पाबथि ।
लै सिधहहुसँ अन्न मुठी भरि गाल दबाबथि
खाइत ककरहु देखि ताहि दिस टकक लगाबथि
भरदुलाहिसँ छोट कनेक छुलाहि कहाबथि ।[59]

हिनका रचनामे एहो तरहेँ विविध प्रसंगमे विभिन्न प्रकारक भोज्य पदार्थक वर्णन भेल अछि ।

सब क्यो लय-लय बन्सी डोर । मारय माछ खाय नित झोर ॥
हमरा कहइछ चाली गाँव । सबसँ बुड़िबक दीनानाथ ।[60]

कुशेश्वरकुमरक **अतिथि सम्मान** शीर्षक कथा-काव्यमे अतिथिक आगत-भागतक वर्णन भेल अछि जाहिसँ मिथिलाक भोजन विन्यासक अत्यन्त सजीव चित्र उपस्थित भेल अछि ।[61]

कवि चूड़ामणि काशीकान्तमिश्रमधुपक मुक्तकमे सेहो मैथिल भोजनक विन्यासक विविध पक्षक वर्णन भेल अछि । हिनक नवान्न शीर्षक कथाकाव्यमे अगहन मासक वर्णनक क्रममे मिथिलाक सामान्य जनक सामयिक भोज्य पदार्थ ओ धानकेँ सुरक्षित रखबाक ओरिआनक अत्यन्त सहज चित्र रेखांकित भेल अछि-

बनिहारहुँकेँ भरिपेट भात
सरिसवक साग लाड़ीक कबै
ओ सस्त चिड़ै
आलू कोबी व्यञ्जनो खयात
बाड़ी बटेर
हरियरक उदय होइतहिं अहेर
कोठी बखार ढक धनहारी,
सब करथि ठीक प्रमुदित मानस ।[62]

एहि कथाकाव्यमे नेना वर्ग द्वारा भोज्य पदार्थक तोतर उच्चारण जन्य शब्दक विन्यास अत्यन्त सहज ओ सरस भेल अछि -

खोबै-चूला दही चिनी
कलबे कल काल्हि लबान आब
छिहबै छल लुपना लाम ललित
खा खा कऽ चूला दही गूल
मिछली चीनिक लड्डू केला[63]

तृप्त पिपासा शीर्षक कथाकाव्यमे मधुपजी मिथिलाक विभिन्न आमक सूचिए प्रस्तुत कऽ देने छथि-

बम्बै जरदा सबुजा फजली
कलकतिया सिपिया कृष्णभोग
जरदालु सपेता साहपसिन
लङड़ा खसि खसि नहि हैत भोग[64]

'लाइ पर बज्र' शीर्षक कथाकाव्यमे मिथिलाक हाटक वर्णनक क्रममे ओहि ठाम पसरल विभिन्न माछ, अन्न ओ तरकारीक विवरण आयल अछि-

भरि भरि खँझा रहु सौराठी
माङुर सिंगी बामी बोआर
हाटक पश्चिम दिशि गोढ़ि आबि
अति पीन मीन अछि बेचि रहल
कहुँ धान मकइ मडुआ गोला
आडी टोपी कहुँ अछि टाल
कहुँ झिंगुनी ओल परोड़ अछि ।

मिथिलाक खाद्य मध्य कोजागराक मखानक महत्त्वकेँ विज्ञापित करैत कविक पाँती छनि–

बहि गेलहुँ न गुनि अपमान मान
कहुँ दू फोँका कहुँ एक
कतउ नहि सेहो
तेहन महगिक विधान
किछु हो
आजुक निशिमे कहुना
निश्चय थिक खाइ मखान पान ।

'होरी' शर्षक कथाकाव्यमे मिथिलाक परम्परित भोजक प्रति लोकक आसक्तिक वर्णन भेल अछि–

पढ़ि आतापी भक्षितो येन
क्यो पेट हँसोथथि कऽ ढेकार
क्यो नमक-सुलेमानी फँकैछ
बनि अस्तव्यस्त चितङ्ग पड़ल
साहस की बहरयतनि बकार
आजन्म एहेन नहि भोज खैल
कहि क्यो चूसथि निमकी अँचार
विजया देथिक अनुकम्पासँ
अस्सी मोतीचूरक लड्डू
ओ बारह बाटी सकरौड़ी
की कहियौ यरबा कैल पार
कहियो देखल नहि एहन भोज

चौदह छागर टूटा खस्सी
बेनुआँक दही, ही कथिक ओज?
नगदे खर्चा बारह हजार
यश लूटि लेलक
किछु होउक ककर सम्पत्ति चिकै
लेलकन्हि ई सबहक नाक काटि
ई तँ कुमार भोजक बहार
देखिहक कल्लुका नोतक पसार
हलुआइ आठटा ऐल छैक
भरि गेलै मधुरसँ सब भराढ़
के खैत कते महगीक समय
किनि लेलकै मार्केटहिसँ सब
देलकनि बड़कौक झुकाय घाड़
ब्राह्मण की–? खा नहि सकल राड़

कविचूड़ामणिक कय गोट गीतमे भरदुतिया पावनिक अवसरपर मायक भोजनक हेतु बहिनिक ओरिआनक वर्णन भेल अछि –

भटवर तिलकोर कथी ले तरन्हिऐ
दही पौढ़ि गोटा दूध किए ओरिऔलिऐ
दिअए उलहन हँसि-हँस कऽ ननदिया
भेल मन मधुप मलान हे

एहि तरहेँ हिनक काव्यमे मैथिल भोजन-विन्यासक विविध पक्षक चित्रण होइत रहल अछि ।

तन्त्रनाथझाक 'मुसरीझा' कथाकाव्यमे भोजनक अत्यन्त मनोरंजक वर्णन भेल अछि ।

पण्डित कहल जखन जे होएतै जल्दी किछु खोआबह आनि,
भूखे पेट सटल पाँजरमे बजितहुँ होइत अछि बड़ ग्लानि ।
झट-पट एक जन खरड़ा लएकेँ खरड़ि लगहिं पुनि सींचल पानि,
ओछना केरि कम्बल चौपेतल बीच ठाम राखल पुनि आनि ।
मुसरीझाकेँ ताहि बैसाओल आगाँ धएल पुरैनिक पात,
आँजुर भरि-भरि चूड़ा परसल बजला बस-बस पुरितहिं सात ।
अनलक दूध भरल छल लोहिया छाल्ही छल आँगुरसन मोट,

एको बेरि ने दाँत बैसाओल नहि पीउल जल एको घोंट ।
खाए-पीबि ढेकरैत राउत लग घूड़क लग सटि बैसला जाए,
गरुड़-झम्प पुनि देखि घूड़पर कहुना जल्दी जाड़ पड़ाए ।
पूछल राउत कहु, पण्डितजी केहन एखनुक भोजन भेल ?
भरल पेट की व्यर्थ राति बिच खुद्दी खाए भूख दुरि गेल ।
भए गद्गद् मुसरी पुनि कहलन्हि, अरुदा तोहर होअओ अखण्ड,
एतबोसँ जे भुखले रहता थिकथि दरिद्रा ओ परचण्ड ।
निश्चय खाए जनीक शपथ हम, कहइत राउत छिअहु ई बात,
एहन मधुर दूध जिनगीमे पड़ल आइ धरि छल नहि पात ।
एहन मोट ओ एहन बिलच्छन छाल्ही तँ सुनलो नहि थीक,
इन्द्रो यदि बैसाए खोअबितथि नहि किछु दितथि एहिसँ नीक ।
सुनि-सुनि मुसरीझाक कथा ई गौरवसँ राउत गेल फूलि,
राखि चिलम पलथापर बैसल बिहुँसि कहए लागल पुनि झूलि ।
पण्डित, हमर बथानक दूधक पाओल अहाँ न असली स्वाद,
छओँड़ा सभ अछि बड़ अपरोजक बजितहु होइत अछि परमाद ।
पसरक बाद दूध जे दुहलक सभटा चुल्हिअहिं देलक चढ़ाए
एखन धरि जँ छाल्ही पड़ितए, तरहथिअहुसँ जाइत मोटाए ।
एखन अहाँ जे खाएल पण्डित, से तँ दोसर छाल्ही थीक,
तेहने दूध बिलच्छन होइछ तेँ ई लागल एहन नीक ।[69]

काञ्चीनाथझा किरणक कवितामे सेहो मैथिल भोजनक विन्यस्त वर्णन भेल अछि । मिथिलाक माटि-पानि, देस-कोस आ जन-जीवनसँ सम्बद्ध हिनक कविता सभमे अनेक ठाम मिथिलाक भोजन सामग्रीक यथार्थपरक चित्रण देखि पड़ैछ । मिथिलाक प्रति कवितामे कवि एहि ठामक सर्वहारा वर्गक खाद्य विभिन्न प्रकारक कन्द-मूलक चर्च कयने छथि-

अमती करहर भेंट चिचोड़ । कंचु कहरनी कदम केसौर ॥
मेवहुसँ बढि हर्षे खायब । जनम-जनम तोहरे गुण गायब ॥[70]

मिथिलाक वसन्त शीर्षक कवितामे कवि मटर, मसुरी, अकटा, तीसी, सरिसव, आदिक उल्लेख कयने छथि ।[71]

'हेमन्त गीत' शीर्षक कवितामे मिथिलाक विभिन्न प्रकारक धानक वर्णन भेल अछि-

कामोद कृष्ण अछि एक कात, दोसर दिश सतरा शुभ्र गात ।
गंगा जमुना जनु ठाढ़ि भेलि, छवि छाड़ि एतऽ मिलनक झमेलि ।
ई लाल सतरिया डोलि रहल, जनु सरस्वती अबइछ उमड़ल ।[72]

'एक चित्र' शीर्षक कवितामे ठेठ ग्राम्य शब्दावलीक माध्यमे निम्नवर्गक भोजनक उल्लेख कयल गेल अछि-

बाबू लौंधुन बोनि कमा कऽ नवका मड़ुआ रखने रहबौ ।
सौंसे रोटी ललका टिकरी सत्ते रखबौ आइ न ठकबौ ॥[73]

'खूसर बाबू' शीर्षक कवितामे अरदाराक ब्राह्मण-भोजनमे विभिन्न खाद्य सामग्रीक परम्पराक विरोध करैत छथि ।[74]

आधुनिक जीवनक संग भोजन-दानक परम्परामे भेल परिवर्त्तनक संगहि नूतन खाद्यक दानक चर्चा करैत कहल गेल अछि-

आ पनपियाइमे
अंकुरी केरा पकमानक सङ
रहइत छनि अमलेट[75]

आचार्य सुमनजी 'कविताक आह्वान' शीर्षक कवितामे साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे, कविता कमलातीर[76] कहि मानवक समस्त क्रिया प्रतिक्रियाकेँ भोजनमे केन्द्रित कहि देलनि अछि । संगहि काव्यकेँ कृषक ओ श्रमिक वर्गक परिपोषक अन्न-तत्त्वक रूपमे स्वीकार कऽ मानव जीवनमे अन्नक महत्ताकेँ प्रतिष्ठापित कयलनि अछि ।

कवि यात्रीजीक कवितामे अन्नकेँ एहि भौतिकतावादी युगक चरमोपलब्धिक रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि । हुनक उक्ति अछि-

मकइ मड़ुआ साम काओन आसु गम्हड़ी धान
माछ मधु फल मूल पान मखान
एहिसँ की बाढ़ि होएत सत्य ।[77]

स्वदेशी भोजन-विन्यासक हिनक 'द्वन्द्व' शीर्षक कवितामे स्फुट भेल अछि ।

चौठ चन्द्रक पिडुकिया कोजागराक मखान
थलकमल ओ सिङ्रहारक फूल
देवउठान आर मखान
कलमखोड़ा कनकजीर सतरिया कामोद
परबापाँखि लछुमनभोग
बिसरत कोना गमकैत मैंही धान[78]

टूटैत ग्राम्य तंत्रक वर्णनक क्रममे कवि मिथिलाक किछु विशिष्ट खाद्यपदार्थक उल्लेख कयलनि अछि-

जमाइनसँ नीक कऽ छौंकबाय
खैहह खूब पटुआ साग
सरिसो देल माछक झोर
काँचे जमीरी गारि[79]

भोजनक साम्यवादी दर्शनकेँ प्रस्तुत करैत कहलनि अछि जे भविष्यमे धनी आ साधारण लोक समाने रूपमे दालि-भात खायत ।[80]

नव नचारीमे कवि सर्वहाराक भोजनक अभावक चित्रण करैत कहलनि अछि-

वेत्रेक अन्न भऽ रहल टाँट नैना भुटका
दुबैरल आङ्गुरेँ कल्लर सभ बीछय झिटुका
मकड़ाक जालसँ बेढ़ल छइ चुलहाक मूँह
थारी गिलास सभ बेचि बिकिन कऽ खा गेलइ
कँचा जकरा से खाय भात[81]

व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा अपन पद्य-विधामे सेहो मैथिल भोजनक अत्यन्त रोचक वर्णन कयलनि अछि । भलमानुस जमायकेँ सँचार लगयबाक पद्धति हिनक बालाझा शीर्षक कथाकाव्यमे वर्णित भेल अछि-

रातिमे सँचार लागल बालाझाक आगाँमे ।
बाटी अठारहटा हुनका आगाँ लगाओल गेल ।
बड़-बड़ी भटबड़ कदीमा तिलकोर और पापड़
तिलौरी ओ दनौरी, अदौरी-धाँटा, एक बट्टा
छल्हिगर दही, एक बट्टा खोआ गाढ़ चीनी
पर्याप्त, मालभोग केरा पाकल खूब,
डेढ़ सेर मेही भात, जाँति कऽ छलैन्ह परसल
घृतसँ कैल चिक्कन तथा बाटीमे राहड़िक दालि
आमिल देल, उपर खूब घृत छह-छह करैत ।[82]

जमाइक रुसलापर मान-मनौअलि आ उचिती-मिनतीक प्रसंग तथा भोजनोपरान्त मुखशुद्धि प्रदान करबाक सांस्कृतिक परम्पराक उल्लेख करैत हरिमोहनझाक ई वर्णन द्रष्टव्य अछि-

दू घंटा मनौअलि तथा उचिति-मिनती भेल तखन जाऽकऽ बैसला पुनः बालाझा

आसनपर सप्-सप् सपर-सपर छाल्ही सकरौड़ी, खोआ सपटा चाटि- पोछि निपटौलन्हि भोज्य वस्तु सभ, भेला प्रसन्न, पान डब्बामे ऐलैन्ह भरि क ।[83]

एहि तरहेँ बालाझा शीर्षक कथाकाव्यमे हरिमोहनझा मिथिलाक पारम्परिक भोजन-विन्यासकेँ, खास कऽ जमाय सन पाहुनक सम्मानमे लगाओल सँचारक अत्यन्त रोचक वर्णन कयने छथि । ठीक एकर विपरीत ओ आधुनिक सभ्यताक देन टी पार्टी सन प्रीति भोजक विन्यासकेँ सेहो अपन कथाकाव्यमे स्थान देलनि अछि । टी पार्टीमे भोजन-विन्यासक वर्णन करैत कहल गेल अछि –

आयल "हमरो समीप, प्लेट एक राखि गेल ।
एकटा ,सिंहारा और एक फक्का दालमोट
एक रसगुल्ला और बुनिया एक चौठी मात्र
तोला भरि सेवइ और समतोला दुइ फाँक
एक चुटकी किसमिस तथा सोहल एक केरा टा ।[84]

पारम्परिक भोजन प्रणालीक ठीक विपरीत एहि तरहक पार्टीमे भोजनपूर्व नैवेद्य देबाक सामग्री होयबाक भ्रम भऽ सकैत अछि –

तत्क्षण अनुमान कैल ई सभ नैवेद्य थिक
काढ़ि कऽ फराक भगवानक हेतु कैल गेल
ई कय विचार ओकरा टारि देल दहिन भाग
सामने बनाओल स्थान मुख्य भोजनीयक
हेतु, ताकत देखै छी जे सभागत निमंत्रित देव
अपने नैवेद्य महंक भोग छथि लगा रहल
हम सपरैत छलहुँ, जल आनत, हाथ धोएब
किन्तु जलक दर्शनहि, स्पर्शक त कोन कथा[85]

एहि तरहक पार्टीमे सामान्य जनक सरल भोजन ग्रहण आ तथाकथित आधुनिकताक रंगमे रंगल समुदायक फैसनपरस्त भोजन ओ मानसिकताक अन्तर्द्वन्द्वकेँ उद्घाटित करैत हरिमोहनझाक वर्णन द्रष्टव्य अछि-

दुइए एक फक्का मध्य, साफ भेल दालमोट
सेवइ तथा बुनिया और किशमिस विलीन भेल
एक रसगुल्लामे बिलम्ब की लगैत कहू ?
समतोलाक बाद शेष रहल एक केराटा ।
एक मिनट लागल हैत, ताहीमे साफ भेल
चिनियाक प्लेट हमर निराकार भए गेल ।

किन्तु अपर योद्धागण युद्ध चलबैत रहलाह
घण्टा भरि लागल, किन्तु प्लेट नहि खाली भेल
किसमिसकेँ खोँटि कनेक मुँह तर रखै छथि क्यो
एक दालमोट तोड़ि दाँत तर धरैत छथि ।
आधा रसगुल्ला खा कऽ आधा छोड़ै छथि केओ
रम्भाफलक स्पर्श मात्र केओ नहि करैत छथि ।
हाय हाय ! मूर्ख हम बनि गेलहुँ सभा बीच
सभ केओ कँछिया कऽ प्रायः हमरे तकैत अछि ।[86]

एहि कथाकाव्यमे आइ-कालुक मुख्य पेय चाहक वर्णन स्वाभाविके । आधुनिक सभ्यताक एहन पार्टीक विकृत स्वरूप ओ मिथ्याडम्बरकेँ उद्घाटित करैत वर्णन अछि-

मायाक आवरणसँ चकाचौन्ह दृष्टि भेल
थोड़ेक काल बाद जखन तत्त्व दिस ध्यान गेल
एकमात्र ब्रह्म जकाँ चाह धरि सत्य छल
और और वस्तु छल केवल उपाधि मात्र ।
शिशुकेँ बकरीक दूधक घोंटी जेना होइत तेना
कनमा भरि दूध एक सीसी पात्रमे
एक कौर दही संग सानल जाय तते
चीनी आधमुट्ठी एक क्षुद्र नस्दिानीमे ।[87]

भोजनोपरान्त खरिका ओ मुखशुद्धिक बदला सलाइ-सिगरेट देबाक व्यवहार दिस इंगित करैत कहल गेल अछि-

के दैछ खरिका ? और केहन होइछ मुखशुद्धि
लऽकऽ सिगार ओ सलाइ ठाढ़ आगाँ ओ ।[88]

अन्तमे कवि मिथिलाक भोजन-विन्यासमे शीघ्रतामे प्राप्तव्य सामग्री खिच्चड़ि ओ सानाक प्रति इंगित कऽ आधुनिक पार्टीपर तीक्ष्ण व्यंग्य कयलनि अछि-

उत्तर देलथिन्ह-बस, पार्टीक ने नाम लिअऽ
सोझे जाउ भानसमे पजारू गऽ आँच शीघ्र
खिच्चड़ि आओर साना बनाउ जते जल्दी होय
और ई कार्ड लऽ चूल्हिमे झोंकि दिअऽ ।[89]

हास्य-व्यंग्यक महान कवि चन्द्रनाथमिश्र अमरक दुइ गोट कविता क्रमशः

अल्हुआष्टक ओ अरिकोंचक स्वादमे मैथिल भोजन-विन्यासक चित्रण भेल अछि । अल्हुआष्टकमे अल्हुआकेँ पतिराखन कहि कवि मिथिलाक जनजीवनक गरीबी ओ तज्जन्य कदन्न-निर्भरताक चित्रण कयलनि अछि-

पहिने दछिनाहा लगक बास, दिन प्रतिदिन कैलक हमर ह्रास ।
मेरचाइ नोन छल मात्र आश, किछु मिला करइ छल सर्वग्रास ।
मचि जाइत छल सब ठाम कहर, पतिराखन अल्हुआ नाम हमर ।
बड़का घूड़क ओ धुंधुर आगि, घोसिआय दैत छल हृदय दागि ।
भरि राति चटायै शीत जागि, सब बाप पुतै परिवार लागि ।
खीचड़ छल कोमल चाम हमर, पतिराखन अल्हुआ नाम हमर ।[90]

उपर्युक्त पाँतीमे अल्हुआ-भोजनक विभिन्न रूपक वर्णन अछि । सामान्य समयमे तँ अल्हुआ दीनक खाद्य रहिते अछि, एकर महत्ता तखन आओर बढ़ि जाइत छैक जखन कृषक लग धान इत्यादि सुअन्न समाप्त प्राय भऽ जाइत छैक-

घर-घरमे सबहिक धान सठल, बड़ बड़ कुटुम्ब लग मान घटल ।
प्रेमी कृषकक सरकार अटल, ई सुयश हमर संसार पटल ।
दीनक घर छल विश्रामक घर, पतिराखन अल्हुआ नाम हमर ।[91]

मुदा आब अल्हुआक प्रवेश धनीको परिवारमे सौखसँ मिसरीक योगेँ खयबाक हेतु भऽ गेलैक अछि आ ओकर गुण-गौरवमे वृद्धि भेलैक अछि । कवि एहि तथ्यक आक्षेपपूर्ण विवरण प्रस्तुत करैत कहने छथि-

बाबू भैया अपनाय लेल
मिसरी दूधक सहयोग देल
सौभाग्यक तेँ अछि उदय भेल
मनमस्त हमर बस झूमि गेल
बड़का घर हमर दलानक घर ।
पतिराखन अल्हुआ नाम हमर ।।[92]

हिनक अन्य कविता अरिकोंछक स्वादमे नोतल ब्राह्मणकेँ भोजन करयबाक अत्यन्त विन्यस्त ओ व्यंग्यपूर्ण चित्र उपस्थित कयल गेल अछि । पहिने नोतल ब्राह्मणक टीप-टहंकारक चित्र द्रष्टव्य-

पड़ल नोत बाबाकेँ
बाबा लेलन्हि फराठी दहिना हाथ
टपला सौंसे चउर

टेकिते-टेकिते
हिसखे-टेकिते
हिसखे छन्हि सब दिन बाबाकें
नोतक दिनमे दैत छथिन्ह ओ
नम्हर बेस लड्डुआ ठोप
ठङ्कापर सँ
तखन बैद्यनाथी पासा केर
उज्जर दप् दप् बेस त्रिपुण्ड
नोत खाय भय जाथि भुसुण्ड[93]

पश्चात् खाधुर व्यक्तिक प्रवृत्तिक उद्घाटन करैत कहल गेल अछि–

एतबा धरि छन्हि
खेनिहारो छथि
ऐल पातपर वस्तु आइ धरि
बाबा कहियो कैल ने व्यर्थ
भोज भातमे बहुतो ठाँ
सहजहिं बाबा करथि अनर्थ
भरल जवानीमे
सठबैत छलाह पसेरी भरि धरि गूड़
पन्द्रह सोड़ह रोहुक मूड़
छागर सौंसे पनपिआइमे
दही खिलच्छन बस, दू छाँछ
सात सेर धरि तरले माँछ ।[94]

भोजनक सौंठक अत्यन्त सहज चित्र एहि रूपें उरेहल गेल अछि –

छलनि गम्हड़िया पिड़ही राखल
माँजि मूँजि लोटा भरि पानि
धो कै पैर
बैसि पिड़हीपर
बाबा एकदम देलथिन तानि[95]

पश्चात् बाबाक भोजनक अतिशयता, वाक्‌चेष्टा आदिक विकृति द्वारा हास्यक संपुष्टि ओ नोत प्रथापर व्यंग्य कयल गेल अछि–

छतिसटा तिलकोड़ा खैलनि
कुड़-कुड बऽड़ एगारह गोट
ऐल पात पर भात सठा कय
देलथिन पानि तखन दू घोंट
बड़ी सात डब्बुक टा खेलनि
छलइ अधिक मेरिचाइक योग
माँझ पेट भरि ऐलनि तावत
बाँकी केवल रहलनि दोग
कड़ू छलइ तें
दूनू पूड़ा भरि भरि ऐलनि पानि
जावत बाबा नाक झाड़लनि
बामा हाथें पोछलनि मौंछ
तावत आबि गेलनि अरिकौंछ
नोर आँखिमे भरि भरि ऐलनि
कहै लगलथिन बात सम्हारि
आइ फेर ओ मोन पड़ल अछि
कते दिनुक बिसरलहा बात
बाबी तोहर जिबिते छलथुन
काजक रहै बतीसो दाँत
हुनका हाथक रान्हल-बाटल
सन नहि भेटल तकरा बाद
मुइलथुन जहिए तोहर बाबी
उठि गेल हमरा लेखें
अरिकौंछक स्वाद[96]

माघ मासक वर्णनमे कवि मिथिलामे गर्म खिच्चड़ि खा कऽ शीतसँ बचबाक प्रवत्तिक वर्णन कयलनि अछि । संगहि एहि मासमे बाधबोनमे पसरल विशिष्ट खाद्यान्नक सेहो वर्णन एहि माध्यमे भेल अछि–

तप्पत खिच्चड़ि खा-खा जे क्यो कोंढ़ अपन गरमौलक ।
सप्पत खा खा पुरिबा तोहर तनिका पुनि धमकौलक ॥
बीच बाधमे ठोहि पाड़ि कऽ कानय गहुम खेसाड़ी ।
चैती राहड़िमे तँ सरिपहुँ तों कैलह पैसाड़ी ॥[97]

ब्रजकिशोरवर्मा मणिपद्मक कौसर कवितामे मिथिलाक शोषित-मर्दित-बुभुक्षित

मनुसन्तानक पेटक आगि मिझयबाक हेतु करमी, डोका जुटयबाक हेतु प्रयत्नशील देखाओल गेल अछि ।[98]

गोविन्दझाक एक गोट कवितामे आमक गुणगान भेल अछि आ एकरा समस्त खाद्य पदार्थक अपेक्षा उत्कृष्ट कहल गेल अछि । आमक ई प्रशस्ति मैथिल भोजन-विन्यासमे आमक महत्त्वक अनुरूपे दृष्टिगोचर होइछ-

पाकल आम, पाकल आम ।
राजा रंक सभ्य ओ लंठ, सभ रूपेँ खाइछ भरि कंठ ।
कौआ कुकुरो खाय अघाए, नहि किछु लागए कौड़ी दाम ॥
ठोहि पाड़ि कए चीनी कानए, हा हमरा कुकुरो नहि मानए ।
खाजा मुङबा नोर खसाबय, लैछ केओ नहि हमरो नाम ॥
तिमनक लागल रहओ सचार, भात दालिपर रहओ अचार ।
खाजा मुङबा ओ पचमेर, बैसल-बैसल गुड़थु आम ॥
देखितहिँ कड़ल होस-हवास, दही, दूध भेल एकर खबास ।
जे रुचैत हो, जे पचैत हो, चोभू एकरा आठो याम ॥[99]

आधुनिक राशन तंत्र ओ गरीबक असहाय अवस्थाक चित्रण फजलुर रहमान हाशमीक एकटा पद्यमे देखल जा सकैछ ।[100]

'पनिचोभक भोज' शीर्षक कवितामे रूपनारायणचौधरी 'अनूप' मैथिल लोकनिक भोज जन्य अपव्यय ओ ताहिसँ भेल अधोगतिक चित्रण कयलनि अछि । एहि क्रममे भोज पद्धतिक अत्यन्त विन्यस्त विवरण प्रस्तुत भेल अछि ।[101]

कालीकान्तझा माधुर द्वारा संकलित एक गोट लोकगीतमे विभिन्न प्रकारक खाद्य आमक वर्णन देखि पड़ैछ ।[102]

रवीन्द्रनाथठाकुरक एकगोट गीतमे मिथिलाक भारवला विभिन्न पक्वान्नक अत्यन्त मनोरञ्जक विवरण भेटैछ ।[103] हिनक 'धूर ! मनसा धूर ! धूर मौगी धूर ! गीतमे स्त्री-पुरुषक उक्ति-प्रत्युक्तिक माध्यमे दाम्पत्यजीवनक प्रणय ओ गृहस्थ जीवनक कटु-तिक्त-कषायकेँ सहज अभिव्यक्ति भेटल अछि । कवि एहि तथ्यकेँ भोज्य पदार्थक तुलनात्मक विम्बक माध्यमे स्फुट कयलनि अछि ।[104] खटमधुर सम्बन्धमे स्त्री आ पुरुष एक दोसराक हेतु प्रिय ओ मधुर एवं अन्तरंग होइतहि छथि । कविक भावनामे लोक जगतक दाम्पत्य सम्बन्ध माधुर्यक भोज्य पदार्थीय बिम्ब उद्‌घाटित अछि ।[105]

लवण विना जेना व्यंजन रसहीन रहैछ, पुरुष बिनु नारीक सैह गतिक अभिव्यंजना भेल अछि । पिडुकिया जेना उपरसँ कठोर कवचसँ युक्त आ भीतर मोलायम

आ मधुर खाद्यसँ भरल रहैछ तहिना नारीक हेतु पुरुष सेहो प्रेमक, कठोरता ओ मृदुलताक, अनुशासन ओ स्नेहक, बन्धन ओ प्रसादक संश्लिष्ट पुञ्ज रहैछ । एहिना पुरुषक हेतु नारी चुल्लड़-तिलबा आ खजूर जकाँ खुरदुराह ओ कठोर कहल गेल अछि । तथापि चुल्लड़, तिलबा जकाँ ओकर भखरबाक डर रहितहिं छैक । जेना खजूरकेँ सश्रम दाँतसँ काटि कऽ खायल जा सकैछ, नारीक संरक्षणक हेतु कठोर श्रम ओ सुष्ठु जीवनक आवश्यकता होइत छैक । भोजन-शब्दवलीक माध्यमे नारी पुरुषक एहि बिम्ब ग्रहणक क्रममे भाटा, कदीमा, मूर, लाबा-भूजा, चनाचूर, पूड़ी-पिडुकिया, चुल्लडु, तिलबा, खजूर आदि विभिन्न खाद्य, फल ओ पक्वान्नक शब्दावलीकेँ शिष्ट साहित्यिक अभिव्यक्ति भेटलैक अछि । हिनक एही कवितामे दाम्पत्य-जीवनक नोक-झोंक ओ गृहस्थजीवनक परिवेशमे भोज्य-पदार्थ जुटयबामे असफलताक कारणेँ कटुता ओ पारस्परिक कोप तथा भोज्य संसाधनसँ प्रणयोपचारक वर्णन भेल अछि ।[106] हिनक अन्य गीत **हाइ रे हाइ पचकौड़ी**मे सेहो मिथिलाक भोजन-विन्याससँ सम्बद्ध प्रचुर शब्दावलीकेँ समेटल गेल अछि ।[107]

रामदेवझाक कविता **विज्ञानक पोथीमे** एकटा सन्तुलित भोजनक रोचक वर्णन आ अभावक त्रासदीक मार्मिक अभिव्यक्ति भेल अछि । सम्पूर्ण कविता निम्न रूपक अछि-

स्कूल जाइ लय धड़फड़ायल
मर्कैक रोटी तोड़ि-तोड़ि खाइत
एकटा बच्चा ।
मुँहमे लठिआइत कौरकेँ घोँटैत
हाथसँ रोटी तोड़ैत
कहलकैक मायकेँ-
माँ गय !
विज्ञानक हमर पोथीमे
बात एकटा लिखल छैक-
एकटा स्वस्थ मनुक्खकेँ
स्वस्थ रहबाक लेल
चाहिऐक नित्य दिन,
सात-आठ कप **शुद्ध दूध,**
चारि-पाँचटा **सेब**
आठ-दस छिम्मड़ि **केरा** ।

गय माँ !

तीमन तँ छौहे ने

घोनघर कनेक सन

तेले दऽ ने दे ।

माय गे हँछि बाजलि छलि–

इह चटकार केहन ?

ताहिपरसँ तेलो चाही ।[108]

प्रख्यात कवि राजानन्दझाक **तरकारीक कुस्ती** कवितामे मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित विविध प्रकारक तीमन-तरकारीक रोचक वर्णन भेल अछि ।[109]

दयानन्दमिश्रक जनवादी कविता **अहाँ नहि छी बाघमे** भोजनसँ सम्बद्ध अनेक शब्दावली यथा **भनसाघर, चूल्हि, चिनवार, कौर** आदिक प्रयोग भेल अछि ।[110]

नवगीतकार शंकरदेवझाक गीत **छाहरि बिका गेल छै मे** भोजनक विविध स्वादकेँ एकटा नवीन अर्थवत्ता प्रदान कयल गेल अछि–

तीत-कऽडूसँ जिह्वामे सेर पड़ल

नोनसँ पूर्ण हमरे लय सागर भरल

पीबि सकितहुँ इजोरिया कने चानकेर

मेघ तरमे ओकर मुँह नुका गेल छै ।[111]

एहि तरहेँ आधुनिक काव्यमे भोजन-विन्यास ओ सम्बद्ध शब्दावलीक पुष्कल प्रयाग देखि पड़ैछ । खास कऽ आतिथ्य, मास वर्णन, ऋतु वर्णन, मिथिलावर्णन, हास्य ओ व्यंग्य आदिक प्रस्फुटनक हेतु भोज्य पदार्थ ओ मैथिल भोजन-विन्यासक वर्णन होइत रहल अछि ।

(iii) कथा-उपन्यासमे वर्णित भोजन-विन्यास

कथा-

मैथिलीक प्रारम्भिक कथा सभपर संस्कृत आख्यान-उपाख्यान शैलीक पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होइछ । एहन कथामे भोजन-विन्यासक अत्यल्प वर्णन देखि पड़ैछ । घटनाक निर्वाहक हेतु अवश्ये ठाम-ठीम भोजन-सामग्रीक वर्णन देखि पड़ैछ । उदाहरणार्थ हरिनन्दन ठाकुर सरोज रचित **ईश्वरीय रक्षा** शीर्षक कथामे घटनाक आधार संयोग अछि । टेढ़नझा अपन पितियौतक एकमात्र सन्तान अनाथकेँ मारबाक हेतु विषप्रयोग करऽ चाहैत

छथि आ ओहि हेतु विषयुक्त लड्डू प्रयोग कयल जाइछ मुदा ओहि विषहिक कारणेँ अनाथ राजाक एक गोट प्रमत्त हाथीकेँ मारबामे सफल भऽ जाइत छथि आ ओ विषयुक्त लड्डू भाग्योदयक कारण होइछ । एहि कथामे मधुरमे विष प्रदान करबाक तथ्य टेढ़न झाक उक्तिमे देखल जा सकैछ ।[112]

अनाथझाकेँ मातृक विदा करबाकाल बटखर्चाक रूपमे माय द्वारा प्रदत्त भोज्य सामग्रीक विवरण एहि प्रकारक अछि–

अनाथ झा–माँ गे ! की सब बटखर्चा देलैंहि अछि ।

हितमनि–**चूड़ा-मुढ़ही** आओर **खुद्दीक** सोहारी पका कय देलिअह ।

अनाथझा –कालि जे टेढ़नककाक ओहिठामसँ मधुर अनलहुँ सेहो दऽ दिहँ ।[113]

एहि तरहेँ गरीब परिवारक बटखर्चाक रूपमे चूड़ा-मुढ़ही ओ सोहारीक वर्णन भेल अछि आ बच्चाक मधुर-लोलुपताकेँ अभिव्यक्त कयल गेल अछि ।

मैथिली कथा साहित्यक दोसर चरणमे सामाजिक स्थितिकेँ कथाक माध्यमसँ कहबाक नव प्रवृत्तिक जन्म भेल । स्वभावतः एहि प्रकारक रचनामे मिथिलाक भोजन-विन्यासकेँ सेहो प्रचुर स्थान भेटलैक । कुमार गंगानन्दसिंह **विवाह** शीर्षक कथामे अत्यन्त स्वाभाविक रीतियेँ भानसक ओरियानक वर्णन कयलनि अछि ।[114]

हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहनझाक रचनामे मिथिलाक भोजनक विविध प्रकारक पुष्कल वर्णन भेल अछि । एहि दृष्टिएँ हुनक किछु प्रमुख गल्प सभ छनि- विकट पाहुन, घरजमाय, पण्डितजी आदि ।

विकट पाहुन शीर्षक गल्पमे लोकक परान्न-भोजी प्रवृत्ति, क्षुद्रता तथा चटकारी स्वभावक वर्णन भेल अछि । पाहुनक चटकारक वर्णन करैत कहल गेल अछि- हें हें हें ! बिनु सौंजने भात कोना खैताह ? हिनका लेल छनुआ सोहारी, अनोन तरकारी बना देबैन्ह । मधुरक संग खा लेताह । और हमरा लोकनिक त – हें हें हें – घरे थिक । भोजनमे –जे किने से – भात, दालि, तरकारी, घृत, दही, चीनी । बस और की ? हँ हमरा संगमे एकटा जमीरी नेबो अछि से दूरि भेल जाइत अछि । तँ थोड़ेक माछो मड़ा लेब । और बेसी विन्यास करबाक कोन काज, हमरा लोकनि की पाहुन छी ? और ई कि घर थिकैक ? तखन हिनका लोकनिकेँ किछु जलखइ आनि देबैन्ह तऽ आनि दियौन्ह । की हौ ब्रजेन्द्र ।[115]

'तावत् एम्हर पाहुन लोकनि भनसियासँ घनिष्ठता स्थापित करय लगलाह- की नाम अछि ? कतय घर ? की मूल ? कुजिलवार उल्लू ? वाह नीक लोक छी । कतेक

दिनसँ एहिठाम काज करैत छी ? अहाँक सुपरंडंट साहेब हमर खास सरोकारी छथि । हम लाख छटपट्ट कैल, किन्तु आइ किन्हुँ जाय कहाँ देलन्हि ? कहलन्हि जे- भला कहु त ? से कोना हैत ? यावत् अहाँ लोकनि- जे किने से विन्यास पूर्वक भोजन नहि कय लेब तावत् जाएब कोना ? देखब एक्को रत्ती संकोच नहि करब । जे-जे खयबाक इच्छा हो से मनसियाकेँ कहबैन्ह । दही दूध दूनू खाएब । घृत पर्याप्त क देबय कहबन्हि । जौं कोनो वस्तुक त्रुटि रहतन्हि त हम बिना जरिमाना कैने नहि छोड़बैन्ह । की हौ ब्रजेन्द्र ? तोरो बहुत मानैत छथुन्ह । कहि गेल छथि- हिनका आइ माछ अवश्ये भेल तकैन्ह । की औ बाबू, एहि ठाम त घारक बढ़िया रोहु भेटैत हैतैक ? कतेक दूर छैक ? परफेश्वर बाबू त आब चारि बजेसँ पहिने नहिए औताह । बेचारे अगुताइमे केवल समतोले खा क चल गेलाह । परन्तु हमरा लोकनिकेँ कोन अगुताइ अछि ? बारह बाजौ, एक बाजौ, कैयो बाजौ । अपन घर अछि । जखन हैत तखन खाएब । की हौ गजेन्द्र तावत पहिने दिगम्बरनाथक हेतु छनुआ छानि दियौन्ह ।'

'एवं प्रकारेँ मनसियाकेँ तेना पट्टी पढ़ौलथिन्ह जे सौंसे घरे गमागमा छनाछन्न होमय लागल ।'

'अपन-अपन कर्म होइत छैक । हम त **पथ्य** खाऽकऽ अपना कार्यपर गेलहुँ और ई सभ चढ़ले कड़ाहीसँ **गरमागरम कचौरी** और **भफाएल हलुआ**पर हाथ फेरय लगलाह । भोजन करैत हिनका लोकनिकेँ दू बाजि गेलैन्ह ।'[16]

घरजमाय शीर्षक कथामे घरजमैयाक दुर्गतिक वर्णनक क्रममे अनेक प्रकारक भोज्य पदार्थक वर्णन अछि-

'ओहि दिनसँ ई इन्तिजाम भेल जे मोट अन्नक व्यवहार हो । परन्तु एके दिनक उपरान्त एहि प्रबन्धमे संशोधन करब आवश्यक भऽ गेल । कारण जे बबुआनीजी **अँकड़ा चाउरक भात** सूधि कऽ छोड़ि देलथिन्ह, और माँजी **खेसारीक दालि** जे खैलन्हि त पेट फूलि गेलन्हि । अत: माँजी पुन: प्रेमपूर्वक जमायकेँ बजा कऽ कहलथिन्ह- राति बबुइ केँ ई कोन ज्ञाने मोटका भात परसि देलथिन्ह? ओकर फूलकुम्मरिवला देह छैक । अकठ-मकठ वस्तु हिनका पचतैन्ह, किएक तऽ ई घसकट्टाक बेटा छथि, मुदा ओ त गोबरपथनीक बेटी नहि । ओकरा हेतु **फुलका** छानि देल करथुन्ह । और हमरा जे खेसारीक दालि खोआ देलन्हि से रातिसँ हुड़हुड़ गुड़गुड़ क रहल अछि । ई हरठिया-फरठिया छथि । **जागरो देसरिया** खा क पचा लेताह, मुदा हमरा सभकेँ त **मालभोगो** पेटमे गड़ैत अछि ।'

'ताहि दिनसँ चुल्हाइ झाकेँ दू पाक करय पड़ैन्ह । अपना सभ लेल **बकोल** और सदर हबेलीक हेतु **बासमती** । राति क दूहू माइ-धी हेतु **पूड़ी तरकारी** बना कऽदऽ आबय पड़ैन्ह । **दूध दही घृत चीनी** बबुआनीजीक खास चार्यमे रहैन्ह । ताहूपर बेचारे जमायकेँ चैन नहि । सुखुममनि बात-बातमे भीतर जाऽकऽ हुनक चुगली लगा देल करैन्ह । एक दिन माँजीकेँ कहलकैन्ह- ए मलकीनीजी, ए मलकीनीजी ? दमाद साहब डेढ़ सेरसँ कम न खाइ छथि । तहिया सँ माँजी अपने हाथेँ चाउर नापि देबय लगलथिन्ह । एक दिन बबुआनीजीकेँ चढ़ा देलकैन्ह जे मेहमान सभ रात तीन-चार **पूड़ी** अपना वास्ते चोरा कऽधऽ रखै छथि । तहियासँ बबुआनीजी **सानल आँटाक लोइया** गनि कऽ और **घृत** नापि पठाबय लगलथिन्ह ।'

'एकदिन **रोहु माछ** बिकाय एलैक । बबुआनीजी अपने हाथसँ खण्ड काटि, गनि कऽ पठा देलथिन्ह जे हमरा खातिर एतेक **तरल** रहत, एतेक **झोराओल** जायत और **सीराक मुड़घट** बनत । चुल्हाइझा थारीमे सभ माछ लऽ कऽ बारीमे धोबय गेलाह । जा खबासिन इनारसँ पानि लाबऽ गेलैन्ह तावत एक चिल्होरि ओझाजीक हाथ नोचैत **सीरा** झपटि कऽ लऽ गेलैन्ह । भय और अफसोसक मारे ओझाजी दिन भरि कुसियारक खेतमे नुकायल रहलाह ।'[17]

पंडितजी शीर्षक' गल्पमे सेहो कथा क्रममे अनेक प्रकारक भोजन सामग्रीक उल्लेख देखि पड़ैछ जेना- 'पाँच प्रकारक मधुर । **अमिरती बालुसाही, लबंगलता, गुलाबजामुन,** और **मेहीदानाक लड्डू** प्रत्येक पाँच-पाँचटा । तकरा नीचा तीन **गेंट सोहारी** । तरमे **आलू-भाँटा, सीम** और **ओलक अँचार** । एक बासनमे **दही** । एक बासनमे **चीनी** ।'[18]

'प्रथम कोटिक वस्तु **अदौरी, दनौरी, तिलौरी, पापर, घृत** । मशाला पेटीक मध्य स्थान पौलक । द्वितीय कोटिक वस्तु- **चाउर, दालि, नोन, तेल, आलू, भाँटा,** चङेरामे रहल ।'[19]

'वैदिकजीक कोठरीमे पहुँचि पं०जीक आँखि चौन्हिया गेलैन्ह । एक वड़का परातमे रंग-विरंगक मनोहर मधुर ओ मोरब्बा, सोना-चानीक वरक लपेटल, गमगम करैत ।'[20]

'ई-उजरका, **कलाकन्द** छैक । ओ पियरका, **नारंगीक बर्फी**, ई हरियरका, परोरक मिठाइ । ओ ललका, **मलाइक मालपुआ** । ई जे रससँ भरल देखैत छिऐक से रसमाधुरी कहबैत छैक ।' ई कहैत वैदिकजी एकटा रसमाधुरी हाथमे उठौलन्हि । केबड़ाक खुशबूसँ पण्डित जीक मिजाज भरि गेलैन्हि । बजलाह-रहऽ दियौक । ओहि पथियामे की छैक ?

वैदिक जी झपना हटबैत कहलथिन्ह- ई **बिखजीक** हेतु आएल छल ।

एक कात **बादाम, अखरोट, पिस्ता, किसमिस** ओ **अपखोश** । दोसरा दिसि **नाशपाती, सेव, अनार, नारंगी** ओ **अंगूर** ।

पण्डित जीक आँखि नहि ठहरि सकलैन्ह । बजलाह-झाँपि दियौक ।

वैदिकजी **मोरब्बा** देखबैत कहलथिन्ह- एहिमे प्रत्येक वस्तु अपूर्व बनौने अछि । ई अजनाशक मोरब्बा थिकैक । और ई थिक **कुसियारक मोरब्बा** । सम्पूर्ण गुल्ली रसगुल्ला जकाँ घोंटा जाएत । एको रती सिट्ठी नहि बहराएत ।

पण्डितजी उपरका मनसँ हँसैत बजलाह- बाह, आश्चर्य कयने अछि !

वैदिकजी और अधिक उत्साहित भऽ देखाबय लगलथिन्ह-देखल जाओ, एहि माटिक बरुकामे **गरीक खीर** थिकैक । ओहि बरुकामे **किसमिसक हलुआ** । एहि बरुकामे **पिस्ताक मोहन भोग** । ओहि बरुकामे **केसरिया राबड़ी**.....[21]

आब पण्डितजीक तर्कशास्त्र लागल-पथियाक अर्थ मेवा ओ फल । चङेराक अर्थ **मधुर ओ मोरब्बा** । एक कोहाक अर्थ गरीक खीर । एक कोहाक अर्थ केसरिया राबड़ी । तीनू गोटाक अंश बरुकामे नहि अटलैक, तेँ कोहेमे भरि देलकैक । भंडारी होशियार अछि । आब वैदिकजी बुझथु । बड़े गबैत छलाह । आब हुनक त तीन बर हमरा आबि गेल ।[22]

'पथियामे **केरा** । चङेरामे **कुम्हड़** । एक कोहामे **दही**, एक कोहामे **चीनी** ।[23]

एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे प्रणम्यदेवतामे मिथिलाक भोजन विन्यासक अतिरंजित ओ सम्पुष्ट वर्णन अछि ।

हरिमोहन झाक खट्टर ककाक तरंग विभिन्न विषयपर तार्किक मस्तिष्कक मनोरंजक गप्प थिक । एहिमे संकलित चूड़ा-दही-चीनी, चाणक्यक जन्म भूमि, माछक महत्व, ब्राह्मण भोजन, ब्रह्मानन्द, शास्त्रक वचन, धर्मक तत्त्व, मिथिलाक संस्कृति, दर्शनाशास्त्रक रहस्य, खट्टरककाक टटका गप्प इत्यादि शीर्षक गप्पसभमे भोजन-विन्यासक अत्यन्त सरस, सहज ओ प्रभावोत्पादक वर्णन भेल अछि ।

दही चूड़ा चीनी शीर्षक गल्पमे मिथिलाक एहि लोकप्रिय खाद्यक अभिनव व्याख्या कयल गेल अछि–

खट्टर कका दलानपर बैसल भाङ घोंटैत छलाह । हमरा अबैत देखि बजलाह-हाँ हाँ.......ओम्हर मरचाइ रोपल छैक, घुमि कऽ आबह ।

हम कहलिऐन्ह -खट्टर कका, आइ जयवारी भोज छैक, सैह सूचित करय आयल छी ।

खट्टरकका पुलकित होइत बजलाह-बाह-बाह । तखन सोझे चलि आबह । दु-एकटा घङैबे करतैक तऽ की हैतैक ? ....हँ भोजमे हैतैक की सभ ?

हम-दही चूड़ा चीनी ।

खट्टर-बस, बस, बस । सृष्टिमे सभसँ उत्कृष्ट पदार्थ यैह थीक । **गोरसमे** सबसँ माँगलिक वस्तु दही-अन्नमे सभक चूड़ामणि **चूड़ा**-मधुरमे सभक मुल **चीनी** । एहि तीनूक संयोग बूझह तँ त्रिवेणी संगम थीक । हमरा तँ त्रिलोकक आनन्द एहिमे बूझि पड़ैत अछि । चूड़ा भूलोक । दही भुवलोक, चीनी स्वर्गलोक ।[24]

हमर विश्वास अछि जे कपिल मुनि दही चूड़ा चीनीक अनुभवपर तीन गुणक वर्णन कऽ गेल छथि । दही सत्त्वगुण, चूड़ा तमोगुण, चीनी रजोगुण ।

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका अहाँक त समटा कथा अद्‌भुते होइत अछि । ई हम कतहु नहि सुनने छलहुँ ।

खट्टर कका बजला-हमर कोन बात एहन होइ अछि जे तों आन ठाम सुनि सकबह ?

हम-खट्टर कका, त्रिगुणक अर्थ दही चूड़ा चीनी, से कोना बहार केलियैक ?

खट्टरकका-देखह असल तत्त्व दहिएमे रहैत छैक, तेँ एकर नाम सत्त्व । चीनी गर्दा होइछ तेँ रज । चूड़ा रुक्षतम होइछ तेँ तम । देखै छह नहि अपना देशमे एखन धरि **तमहाचूड़ा** शब्द प्रचलित अछि ।

हम-आश्चर्य, एहि दिस हमर ध्यान नहि गेल छल । खट्टर कका व्याख्या करैत बजलाह-देखह, तमक अर्थ छैक अन्धकार । तेँ छुच्छ चूड़ा पातपर रहने आँखिक आगाँ अन्हार भऽ जाइ छैक । जखन उज्जर दही ओहिपर पड़ि जाइत छैक । तखन प्रकाशक उदय होइ छैक । तेँ सत्त्वगुणकेँ प्रकाशक कहल गेलैक अछि । 'सत्त्व लघु प्रकाशकमिष्टम्' । तेँ दही लघुपाकी तथा सभकेँ इष्ट (प्रियगर) होइत अछि । चूड़ा कोष्ठकेँ बान्हि दैत छैक । तेँ तमकेँ अवरोधक कहल गेल छैक । और विना रजोगुणे त क्रियाक प्रवर्तन हो नहि । तेँ चीनीक योग बेत्रेक खाली चूड़ा दही नहि घोंटा सकैत छैक । आब बुझलहक ?

हम कहलिऐन्ह- धन्य छी खट्टरकका अहाँ जे ने सिद्ध कऽ दी ।

खट्टरकका बजलाह-देखह, सांख्यक मतसँ प्रथम विकार होइ छैक महत् वा बुद्धि । दही चूड़ा चीनी खैला उत्तर पेटमे फूलि कय पसरैत छैक । यैह महत् अवस्था थिकैक । एहि अवस्थामे गप्प खूब फूरैत छैक । तेँ महत् कहू वा बुद्धि, बात एक्के थीक । परन्तु एकरा हेतु सत्त्वगुणक आधिक्य होमक चाही अर्थात् दही बेसी होमक चाही ।[25]

चूड़ा दही चीनीक माध्यमे मैथिल जातिक शिथिलतापर व्यंग्य करैत कहल गेल अछि–

हम कहलिऐन्ह परन्तु खट्टरकका । पछिमाहा सभ त दही चूड़ा चीनीपर हँसैत अछि । खट्टरकका अङपोछासँ भाङ छनैत बजलाह– हाँ, सातु लिट्टी खैनिहार दधि-चिपटान्नक सौरभ की बुझताह । पश्चिमक जेहन माटि बज्जर सन तेहने अन्न बजरा, तेहने लोको बज्र सन । अपना देशक भूमि सरस, भोजन सरस, लोको सरस । चूड़ा पृथ्वी तत्त्व । दही जलतत्त्व, चीनी अग्नि तत्त्व । तेँ कफ पित्त वायु-तीनू दोषकेँ शमन करबाक सामर्थ्य एहिमे छैक । देखह, अनादि कालसँ दही-चूड़ा-चीनीक सेवन करैत-करैत हमरा लोकनिक शोणित ठंढ़ा भऽ गेल अछि । तेँ मैथिल जातिकेँ आइ धरि कहियो युद्ध करैत देखलहक अछि ।[126]

एहिना मैथिल समाजमे पसरल एकताक अभाव, दलबन्दी, गुटबन्दी आदि पर व्यंग्य करबाक हेतु मिथिलाक सामान्य भोजन भात, दालि, साग, भाँटा इत्यादि भोजन-सामग्रीक बिम्ब द्वारा उपस्थित करैत कहल गेल अछि –

'व्यंग्य नहि, यथार्थ कहैत छियौह । देखह भोजनसँ प्रकृति बनैत छैक । चाली माटि खाऽ कऽ माटि भेल अछि । साँप बसात पीबि कऽ फनकैत अछि । साहेब सब डबल रोटी खा कऽ फूलल रहैत अछि । मुर्गा खैनिहार मुर्गा जकाँ लड़ैत रहैत अछि । और हम सभ साग-भाँटा खा कऽ साग-भाँटा भेल छी । हमरा लोकनि भक्त (भात)क प्रेमी थिकहुँ, तेँ एक दोसरासँ विभक्त रहैत छी । ताहूपर की त द्विदल (दालि)क योग भेले ताकय । तखन एक दल भऽ क कोना रहि सकैत छी ।[127] एही तथ्यकेँ अत्यन्त सहज रूपेँ निम्नलिखित परिच्छेदमे सेहो उपस्थित कयल गेल अछि आ एही क्रममे विभिन्न प्रकारक मिष्टान्न ओ अन्य भोज्य पदार्थक वर्णन भेल अछि–

कोनो जातिक स्वभाव बुझबाक हो त देखौ जे ओकर सभसँ प्रिय भोजन की थिकैक ? देखह, बंगाली ओ पच्छाँहीक स्वभावमे की अन्तर छैक ? जैह भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक । रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर । रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक, लड्डू पश्चिमक । तेँ हम कहैत छियहु जे ककरो जातीय चरित्र देखक हो तँ ओकर प्रधान मधुर देखी ।

हम-खट्टर कका अपनासभक प्रधान मधुर की थीक ? ख.-अपना सभक प्रधान मधुर थिक खाजा । देहातमे मिठाइ कहने ओकरे बोध होइछ । खाजा ने रसगुल्ला जकाँ स्निग्ध होइछ, ने लड्डू जकाँ ठोस । तेँ हमरा लोकनिमे ने बंगालीवला स्नेह अछि, ने पंजाबीवला दृढ़ता ।......तखन खाजामे प्रत्येक परत फराक-फराक रहैत छैक से अपनो सभमे रहितहिं अछि ।

हम-वाह । ई त चमत्कारक गप्प कहल । मौलिक ।

ख.- ऐंठ वा बासि बात हम बजितहि नै छी ।

हम- वास्तवमे खट्टरकका । अहाँ ठीक कहै छी ।

गाम-गाममे गोलैसी, घर-घरमे पट्टीदारी झगड़ा, कचहरीमे पागे पाग देखाइत अछि । से किएक ?

ख.-एकर कारण जे हमरा लोकनि आमिल मरचाइ बेसी खाइत छी । तीख-चोख भेले ताकय, तीतोमे कम रुचि नहि । नीम-भाँटा, करैल, पटुआक झोर...। ही जैह गुण कारणमे रहतैक सैह ने कार्यमे प्रकट हेतैक । कटुता, अम्लता ओ तिक्तता हमरा लोकनिक अंग बनि गेल अछि । स्वाइत हमरा लोकनि अपनामे एतेक कटाउझ करैत छी ।

हम-परन्तु बंगाली सभमे एतेक प्रेम किएक ?

खट्टरकका भाङमे एक आँजुर चीनी मिलबैत बजलाह– ओ सभ प्रत्येक वस्तुमे मधुरक योग दैत छथि । दालियो मीठ, तरकारीयो मीठ, माछो मीठ, चटनियो मीठ । तखन कोना ने माधुर्य रहतैन्ह ? अपनो जातिमे एना मीठक व्यवहार होमय लागय तखन ने । तेँ हम कहैत छियौह जे अपना जातिमे जौं संगठन करबाक हो त मधुरक बेसी प्रचार करह । केवल सभा कैने की हैतौह ? – भोज ने भात ने, हरहर गीत । गामसँ दुगोला दूर करबाक हो तऽ दही चूड़ा चीनी, लवण, कदली, लाडु, बरफीक भोज करह ।[128]

चाणक्यक जन्मभूमि गल्पमे मिथिलाक प्रिय खाद्य सबहिक नाम परिगणित करैत कहल गेल अछि– एहिसँ बेसी और की चाही ? मिष्टान्न ओ महादेवक प्रेम मिथिलासँ बाढ़ि और कतय भेटत ? एक प्रकारेँ बूझू त मिथिलामे 'म' अक्षरैक महात्म्य अछि । माछ, मखान, मधुर, महादेव ।[129]

माछक महत्त्व शीर्षक निबन्धमे मिथिलाक एहि लोकप्रिय खाद्य-पदार्थपर शास्त्रार्थपरक विवेचन भेल अछि । एहिमे माछक महत्त्वक विज्ञापन करैत मिथिलाक विभिन्न भोज्य सामग्रीक पुष्कल वर्णन दृष्टिगोचर होइछ–

ख०-माछ खाएब परमावश्यक, खास कऽ मिथिला ओ बंगालक आर्द्रभूमिमे । एहि द्वारे मैथिल ओ बंगाली कुशाग्रबुद्धि होइत छथि । कंठी बन्हने बुद्धि कुंठित भऽ जाइत छैक । तेँ अधिकांश 111 नम्बरबाला संठी सन भेल रहैत छथि । यदि सभ ओहने भऽ जाय त बड़का-बड़का पोखरिक अधमन्ना रोहु की हैत ? धार ओ चौर सभमे एतेक माछ होइत अछि से व्यर्थ भ जाएत । देशकेँ केहन भारी आर्थिक क्षति पहुँचत ! लाखो गोटाक जीविका बन्द भ जैतैक । मलाह कथी पर चाँचर उठौताह ? मलाहिन कथी पर मूङाक माला पहिरतीह ? कवि लोकनि की खा कऽ रस भरल पदावलीक रचना करताह ? माछ गरीबक आहार ओ अमीरक शृंगार थीक । ई छुटि गेने अनेको सनातनी प्रथा टूटि जायत । दही माछक भार बंद भऽ जायत । पितृ-कर्ममे माछ-मांसक भोज उठि जायत । लोक

की देखि कऽ यात्रा करत ? स्त्रीगण जितियामे **मडुआक** रोटी कथी संग खैतीह ? तखन सधवा ओ विधवामे भेद की रहत ? लोक बाड़ीमे **जमीरी नेबो** किऐक रोपत ? **सरिसो आमिल** लऽ कऽ की करत ? माछ **तरबा** काल जे दिव्य सुगन्ध वायुमण्डलमे उड़ि परोसियाक जी सिहबैत अछि, से सौरभ कतय भेटत ? समाजकेँ तेहन भारी धक्का लगतैक जे मैथिल संस्कृतिक आधारशिला चूर्ण भऽ जायत ।[130] माछक प्रति मैथिल मानसक अतिशय आप्तिकेँ एहि गल्पमे निविष्ट एकटा अत्यन्त रोचक पद द्वारा सेहो व्यंजित कयल गेल अछि ।[131]

ब्राह्मण भोजन गल्पमे ब्राह्मण-भोजन पद्धति तथा पाबनि-तिहारक अवसर पर प्रचलित खाद्यक अत्यन्त मनोरंजक वर्णन करैत कहल गेल अछि– हौ ताहि दिनक लोक बुड़िबक रहय । भूदेव जेना क चाहथिन्ह, ठकि लेथिन्ह । आइ देवता निमित्त खोआ । काल्हि पितर निमित्त खोआ । शुभ होउ त खोआ । अशुभ होउ त खोआ । पुण्य कर, ताहिमे खोआ । पाप कर, ताहिमे खोआ । केओ जनमौ ताहिमे खोआ, मरौ ताहूमे खोआ, अगहनमे नव **धान** होउक, त **चूड़ा** खोआ । वैशाखमे **रब्बी** तैयार होउक, त **पूड़ी-बड़ी** खोआ । माघमे गरमागम **घी-खींचड़ि** खोआ । आर्द्रा नक्षत्रमे **आम** खोआ । उपजाबौ केओ, परन्तु भोग लगाबय काल अग्रे-अग्रे विप्राणाम् । हौ, एहन परमुंडे फलाहार करबाक बुद्धि और ककरोमे छैक ?

हम कहलिऐन्ह-खट्टर कका, बारहो मास त किछु ने किछु लगले रहैत छैन्ह । खट्टरकका चीनी घोरैत बजलाह- हौ, बारहो मास की थीक जे ब्राह्मणक बारह टा मास (मिलकीयत) बूझह । आश्विनक कृष्णपक्षमे पितृपक्ष । शुक्लपक्षमे देवी पक्ष । दूहू पक्ष **लड्डू** । कार्तिको मे **अन्नकूटे** रहैत छैन्ह । अमावास्यामे लक्ष्मीपूजा । पूर्णिमामे सत्यदेवक पूजा । एकादशीकेँ विष्णुक नामपर । चतुर्दशीकेँ महादेवक नामपर । चौठकेँ चन्द्रमाक नामपर । षष्ठीकेँ सूर्यक नामपर । हौ, एक-दूटा रहय तखन ने । कहाँ धरि गनाओल जाय । सभटा पर्व तऽ भोजने करक हेतु बनल अछि ।

हम-तखन एतबा रास जे व्रतक विधान कैल गैल छैक तकर आशय की ? खट्टरकका घाडमे चीनी मिलबैत बजलाह- 'पृणोति सुन्दर-भोजनम् अनेन इति व्रतम्' हम त यैह बुझैत छी । छठिक अर्थ **ठकुआ** । चौठचन्द्रक अर्थ पिड़ुकिया । तिलासंक्रान्तिक अर्थ **चुड़लड्डु** । होलिकाक अर्थ **पूआ** । ध्वजाक अर्थ **रोट** । सत्यदेवक अर्थ **शीतलप्रसाद** । दुर्गाक अर्थ **महाप्रसाद** ।[132]

ब्रह्मानन्द शीर्षक गल्पमे मिथिलाक विभिन्न भोज्य पदार्थमे साहित्य शास्त्रक नवो रसक अभिव्यंजनाक अत्यन्त मनोरंजक वर्णन भैल अछि–

साहित्यक नवो रस हमरा षट्रसमे भेटि जाइत अछि । शृंगार और मधुर एक्के थीक । जैह रस विद्यापतिक वयौवतिमे छैन्ह, सैह रस हमरा **मालदह** आममे भेटि जाइत अछि । हास्यक स्वाद हमरा **अम्मत**मे भेटि जाइत अछि । जैह गोनूझाक चुटकुला, सैह **तेतरिक खटमिट्ठी** । वीर ओ रौद्रक अनुभव हमरा **लौङिया मरचाइ**मे भऽ जाइत अछि । और वीभत्सक अनुभूति **तीत**मे । करुण रसक तत्त्व **लवण**मे भेटि जाइत अछि और शान्त रसक तत्त्व **कषाय**मे । वैराग्यशतक पढ़ू अथवा **त्रिफलाचूर्ण फाँकू** एक्के बात थीक । अद्‌भुत रसक आनन्द हमरा **पिपरमिंट**मे भेटि जाइत अछि ।[133]

शास्त्रक वचन शीर्षक गल्पमे विभिन्न तिथिकेँ त्याज्य खाद्य पदार्थक वर्णन करैत कहल गेल अछि –

पड़िवकेँ **कुम्हड़** नहि खाइ, द्वितीयाकेँ **कटहर** नहि खाइ, तृतीयाकेँ नोन नहि खाइ, चौठकेँ तिल नहि खाइ, पंचमीकेँ **आमिल** नहि खाइ, षष्ठीकेँ **तेल** नहि खाइ, सप्तमीकेँ **धात्री** फल नहि खाइ, अष्टमीकेँ **नारिकेर** नहि खाइ, नवमीकेँ **कदीमा** नहि खाइ, दसमीकेँ **परोर** नहि खाइ ।[134]

तहिना-कोन दिन कोन वस्तु त्याज्य थिक तकर वर्णन निम्नपाँतीमे अछि– रवि दिन केओ **माछ, मसुरीक दालि, आद** ओ **लाल साग** नहि खाय । **कासाक बारीबाटी**मे सेहो भोजन नहि करय ।[135]

धर्मक तत्त्व शीर्षक गल्पमे भोजन विन्यासक विभिन्न सामग्री ओ कार्य-व्यापार सभक वर्णन भेल अछि जेना- खट्टर कका एकटा **घटबर खोंटैत** बजलाह, खट्टर कका तिलकोराक **तरुआ कुरकुरबैत** बजलाह, खट्टर कका एकटा तरुआक **स्वाद** लैत बजलाह, खट्टर कका **मिरचाइक अँचार खोंटैत** बजलाह, खट्टर कका **अरिकोँचक चक्का मुँह**मे दैत बजलाह, खट्टर कका **ओलक** चटनी **चखैत** बजलाह, खट्टरकका तेतरिक **खटमिट्ठी चखैत** बजलाह, खट्टरकका **दहिबड़ चखैत** बजलाह, खट्टरकका **कुम्हरौड़ीक झोर चखैत** बजला, खट्टर कका **खूब झूर पलइक स्वाद** लैत बजलाह, खट्टर कका तृप्ति पूर्वक तरल **माछक** आस्वादन लैत बजलाह, खट्टरकका **माछक काँट** छोड़बैत बजलाह, खट्टरकका प्रेमसँ **रोहुक सीरासँ घी** बाहर करैत बजलाह, खट्टरकका **दही-भात** सनैत बजलाह, खट्टरकका दही भातमे **आमक रस गारैत** बजला, खट्टरकका **आमक चोभा** लगबैत बजलाह, खट्टरकका **चूरू** लैत बजलाह, खट्टरकका अचाबक हेतु उठि गेलाह ।[136]

मिथिला संस्कृति शीर्षक गल्पमे मिथिलाक विभिन्न सांस्कृतिक प्रतीक सभमे पाश्चात्य संक्रमणक वर्णनक क्रममे मिथिलाक भोजन विन्यासपर सेहो पाश्चात्य प्रभाव ओ रुचि परिवर्तनकेँ प्रदर्शित करैत कहल गेल अछि –

ओ युग नहि छैक जे हमर-तोहर तिरहुत, तिलकोर ओ पटुआक झोरमे,

करमीक साग ओ कोढ़िलाक पागमे, कोकटीक तौनी ओ सीकीक मौनीमे, डालाक भार ओ महफाक ओहारमे सीमित रहि जाय । देखै छहौक नहि, आब साड़ी-सलबार, दोसा-दलिपूड़ी, बैले- विद्यापति, मुर्गी-महादेव-सभ संगहि चलैत छैक । आब पंडौलमे **पावरोटी**, **सौराठमे सैंडविच**, टटुआरमे **टोस्ट** और कपिलेश्वरमे **कटलेट** भेटतैह ।[137]

एहिमे मैथिल भोजन विन्यासक अत्यन्त सहज वर्णन एहि शब्दें भेल अछि-

बाछीक गोबरसँ नीपल पवित्र ठामपर **आसन** लगाओल छल । हमरा लोकनि हाथ-पैर धो बैसलहुँ । काकी **माछ-भात** नेने ऐलीह । **सरिसो -आमिल** देल **भरि बाटी झोरायल माछुर** । **छिपलीमे तरल कबइ** । उपरसँ **अणाची कर्पूरसँ** सुवासित **दही** और **कलमी आमक अमौट** ।[138]

दर्शन शास्त्रक रहस्य शीर्षक गल्पमे पूर्वजन्मक परिकल्पना रूढ़िवादितापर व्यंग्य करैत **अल्हुआ** ओ **हलुआकेँ** दृष्टान्तक रूपमे प्रस्तुत करैत कहल गेल अछि -

ओ नीक कर्म कैने छल तेँ **हलुआ** खा रहल अछि, हम अधलाह कर्म कैने छलहुँ, तेँ **अल्हुआ** खा रहल छी । आगाँ नीक कर्म करब त हमरो **हलुआ** भेटि जाएत ।[137]

खट्टर ककाक टटका गप्प शीर्षक गल्पमे आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था जन्य अन्नाभावक स्थिति तथा पाश्चात्य सभ्यताक प्रभावसँ पुरातन **भोज** पद्धतिक क्रमशः लोप होइत स्थितिक वर्णन भेटैत अछि ।[140]

भोजन विन्यासपर हिनक व्यंग्यमे सहजहिं मैथिल भोजन पद्धतिपर आधुनिकताक प्रभाव अंकन भेल अछि । अपन एकगोट नचारीमे लेखक अन्नक महार्घताक विवरण करैत कहलनि अछि-

केहन भेल अन्हेर यो बाबा, केहन भेल अन्हेर ।
भात भेल दुर्लभ भारतमे, सपना **धानक ढेर** ।।
मकइ मखानक भाव विकाइछ, जीरक भाव जनेर ।।
सबसँ बुड़िबक अन्न **खेसारी**, सेहो रुपैये सेर ।
टाका भेल टकाही, वस्तुक हेतु मचल अछि रेड़ ।
धर्मवला धक्का खाइत छथि, पापीक हाथ बटेर ।[141]

एहि तरहेँ हरिमोहन बाबूक **खट्टर ककाक तरंगमे** मिथिलाक भोजन-विन्यासक सहज, सरस ओ मनोरंजक तथा विशद वर्णन भेल अछि ।

हिनक कथा संग्रह **रंगशालामे** ग्रथित **अँचारक पातिल** ओ **आदर्श भोजनमे** खास कऽ भोज्य सामग्रीक माध्यमे कथासूत्र जोड़ल गेल अछि । **अँचारक पातिलमे**

अँचारक गुण-वर्णन करैत दसँइ भगत नामक पात्रसँ कहाओल गेल अछि- अँचार तँ बाबू अँचारे छैक । गुदगर मालदह आमक । एहन-एहन हरियर फांक छैक जे की कहू ? आओर सिद्ध केहन तँ **मक्खन** जकाँ । चपचप तेलमे डूबल छैक । मसाला तेहन चाटुकार जे आङ्गुर चाटि क खाइ । एहन **अँचार** हम नहि खैने छलहुँ ।[142]

संगहि एहिमे अँचारक अधिक सेवन जन्य क्लेश तथापि ओकर उपचारक रूपमे **बेलक** सेवनक वर्णन दसँइक एहि कथनक माध्यमे अभिव्यञ्जित भेल अछि-

दँसइ बाजल- की कहै छी बाबू । तंग तंग कऽ छोड़ि देलन्हि । हमरा कहलनि जे जहाँसँ **कांच बेल** भेटैक तहाँसँ नेने आ । सौंसे सब्जीबाग छानि ऐलहुँ, कतहु नहि भेटल । आब मसल्लापुर दिस जाइछी ।...

की कहै छी बाबू । कतहुसँ एक पातिल **अँचार** आबि गेल छैन्ह । बस, तरकारी बन्द करा देलथिन्ह, जे आब दूनू साँझ अँचारे संग खाएब । औ बाबू अँचार बढ़ियाँ छैक । खैबा बेर त अपना अंदाज रहै छैन्ह नहि । आब हमरा हरान करैत छथि । कहू त बाबू ।[143]

आदर्श भोजन शीर्षक कथामे नेचुरोपैथीक सन्दर्भमे आधुनिक भोजनक तुलना कयल गेल अछि । कथाकारहिक शब्दमे-

अस्तु नियत समय पर मित्र महोदय हमरा भीतर लऽ गेलाह । रईस त रहबे करथि । सुन्दर कमलपत्री गलीचा बला आसन । चानीक चमकैत **थारी बाटी-लोटा गिलास**, देखि कऽ मन प्रसन्न भऽ गेल । दूटा आसन लागल रहय । एक हुनका हेतु, एक हमरा हेतु । मित्र महोदय आदरपूर्वक अपना संग बैसौलन्हि ।[144]

नेचुरोपैथिक अनुरूप विभिन्न प्रकारक **शाकाहारी** भोजन सामग्री समक वर्णन एहि स्वरूप अछि-

पहिने एक-एक **फाँक कागजी नेबो** दूनू थारीमे राखि देलक । तदुत्तर एक-एक आँजुर **पलाँकी सागक** मेंही कतरा । सलादक कतरल पती । एक मुट्ठी **अँकुरल मूड़** । **उसिनल चिनिया बादाम** । दू चारिटा **गाजर** ओ **चुकन्दर** । चारि पाँचटा लाल-लाल **टमाटर** । अन्तमे **चोकरक** एक-एकटा **मोटगर रोटी** ।[145] भोजनक वैज्ञानिक व्याख्या करैत संतुलित भोजनक सूची एहिमे देल अछि ।-

देखू, एहिमे सभ प्रकारक भिटैमिन भरल छैक । **टमाटरमे** भिटैमिन ए, **अँकुरमे** भिटैमिन बी, **नेबोमे** भिटैमिन सी, **यवक चोकरमे** स्टार्च और प्रोटीन दूनू भेटि जायत । **चुकन्दरसँ** शुगर (चीनी) ओ **चिनियाबदामसँ** फैट (चरबी), **पलाँकीमे** आयरन (लोहा), गाजरमे कैलशियम (चूनक अंश), **सलादमे** फासफोरस । कहबाक अभिप्राय ई जे शरीरक हेतु जतेक पोषक उपादान होइत छैक से सभटा एहि भोजनमे भरल अछि ।

तदनन्तर ओ कैलोरी (मात्रा) क हिसाब बुझाबय लगलाह । फल्लाँ उपादान एतेक मात्रामे चिल्लाँ उपादान ओतेक मात्रामे..........। एवं प्रकारेँ ई एकदम बैलेंस्ड फुड अछि । सारांश ई जे स्वास्थ्यक दृष्टिएँ ई आदर्श भोजन थीक ।[146]

चटकारी भोजनक प्रति स्वाभाविक लोलुपताक वर्णन करबाक क्रममे भोजन-व्यापार ओ सामग्रीसँ सम्बद्ध विशिष्ट शब्दावली सबहिक प्रयोग द्रष्टव्य अछि-

शर्माजी **चोकरक रोटी चिबबैत** बजलाह- यदि एही प्रकारक सात्त्विक **आहारपर** लोक रहय त एक सै वर्ष जीबि सकैत अछि ।

हम मनमे कहल-तखन जीबि क करबे की करत ? शर्माजी **टमाटरक चोभा** लगबैत बजलाह- अहा की अपूर्व वस्तु थीक ई टमाटर । अमेरिकामे एकरा गोल्डन एपुल (**सोनहुला सेब**) कहैत छैक । परन्तु अपना देशमे लोक हाइजिन (स्वास्थ्य विज्ञान) नहि बुझैत अछि । कतेक मूर्ख हमरा भोजनपर हँसैत अछि । बेसी दूर किएक जायब ? हमरा अपने घरमे **बैज्ञानिक भोजनक** महत्त्व केओ ने बुझैत अछि । हम लाख चेष्टा कैल, तथापि हमरा लाइन (मार्ग) पर केओ नहि अबैत अछि । आइए देखू ने । भोरे सँ **पूड़ी-कचौड़ी** छना रहल अछि । सभ केओ ओहीमे लागल अछि । हमरा संग बैसक लेल केओ तैयार नहि भेल । आइ बहुत दिनपर संयोगवश अहाँ एकटा संगी भेटि गेलहुँ अछि ।

हम मनमे भगवानक स्मरण कैल- हे नारायण, ई कोन दिनक बदला चुकाओल ? और-और नौतहारी सभ **पूड़ी-कचौड़ी** उड़ा रहल छथि और हमरा कर्ममे ई भिटैमिनवला **चोकर** लिखल छल । बाहरसँ **हलुआ** ओ **मालपूआक** सुगन्ध आबय लागल । शर्माजी बजलाह-लोकक रुचि बिगड़ल छैक । **मैदा** ओ **चीनी** बूझू त जहर थीक । नेचरोपैथी (प्राकृतिक चिकित्सा) मे एकरा ह्वाइट प्वाएजन (श्वेतविष) कहैत छैक । एही द्वारे हम दूधमे चीनी नहि मिलाबय दैत छिऐक । पीबि कऽ देखियौ ने । ई कहि ओ एक बाटी दूध हमरा दिस बढ़ा देलन्हि । मुँहमे लगा क देखल एको रत्ती मीठ नहि । हे मधुसूदन ! मित्र महोदय अहूँसँ टपि गेलाह । अहाँ एक मधु दैत्यसँ युद्ध कैल । ई मधुर मात्रसँ युद्ध ठनने छथि । हमरा दूध पिबैत देखि शर्माजी मना कैलन्हि- हाँ-हाँ ओना नहि । चाह जकाँ सीपि-सीपि कऽ **पीब** । एके छाकमे पीबि गेनाइ हाइजिनक विरुद्ध थीक ।

हम मनहि मन कहल हे हाइजिन देवी ! तोँ कहाँ सँ हैजा जकाँ टपकि पड़लीह ! हमरे लेल बधाएल छलीह ? सेहो अजुके दिन खातिर ? हम कोन अपराध कैने छलिऔह ?[147]

हिनक **चिकित्साक चक्र** शीर्षक कथामे पथ्यापथ्यक मनोरंजक विवरणक माध्यमे अनेक खाद्य पदार्थक वर्णन भेल अछि । द्रष्टव्य अछि कविराजक उक्ति- ओ

बजलाह- से आशय नहि । प अक्षर वला वस्तु अहाँक **पथ्य** हैत । जेना-**परोर, पपीता,** पिराड़, **पलाँकीक साग** । क अक्षरवाला वस्तु **कुपथ्य** हैत । जेना- **कदीमा, कटहर, करैल, करमीक साग** । हम कहलिऐन्ह-तखन त **कबइ** कँ छोड़ि क **पोठिया** खाइ ? कलाकन्दक स्थानमे **पेड़ा** । **कचौड़ीक** बदला **पुड़ी** । और **पूआ, पिड़ुकिया, पोलाव,** पनूआ सभटा **पथ्ये** हैत ।[148]

एहिना मिथिलाक जन जीवनक खाद्य सामग्रीक उल्लेख करैत वर्णित अछि-

भूख तेहन लागल जे लगले मुँह धो कऽ पीढ़ीपर बैसि गेलहुँ । **सरिसौ आमिल** दऽ कऽ **अदौरी-भाँटाक झोर** भेल रहैक । और **हरियर मरचाइ** देल **ओलक** साना । ताहि संग भरि थारी **भात** खा गेलहुँ ।[149]

हिनक **भोलबाबाक गप्प** शीर्षक रस रचनामे गप्पक माध्यमे **खाधुर** व्यक्तिक अद्भुत वर्णन भेल अछि आ एहि क्रममे विभिन्न प्रकारक भोज्य सामग्री सबहिक वर्णन भेल अछि ।[150] एहिना गप्पक क्रममे दहीक प्रशंसाक अतिरंजक वर्णन निम्न उक्तिमे द्रष्टव्य अछि-

दहीक परीक्षा तीन टा छैक । **मटकूर** उनटाक टाङि दिऐक तँ खसय नहि और **खयला** उत्तर हाथपर जतेक पानि ढारी ततेक चिकनइ जमल जाय ।....

दही पौरैत छलीह हमर अजिया सासु तेहन सक्कत जे हाथसँ नहि कटाइत छलैक । एक बेर ताइमे पौरि क हमरा ओहि ठाम पठौलन्हि । ओहिमे तत मोट **छाल्ही** रहैक ओ तेहन **कठ्ठिल** जे सितुआ गड़ाओल गेलैक तँ सितुए टूटि गेलैक ।[151]

चर्चरीमे संगृहित भोलबाबाक चौपारि परक गप्पक क्रममे विभिन्न भोज्य पदार्थक अतिरंजित वर्णन उपलब्ध होइछ, जेना-हमर बाबाक भुतही गाछीमे एकटा पुरान फलेना क गाछ रहैन्ह । से एक एकटा **जामुन** आधा-आधा पावक **गुलाब जामुन** जकाँ होइक । **बौकू बाबूक कर्जानमे** तेहन केराक **घौर** फुटैन्ह जे एक एकटा घौर एक एक गाड़ीपर लदा क अबैन्ह । हमरा पीसाक ओहि ठामसँ एकटा **कटहर** आयल रहय से फाँड़ल गेल त साढ़े तीन हाथक **नेढ़ा ओहिसँ** बहरायल ।[152]

हम एही आँखिसँ दू दू हाथक बालि देखने छी । मकोय सन सन **मकइक** दाना । **कुसियारे** तेहन झमटगर होइक जे एक बेर एकटा साँढ़ छौ मास धरि फँसल रहि गेल । हमरा नानाक चारपर एकटा **राहड़ि** कौआक मुँहसँ खसि पड़लैक । से जनमि गेलैक । हौ बाबू । ओ गाछ जे झाड़ल गेल त एक पसेरी **राहड़ि** ओहिमे सँ बहराएल ।[153]

भटसिम्मरिवाली जे **पू** बनाबथि जे तूरक फाहासँ बेसी **मोलायम** । महिनाथपुरवाली तेहन **बड़** बनाबथि जे एक रत्ती **खोंटि** क मुँहमे दिय और पैलक पैल पानि पिबैत रहू ।

पिलखबारवालीकेँ एक बेर पाहुन एलथिन्ह । घरमे केवल चाउरेटा रहैन्ह । परन्तु ई ओहीसँ **हलुआ, पूड़ी, तरकारी, चटनी** बना कऽ खोआ देलथिन्ह ।[154]

एही कथासंग्रहक **तिरहुताम** कथामे मिथिलामे कुटुम्ब-सेवाक क्रममे गृहपतिक ओरिआओन ओ अस्तव्यस्तताक वर्णन देखि पड़ैछ । कथाकार आधुनिक प्रसंगमे मिथिलाक भोजन-विन्यासक अप्रासंगिक ओ निरर्थक पक्षक उपहास कयलनि अछि ।[155]

एहि कथामे सौजनियाँ पाहुनक सचारक वृहत् विन्यास एवं विविध प्रकारक व्यंजन ओ मधुरादिसँ ततबा आग्रह-दुराग्रह करबाक वर्णन अछि जाहिसँ पाहुन अवग्रहमे पड़ि जाइत छथि । परन्तु सचारक एकटा सांगोपांग रूप एहि कथामे साकार भऽ गेल अछि ।[156]

तीर्थयात्रा कथामे देशाटनक क्रममे बंगाली और मैथिलक सहभोजक तुलनात्मक विवरण दैत मिथिलाक भोजक यथार्थ रूपक परिचय देल गेल अछि–

हमरा अपन गमैया **भोज** स्मरण भ आएल । एतबा गोटा खैतथि त घमगज्जर मचि जाइत । रौ पानि ला । हौ, एकटा पात एम्हर चाही । औ तरकारी उठाउ । हाँ, हाँ हम आब नहि लेब । नहि, नहि हुनका और **दही** दिऔन्ह, औ हुनका अपने लेबक मन छैन्ह । इत्यादि ।[157]

एहि कथामे मिथिला टाइप मूलक चरित्र सभ जेना अलोपीनाथ, मुसाइमामा, गूजरबाबा, लालकाली, बड़की बाबी, सहजो पीसी आदिक माध्यमे मैथिल भोजन परम्पराक विभिन्न आयामकेँ उद्घाटित कयल गेल अछि जाहिमे मिथ्याडम्बर, परान्न लोभ, असामाजिक प्रवृत्ति, अस्पृश्यता विचार, कंजूसी, छलछद्म, कलहप्रियता, धर्मान्धता, अन्ध दानशीलता, अनेकता, रूढ़िवादिता आदिक प्रचुर अभिव्यक्तिक क्रममे विभिन्न प्रकारक भोजन सामग्री सबहिक विशेष वर्णन भेल अछि ।[158]

चन्द्रनाथमिश्र अमरक **कन्नूभाइक कंठी, कन्नुभाइक कदीमा** आदि शीर्षक गल्प भोजनक दृष्टिएँ अत्यन्त मनोरम भेल अछि । हिनक कथामे आधुनिकताक प्रवाहमे पसरैत चाहक विन्यासक विवरण द्रष्टव्य अछि–

आ ई **चाह** ? एकरा लै **चुलहा** चाही, जारनि चाही, **सलाइ** चाही, **पत्ती-चीनी-दूध** चाही, **केटली** चाही, **छन्ना** चाही ताहिपरसँ **कप-प्लेट** नै तँ **गिलास**, से चाही, तैयो एक चीज छुटिए गेल, चलबऽ लै **चम्मच** चाही ।[159]

रमानाथमिश्र मिहिरक **लिट्टीक पिकनिक पाहुन नहि...., तौलालालक पुरहिताइ** आदि कथामे भोजन सामग्री ओ मैथिलक भोजन लोलुपता आदिक वर्णन भेल अछि ।[160]

हिनक **टेटर** गल्पमे सामाजिक निम्नवर्गीय समाजक भोजन सामग्रीक वर्णन करैत कहल गेल अछि - **कठौतिया थारी**मे खरकटल सूप सन **मडुआक** रोटी, ओहिपर

नोन, सुक्खा अँचार, मेरचाइ आ दू **ढेकरी प्याज** लेने आङनवाली कहलकैक- अबैक ने, कलौमे एखन देरी छैक, तावत **पनपियाइ** कऽ ने लैक ।[161]

राजेश्वरझाक **स्वर्गक नोत** शीर्षक गल्पमे हरिमोहन बाबूक शैलीमे खाधुर लोकक वर्णन कहैत कतोक नीक-नीकुत खाद्य वस्तुक उल्लेख भेल अछि ।[162]

काञ्चीनाथझा किरणक **मधुरमनि** कथामे निम्नवर्गीय समाजक भोजन-विन्यासक अत्यन्त सहज चित्र देल गेल गेल अछि–

मधुरमनि **चीकस** सानि **लोइया** बनाओलक । हाथ परक पातर-पातर रोटी **पाथि** सूपक पेनपर धयलक । **दालि** उतारि **खापड़ि** चढ़ा देलकैक । आँच तेज कऽ **कड़छु** धीपऽ देलकैक । हाथसँ **खापड़िकेँ** औंचि **रोटी** खापरिमे दैत बाजलि-कतऽ छै ? आबौ ने आब ।

स्वर एकदम भिन्न । हृदयमे सटि जाइबला । बंसी जकाँ अपना दिस घैंचि लेबऽ बला । **रोटीकेँ** उनटौलक । आगिपर दऽ कऽ **पनबट्टी** सनक फुलओलक आ **थारीमे** धऽ देलकैक । **रोटीपर दू गोट हरियर मेरचाइ, दूगोट पियाज** दऽ दू **सरबा दलिसग्गा** थारीमे दैत फेर कहलकैक- अबै ने किए छै ? सूति रहल की ?

एकटा **लोइया चीकस** लऽ हाथपर पाथऽ लागलि ।[163]

रामदेवझाक कथासभमे मिथिलाक माटि-पानिक सहज अभिव्यक्ति भेल अछि आ एहि सभमे भोजन-विन्यासक विविध चित्र देखबामे अबैछ । हिनक **एक खीरा तीन फाँक** कथामे फेकू द्वारा कीनल गेल झिल्लीक तीनू बेटा मध्य बँटबाराक वर्णन अछि ।[164]

हिनक **मनुक सन्तान** कथामे **माछ, डोका, काँकोड़** बिछऽवला निम्नवर्गीय समाजक निम्न जीवन स्तरक कथाक ओ मर्मस्पर्शी चित्रांकन भेल अछि ।

नकली आदमी शीर्षक कथामे वरक द्विरागमनक अवसरपर अइहबक फऽड़ बनयबाकालक दृश्यक अत्यन्त सहज चित्र उरेहल गेल अछि –

घरमे **घी** टहकैत छलैक-**अइहबक फड़** पकैत छलैक । दुआरिपर खबसिनियाँ गहूमक **चिक्कस** सनैत छलि, पलरलहा **गूड़** जल्दी कागतसँ छुटिते ने छलैक-

ए, मलिकीनी ई कागत त छुटबे ने करइ छइ ।

सानि ने दहिन कागत सहीते, कोनो धयल रहतइ ? घरसँ कमलमाय कहलथिन ।

ओमहर पुतहु दोसर **अड़ियामे मसल्ला** दऽ **खस्ता** बना रहल छलनि । **घी** पुष्ट कऽ छलैक से हाथ छह-छह करैत छलैक । अपना देयादमे, सम्बन्धीक ओतऽ आ कनियाँक नैहर बैन देबा लेल घीमे **अइहबक फऽड़** बनितैक । कमल माय कहलथिन- कनेक आरो सानि दियौ जे खाइमे हल्लुक रहतइ । आ फेर खबसिनियाँकेँ कहलथिन-

गे भेलउ नञि तोरा ? **पानि** छन-छन जरल जाइए । **पानि** माने तेल । **पकमान** पकबैत काल तेलक नाम लेने बेसी तेल जरैत छैक ।[165]

समाजक विपन्न वर्गक नेनाक भोजनक प्रति उत्सुकता तथा खाद्याखाद्यक विचार-शून्यताकेँ वर्णित करैत कहल गेल अछि –

मुखोकेँ देखि **गुड़ही पूड़ी** पर **गुड़ही खीर** चढ़ा कऽ देलकैक । ओ हबर-हबर खा गेल । मुदा ओकर मोन लागल छलैक उजरा **तसमइ** पर....थारिए-थारी आङने- आङन गेलइ ।...गूड़क खीर तँ गाममे बाँटइलय आ पौनी-पसारी लय बनल छलैक । मुखोक दिमागमे कहिया कतऽक खीरक स्वाद रहि-रहि मोन पड़ैत छलैक ।... एक बाटी खीर...कमल एक कौर मुँहमे लगा कऽ बाटीमे राखि देलकैक आ कमलक माय बाटी मुखोक आगाँमे घुसका देलथिन खाइ लय...एहू बेर आशामे छल ....ओहि बेर तँ कमलक मुँहमे पपिआहा भेल छलैक तँ कमलक मायकेँ क्यो ई टोटमा देखा देने रहनि ।[166]

गंगेश गुञ्जनक **पिता-पुत्र संवाद**मे वर्गीय वैषम्यकेँ भोज्य पदार्थक आधारपर चित्रित कयल गेल अछि । द्रष्टव्य अछि विपन्न वर्गक रमानाथझा तथा सम्पन्न वर्गक रमेशक भोज्य पदार्थक विषमता –

'तावत **भानस** भऽ गेल रहनि । ओ ओतहिसँ सोर कयलथिन तँ बाप बेटा दुनू गोटय उठि कऽ खायलेल गेलाह । लग अइतहि जेना नाकमे कोनो **गंध** पैसि गेलैक । रमानाथ बुझलकैक आगाँ **कन्ट्रौलक** चाउरक गन्ध तोड़ैत **भात** रहैक । भातपर **खेसाड़ीक दालि** । कोनहुना भात सानि कऽ ओ दू-तीन कओर गीड़ैत घट घट पानि पीबैत ओ बैसल रहल । नाकमे गरम भातक **भभकैत** भाप लगैत रहैक । **छुच्छ** आ **खेसाड़ीक पनिसोह दालि** । ओ बेमन होइत उठल आ हाथ धोअऽ लागल । माय कतबो कहलथिन खाय ओ नहि बैसल । ओकर मोन फेरि देने रहैक ।'

'कय मास पहिलुका एकटा बात मोन पड़ल छलैक रमानाथकेँ । एक दिन ओ रमेशक आँगन गेल रहय तँ रमेश खाइत रहैक । आगाँमे **गमकौआ** चाउरक भात आ **छौंकलाहा** दालि आ **तीमन तरकारीक** सुगन्धि जेना ओकरा साँसे देहेमे पैसि गेल रहैक । भरि आँगनमे सुगन्धि पसरल रहैक । एहू क्षण से ओकरा नाक आ मोनमे पैसि गेल रहैक । ओकरा आश्चर्य भेल रहैक जे एहन सुन्दर खेनाइकेँ पर्यन्त रमेश छोड़ि कऽ उठि गेल रहैक जे नै नीक लगैऐ । उठैत काल **दूधक** भरलो बाटी ओकरा पयरसँ लागि कऽ उनटि गेल रहैक । मुदा एको रती अफसोच नहि ।[167]

कथाकार शंकरदेवझाक दीर्घकथा **चानीक सम्पोट**मे भोजनक विन्यास ओ भोजन क्रिया तथा उपकरण आदिक रोचक चित्रण भेल अछि । देखल जा सकैछ एहि कथाक किछु अंश–

सब गोटाकेँ **भूख** लगले छलनि । सोझाँमे भोज्य पदार्थ देखि जेना सभक जठराग्नि एकहि बेर तीव्र भऽ उठलनि । चन्दा आ रेखामिश्र हुनक सहायतालेल उठलथिन । केराक बीड़ परक हरियर-हरियर **पात** ओछा ओहिपर **सचार** लगाओल जाय लागल । किछुए कालमे पातपर **कचौड़ी, तस्मै, तरकारी, भुजिया, अँचार, मधुर, दही, चीनी** आदि वस्तुक पथार लागि गेल ।

समयक कोनो ठेकान नहि रहलनि । ऐंठ हाथ आ मुँह दुनू सुखा कऽ **खरकाटि** गेल छलनि ।

पुनः ओ सम्पोट विमलादेवीक हाथमे अयलनि । ओ ओकरा फोलि बाकुट भरि कऽ सबकेँ **हरियर कचोर दखिनी, लौंग, सोंफ आ टूक कयल सुपारी** देलथिन ।[168]

एतावता आधुनिक मैथिली कथासाहित्य भोजनविन्यासक वर्णनसँ संपुष्ट अछि आ एहि वर्णनकेँ एकटा व्यापक आयाम हरिमोहनबाबूक कथासभमे भेलैक अछि ।

उपन्यास–

मैथिली उपन्यासहुमे कथा तत्वक आग्रहेँ, वर्णन वैशद्यक आग्रहेँ भोजन विन्यासक यत्र तत्र उल्लेख भेल अछि ।

मैथिलीक प्रारंभिक उपन्यास सभ जाहिमे मिथिलाक नारी समस्या अथच वैवाहिक समस्याक बहुविध चित्रण होइत रहल, वैवाहिक कार्मकाण्डसँ सम्बद्ध भोज्य सामग्री, भोजन विन्यास आदिक बहुशः उल्लेख भेल अछि । हरिमोहन झाक कन्यादान उपन्यासमे दुइ ठामक भोजन विन्यासक वर्णन उल्लेखनीय अछि । **सभागाछीक दृश्य** उपशीर्षकमे पाक क्रिया ओ भोजनसँ सम्बद्ध निम्नलिखित वर्णन अछि –

घुटरझा **खिचड़ीक** पातिल उतारि चारिटा पातपर परसलन्हि । फेरि ओहिमेसँ आलू बौछि कऽ साना कैलन्हि । तखन बजलाह जे येश, आब अबैत जाउ, नमोनारायण करू । दुहू गोटे पैर धो कऽ बैसैत गेलाह । मुकुन्दक पेटे तेहने रहैन्ह जे चारू पातपरक खीचड़ि आगाँमे देल जैतन्हि तैयो छुछुआयले उठितथि, किन्तु करताह की ? जैह नैवेद्य भेटलैन्ह ताहीपर सन्तोष कऽ उठि गेलाह ।[169]

एही उपन्यासमे अन्यत्र उपाहारगृहक भोजन विन्यासक सहज चित्र अछि–

'सोनपुरक रिस्टौरैं (उपाहार-गृह)मे दूटा अङरेजिया नवयुवक आमने-सामने कुर्सीपर बैसल छथि । बीचमे सफेद संगमर्मरक टेबुल धैल अछि । ओहिपर चारू कात चारिटा शीशाक फूलदानीमे रंगविरंगक विलायती फूल सभ सजाएल राखल अछि । बीचमे तीनटा बेशकीमती शीशीमे क्रमशः **टर्मेरिक पाउडर** (हरदिक चूर्ण), **मस्टर्डक्विक** (सरिसवक चटनी) और **फाइन साल्ट** (खूब मेंही बूकल नोन) राखल अछि ।'

'थोड़बे कालमे होटलक खानसामा आबि कऽ हिनका दूहू गोटाकेँ सलाम कए ठाढ़ भऽ गेल । ओहिमे एकगोटा आर्डर देलथिन्ह दो कप चाय, दो पराठा, दो प्लेट **वेजिटेवल करी** (रसदार तरकारी), दो ठो चौप और चार ठो स्पंज रसगुल्ला । पाँच मिनटक भीतर आधारसँ अधिक टेबुल चिनिया प्याला और तश्तरीसँ भरि गेल । अन्तमे खानसामा टूटा शीशाक ग्लासमे जल नेने आएल और टेबुलपर राखि देलक । दूहू गोटे निम्नलिखित गप्पशप्प करैत छूरी-काँटा और चम्मच लऽ भोजन रूपी महायुद्धक हेतु प्रस्तुत भऽ गेलाह ।'[170]

हिनक द्विरागमन उपन्यासमे ग्रामीण महिलाक जीवनमे दैनन्दिन भोजन-विन्यासक प्रति सम्बद्धताक वर्णन करैत कहल गेल अछि- हमरा सभकेँ त एक पहर दिनेसँ रतुका चिन्ता व्याप्त भऽ जाइ अछि । जारन-काठी सुखाएल अछि की नहि ? अन्न-तीमनक ओरिआओन अछि की नहि ? पेटक धंधा मे जे लगै छी से आधा राति क जोताएल रहै छी । साँझक चाउर छाँटए सँ, दालि दरड़बसँ, चिनवार निपय सँ, चूल्हि फूकय सँ, जँ छुट्टी होए तखन ने हमहुँ मैदानक हवा खाइ ग ।[171]

एहि उपन्यासमे **वर-बरियातीक विध** उपशीर्षकक भोलानाथ तथा लालकाकीक उक्ति सभमे द्विरागमनक हेतु प्रयोज्य विविध प्रकारक वासन तथा भोज्य पदार्थक विवरण आयल अछि । जेना-

भोला.- तखन **बर्तन-बासन** चाही ।

ला.- **थारी, बाटी, लोटा, गिलास, बटुका, कड़ाही, करछु, तमघैल-अढ़िया** ।

भोला.- तखन **मेवा मशाला** साँठल जाइ छैक ।

ला.- **सुपारी, लौंग, अइँची, दालचीनी, शीतल-चीनी, जाफर, जावित्री**

भोला.- तखन वरक विधि होमक चाही ।

ला.-चुमाओनक ओरिआओन होमक चाही । डाला परक मधुर होबक चाही । **दही, अक्षत, पान, मधुर**

भोला.- तखन बरियातकेँ सौजन्य कराबऽ पड़ैत छैक ?

ला.- त । सँचारक हेतु पूरा बनाबऽ पड़ैत छैक । **बड़, बड़ी, अदौरी, दनौरी, तिलौरी, पापर**, ...बाप रे बाप

भोला.- ताही लेल त दू मास पहिनहि दिन मनाओल जाइ छैक ।

ला.- त **दही माछक** भार अबैत छैक । कन्याक हेतु कहौतिया नुआ अबैत छैक । से पहिरि क बेटी कनै छैक । देहमे तेल उकटन लगै छैक । आङने आङनसँ **खायक** अबै छैक । द्विरागमन की कनिया-पुतराक खेल छैक जे चट मङनी पट विवाह ।[172]

एहिमे अतिथिकेँ भोजन विन्यासक मैथिल परम्परा तथा आधुनिकताक भोजन पद्धतिक वर्णन भेल अछि-

मेम भोजन करय आयल अछि ई बुझितहि सभ स्त्रीगण तमाशा देखक हेतु उमड़ि पड़लीह । बुनमुन काकी पैर धोआबक हेतु एक लोटा पानि लऽकऽ ठाढ़ि भेलीह । किन्तु मेम साहिबा जूता-पैताबा पहिरनहि आसनपर चलि गेलीह एहि पर पहिल ठहाका पड़ल ।

फ्रौकमे रहबाक कारण मेम ठेहुन मोड़ि कऽ नहि बैसि सकलीह । दूनू पैर पसारि कऽ आसनपर बैसय पड़लैन्ह । एहिपर दोसर ठहाका पड़ल ।

छूरी-काँटाक अभ्यास-वश मेमकेँ भात दालिक कौर नहि बनाबय एलैन्ह । आङुरसँ खैबामे नहि ओरिआइन्ह, खसि-खसि पड़ैन्ह । अगत्या ओ एक एकटा भात मुँहमे देबय लगलीह । एहिपर तेसर ठहाका पड़ल ।

मेम अप्रतिभ भऽ **उड़ीदक बड़केँ** ओमलेट जकाँ खोंटि खाय लगलीह ।

ता बुनमुन काकी डाला-धुप लऽ कऽ पहुँचि गेलथिन्ह । मेमसँ आग्रह करैत कहलथिन्ह - बहिनदाइ और किछु चाहिऐन्ह ?

मेमक तृष्णा डब्बाक पनीरपर लागल रहैन्ह । कहलथिन्ह- कुछ चीज मङाइये ।

बुनमुन.-कोन चीज लेतीह ?

मेम मुश्किलमे पड़ि गेलीह । कहलथिन्ह-चीज, चीज, वही, सी. एच.ई. एस. ई.-चीज । सभ स्त्रीगण केँ बुझि पड़लैन्ह जे मेम अङरेजीमे गारि पढ़ि रहल छथि । एहिपर पाँचम ठहाका पड़ल ।[173]

एहि उपन्यासमे मिथिलाक भोजक सेहो अत्यन्त स्वाभाविक चित्र उरेहल गेल अछि । भोजक पाकक वर्णन करैत कहल गेल अछि-

आइ लालक आङनमे छौ सातटा **तिअर** खनल गेल छैन्ह । ताहि पर बड़का खाँखड़ सभ चढ़ल अछि । कोनोमे **चाउर**, कोनोमे **दालि** खदकि रहल अछि । पाकमल्ल लोकनि काछ भिड़ने अपन-अपन मोर्चापर डटल छथि । केओ **टोकनामे** बाँसक काँड़ी लगा क **माँड़** पसा रहल छथि । केओ **खजनहरमे झाँझ़सँ** भात छानि रहल छथि । केओ बड़का **दलिरन्हा** चढ़ौने छथि । सभक देह घामे-पसीने तरबतर भेल छैन्ह किन्तु हाथ **अपैत** रहने पोछय कोना । एक पाक कर्त्ताक ललाटक स्वेद बिन्दु नासाग्रपर आबि मोतीक स्वरूप धारण कैलकैन्ह । किन्तु जहिना एक आँजुर **आमिल** ढ़ीलक हेतु निहुड़लाह कि ओ मोती टप दऽ खसैत दालिमे विलीन भऽ गेलैन्ह ।

ओसारापर **करछुक** टन-टन संग चूड़ीक झन-झन स्वर व्यञ्जित करैछ जे व्यञ्जन वर्ग महिलाश्रित अछि । भंडार घरमे घूरभरि केराक पातपर धालसरीफूल सन **भातक** ढेरी लागल अछि । भोज्यान्नक सौरभसँ सम्पूर्ण भवन गमगम कऽ रहल अछि ।[174]

पश्चात् भोजनकालक दृश्य एहि प्रकारक अछि- आब बारिकगण अपन-अपन चुमकी देखाबय लगलाह । भोजनार्थी लोकनि अपन-अपन सुचिक्कन कदली **थमक** पातकँ सिक्त कय **भात** सरियाबऽ लगलाह । ताहिपर आमिल देल **राहड़िक** दालि परसल गेल । तदनन्तर **सजमनि, कदीमा, अदौरी-भाँटा, आलू-परोर, साग, तिलौरी, पापड़, तिलक चटनी** और **तेतरिक खटमिट्ठी** परसाय लागल । तत्पश्चात् आम्रपल्लव लऽ कऽ **घृत** परसैला उतर ज्योतिषीजी कहलथिन्ह-आब होउ । **पवित्री** पड़ि सेल । न वैद्य दैत जाउ ।

आब भोजनक **सपासप** ध्वनि एकतालसँ बहराय लागि गेल । थोड़ेक कालक उपरान्त **बड़ी** उठल ।

ननोनाथझा दू-चारिटा चाखि कऽ बजलाह- वाह ब ब ब बड़ी ब ब ब ब ड़ ब ब विलक्षण ब ब ब बनलैक अछि ।

ज्योतिषी कका समर्थन करैत कहलथिन्ह- हँ बेश मुलायम छैक । **घाटि** खूब कऽ **फेनल** गेलैक अछि । **झोरो** बेश **खटतुरुस** भेलैक अछि । किन्तु हमरा **केराव बाँतर** करत तँ खाइत डर होइ अछि ।

पलटूझा जीभ चटपटबैत बजलाह- **तेतरिक खटमिट्ठी** बड़ दिव भेलैक अछि । खूब **चटकार** । एहिमे जीरक स्वाद अपूर्व लगैत छैक ।

लाल बजलाह- हौ, **खटमिट्ठी** एक बेरि और उठाबह । किछु कालक उपरान्त **दही चीनी** उठाओल गेल । ढोढ़ाइझा कहलथिन्ह-**दही** किछु अम्मत भऽ गेलैक अछि । कनेक नोन मङाउ ।

बटुक जी बजलाह-आइ चार रोज के पौरल है- **खट्टा** कतेक न होयत ? ओहपर बथनिया सब भैंसीके...... लाल हुनका चुप करैत बजलाह-हौ कंटीर, रतुका पौरल **मटकूर** उठाबह ।

ज्योतिषीजी कहलथिन्ह- हाँ हाँ । **चीनी** फराके कऽ परसह । जाह **दहीक** उपरेमे धऽ देलह । **बारिक** पक्का नहि भेलाहँ ।

अन्तमे **सकरौड़ी** उठल । किछु अधिक चतुर व्यक्ति गिलास वा लोटा मे सकरौड़ी पीबय लगलाह ।

बौकू झा मौन-भोजन करैत छलाह । हुनका बगलमे एक सात वर्षक नेना बैसल

छलैन्ह । सकरौड़ी परसाय काल पियास लागि गेलैक । जहिना लोटा उठा क मुँहमे लगौलकैन्ह तहिना बौकूझा ओकरा गालमे बामा हाथे एक तबड़ाक लगाओल । नेनाक मुँहसँ लोटा छुटि गेलैक । बौकूझा पानि फेंकि जा लोटा अजबारथि-अजबारथि ता बारीक पातेपर सकरौड़ी परसि आगाँ बढ़ि गेलैन्ह । बौकूझा पित्ते आँट भऽ गेलाह । किन्तु बाजथु कोना ? ओ अपन मूक क्रोध नेनापर उतारय लगलाह । मुँह दूसि इशारासँ कहय लगलथिन्ह-आब पीबि ले सकरौड़ी । अभागल । भोजोमे ऐलाह त घट-घट पानिए पीबय लगलाह । पानि तँ अपनो इनारमे भेटितौक । कर्मनेढ़ा । मुँह ने देखियौन्ह केहन **सुथनी** सन बनौने छथि ।

तावत मुकुन्द और झारखंडीमे **सकरौड़ी** पिउबाक बाजी लागि गेलैन्ह । घरबैयाक छाती धड़कय लगलैन्ह । भोलानाथ उपरसँ सकरौड़ी ढारने जाथिन्ह और झारखंडी चूर ओरने घट-घट करैत पिउने जाथि । कंठनलिका बन्द भेने दूनू आँखि उनटि गेलैन्ह और नाक द सकरौड़ी बहय लगलैन्ह । आब गर्द पड़ल -पानि लाउ, पानि लाउ । झारखंडीक आँखि पर छिटिऔन्ह ।

भोलानाथ एकाएक पानि लाबक हेतु जे घुमलाह से तलमला कऽ **पातिल** नेनहि मुकुन्दक पातपर खसलाह । आब सकरौड़ीक नदी मुकुन्दक पलथी तर दऽ बहय लगलैन्ह ।[175]

एहि तरहँ हिनक द्विरागमन उपन्यासमे सेहो भोजन-विन्यासक पारम्परिक ओ आधुनिक परिवेशक भव्य वर्णन भेल अछि ।

यात्रीजीक **नवतुरिया** उपन्यासमे भोजनकँ यत्र-तत्र स्थान भेटल अछि-

रामेश्वरी एखन वर आ कनिञा लए **तस्मइ** तइआर करइ छली ।

साधारण **धनसारसँ** फूटे माटिक **नवचुल्हिआपर पितड़िआ तसला** चढ़ल । दूटा, एकटा फट्ठी । बेश मद्धिम आँच । दूध **खलबल-खलबल** करइत, चाउर सिद्ध होइतहि ताहिमे । लगेमे रामेसरी बइसलि । एकटा ठेहुन खसल आ एकटा उठल । दहिना हाथमे **कइछु** । बामा हाथपर दाढ़ीकँ टेकने आँच दिश मने त्राटक लगओने रहथि ।[176]

एकटा प्रसंगमे ब्रह्मभोजीक स्थितिक वर्णन करैत कहल गेल अछि- माहे रातिएसँ पेट **सोन्हओने** रहए । मुखिआक ओतऽ **चूड़ा दही** खा कऽ जे ब्रह्मभोजी मैदानमे कूदल से मल्लिकक ओतऽ **सोहारी तरकारी** आ **मधुरक** परायण करइत बहरायल... बीच-बीचमे कतहु **चारि कओर सिद्ध** कतहु चारि कओर **असिद्ध**, कतहु फेर सिद्ध । ...अन्तत: ओ मल्लिकक दलानपर पड़ल-पड़ल चितपट होइत रहल ।[177]

उपेन्द्रनाथझा व्यासक दू पत्र उपन्यासमे मिथिलामे भोजन करबाकालक रीतिक

परिचय दैत कहल गेल अछि–

अहाँ त दसे दिनसँ कनिञाक हाथेँ **चाह**, **जलखइ** आनब आ भोजन करै काल बैसब अनिवार्य कय देने छलहुँ, आबक कतेको वर जे अपनाकेँ एडभान्स बुझैत छथि, आ कालेजमे पढ़ैत काल आधुनिक होटल सभमे कतेको दम्पत्तिकेँ, बन्धुबान्धवीकेँ ओहि तरहेँ खाइत देखैत छथिन्ह– सासुरमे प्रथमे यात्रामे नववधूकेँ कहैत छथीन्ह अपने सँ खाइले । आ ई सभ एहनो परिवारमे एहनो गाममे, जतए पिता-पुत्र एक आसनपर बैसि भोजन नहि करैत छथि, बिना **एकवट्टी** कयने दशो डेग अपैत वस्तु नहि आनल जाइछ, आ सभ केओ अंगा खोलि कए माथक जाड़ोक रातिमे त खाइते छथि, भोजन करैत काल एक दोसराकेँ **छूति** भए गेला सँ उठि जाइत छथि ।[178]

योगानन्दझाक **भलमानुस** उपन्यासमे विभिन्न स्थानपर भोज्य पदार्थक एवं भोजन प्रणालीक वर्णन भेल अछि । सभागाछीक वर्णनक क्रममे उपन्यासकार वैवाहिक परोजनमे भोजनलोलुपताक चित्रण करैत विभिन्न प्रकारक भोज्यपदार्थक वर्णन कयलनि अछि । जेना– पटनामे विद्यार्थीलोकनि अपन आनन्दित होयबाक विज्ञापन पिन्टूक पार्टीसँ दैत छथि तहिना गोटी लाल भेलापर उमेदवारलोकनि अपन घटक तथा मित्रमण्डलीकेँ **हलवाइक** दोकानपर लऽ जाय तृप्त कऽ दैत छथि । गरीब ब्राह्मणलोकनिक जिह्वाकेँ **पूरी-तरकारी**, **रसगुल्लाक** सुन्दर भोजन तथा **चाहपानसँ** तृप्त होयबाक सुवर्ण संयोग अकस्माते भेटैत छन्हि । **मकइक फुटहा**, **मड़ुआक रोटी**, **अल्हुआ** तथा **खेसारीक दालिसँ छौंकल** जीह धनिक समन्धिक तथा आतुर मुद्द-मुद्दालहक अनुकम्पासँ सभागाछी तथा कचहरियेमे जाय परमपद प्राप्त करैछ । ई नीक-निकुत खयलासँ हिनका ओतबे शान्ति तथा आनन्द होइत छन्हि जेना दुर्भिक्षक मारल बंगालीकेँ पाँच साँझक बाद भरिपेट भोजन भेटलापर होइत छलैक ।[179] तथापि सभागाछीमे कमसँ कम 50 रूपैया रोजाना खर्च छैक । हमरा लाथेँ कमसँ कम दस पन्द्रह गोटे एकर खर्चा खाय रहलैक अछि । हमरा डेरापर पूरी तरकारी, **गुलाबजामुन**, **मोतीचूरक लड्डू**, **आम-कटहर** तथा **घी-दहीकेँ** क्यो ने पुछैत अछि ।[180]

एहिना मिथिलामे जमाइक प्रति सासुरक लोक सभक भोजाग्रही प्रवृत्ति तथा जमाइक हेतु भोजन-विन्यासक पारम्परिक ओ सांस्कृतिक अंशकेँ उपन्यासकार नायक जगदीशक सासुरवासक क्रममे ओकर दिनचर्याक रूपमे प्रस्तुत करैत कहलनि अछि– माल साते मनुष राते । आ जगदीश करीब मास दिन भरि छलाह । सूति उठथि कि **दूध-मिश्री** तैयार रहन्हि, स्नान करथि की **पूरी-तरकारी**, **जलखैक** किछुए कालक बादसँ भोजनक हेतु आग्रहपर आग्रह होमए लगन्हि । खाली **भूखटा** लगबाक देरी रहन्हि । नहिओ भूख रहन्हि तैओ कौखन सासुक आग्रहसँ, कौखन पिसिया सासुक नेहओरासँ, तँ कौखन ललिताक बलजोरीसँ किछु ने किछु खाइये पड़न्हि ।[181]

परविदाइक रूपमे जमाइक हेतु दातव्य गरी, **छहओड़ा**, **दाख**, **किसमिस**, **पिस्ता**, दालचीनी (**दछिनी/अझौंची**) इत्यादि शुष्क फलक उल्लेख भेल अछि ।[182]

कनिञाक द्विरागमनक अवसरपर परिछनक बाद सभसँ पहिने कनिञाँकेँ **गुड़** खोआओल गेल जे सभ दिन मुँह मधुर रहतन्हि, तखन पानि पिआओल गेल जे मोन शीतल रहतन्हि– एहि वर्णन द्वारा पारम्परिक मैथिल भोजनविन्यासक विशिष्ट अंशकेँ चित्रित कयल गेल अछि ।[183]

उपन्यासकार नव-नौतार जमाइक सुभोजन व्यवस्थामे भिड़ल मैथिल परिवारक चित्र उपस्थापित करैत कहलनि अछि– दिन भरिमे चारि पाँच बेर कतेक तरहक वस्तु जलखइमे बनबथि, प्रत्येक संध्या **माछ** आ तेसरा दिनपर **छागर** मरय, सुपौलसँ दोसरे-तेसरे किसिम किसिम केर मधुर आबए आ **दूध दहीक** कोन पुछारी । यद्यपि निर्मला असकताहि रहथि तैओ जलखइक हेतु **हलुआ**, **सेब** इत्यादि बनएबामे आलस्य नहि होमय देथि ।[184]

चन्द्रनाथमिश्र अमरक **बिदागरी** उपन्यासमे विविध प्रसंगमे अनेकानेक भोजन-सामग्री ओ तकर विन्यासक वर्णन भेल अछि– चल मर्दे गोड़ी, आब तोड़ैत रह **तिलकोड़ा**, **बउड़**, तरुआ रे भुजुआ रे, ई लटपट्टी ओ रसदारे, बाटिएमे घीउ, बाटिएमे **दही-सकरौड़ी**, मोन उजबुजाइत रहतौक, कोन बाटीमे हाथ दिअऽ कोन बाटीमे नहि ।[185]

एहि मध्य बरियाती गेनिहार तथा हथधरी कैनिहारक भोजनक वर्णन भेल अछि आ ओहिमे खास कऽ आमक वर्णन विशिष्ट स्वरूपक अछि– पहिने तँ बरियाती गेनिहार लोक **डटबैत** गेलाह **बड़-बड़ी**, **दही सकरौड़ी**, **अफरि-अफरि** खाइत गेलाह । सबलोक **अक सक** ।

पछाति हथधरी कयनिहार सात गोटे पहुँचैत गेलथिन । हुनका लोकनिक विलक्षणता हुनकेमे छलनि । यदि प्रणम्य-देवता पढ़ने होइ तँ भीमेन्द्र-गजेन्द्रक कल्पना कऽ लिअऽ किन्तु ज्योतिषीजी आमे जुटौने छलाह तँ रंग-विरंगक । एक प्रकारक आम दूसँ तेसर ककरो नहि ससरि सकलनि । **जर्दा/जर्दालु**, **बम्बइ**, **मालदह**, **गुलाबखास**, **लक्ष्मीश्वर भोग**, **गोपाल भोग** ई सब त **कलमी आम** सब ठाम उपलब्ध होइत छैक, किन्तु **सरही आम** रंग-विरंगक जुटौने छलाह, जेना– **केसियाकेरबी**, **बाँसतरक केरबी**, **मुलुकबीत किसरीकतल**, **धिनिमा पाछार**, **विष्णुभोग** ।

सातो गोटे जान अरोपि कऽ भोजन करैत गेलाह । एकटा अगत्ती छौंड़ा ज्योतिषीजीक नजरि बचा कऽ एक गोटेकेँ एकटा आम दऽ देलकनि सुपारीसँ कने पैघ । बड़का नरहमे ई आम होइत छैनि, नाम एकर अपूर्व छैक, सुगन्धिसँ तँ ई मातल रहैत अछि । एकटा आम घरक कोनो कोनमे धऽ दिऔक भरि घर आमोद पसरल रहत, किन्तु जे ई आम मुँह लगौतनि तनिक दुर्दशा भेले छनि । चिन्हार-जनार लोक तँ ई आम बड़

सावधान सँ खाइत अछि । जे एकरा मुँहठी काटि कऽ नीक जकाँ, उपरका रस नहि गारि दैक तँ चोभा मारैत लगैत छैक **सुरसुरी** आ खोंखैत-खोंखैत लेर-पोटा चलऽ लगैत छैक तँ ओकर नाम छैक- ओह, एहि आमक नाम नहिजे सुनी तँ कोन क्षति ? एहन अश्लील नाम नहि बूझी सैह नीक । मुदा आब अहाँक उत्सुकता यदि बढ़ले जाइत हो तँ सुनि लिअऽ परन्तु पछाति हमर दोष नहि दी । नाम थिकैक एकर "**पहुनपदौना**" । से अन्तमे आग्रहपूर्वक ओहि सातमे एकटा पाहुन जे कनेक बटुकानि छलथिन, तनिका धरा देलकनि । खेबाक इच्छा तँ नहि छलनि, कारण **कचौड़ी, तरकारी, पँचमेर, मधुर, केरा, कटहर, दही, सकरौड़ी** आ ताहिपरसँ ओतेक **आम** खैने छलाह । ओना नहि ससरनि तँ **अँचारक** रेती दऽदऽ जीहक धारकेँ तेज कऽ खैने छलाह किन्तु जखन ई आम पातमे पड़लनि तँ एकर सुगन्धि प्राणमे समा गेलनि । एतनीटा काया देखि साहस कयलनि आ मारलनि **चोभा** । **चोभा** लगबैत जे हुनक दुर्दशा भेल से देखितहि बनय, कहैत नहि बनय । ई आम परसनिहार वारिक तँ आम परसि घसकि देलक, मुदा ओ बेचारे आम खेबासँ ओहि दिन सपते खैने हेताह ।[186]

ललितक **पृथ्वीपुत्र** उपन्यासमे निम्नवर्गीय समाजक भोजन-विन्यासक वर्णन अत्यन्त सहज देखि पड़ैछ-

सोझाँमे **पनपियाइक** चङेरी, बेनी राखि देलकइ । **मकइक सोन्हगर** मोट **रोटी**, चारि **चक्का** **काँच पेयाजु**, एक **फाँक आमक अँचार** आ कनेक नोन । हरियर हरियर मेरिचाइ नइ सह्य होइ स्वरूपकेँ । लोटाक पानिसँ हाथ-मुँह धो चङेरी आगाँ कऽ लेलक । रोटीक एकटा पइघ टुकड़ी तोड़ि **अँचारक मसाला मखा** मुँहमे धएलक । एक **फाँक पियाजु** नोन लगा दाँत तर दबलक । **झाँससँ** मोन भरि गेलइक । आँखि नोरसँ आ मुँह सेपसँ सिक्त भेलइ । बड़ी काल धरि **अँचार** ओ **पियाजुक झाँसमे** रोटी चिबबइत रहल । मुहक कओर घोंटि पानि पीबए लागल ।[187]

रामदेवझाक पत्रात्मक शैलीक प्रयोगधर्मी उपन्यास अंगरेजीफूलक चिट्ठीमे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रचुर प्रयोग भेल अछि यथा- भानस-भात, तीमन-तरुआ, मधुर-पेड़ा, साग-भात, कऽन-खुद्दी, घी-तेल, भोजन-छाजन, खोआ-मलिहा, पातरि-नवेद, तस्मै, दालि-भात, मड़ुआ, टिकुला, बदाम, खेसाड़ी, बथुआक साग, पेयाजु-लहसुन, घोरजावड़, पोरोक साग, बूटक साग, मुर्गा-मुर्गी, गायक दूध, सुठौरा, आद-गुड़, चाह, सागक बिड़िया, सथोरि, पू, सुपारी, औंटल दूध, आम, सड़ल तरकारी, तेल-मसल्ला, उसीनि-पुसीनि, दालि, माँड़, अदहन, चाउर, कोठी, फटकिया, चूल्हि, पटुआ साग, जाफर, मुनिगा, अरिकोंच, अरबी, लड्डू आदि । एकर किछु प्रयोग देखल जा सकैत अछि-

ओ खाइते-खाइते बजलाह- पूजा-पातड़िक फल जकरा जे भेटैत होउक मुदा

हमरा तँ टटके भेटि गेल ।' हम अकचकाइते पुछलियनि- से की ?' ओ बिहुँसैत कहलनि- एहन **सुअदगर तस्मैक खलखै** की ओना कहियो भेटैत ?' हम कहलियनि- जोड़निहार तँ अहीँ छी, जोड़ि कऽ देब तँ हमरा **रान्हि** कऽ देबामे की लागत ? दालि-भातसँ एहिमे बेसी मेहनति थोड़बे छै ।' (पत्र सं.-11)

हय, अंगरेजीफूल जकरा संग... आमक गाछीमे **महुआ** आ **टिकुला** बिछलहुँ, खेतसँ **बदाम, खेसाड़ी** आ **बथुआक साग** तोड़ि अनलहुँ... तकरा कोना बिसरि जयबैक ?' (पत्र सं.- 16)

हय, साग खयना कतेक दिन भऽ गेल । जुआयल **पोड़ोक साग** कनेक **अम्मत** रहैत छैक तँ कतेक नीक लगैत छैक ? आइ-काल्हि तँ देशमे खूब **बदाम** आ **खेसाड़ीक साग** होइत होयतैक । (पत्र सं.- 16)

हय, लगने रहितह तँ कतेक रास वस्तु बना कऽ **सथोरिमे** दितियह । (पत्र सं-16)

हय, एहन तँ अपना सभक ओहिठाम खूब **पटुआक साग** भेटैत होयतैक । (पत्र सं.- 36)

हय, तोँ **बरहमसिया मुनिगाक** तीमन खयलह से पढ़ि हमरो मुँहमे पानि आबि गेल । तोरा **पटुआक साग** रुचैत नहि छह आ हमरा पटनामे भेटैत नहि अछि । एखन **अरिकोंचक** समय छैक । (पत्र सं.- 40)[188]

रामदेवझाक पत्रात्मक शैलीमे दोसर उपन्यास **रामजोड़ी कागतक पाँखिपरमे** भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अनेकशः प्रयोग देखल जाइछ । उपन्यासक विभिन्न पत्र सभमे कथानकक विभिन्न परिस्थिति ओ परिवेशक अनुरूप **चिनियाँ बदाम, खुद्दी, गोबरौर, गोइठा, चिनमार, थारी-बासन, चूल्हि, स्टोव, सेवइ, हलुआ, प्लेट, साँच-पकमान, केराक घौड़, चाह, सामाक ऐँठ चूड़ा-दही, दाख-मनक्का** आदि कतोक भोजन सम्बन्धी शब्दावली देखल जाइत अछि ।[189]

नाटकमे वर्णित भोजन विन्यास-

मैथिली नाट्यसाहित्यमे नवयुगक सूत्रपात कयनिहार कविवर जीवनझाक **नर्मदासागर** सट्टकमे मिथिलाक घटकक भोजनक चित्रण भेल अछि । घटक महाराज प्रायः बूढ़वर तथा अबोध कन्याक बीच विवाह सम्पन्न करयबाक चक्रमे ओझरायल रहबाक कारणेँ अस्त व्यस्त रहैत छथि । अतएव चैनसँ भोजन पर्य्यन्त करबाक हुनका पलखति नहि भेटि पबैत छनि । **सुड़ायुक्त चूड़ा** । राब दहीक संग भेटि गेलनि तँ कोन कम भेलनि ! चूड़ाकेँ मलि, सह-सह करैत सूड़ाक परबाहि कयने बिना राब दहीक संग गट-गट गीड़ि लैत छथि ।

झट-झट गट-गट घटक गिड़ै छथि राव दही संग चूड़ा ।
दुइ एक बेरि पानि दै मलि मलि कात पसौलन्हि गूड़ा ।
घड़िएक बिछलन्हि पुनि अगुतैला सह सह करइछ सूड़ा ।[190]

एहि सट्टकमे विदूषकक भोजनक आतुरताक सेहो अत्यन्त हास्यपरक दृश्यांकन भेल अछि-

सूत्रधार- हौ शिशिर ! यावत् ओ सभ अबैए ता एकटा गीत मधुर स्वरैं गावह ।

विदूषक- एहीलय हम कहैत रहै छी जे लड्डू देल करू । अम्मत दही, खा कऽ मधुर स्वरैं हम कोना गाउ ?

सूत्रधार-आब तोहरहि अधिक लड्डू देबहु ।[191]

हिनक सामवती पुनर्जन्म नाटकमे अनेक ठाम भोजन सामग्री सबहिक उल्लेख प्रसंगवशात् भेल अछि ।

कलियुगक प्रवेश गीतमे लहसुनक उल्लेख भेल अछि ।[192]

उद्यानक वर्णनमे फलादिक द्वारा ओकर आतिथ्यक उल्लेख भेल अछि । [193]

विदूषक वसन्तकक भोजनप्रियताक उल्लेख ओकर उक्ति जे लड्डू सपथ खाऽ क कहै छी[194] द्वारा उद्घाटित कयल गेल अछि । एहि नाटकमे विवाहक अवसरपर मिथिलाक परिपाटीक अनुरूप चुमाओनक दही पौरबाक उल्लेख एक गोट महेशवाणीमे भेल अछि ।[195]

चपलाक एक उक्तिमे पेटूक प्रति आक्रोशक भाव प्रदर्शित भेल अछि- चपला-(आबि कऽ) कतऽ गेल ? एकर कहियो ने पेट भरै छैक ।

खन-खन फाँकथ चूड़ा-भाड़ । दाँत निकोसले मड़वा ठाढ़ ।[196]

अपर उक्तिमे महुअकक विधमे खीर खोआओल जयबाक प्रसंगकेँ अछि ।[197]

जीवनाथझाक वीरनरेन्द्र नाटकमे विदूषक भोजन प्रियताक अत्यन्त सुन्दर चित्र उरेहल गेल अछि ।[198]

एही नाटकमे एकठाम भोज खयला उतर मंगलाक अतितृप्ति एहि उक्तिक माध्यममे अभिव्यक्त कयल गेल अछि– ऍंह मालिकक ओहि ठाम बड़का भोज छलैक । खूम कचरमकूट भेलै । तते ने खेलिऐ जे अक्क सक्क करै छियै । एक कहतरा माछ हमरा पत्तापर दऽ देलकै । एह खूम जमलै ।[199]

मुदा मैथिली साहित्यमे जाहि नाटकक शीर्षके भोज्य पदार्थपर राखल गेल अछि, से थिक चीनीक लड्डू । ईशनाथझा प्रणीत एहि नाटकक वस्तु-विन्यासमे चीनीक लड्डूक महत्त्वपूर्ण स्थान छैक । देयादकेँ समूल नष्ट करबाक हेतु पित्ती द्वारा भातिजकेँ चीनीक लड्डूमे जहर मिलाय देबाक प्रयासक कथा तथा एहि क्रममे अन्यो पात्रक हत्याक कथा अछि ।[200]

नाटकक कथोपकथनमे विभिन्न प्रकारक मिठाइक नामावली तथा चीनीक लड्डू बनयबाक प्रक्रियाक वर्णन भेल अछि ।[201]

मैथिल परम्पराक अनुरूप एहिमे अतिथि-सत्कारक अत्यन्त सहज स्वरूप एहि कथोपकथनमे दृष्टिगोचर होइछ ।[202]

अतिथिक हेतु चटपट भोजनक ओरिआओन, तथा भोजन पूर्व टाओँ-पीढ़िक एवं आग्रहक संग अतिथिकेँ भोजन करयबाक विशिष्ट प्रसंग अछि ।[203]

एतावता एहि नाटकमे चरमविन्दु (क्लाइमेक्स)क सर्जनामे विष मिश्रित चीनीक लड्डूक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि जकर उपयोग विधिक विडम्बनासँ एही अवसरपर भऽ जाइछ ।

मणिपद्मजीक तेसर कनियाँ नाटकक एक दृश्यमे दरोगाक हेतु जुटाओल गेल विविध प्रकारक भोज्य पदार्थक गणना अछि । एहि भोजन सामग्रीक शब्दावलीसँ मैथिल रुचिपर आधुनिक प्रभावक चित्र प्रस्तुत भेल अछि जे निम्न कथोपकथनमे देखल जा सकैछ-

प्रिन्स-मात्र तीस बतीस कोर्सक भोजन प्रस्तुत करबौल अछि । तैयो मोनमे शंका अछि जे अहाँ की पसन्द करब, की नहि । औ अहाँ सन भोगेन्द्र क्यो-क्यो होइत अछि । हमरा खबरि अछि किने !

दरोगा-कहियौ ने, मोन पिजौल रहतैक ।

प्रिन्स-मुर्गा-मसल्ला । तखन डिमकढ़ी । फेर नरगिसी कबाब, रोगन जूस, कोफता, कीमा-कोरमा । हे लिअ, रोहु माछक कटलेट आ फ्रायड चेचरा माछ ।

उड़न बूड़न आ छरपन साइडमे भेल ।

दरोगा- ई की कहल, उड़न, बुड़न आ छरपन ?

प्रिन्स- उड़न भेल फाउल, बूड़न फिस आ छरपन चौटंगा ।

दरोगा- वाह-वाह तखन आगू ?

प्रिन्स- तखन मुगलाइ पराठा, बिरयानी पोलाव, किसमिसी चौलाव । हलुआक

तहत, **बादामक हलुआ**, **गजराक हलुआ**, अंडाक जर्दी हलुआ आ चारिम भेल कतोक मेवा जात कबके मिला कऽ **फिरौनी हलुआ** । वाजिद अलीशाहकेँ ई हलुआ बड़ पसिन्न छलनि । तखन खीर-तीर आ मिठाइ सब कैक किसिमक छैक ।[204]

छींक प्रहसनमे क्यो पुछै नहि क्यो पाछु लागल जाय विधिसँ कृपाकर द्वारा ज्योतिषी कुलानन्द पाठकक ओहि ग्राम जाय पहुनाइ करबाक अत्यन्त ओ मनोरंजक दृश्य अछि ।[205]

साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत रामदेवझाक नाट्यसंग्रह **पसिझैत पाथरमे** भोज्य पदार्थ सभक उल्लेख भेल अछि । संग्रहक शीर्ष नाटक **पसिझैत पाथरमे चाह**, **पानि**, **परोठा-भुजिया**, **भात-दालि-तरकारी**, **भानस**, **मधुर**, **टिफीनवला** डिब्बा आदिक प्रयोग भेटैत अछि ।[206]

एहि संग्रहक अन्यो एकांकी सभमे खान-पानक वर्णन अछि । जेना **रहऽ दियौ गंगाकेँ** निर्मल शीर्षक एकांकीक निम्न कथोपकथन देखल जा सकैछ–

सदानन्द-होउ, आइ **पीबि** लिअऽ । अए ! **दू कप चाह** ओ दूटा **बिस्कुट** ला ।

मौन : **चाहक कप** रखबाक वनखनाहटि अरे पहिने **पानि** ला दू **ग्लास** ।[207]

गोविन्दझाक विभिन्न नाट्य रचनामे भोज्य पदार्थक वर्णन भेटैत अछि । हिनक **बसात** नाटकक तेसर अंकक दोसर दृश्यक एकगोट गीतमे कृषक महिलालोकनिक माध्यमे भोज्य पदार्थ जुटयबाक क्रममे कहल गेल अछि–

भूखल पड़ल छहु तोहर सजनमा
बाँटह-बाँटह दालि भात
सखि हे, जागह, भेल प्रात ।।[208]

हिनक राजा **शिवसिंह** नाटकमे विदूषकक कथनक माध्यमे भोजक सरंजामक अतिरंजित वर्णनमे अनेक प्रकारक मिष्ठान्नक उल्लेख भेटैत अछि ।[209]

भाग्यनारायणझाक **मनोरथ** नाटकमे दुइ गोट दृश्यमे सामान्य मैथिल परिवारक भोजन विन्यासक वर्णन भेल अछि जे पारम्परिके स्वरूपक अछि । पहिल अंकक पहिल दृश्यमे एकटा गरीब परिवारक प्रधान व्यक्तिक भोजनक विन्यासकेँ कथोपकथन द्वारा स्फुट कयल गेल अछि । मैथिल भोजन विन्यासक ठाओँ, पीढ़ी तथा अभावग्रस्त परिवारक छुच्छ-रुक्ख भोजन सामग्रीक वर्णनक क्रममे एहिमे विभिन्न खाद्य मशाला, जारनि आदिक चर्च दृष्टिगोचर होइछ । संगहि भोजनक स्वाद ओ रुचिपूर्वक भोजन ग्रहणक शब्दावली सेहो परिगृहीत अछि ।[210]

दोसर अंकक दोसर दृश्यमे सेहो भोजन विन्यासक **बेन** तथा **भार** शब्द द्वारा भोज्य सामग्रीक तथा पारिवारिक जीवनमे धिया-पुताक हेतु नीक भोज्य पदार्थ प्रदान कऽ स्नेह दर्शयबाक उक्ति अछि ।[211]

विन्देश्वरमण्डलक **क्षमादान** नाटकक एक गोट दृश्यमे ग्राम्य जीवनक घसवाह आ घसवाहिनी युवक-युवतीक निश्छल प्रेम सम्बन्धक दृश्यांकन भेल अछि । यद्यपि एहि मे मुरही-कचरीक आदान-प्रदान द्वारा पारस्परिक प्रेमकेँ स्फुट कयल गेल अछि आ प्रेमी जीवनमे भोजनक आदान-प्रदान द्वारा आपकताक सृष्टि भेल अछि ।[212]

प्रभुनारायणझाप्रदीपक **सोहाग** नाटकमे संस्कार गीत तथा आनो स्थलपर मिथिलाक व्यवहारपक्षीय भोजन विन्यासक खूब नीक चित्र भेटैत अछि ।[213] मधुश्रावणीक अवसरक एकगोट गीतमे मिथिलामे भार-दोरक प्रथाक उल्लेख भेल अछि–

लटहा चूड़ा छै भी कूड़ा पाकल केरा सात चङेरा ।
छाल्ही वला दही तऽ करेजा कटैए ।
दुन्नी दाइ के वर एलइ टेमी दागइ लए ।।[214]

जराउरक एक गोट गीतमे ओहि अवसरपर कनिआक **सासुरसँ आयल विविध** प्रकारक पदार्थक वर्णन भेल अछि । एहि क्रममे भोज्य पदार्थक रूपमे **मुरही**, **चुरलाइ**, **तिलचौर** तथा विभिन्न प्रकारक सागक **बिरियाक** भारक उल्लेख भेल अछि ।[215]

एकटा कथोपकथनमे कनिआक मुँह देखनाक तुलना चौठचन्द्र पावनिक चन्द्रपूजनसँ कयल गेल अछि–

शंकर- देखबैक से मङनीजे । मुह देखनो लागत कि ने यौ !

उपेन्द्र- औजी चौठक चानकेँ देखक लेल तँ लोक पाँच दिन पहिनहि सँ **दहीक छाँछ पौड़ऽ** लगैत अछि ।[216]

मैथिलीक एकांकी नाट्य साहित्यमे सेहो भोजन विन्यासक अनेक ठाम चित्रण भेल अछि । एहि दृष्टिजे तन्त्रनाथझाक **उपनयनाक भोज** तथा **तमघैल**, चन्द्रनाथमिश्र अमरक **ब्रह्मस्थान**, गोविन्दझाक **मिथिलाक प्रतिनिधि**, गंगेश गुंजनक आइ भोर तथा महेन्द्र मलंगियाक **बिरजू बिलटू आ बाबू** आदि एकांकी उल्लेख अछि । एहि एकांकी सभमे भोजन लोलुपता, मिथिलाक सामाजिक जीवनमे श्राद्धक अवसरपर भोजन-विन्यासक हेतु संघर्ष ओ असहायावस्था, मिथिलाक आतिथ्य, प्रेमी जीवनमे भोजनक स्थान, मध्यवित्तीय परिवारक आश्रमी वस्तुजातमे भोज्य पदार्थक स्थान, बुभुक्षाक कारणेँ मानवीयताक विकृति आदि प्रसंगकेँ उद्घाटित करबाक हेतु भोजनसँ सम्बद्ध विभिन्न कथोपकथनक निवेश देखि पड़ैछ ।

तन्त्रनाथझाक **उपनयनाक भोज** एकांकीमे तँ मुख्य कथावस्तुए भोजन प्रवृत्तिसँ सम्बद्ध देखाओल गेल अछि ।[217]

एही एकांकीमे एकगोट अन्य स्थलपर खाधुर व्यक्तिक परिचय निम्नलिखित कथेपकथनमे भेटैत अछि-

सएतान कहाँके । बुद्धिक ठीका इएह लेलैन्हि अछि ? ओ खएताह दू छिम्मड़ि आ ई उठा अनलैन्हि हत्थाभरि, दूरि करबालए, गधकिच्चनि करबालय । अपना लगैत की छनि ?

नहि-नहि, दूरि नहि जायत । अनलक बेचारा तँ हम खाय लैत छी । (केरा सोहि खाय लगैत छथि, केरा खाय हाथ मुँह पखारि स्थिर भऽ बैसैत छथि)।[218]

हिनक अन्य एकांकी **तमघैलमे** धनाभावमे रोगग्रस्त वृद्ध श्रीकान्तझाक मृत्युक पश्चात् भोजक हेतु जिज्ञासाकर्ता लोकनिक वार्तालापमे श्राद्ध-संस्कारक अवसरपर भोजमे भोज्य सामग्री सभक उल्लेख भेल अछि ।[219]

चन्द्रनाथमिश्रअमरक **ब्रह्मस्थान** एकांकीमे निम्नवर्गीय बोनिहारक मानसिक संघर्षक अत्यन्त उत्कृष्ट विवरण भेटैत अछि । पचकौड़ी नामक एहि बोनिहारक समस्या छैक बीमार नेनाक हेतु पथ्य, अपन ओ पत्नीकेँ जीवित रहबाक हेतु भोजनक व्यवस्था मुदा कमाइसँ प्राप्त धनक अल्पताक कारणेँ, अपन अनिवार्य आवश्यकताक पूर्तिमे असमर्थ पचकौड़ीक मानसिक संघर्ष चरम बिन्दु धरि पहुँचल दृश्यांकित भेल अछि आ अन्तत: अपना आवश्यकता सभक बीच समन्वय स्थापित करऽ पड़ैत छैक । एकांकीकार पचकौड़ीक एहि कथन द्वारा निम्नवित्तीय वर्गक आवश्यकता ओ अर्थक बीच संघर्षक विवरण उपस्थित कयलनि अछि-

पचकौड़ी- (स्वगत)- अढ़ाय टाका भरि दिनुक बोनि भेल । आठ आनाक सतुआ नोन लऽकऽ अजुका दिन कटली । एक गोट रुपैया काटि कऽ राखि लेलक ओ काल्हिखन फेनो काज कऽ दिय गऽ । बाँचल एक गो रुपैया । (गंजीकेँ कान्हपरसँ उतारि कऽ जेबीमेसँ टकही नोट बाहर कऽ ओकरा देखैत अछि) अइ एकगो रुपैयासँ समतोला, मेवो, बेदाना, गुलकोच आ घरक खर्ची सब किच्छो चाही । की लिअऽ की नइ ? (किछु काल सोचबाक नाट्य करैत अछि) दू-दू आने समतोला, दू गो समतोला लऽ ली तँ एकगो अखनी खाइत आ एकगो काल्हिखिन, बाँचल बारह आना ढेउआ । अइसँ अपना सबलै खेसारी लऽलू की मखना लै गुलकोच ? मखनाकेँ अठारह दिन भऽ गेलै, आइ गुलकोचे कीनि लै छी । (किछु दूर आगु बढ़ैत अछि, फेर ठमकि जाइत अछि) मुदा मखनाक माइओकेँ तँ आइ हरीबाबूक ओइठिन जाइक पलखति नहिएँ भेटल हेतै । ओ बेचारी बाट तकैत हैत । बिना कुच्छो खयने-पीने ओहो दिन राति मखनाक सेवा कऽ

सकतै ? अपनो जँ कुच्छो खायब नइ तँ काल्हिखिन फेनो चुनक बोरा केना उठा सकब ? नइ नइ, आइ मखना लै दूगो समतोला लऽलै छियै । काल्हिखिनसँ साढ़े तीन गो रुपैया भेटत बरु काल्हिए मखना लै गुलकोच आ बेदाना दूनू नेने जयबै ।[220]

गोविन्दझाक **मिथिलाक प्रतिनिधि** एकांकीमे पी.एन. ठाकुर नामक एकगोट नवयुवक विद्वानक अपन भोजन-विन्यासक प्रति हीनमन्यताक भावनाक चित्रण करैत बाजारू बस्तुसँ पाहुनकेँ स्वागत करबाक आधुनिकताक रंग तथा हुनक पत्नी तारिणी देवीक अपन घरैया भोजन द्वारा पाहुनक स्वागतक अत्यन्त सुष्ठु चित्र एहि कथोपकथनमे भेटैत अछि-

ठाकुर- (कने उत्तेजित होइत) ओना नहि बुझब तँ सुनिए लिअऽ । जे पाहुन आबि रहल छथि से अहाँक भाए-भतिजा जकाँ भलमानुस ब्राह्मण नहि थिकाह जे एक तामा धनहा चूड़ा कि एक सोड़हि मोट-मोट रोटी ओलारि देने प्रसन्न भऽ जयताह । देहाती वस्तु हुनका-नहि पसिन्द हैतनि । डीलक्स होटलमे आर्डर देने अएलिऐक अछि, सभवस्तु आबि जैत ।[221]

परन्तु तारिणी तँ दोसरे रीतिएँ अतिथिक स्वागत कऽ देलथिन-

तारिणी- एकटा हम हाथीक आकारक कोठी पाड़ने छी । एहीमे एहन कल लगाय देने छिऐक जे नाड़ड़िकेँ घिचलापर मुँह बाटे वस्तु बहराए लगैत छैक । ओही हाथीसँ चूड़ा बहार कय जलखइ करओलिअनि अछि ।

राय-मुँहसँ बहार भेल चूड़ा आ पेटसँ बहार भेल दही । की यान्त्रिक चमत्कार । की विलक्षण मूर्त्तिकला । अपनहि देखनहि होएब ।

ठाकुर- (लज्जित होइत) नहि ।

तारिणी- हमरा बड़ दु:ख भेल जे अपनेकेँ छुच्छ चूड़ा फँकावय पड़ल । दहिओ नाम मात्रे लए । अपनेक अएबाक हमरा खबरि नहि छल, तँ किछु ओरिआओन नहि कए सकलहुँ ।

राय- भाग्य हमर जे अपने आन वस्तु नहि बनाओल । हमरा तँ चूड़ा सभसँ अधिक पसिन्द अछि, जा मिथिलामे छलहुँ ता नित्य एकर सेवक छलहुँ ।[222]

सुधांशु शेखर चौधरीक **बेलक मारल** एकाँकीमे फुटपाथक भिखारिक जीवनक भोजन आ स्नेह सम्बन्धक विज्ञापन एक कथोपकथनमे भेल अछि ।[223]

पुनश्च भोजनक ग्रास द्वारा प्रेम प्रदर्शन, तथा उतम एवं अघलाह भोजनक प्रति मानवीय संवेदनाकेँ दोसर कथोपकथनमे देखाओल गेल अछि ।[224]

गंगेश गुंजनक आइ भोर एकांकीमे मध्यवर्गीय परिवारक आश्रमी फिरिस्तकेँ आधुनिक कविताक माध्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

गहूम पन्द्रह किलो, चाउर डेढ़ किलो हरदि पचास ग्राम (नहि एकरा एखन काटि दियौक), नोन एक किलो मसल्ला सभ किछु मिला क अढ़ाय सय ग्राम । नै नै एकरा एखन काटिए दिऐक । आ तेल दू कनमा बस ।[225]

एही तरहेँ आधुनिक नाट्य साहित्यक विविध प्रसंगमे मिथिलाक भोजन-विन्यासक पुष्कल वर्णन एकर कथा वस्तु सभमे आयल अछि । आधुनिक कालक प्रारम्भिक नाटक सभमे विदूषकक द्वारा हास्यक सृष्टिक हेतु खास कऽ ओकर भोजनक आतुरता ओ अपरिमिताहारक क्रममे विभिन्न प्रकारक भोज्य सामग्रीकेँ साहित्यिक आधार भेंटैत रहलैक अछि । मैथिली नाटकमे मैथिल भोजन विन्यासक सहज चित्र सभ प्रस्तुत होइत रहल अछि । एहि माध्यमे मैथिलीक भोजन शब्दावली नाट्य साहित्यमे प्रयुक्त होइत रहल अछि ।

निबन्धमे वर्णित भोजन-विन्यास

आधुनिक मैथिलीक निबन्ध साहित्यमे भोजन-विन्यासक यत्र-तत्र प्रसंगवशात् वर्णन भेल अछि मुदा ओकरा सुनियोजित नहि कहल जा सकैछ । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे घर-आङन, स्त्रीगणसमाज आदि स्तम्भक अन्तर्गत जखन-तखन विभिन्न प्रकारक खाद्यवस्तुकेँ बनयबाक विधि अवश्य देखि पड़ैछ मुदा ओहो अनियमित रूपेँ तथापि जे दू चारि गोट बानगीपरक निबन्ध भोजन विन्यासक वर्णनक दृष्टिये प्रमुख अछि आ सोदेश्य बुझना जाइछ तकर उल्लेख समीचीन होयत ।

प्रसिद्ध निबन्धकार म.म. मुरलीधरझाक पशुबुद्धि निबन्धमे मानव ओ पशुक बुद्धिमे अन्तरकेँ भोजन विन्यासक दृष्टान्त दऽ स्पष्ट कयल गेल अछि ।[226]

जाहि निबन्धकारक विभिन्न निबन्धमे मैथिल भोजन-विन्यासक उल्लेख देखि पड़ैछ से थिकाह म.म. उमेशमिश्र । हिनक निबन्ध अगहन पूसमे दूनू मासक मैथिल भोज्य पदार्थक विस्तृत विवरण भेंटैत अछि । निबन्धकार मुरही, लाइ, तरकारी, साग, माछ, चूड़ा, दही, चिन्नी, चटनी, बगिया आदिक उल्लेख करैत अगहनक सुखद मासक वर्णन कयलनि अछि–

गामक कोन कथा, खेते-खेत, घरे-घर, जाएकेँ मुरही ओ लाइ बेचए लगैछ । कोइरिनि सभ सजमनि, डाकी-डाकी केराओ एवं सरिसोक साग लए अँगने अँगने मेलि फिरैछ । भाटा-मूर, कुम्हर, बथुआ, साग ओ पलाकी साग कथूक कमी नहि । एहन सुखभावन ओ सोहाओन अगहनमे लोकसभ धानक बदलामे पर्याप्त ओ यथेष्ट वस्तु किनैत

अछि ओ खाइत अछि । आन कोनो मासमे ने एतेक तरकारिए भेटनिहार ने किननिहारे, ने एतेक बेचे भेटनिहार । एहि मासमे नदी, नद, खत्ता, पोखरि सभ ठाम पर्याप्त माछ भेटैछ । मलाह सभ एहि मासमे उठि बैसैछ । सभक घरमे पर्याप्त बेच रहैछ तेँ माछक खण्डकेँ मुहमे दैत स्वर्गक सुख अनुभव करबामे केओ पछुआइत नहि छथि । जम्बीरनीरपरिपूरित माछक खण्ड माछक स्वादकेँ जननिहार ककर मनकेँ चंचल नहि बना दैछ । आर कोन कथा मालो-जालकेँ एहि मासमे पर्याप्त भोजन भेटैछ । ऋतुक प्रसादात् ने ककरो अरुचि, ने ककरो अजीर्ण होइछ । तेँ सभ जीवजन्तु परम सन्तुष्ट भए आनन्दमग्न रहैछ ।'

'अपना खेतक नवका अन्नक सुस्वादु रसक आस्वादन करैक हेतु धानकेँ उसिनि रौदमे सुखाए धानसँ चाउर बहार करबामे तत्पर ढेकीक बिरमि बिरमि चोटक अनाहत ध्वनि पछिला पहर रातिएँसँ कानमे आबए लगैछ । उसिना चाउर बड़ पथ्य ओ रुचिकर भोजन, ताहूमे माछक झोरक संग । अतएव की धनिक ओ की दरिद्र, सभक ओहि ठाम उसिना चाउरक संग्रह कएले जाइत अछि । पुसोठक हेतु, नबका चाउरक बगिया बनाए-बनाए घरे-घर नवजात शिशुक गाल ओ आन अंग सभ सेदि हर्षे उत्सव मनाओल जाइछ । नव अन्नकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु कतहु-कतहु कोठी, मोड़ा आदि माटिक कुसूल बनएबामे नारीलोकनि पूर्ण तत्परतासँ लागलि अपनाकेँ व्युत्पन्नि देखाए रहलि छथि । कतहु पुरुषलोकनि पैघ वा छोट ढक ओ बखारिए बनएबामे तत्पर रहै छथि ।'

'जिह्वालोलुप धनिक ओ वात्सल्य प्रेमसँ भरल माए अपन प्राणप्रिय सन्ततिक हेतु हरिअरे सीसकेँ यत्नपूर्वक अनबाए ओहिसँ सूगा-पाँखि सन हरिअर चूड़ा कूटि मिथिलाक प्रिय ओ प्रसिद्ध भोजन दही-चूड़ाक रसास्वादन करैत जाइत छथि । वास्तवमे जाड़ मासक दही ओ ताहूमे महिसिक, विशेष कए पूबभरक चओरक सुस्वादु खढ़केँ चरि जे दूध महिसि दैछ तकर दही तँ मुक्कीक चोटसँ नहि घसैछ । ताहि दहीक संग सूगा-पाँखि-सन हरिअर तमहा चूड़ाक भोजन तँ स्वर्गहुमे देवतहु लोकनिकाँ दुर्लभ । तेँ ने कहल गेल अछि–

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं विच्छलानि च दधीनि
अल्पव्ययेन सुन्दरि ग्राम्यजनो मिष्टामश्नाति ॥

आर की कहल जाए । नवका कूर्थीक दालि, भाँटा-अदौड़ीक तरकारी धात्रीक चटनी, छल्हिगर दहीक संग भोजन तँ इन्द्रहुकाँ दुर्लभ । इएह सभ देखि देहाती सभ कहैछ- इन्द्रस्य कौंहि-कौंहि वरुणस्य का कथा ।[227]

मिथिलाक आम ओ तहिसँ बनल विविध भोज्य वर्णन करैत निबन्धकार

कहलनि अछि- एहि ठामक आम संसारमे प्रसिद्ध अछि । सैकड़ो प्रकारक विभिन्न रसास्वादन देनिहार सरही तथा **कलमी** आम प्रचुर मात्रामे प्रतिवर्ष प्राप्त होइछ । एहीसँ **चटनी, अचार, कुच्चा, झक्का, आमिल, अमौट** आदि वर्षोपयोग्य वस्तु बनाय गृहस्थ सुखेँ दिन कटैत छथि । **आमक गाछीक** ओ **कलम** सभक विन्यास देखबाक योग्य अछि ।[228]

हिनक **ग्रीष्मवर्णन** शीर्षक निबन्धमे सेहो **आम** ओ ओहिसँ बनल विभिन्न भोज्यक अत्यन्त मनोरम वर्णन भेल अछि -

'मिथिला देश आमक देश थिक । सैकड़ो प्रकारक **सरही** ओ अनेक प्रकारक **कलमी आम** एहि देशमे प्रचुर होइछ । प्रत्येक गाममे दू सय चारि सय बिगहा गाछी रहिते छैक । जादू दरिद्रकेँ अपना गाछी नहि रहैछ तकरो आमक पूर्ण भोग भेटिते छैक । किछु लोकमे कहै छैक- माघ गुजरे, फागुन मजरे, चैत हो टिकुलबा । एहि क्रममे जेठमे आम मे **कोसा** भइए जाइत छैक । कोनो कोनो गाछ **रोहिनियाँ** होइछ से त पकबो करय लगैछ ।'

'आम सन फल दोसर नहि । **टिकुलेसँ** एकर **चटनी** लोक खाए लगैछ । टिकुलामे कम **अमत** होइछ । कनेक आओर पैघ भेलापर भरि वर्षक हेतु एकर **दड़िमा आमिल** लोक बनबैत अछि । **कुच्चा, अचार** सेहो भरि वर्षक हेतु बनाओल जाइछ । **कोसा** भेलापर नाना प्रकारक **मसाला** दऽ **फड़ा अँचार** बनाओल जाइछ । एकर रसोमे भिजाए वा डुबाए अनेक वस्तुक **अचार** बनाओल जाइछ ।'

'वसन्तो ऋतुसँ पुरिबा बसात बेस वेगेँ एहि देशमे बहैत रहै छैक । तेँ **टिकुला** सब खूब खसैत छैक । नेना सभक ई अपूर्व आनन्दक समय होइछ । टिकुला बीछयमे सभमे परस्पर ईर्ष्या आ स्पर्धा तथा हर्षातिरेक अत्यधिक देखि पड़ैछ । एहि पाछाँ ओ सभ भोजनो करब बिसरि जाइछ । भरि दिन ओ साँझ तथा रातिवासोमे ओ सभ दौड़िकए गाछी जाइछ तथा सभसँ पहिने **रोहिनिए** गाछ तर जाइछ जाहिमे कदाचित गोटेको **पाकल** आम भेटि जाय । जखन **आम** पाकए लगैछ तखन त की नेना की चेतन की बूढ़ सभ हाथमे **जाबी** नेने आम संग्रहक हेतु गाछीमे भरिदिने नहि, अपितु रातिओकेँ दौड़िते रहै छथि । सुन्दर कए मचान ओ खोपड़ी लोक बनैत अछि । रातिओ केँ गाछी सुन्न नहि रहए देल जाइछ । निबिड़ अन्धकारमे आमक **धट-धट खसब** केहन चित्ताकर्षक होइछ से तँ बगबारे लोकनि बुझैत छथि । डोली अएलापर जे उत्साह ओ आनन्द बगबारकेँ होइछ तकर वर्णन के कए सकत । तावत वर्षाक आरम्भ भए जाइछ । वर्षाक जलेँ तृप्त आममे गर्मी नहि रहैछ । वर्षाक चोटेँ खसैत आमकेँ बीछि-बीछि कए खाइत बगवार सभ स्वर्गीय आनन्दक अनुभव करैछ । एकर हेतु केहनो कष्टकेँ लोक कष्ट नहि बुझैछ । मूसलाधार वर्षा होइत रहैछ, ठनका ठनकैत रहैछ, तैयो नेनासँ बूढ़ धरि सभ गाछीमे आनन्दमे मग्न रहै छथि । हिंडुलापर झुलैत मचकीपरक मलार गाबि गाबि लोक मस्त रहैत अछि ।

रातिकेँ बगबार सभ सुन्दर मलार ओ बरहमासा गाबि-गाबि कोकिलक स्वरकेँ स्तब्ध कए दैछ । खएबासँ बेसी जे आम होइछ तकर **अमोट** स्त्रीवर्ग पाड़ैत छथि । आमकेँ धोए **खोइचा** छोड़ाए उखरिमे मूसरसँ कूटि ओकर रसकेँ रौदमे पसारि-पसारि सुखाबएमे गृहिणी लोकनि व्यस्त रहै छथि । ई अमोट भरिवर्ष लोक खाइत अछि । एहिमे उएह सौरभ, उएह माधुर्य पश्चातो रहैछ । एहि प्रकारेँ एकमात्र आमसँ कतेक लोककेँ दू मास त जीवन-निर्वाह होइते छै, परन्तु भरिओ वर्ष अनेक प्रकारेँ एकर उपयोग कए लोक आनन्द प्राप्त करैत अछि ।[229]

मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता शीर्षक निबन्धमे म.म. जी मिथिलाक भोजन विन्यासक विभिन्न पक्षपर सम्यक विमर्श, **भोजनीय पदार्थ** उपशीर्षकमे विशद रूपेँ कयने छथि जाहिसँ एहि ठामक भोजन विधानक विविध पक्षपर प्रकाश पड़ल अछि ।[230]

डा.रामदेवझाक ग्रन्थ **मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य** नामक पोथीक दोसर भागमे लोकसंस्कृति विषयक अनेक ललित निबन्ध सब संकलित अछि जाहिमे मिथिलाक पारम्परिक खान-पानक वर्णन भेल अछि । **रंग-रस मातल फगुआ**मे मिथिलामे फगुआक अवसरपर ग्रहण कयल जायवला **पूआ, बड़, बड़ी, भांग, सुपारी** आदि सन भोज्य पदार्थक वर्णन भेल अछि ।[231] **तुइल महु डारि** शीर्षक निबन्धमे रोचक शैलीमे **मोहुसँ** निर्मित खाद्य पदार्थ ओ **मदिरा** सन पेय पदार्थक निर्माणक वर्णन भेल अछि ।[232] **नील तीसी फूल** शीर्षक निबन्धमे तीसीक **तीमन, तिसियौरी, तिलौरी, तीसीक तेल** आ ओहिमे छानल **झिल्ली, कचुड़ी, बड़ी,** भटवर आदि सन भोज्य पदार्थ, **तीसी तीमनसँ** सम्बद्ध कतोक कहबी, बाग्धारा आदिक विलक्षण वर्णन भेल अछि ।[233] **प्रकृतिक दुलरैतिन : नागवल्ली** शीर्षक निबन्धमे मैथिली संस्कृतिमे पानक महत्त्वक वर्णन करैत लोकसाहित्यमे आयल **पाकल बीड़ा पान, हँसता पान, हँसाना पान, झादरि पान, दसौनहा पानक** उल्लेखक भेल अछि तँ पानक विभिन्न प्रभेद यथा **चम्पा, टिकुलिया, कपूरा, कलजोड़िया, पखिया, कपुरिया, बङला, साँची, बेलहरी साँची** आदिक नाम गनाओल गेल अछि ।[234] एहि पोथीक अन्यो निबन्ध सबमे मिथिलाक पारम्परिक भोजन विन्यासक वर्णन भेल अछि ।

लोकसाहित्यमे वर्णित भोजन विन्यास

मैथिली लोक साहित्यहुमे मैथिल भोजन विन्यासक वर्णन होइत रहल अछि । द्रष्टव्य अछि ई लोकगीत-

बाट-घाटमे लोहा पओलहुँ ।
सेहो लोहा कथी लय ?
हँसुआ बनाबइ लय ।
सेहो हँसुआ कथी लय ?

गहुमा कटाबइ लय ।
सेहो गहुमा **कखी** लय ?
चिकसा पिसाबइ लय ।
सेहो चिकसा कथी लय ?
पूड़िया पकाबइ लय............इत्यादि ।[235]

बारहमासा मैथिली लोकगीतक अत्यन्त सरस प्रभेद थिक । एकटा बारहमासामे लोक कवि मिथिलामे भिन्न, भिन्न मासमे जन सामान्यक हेतु उपलब्ध भोजन सामग्री खेसारीक साग, छिम्मरि, खेसारीक दालि, टिकुला, कटहर, आँठी-पकुआ, मड़बाक रोटी आ भातक वर्णन कयलनि अछि ।[236]

एहिना एकटा बारहमासामे भिन्न-भिन्न मासमे उपलब्ध होअऽबला **माछ** सबहिक वर्णन भेल अछि । ई सिद्ध करैत अछि जे नदी मातृक देश मिथिलाक भोजन विन्यासमे माछ बारहो मास अनिवार्य खाद्य जकाँ उपयुक्त मानल जाइत रहल अछि-

मास हे सखि सरस अगहन **भूजल चूड़ाक** संग यो ।
तरल **चेचड़ा** माछ **मुरमुर** लागय मोन भरि भंग यो ।
पूस हे सखि अन्न नवका संग **माङुर झोर** यो ।
कबइ कुरमुर दाँत दबइत करय जन जन शोर यो ।
माघ बदरी जाड़ थर-थर काँपय तन बड़ जोर यो ।
सुख **बोआरी खंड** लखि कय मनविनोद विभोर यो ।
बड़ल स्वादक माछ **टेंगड़ा** रान्हल सानल **भात** यो ।
चैत हे सखि रोग सभदिन रूप नाना देखि यो ।
तरल **भुन्ना पलइ** राखल खाइत बड़ सुख लेखि ओ ।
मास हे सखि आय पहुचल गरम बड़ बइसाख यो ।
गेल मन रुचि माछ **गागर** खंड सब दिन **चाख** यो ।
जेठ हे सखि हेठ बरखा **मुण्ड भाकुर** पात यो ।
पहुतु बिसरतु आबि ससरतु करू नवका **भात** यो ।
मेघ सखि बरसय अषाढ़क जत रसालक डारि यो ।
तोड़ि **काँचे आम-आमिल** देल **सौरा** पाल यो ।
मास हे सखि आओल साओन परल **अण्डा** घेंट यो ।
तरल **दड़ही** माछ मारा खाथि भरि-भरि पेट यो ।
भादव **इचना** भेटल कहुना खाय मरलहु कोठि यो ।

मास आसिन देव पूजा शंख घंटा नाद यो ।
रान्हि **रहुआ** माछ बइसब पूर्ण भेल परसाद यो ।
मास कातिक बारि **मडुआ** बऽड़ तरल अपूर्व यो ।
पूरल बारहमास हरिनाथ गाओल सगर्व यो ।[237]

एकटा दोसर बारहमासामे सेहो एही प्रकारक वर्णन भेल अछि –

मास हे सखि सरस अगहन, भूजल चूड़ाक संग यो ॥
तड़ल **चेचरा पलै** रान्हल **झोरसँ** बड़ल तेल यो ॥
पूस हे सखि **अन्न** नबका, रान्हल **माङुर** माछ यो ॥
दुइ मिलि हम **पलै** रान्हल, आब ने बाँचत प्राण यो ॥
माघ हे सखि जाड़ भारी, रान्हल **माङुर** माछ यो ॥
दुइ मिलि हम पलै रान्हल, आब ने बाँचत प्राण यो ॥
फागुन हे सखि आबि पहुँचल, आयल पछबाक ओर यो ॥
सेदैत **मारा** आगि लागल आब नहि बाँचत **कौल** यो ॥
चैत हे सखि रोग चहु दिससँ, रूप नाना धराय यो ॥
तरै भुटनी **सोन्ह** रान्हल, वैद करथि दवाइ यो ॥
मास हे सखि आबि पहुँचल, आयल मास बैसाख यो ॥
गेल रुचि ओ प्रेम **माछसँ** आब नहि किछु चाही यो ।
जेठ हे सखि आबि पहुँचल रान्हल **भाकुर** माछ यो ।
दुइ मिलि हम **पलै** रान्हल आब नहि बाँचत प्राण यो ।
मास हे सखि आबि पहुँचल आयल नवल अखाढ़ यो ।
आम दय-दय **सौर** रान्हल **झोर** भेल बड़ गाढ़ यो ॥
सावन हे सखि सर्व सुहावन रान्हल **टेंगरा** माछ यो
दुइ मिलि हम **पलै** रान्हल आब ने बाँचत प्राण यो ॥
भादव हे सखि **झिंगा** रान्हल संग **कोतरी** माछ यो ।
आसिन हे सखि मूर रान्हल गर्म लेल प्रसाद यो ॥
कातिक हे सखि आबि पहुँचल **गरै गैंचा** माछ यो ।
गेल रुचि ओ प्रेम माछ सँ आब नहि किछु चाही यो ॥[238]

एकटा लोकगीतमे माछकेँ धार्मिकताक संग व्यंग्यपूर्वक जोड़ि मनोरंजक वर्णन भेल अछि आ एहि क्रममे विभिन्न माछ खयने विभिन्न तीर्थफलक कथन अछि-

मडुआ मीन के संग हो कहि गेल दास कबीर ।
सब संतन मिलि खाउ, निर्मल होए शरीर ॥
दरही दया काया अति पाचक पोठिया प्राणाधार ।
नैनी नाम नारायण के सउरी संत उदार ॥
डलै बच्चा जनकपुर तीरथ, कबै करबद्ध काशी ।
झिंगा जल प्रयाग महातम सिंगी मथुरा बासी ॥
कुरसा से कुरुक्षेत्र द्वारिका, मधुरा स्वर्ग समान ।
रहु, रेवा, टेंगरा बुआरी, गैंची पढ़ै कुरान ॥
भाकुर ठाकुर भवसागर उतरै चेल्हवा चढ़ै विमान ।
सब तीरथमे मछरी दान तकरा मिलै गंग असलान ॥
जगफल जगदम्बा करै उद्धार सब मिलि खाउ संसार ।
रहू मूड़ामे जँ पढ़ै तेल स्वर्गहु जीतय इन्द्रकेँ ठेलि ॥
ताहूमे जे आमिल पढ़ै की काशी जे धरे तढ़ै ।[239]

एकटा कोबर गीतमे दाम्पत्य जीवनक नोंक-झोंकक क्रममे वर द्वारा कनिञाकेँ माछ निकयबाक आग्रह आ कनियाँ द्वारा तकर अस्वीकृतिक वर्णन अछि-

घर पछुअरबामे बाबा पोखरिया ताहिमे रहुआ बोआरि हे ।
ताहि पोखरि नहाय गेला दुलहा से फल्लाँ दुलहा मारि लेल रहुआ बोआरि हे ।
काहाँ गेली किए भेली सुहबे से कनिआ सुहबे रान्हि लिअऽ रहुआ बोआरि हे ।
मारलहुँ तँ मारलहुँ प्रभु बड़ बेस कयलहुँ हमरोसँ नहि हएत बनायल हे ।[240]

सोहर, लोकगीतक ओ प्रभेद थिक जाहिमे पुत्र जन्मक अभिलाषा, गर्भ प्राप्तिक समयक मनोदशा ओ पुत्र प्राप्तिक उछाहक वर्णन रहैछ । नव कल्याणक योग्यताक अवधिमे सामान्य खाद्यसँ अरुचि होअऽ लगैत छैक । एहि स्त्री-स्वभावक वर्णन एहि सोहरमे भेटैछ -

प्रथम महीना मोरा कातिक छइ गे ननदी
कुटल चाउरक भात मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।
दोसर महीना मोरा अगहन छइ गे ननदी
राहरिक दालि मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।
तेसर महीना मोरा पूस छइ गे ननदी
तरल तरकारी मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।
चारिम महीना मोरा माघ छइ गे ननदी ।
अउँटल दूध मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।

पाँचम महीना मोरा फागुन छइ गे ननदी
सासुजी के बोलिया मोहि न सोहाइ छइ गे ननदी ।
छठम महीना मोरा चैत छइ गे ननदी
पाकल बीरा पान मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।
सातम महीना मोरा बैसाख छइ गे ननदी
भूजल भुजिया मोहि न सोहाइ छइ गे ननदी ।
आठम महीना मोरा जेठ छइ गे ननदी
पिया के पलँगिया मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।
नवम महीना मोरा अषाढ़ छइ गे ननदी
रान्हल सथोरिया मोहि ने सोहाइ छइ गे ननदी ।[241]

एहिना एकटा अन्य सोहरमे गर्भिणीक चहटगर वस्तुक प्रति रुचिक वर्णन सेहो अत्यन्त सहज भेल अछि ।-

शुभ नक्षत्र शुभ मास त शुभ दिन बीति गेल हे ।
ललना रुकमिनि रानी गरभ सएँ मने मने विलखथि हे ।
ललना हँसि-हँसि पूछथि श्रीकृष्ण सुनहु रानी रुकमिन हे ।
रानी कओने-कओने फल भावय कहिअ बुझाबिअ हे ।
लवंग इलइचिया मनमे भावए नवरंगिया देखि हूलि आवय रे ।
राजा जेठ रे बइसाख के टिकोलबा चटनिना मन भावय रे ।
राजा दाख छहोरा मन ने भावए नवरंगिया देखि हूलि आवय
जेठ रे बइसाख के इमलिया चटनिया मन भावय रे ।[242]

खेलौना लोकगीतक ओ प्रकार थिक जाहिमे पुत्रक जन्मक अवसर उपस्थित भेलापर तथा आनो शुभ कार्य भेलापर ननदिक नैहर आगमन भेला उत्तर ननदि-भाउजक हास-परिहास ओ इच्छा-अभिलाषाक वर्णन रहैछ । एहने एकटा गीतमे मिथिलाक प्रमुख खाद्य चूड़ा-दही-चीनीक वर्णन आयल अछि-

पट्टे-पट्टे चूड़ा हम कुटबा एलियै घरमे रखबा एलियै रे ।
ललना रे, एतऽ एलै बरुआ के मौसी कि मुठिये-मुठिये फाँकि गेलै रे ।
तौले-तौले दही हम पौरबा एलियै घरमे रखबा एलियै रे ।
ललना रे एतऽ एलै बरुआक मौसा कि छौए-छौए चाटि गेलै रे ।
पट्टे-पट्टे चीनी हम जोखबा एलियै घरमे सैंतबा एलियै रे ।
ललना रे, एतऽ एलै बौआ के मामी कि लपे-लपे चोराय लेलकै रे ।[243]

डहकन लोकगीतक ओ प्रभेद थिक जाहिमे समधि, बरियाती, पुरोहित आदिकेँ भोजन करबा काल सरस गारि दऽ मनोरंजन कयल जाइछ । समधिक प्रति एहि डहकनमे भोजनक सामान्य सँचार भात-दालि तरकारीक वर्णन आयल अछि-

सुनू समधी यो सरकार हम छी गरीब अपार
अहाँ बातो करबइ सोचि बिचारि कऽ ।
जे छथि भात लेने ठाढ़ ओ छथि मैयाके भतार
आहाँ भातो खायबै सोचि बिचारि कऽ ।।
जे छथि दालि लेने ठाढ़ ओ छथि बहिनके भतार
आहाँ दालियो खेबइ सोचि-विचारि कऽ ।।
जे छथि तरकारी लेने ठाढ़ ओ छथि बेटीके भतार
अहाँ तरकारियो लेबै सोचि बिचारि कऽ ।।[244]

एहि प्रकारक एकटा अन्य डहकन अछि-

बिछि-बिछि कऽ पढ़बनि गारि समधिकेँ
एक कऽर खेता समधि दुइ कऽर खेता तेसरे मे छिनबनि थारी समधिकेँ ।
तेतरिक पात पर सँचार लगायब, ओल-परोड़ तरकारी समधिके ।।[245]

पंडितक हेतु ई डहकरन द्रष्टव्य-

अकलेल बभना बकलेल बभना ।।
वेदो ने जानइ बहलेल बभना ।।
चाउर देलियनि दालि देलियनि गेला अङना ।
एक रती नून लय करै छथि खेखना ।।
चूड़ा देलियनि दही देलियनि गेला अङना
एक रती चिन्नी लय करै छथि खेखना ।।[246]

विवाहक बाद चारि पाँच दिन धरि वरकेँ सविधि खीर भोजन देबाक व्यवहार होइत छैक । एहि विधिकेँ महुअक कहल जाइत छैक । एहि अवसरपर जे लोकगीत गाओल जाइछ ताहिमे मैथिल भोजन विन्यासक अपूर्व छटाक विवरण भेटैत अछि -

रघुवर किअए रूसल छी अहाँ ससुरारीमे खीर परोसल थारीमे ना ।
रचि-रचि व्यञ्जन हम बनयलौं रघुवर अहाँकेँ जेमयलौं
अहाँ स्वाद ने पयलौं सुनयना के तरकारीमे खीर परोसल थारीमे ना ।
निमकी खटमिट्ठी अँचार खयलहुँ अवधेशक कुमार

अहाँ एतेक देर लगेलौं कनियाँ खीरो नहि खेलौं
अचरज करैछी जनकपुर ससुरारीमे खीर परोसल थारी मे ना ।[247]

बरक खयबाकाल गयबा योग्य एकटा अन्य गीतमे मिथिलामे पीढ़ीपर चरण पखारि कम्बलपर बैसाय सँचार लगाओल थारीमे जमायकेँ भोजन करयबाक वर्णन भेल अछि । भोजनोपरान्त मुखशुद्धिक सेहो एहि गीतमे चर्चा भेल अछि ।[248]

बरक भोजनसँ सम्बद्ध एकटा गीतमे विविध प्रकारक व्यञ्जनक वर्णन अछि-

प्रिय पाहुन रुचिसँ जेमि लिय
भात दालि रस अजब बनल अछि चटनी अछि चटकदार ।
रुचिसँ जेमि लिय ।
तिलौरी-दनौरी, अदौरी बनल अछि कुम्हड़ौरी अछि मजेदार
रुचि सँ जेमि लिय ।
ओल-परोड़ बड़ी बड़ भटबर कलमी आम अँचार
रुचिसँ जेमि लिय ।[249]

एकटा अन्य गीतमे सेहो विविध भोज्य पदार्थक उल्लेख भेल अछि–

खाजा खुरमा तपत जिलेबी तापर सरस सोहारी जी ।
पाँच भाइ मिलि जेमय बैसला पशुपति अवध विहारी जी ।।
हँसि-हँसि भरतसँ पूछनि केओ परसन लिय तरकारी जी ।
भाँति-भाँति के बनल अँचारा नाना बिधि तरकारी जी ।।
नित उठि दूध मनाइन अउँटथि पिबथु कृष्ण कन्हाई जी ।
पाकल पान लगाओल उतिम तरल खण्ड सुपारी जी ।।
लय बिधिकरी आँचर झँपलनि क्षमा करू सब दोखी जी ।[250]

एकटा उचिती गीतक एकटा अंश एहि रूपक अछि–

मिथिला पटुआक झोर हम की दिअ हे ललन
बनल अनोन-सनोन सभटा बुझब अपन
हिय बिच किछु नहि राखब हे ललन ।[251]

उचिती आ योग लोकगीतक ओ प्रभेद थिक जे समधि तथा जमायक भोजनक अवसरपर गाओल जाइछ जाहिमे भोजन विन्यासक सरस वर्णन रहैछ -

मेही भात जतन भनसिया सौंठि कयल भरि थारी जी ।
राहरिक दालि बट्टा भरि उतिम ताहि देल घृत ढारी जी ।
ओल-परोड़ बड़ी-बड़ भटबर तरह तरह तरकारी जी ।
छछिगर दही छाँछ भरि आनल जेमथु कन्हाइ जी ।
पाकल पान लवंग लगाओल सरहोजि अति व्यवहारी जी ।[252]

एहि सभक अतिरिक्त मैथिली लोक साहित्यक जाहि विधा सभमे भोजन-विन्यास तथा भोज्य सामग्रीक प्रचुर उल्लेख देखि पड़ैछ ताहिमे फकड़ा, पिहानी, ओ लोकोक्ति प्रमुख अछि । यथा-

फकड़ा

1. सासुर जानि गेलहुँ सतघारा, बैसक देलनि बड़दक ओसारा
2. भानस करैत छल एक जनी, मुँह लगैत छल थिकै जोलहिनी ।।
3. मुठिएक दालिमे घुठिएक पानि, गेला कपलेसर सासुर जानि
4. अइ भनसिया के करत मना, जेठ मास कहूँ भेल भाटाक सना ।।
5. मार दही, सरपट्ट दही, अगुआर दही, पछुआर दही, ।
   खेत दही, खरिहान दही, चूड़ा दही सुरूक-सुरूक ।।
6. जे बर कैलनि मझौरा वियाह, तिनकर देखियनु भोग्य,
   गुड़ खीर दऽ महुअक भेलनि, ताही पर उचिती-योग,
   चारि दिनपर भेल चतुर्थी, बर दऽ-दऽ बाजथि नाकी,
   पेट सटकि कऽ गेलनि पीठमे, आब की रहलनि बाँकी ।
   केराक पात भात देल अरबा, कारी कम्बल आसन,
   देखितहिँ बड़ बफारि कटै छल, जिबितहि भेल अरगासन ।
   तीसीक तेल देल तरकारी झरमर्दन केर भाता ।
   जिनक वियाह भेल मझौरा तिनकर वाम विधाता ।।[253]

पिहानी

एकटा बेटाक जन्म देल, माय तकर परलोक गेल ।। -केराक गाछ

एक चिड़ैया अट्ट, तकर पाँखि दुनू पट्ट,
तकर खलरा ओदार, तकर मासु मजेदार । -केरा

एक चिड़ैया ऐसनी, खुट्टा पर बैसिनी,

लप्पे-लप्पे चाउर फाँकय से चिड़ैया कैसनी । -जाँत

एक रती के टुइयाँ, पटकि देल भुइयाँ,
टूटै नै भाड़ै, चावस रे टुइयाँ । -सुपारी

कला तलामे झिल-मिल पानी, ओहिमे नाचय बुढ़िया नानी । -पूड़ी

कनीटाक छौंड़ीकें, कस्सल कस्सल बाँहि । -मकइक बालि

माथपर छत्ता गोदीमे बच्चा । -मकइक बालि

कारी गाय कलसी, पानि दियै मलसी ।
कानि गाय ठिकरै, बत्तीस फूल धखरै ।। -भात

कनीटा छौंड़ी के लाल घघरी । -मिरचाइ

चारि चिड़ै चारि रंग मुँहमे देने एक रंग । -पान

चारि सखि चारि रंग चारू बेदरंग
चारूक बियाह भेल चारू एक रंग -पान, सुपारी, कत्थ, चून

लाल गाय खढ़ खाय, पानि पीबय मरि जाय । -आगि

तर तुमौरा उपर डंय, तकर पात बत्तीसो खण्डा । -ओल

पात लेहू-लेहू, फर गेहू-गेहू ।
जे ने बुझथि से हमर मित्र बनि कऽ रहथि ।। -केरा

पात चितिर-बितिर फड़ लम्बा ।
जे ने बुझए से मुर्गाक खम्मा ।। -मुनिगा

माउस खयलहुँ मास दिन, झोर खयलहुँ बरिस दिन ।
हड्डी गुड्डी राखल अछि, खस्सी पाठा बान्हल अछि ।। -आमक गाछ

पानिमे अड़कि गेल, बाहर तड़पि गेल,
बैसल तराजूमे, हाटपर ससरि गेल । -माछ

बनमे उक्खरि लटकल छइ चोर-चहार ने छूबइ छइ । -कटहर

बनमे कोइला लटकल छइ । -जामुन

बनमे हँसुआ टाङल छइ, खण्ड-खण्डमे बाँटल छइ । -तेतरि

लोकोक्ति

1. अहियापुरमे कटहर फड़लै हमरा लेखे पाड़ा मरलै ।
2. अपने मोसाफिर सुतथि चितंग, अनकर खाऽ कऽ छथि मतंग ।
3. अभावल बकर्कें पोठी तीत ।
4. अनकर खाइ भात, अपन होअए घात ।
5. अटर-पटर के पूरय पचास ।
   अगब गहूम के तबे फूटए की भनसिए मरय ॥
6. अपन दहीकें क्यो खट्टा कहै छै ?
7. आदरे किदन फाटए, चूड़ा दही के खाय ।
8. आम खयबा सँ काज, की आँठी गनबासँ काज ।
9. आलू दम्म, मशल्ल कम्म, भौजी नाचथि छमाछम ।
10. आलू खाऽ कऽ चालू, पेयाजु खाऽ कऽ टेढ़ी ।
11. आलू कोबी के तरकारी, कनी दिय ए बेचारी ।
    हमरो ऐत पुछारी, हमहूँ देब ए बेचारी ।
12. ई गुड़ खयने कान छेदओने ।
13. ई जुनि बूझी सैंया हीत, जेहने करैला तेहने तीत ।
14. इमली देल भट्टा, कयथक पढ़ाओल बेट्टा, बड़ नामी होइछ ।
15. उँटक मुँहमे जीरक फोड़न ।
16. उलुक बारी फुलुक भात,
    बब्र खसय भनसियाक हाथ ।

16(क). उगह चान की लपकह पूड़ी ।

17. एक आनाक मुरगी, नौ आनाक मसल्ला ।
18. एक हाथक काँकड़ि, नौ हाथक बीया ।
19. एक पोठपर नौ रोट ।
20. एक आमक दू कतरो ने ।
21. एक दिन सासुरँ एतेक सिनेह भेल, बासि भातमे दूधे,
    एक दिन सासुरँ एतेक बिरह भेल, तप्पत भात छनि छुच्छे ।
22. एकटा बहु लय नूआ ने भात, दोसर बहु लय छाती फाट ।

23. एत बड़ जी, जे जमाइकें देबनि घी ।
24. एक जुनि रूसथि बाबूक बाप, जनिकासँ हैत नूआ-भात ।
25. एक तामा चिक्कस, सबके लागल हिस्सक ।
26. एक मुँह मिसरियोसँ भरैछ, आ दस मुँह खाकोसँ नहि भरैछ ।
27. एक कूदन (माछ), एक छरपन (छागर)
    एक सील-सीलौटा (जीर-मरीचक मशल्ला),
    तखन बनए हमर भोजनौटा ।
28. एक तँ करैला अपने तीत, दोसर चढ़ल नीमक भीत ।
29. कमाय खटा एला तनिका पाँच लात, मेह थऽ कऽ बैसला तनिका माँछ-भात ।
30. कहियो घृत घना, कहियो मुट्ठी चलना, कहियो ओहो मना ।
31. कनियाँ अए दू गो धनियाँ दियऽ,
    लालमिरचाइ के फोड़न दियऽ,
    अपन भतार के नाम कहि दियऽ ।
32. कतबो घी-तेल दऽ तरब, तैयो सागक-सागे ।
33. कतबो करैलामे तेल देब तैयो तीतक तीते,
    कतबो सैंया लात लऽकऽ मारत तैयो हितक हिते ।
34. कुटि-पिसि खो धनि बहु हमर हो, नुआ फटौ तँ नहिरा जो ।
35. कननी घर दालि-भात हँसनी घर उपास ।
36. कोल्हुआक बड़दकें गुड़क चेकीसँ कोन प्रयोजन ।
37. किदन बड़ैया पातर-चूड़ा, दैयाक नहिरा बरी दूरा ।
38. कनहा कुकुर माँड़े तिरपित ।
39. ककरो मूड़ी ककरो झोर, ककरो आँखिसँ खसलनि नोर ।
40. काज ने धंधा, तीन रोटी बन्धा,

40(क). कमानी ने खटानी सनहक्की लँ दौरानी ।

41. काजमे नइ सटबौ, खाइमे नहि हटबौ ।
42. करै-धरै के सङ नहि, परसै लय तैयारी ।
43. ककरो माँड़मे जस, ककरो भातोमे नहि जस ।
44. कऽथऽ ऐली हीरा, माँड़ पसौलनि जीरा ।

45. कुसियार कयल जे बाल बच्चा जीत, पेड़ैत-पेड़ैत (किदन) फाटल रस के पीत।
46. कुकुरक पेटमे कतहु घी पचए ?
47. कुटऽ पीसऽ के नहि जान, मर्द सराही आगि आन।
48. खयलोपर खयल, किछु बुझबो ने कयल।
49. खुद्दी खा कऽ भूख नष्ट।
50. खाइक मोन भेल अपना, तँ गोसैयाँ देलक सपना।
51. खाया पिया धोआ हाथ, तोरा हमरा-कोन साथ।
52. खा कऽ पसरी, मारि कऽ ससरी।
53. खाइ लय सुखराती आ ढेङबै लय सूप।
54. खायक भाँड़ा आ सूतक सेज, नहि रहय देब।
55. खाइ सागपात, सूती नबाबक साथ।
56. खेलड़ीक खेल किछु कहलो ने जाय, अदहन चढ़ा खेलड़ी खेल खेलऽ जाय।
57. खाय भली की माय भली ?
58. खाइ तँ घृत्यम्, पढ़ी तँ वैद्यम्।
59. खीर-पूड़ीसँ घर भरल अइ, भूखे मधियान जरल अइ।
60. खस्सीकेँ जान जाय, खबैयाकेँ सबाद बढ़य।
61. गरै गंगा कबै काशी, खाय तँ वैकुण्ठवासी।
माघ मास जँ गैंची खाइ, ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ।
62. गाछमे कटहर ओठमे तेल।
63. गूड़क मारि धोकड़े जानय।
64. गूड़क नफा चुटिए खाय।
65. गूड़ गेल केहुनी, लुल्हुआ चटिते छी।
66. गोआरेक कहने गाइक घी गोआरेक कहने महिसिक घी।
67. गुरू गूड़ चेला चिन्नी।
68. गोआरक सराहल माछ आ मलाहक सराहल दही दूनू एके रंग।
69. घर दही तँ बाहरो दही।
70. घर भुजी भाङ नहि, बीबी फाँकथि चूड़ा।
71. घरमे अनाज नहि, पहुना के लाज नहि।

72. घर नोते ने आ बेलाही नोत।
73. घर बैसल जे बनबथि बात, तनिका देह ने वस्त्र ने पेटमे भात।
74. घर बिगाड़य बूढ़ी, पेट बिगाड़य मुढ़ी।
75. घरमे पकय पकमाने, मोनमे करय अनुपाने।
76. घी कतऽ हेरायल, तऽ राहड़िक दालिमे।
77. घी मलिद्दा ताबहि छल, जब दास मलुक्का जीबै छल।
78. घी पचय नै आ, पूड़ी लेल मारि।
79. चेल्हबा पोठी चाल देअए, रोहुक सिर बिसाय।
80. चौदह रोटी नून तरकारी, गिरधर हमर नाम।
81. चिट्ठीमे लिखलहुँ अल्हुआ- बेल, एतय अयने एको ने भेल।
82. छक्कमे भक्क, झिंगामे झोर।
83. छी महतमानि, मड़ै छी दूगो खुद्दी।
84. छवि ने छट्टा, मसुरीक दालिमे इमलीक खट्टा।
85. छओ मोन चाउर, नओ मन आटा, तीन मोन दालि खेसारीक,
ई सब लऽ कऽ भोजन केलक, पेटो ने भरल ओहि नारीक,
एक नारी हम एहन देखल।
86. छुच्छ निमानि, तीमन डढ़ानि।
87. जीर सन रही जमाइन सन भेली, ससुरा गेने गिरथाइन सन भेली।
88. जओक सङे घून पिसाय।
89. जते पहुनमा जाय जाय ने करय तते पहुनमा खाय-खाय करय।
90. जकर खयबै तकर गयबै। जेहन खयबै तेहन गयबै। जतेक खयबै ततेक गयबै।
91. जय जगदम्बा जय जगदीश, जे देत चूड़ा-दही तकरे दिस।
92. जेम्हरे देखल खीर, तेम्हरे बैसल फीरि।
93. जिबिते दुख, मुइने दुनू रोटी चाउरेक।
94. जाहि भोजमे नेओत नहि, ताहिमे पाड़ा मरौक।
95. जकर जेठकी छुलाहि, तकर छोटकी भाँड़े लागल खाइ।
96. जओ काटऽ गेला तँ सतुआनि कयने अयला।
97. जकरे माय मरय तकरे पातपर भात नहि।

98. जत बल होहि माछ के खाए, तत बल खौंहि गाँज घिसिआए

99. जउर मे जें आमिल खएल, तँ भेल पेट पिलही ।

100. जँ गूड़क हो गंजन, तँ मिसरी नाम धराबय ।

101. जे खाय पापड़, से खाइ थापर ।

102. जीतामे गूहाभाता मुइलामे दूधाभाता ।

103. तरल खाय मुँह खर-खर करय, डोका खाय मुँह पलास पड़य ।

104. तरल खाय से गलल जाय, गुण्डा खाय मुसुण्डा होअय ।

105. तोरा के पुछौ गे ढलोइ ?

106. तरे-तरे सौरा जाय कोढ़िया कुत्ता छुच्छे खाय ।

107. तीन तिरहुतिया तेरह पाक, आधारोटी आधा भात ।

108. दड़रल खेसारीक टघरल गोट ।

109. दुनू हाथ लड्डू ।

110. दिल्लीक लड्डू- जे खयलक सेहो पछतायल जे नहि खयलक सेहो पछतायल ।

111. दालि-चाउर ककरो, धिकारी करय मड़रो ।

112. दालि-चाउर कुम्हार के, नाम जजिमान के ।

113. देखै छी लड्डू मिठाइ, खाइ छी रोटी राइ ।

114. धनि-धनि रहुआ बोआर की सरिसोक साग,
पैर धोआय हमार, आदर होअय तोहार ।

115. निकोढ़िया गेला हाट, कौंकड़ि देखि हीया फाट ।

116. नोने तेले रस, देने-लेने जस ।

117. ने परसब बड़ी आ ने चिखब झोर ।

118. नीक सङ बैसी खाइ गुआ-पान, अधलाहा सङ बैसी कटाबी नाक कान ।

119. नैहरमे भोज भेल, जीमे हुलास भेल,
कुर्थीक-दालि देल, पातपरसँ बहि गेल ।

120. नहि खायब नहि खायब, खायब भरि-थारी
नहि सुतब नहि सुतब, सुतब गोड़धारी ।

121. नङटे पहिरी, भुखले खाइ, जहाँ मन हो तहाँ नहाइ जाइ ।

122. परसल थारी भोग नहि ।

123. पानि पीबी छानि कऽ बात बाजी जानि कऽ ।

124. पानीमे मछरी नौ-नौ कुटिया बखरा ।

125. पातर मौगी तिलबा सोख, हड़िया उजाड़ल मनुसाक दोख ।

126. पेट करय कुलकुल, जूड़ा करय महमह ?

127. पति राखन अल्हुआ नाम तिहारो ।

128. पेटबे की लोटबे ।

129. पेटे नहि तँ हमरा अहाँकेँ भेटे की ।

130. प्रेतक तीमन तीन, केरा, कबकब, मीन ।

131. पच्छिम छौंके मीठ-भोजना ।

132. वर्षक फल खेती, दिनक फल भोजन ।

133. बहुत खाय से पेट बढ़ाबय, विपत्तिकालमे प्राण गमाबय ।

134. बाप जनम ने खायल पान, दाँत निकोसने / निपोड़ने गेल परान ।

135. बड़-बड़ जनकेँ भेंटक लाबा, [किदनकेँ] मिठाइ ।

136. बाजी तँ बहिन रूसि जाय, नहि बाजी तँ पिया मरि जाय,
बुझनुक होअय से छुच्छे खाय ।

137. बान वीर चलावे तीर, बामा हाथे खाय खीर ।

138. बाँटि-कुटि / चुटि खाइ राजा घर जाइ, एकसर खाइ ककर दनक घर जाइ ।

139. बाको रोटी बाको दालि, खाय चटक्का उड़ि-उड़ि जाय ।

140. बेच दऽ कऽ जे कीनथि माछ, ताहि घर लक्ष्मी खल-खल नाच ।

141. बड़ुआक [किदनमे] कड़ुआक तेल, तीसी बिकाइए टक्के सेर ।

142. बरहीक / पोखरिक दरही काकी भल तरल, एक दिस गुज-गुज एक दिस जरल ।

143. बाबाजीक बेल, हाथे-हाथे गेल ।

144. बहीर बलाय बड़ दुख दाय, नोन लय पठाओल तेल लऽ आय ।

145. बेटियासँ बुढ़िया भेली, टटका जिलेबी कहियो ने देखली ।

146. बुड़िबक वर कें कुर्थी अक्षत ।

147. बानर मुँह की शोभय पान ?

148. बानर की जानय आदक स्वाद ?

149. बाड़ीक पटुआ तीत ।

150. बड़ भुखले नइ दुहु करे खाइ ।
151. बासी बचय ने कुत्ता खाय ।
152. चौआ रे भगलुआ, आम खयबेँ की अल्हुआ ।
153. बाहर सुखाइ अछि जोड़ो धोती, घर पकै अछि कुर्थीक रोटी ।
154. बिनु चीनी के चाह नहि, बिनु जलखइ के प्लेट ।
बिनु सरिसो के माछ नहि, बिना धोधि के सेठ ।
155. भल भात के भल तीमन नाही, भल पुरुष के भल जोड़ू नाही ।
156. भुखले मोन पड़य कोबराक खीर ।
157. भुखले गुल्लड़ि मीठ ।
158. भलमानुसक विदाइ चूड़ा-दही ।
159. भोज ने भात हड़-हड़ गीत ।
160. भादवक ओल, की खाय राजा की खाय चोर ।
161. भोरा खाय से घोड़ा खाय ।
162. भुल्ला माछ कबइ के झोर, तै लय भुल्ला कण्ठी तोर ।
163. भुखलेँ गेलहुँ बहु बेचऽ तँ, कहलक बन्हकी धयने जाह ।
164. भेल भानसमे अट्ठा बज्जर ।
165. भात-दालिक कऽर थिकैक ।
166. भोजकालक कुम्हर रोपब ।
167. भुखले छी तँ सुतले छी, सुति कऽ उठब तँ ऐंठ कऽ चलब ।
168. भाँटाक भटबइ ठोप्पहि तेल, खाथु जमैया ठेल्लम ठेल ।
169. मड़ुआक रोटी पर दुधगर खीर ।
170. मुड़ुआ मीन चीन सङ दही, कोदोक भात दूध सङ सही ।
171. माछ सङे दुध खिचड़ी खाय, मुड़ला बहुक नैहर जाय ।
बाट चलैत जे गाबय गीत, ई तीनू थिक परम पतीत ॥
172. मारी माछ ने उपछी खत्ता / पानि
173. माछ आ पहुना, तीन दिन कहुना ।
174. माघ मास जेँ माछुर खाइ, ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ ।
175. मनमोदकसँ कतहु भूख मेटाय ?

176. माय करय कुटान-पिसान, पूतक नाम दुर्गादत्त ।
177. मुहेँमे धान दैत लावा ।
178. मोने मोन गुड़ चाउर खायब, मुँहमे हरीड़ दितहिं लोटा ताकब ।
179. माय रब्बी बहिन मिरचाइ, कतय गेलहुँ ए बहु मिठाइ,
परस पड़य तँ तोड़ि-तोड़ि खाइ ।
180. मड़ुआक रोटी खेसारीक दालि, टूटि गेलै रोटी छिलकि गेलै दालि,
दियऽ गिरहतनी नोन-मिरचाइ ।
181. माय गे माय माय सतमाय, थारीमे भात देलक सेहो फुलकाय ।
बाटीमे दालि देलक सेहो छिलकाय, घरसँ बहार भेल ओठ चमकाय ।
182. मोन होइअय गुड़पूआ खैतौं, तेल रहैत गुड़ पैंचो लितौं ।
183. राजाकेँ सेबने कान दुनू सोन, बनियाँ लग बैसने छटाँक भरि नोन ।
184. रोटी त छोटी भली, जोड़ू त मोटी भली ।
185. राति अल्हुआ दिन अल्हुआ, ताहिमे कुर्थीक झोर,
आँखिसँ खसै अछि नोर, हम किछु बजै छी, देह लगा कऽ मारै छी ।
186. राड़केँ भात तऽ पलास के नै पात, पलास के पात तँ राड़केँ नै भात ।
187. रोहुक मूड़ा भुन्नाक पेट, दहीक उपर गुड़क हेठ ॥
188. लटहा चूड़ा खटहा दही ।
189. लूटि लावह कूटि खाह ।
190. लाला भेला बेलाला, विश्वनाथ भेला कपूत
एकसर लाला कते कमयता खेनिहार भेलनि बहूत ।
191. सरि बरोबरि हो, भाटा लिट्टी खो ।
192. सड़लो भुन्ना तँ रोहुक दुन्ना ।
193. सूपक भाँटा ।
194. सड़ि गलि बरु जाय, गोतियाक खायल अकारथ जाय ।
195. सुकठीक बनीज पशुपतिक दर्शन ।
196. सुर-सुर मुर-मुर सङनहि हो ।
197. सीरा खाय मीरा, पुच्छी खाय गुलाम ।
198. सैंयाक भूख माथा दुख, अपन भूख चूल्हि फूक ।

199. सात अन्न खैनी सचनी नाम, एक अन्न खैनी फकनी नाम ।

200. सात रोटी सात बेर, टिकरी मटकोना,
पुछियनु गऽ बहुरियाजीकेँ आर लेती कोना ?
एलौंहँ अओने-गओने, पड़लहुँ संकोचमे, लेब नहि तँ जीब कोना ?

201. सिनुर-मिनुर लय कि करबै, गुड़ रहितय त चटितहुँ ।

202. सुट्टी पिल्ली रममजुआक माय, डोका तीमन लय घुसकल जाय ।

203. सात बेर सतुअनि, सँथ आगू दतमनि ।

204. सउँसे खीरा खा कऽ पेनी तीत ।

205. सब दिन खइहऽ, पवनी ललैहऽ ।

206. हम खाया ने तुम खाया, बाटे जान गमाया ।

207. हरदिक दह-दह नून बिहुना, फुहरिक रान्हल हैत केहना ।

208. हकटी हाथक खाइ आ उकटी हाथक नहि खाइ ।

209. हर बहय से खद् खाय, बकरी खाय अँचार ।

210. हँड़िया रे कचकूह बरख दिने घिप्पय, पाहुन तँ जबदाह बरख दिन टिक्कय ।

211. तौला रे थिमराहा छओ मास घिपै लय, पाहुन सबुरदत बरख दिन टिकै लय ।

212. हाटक चाउर बाटक पानि ।

213. हमर बौआ बड़ बुधियार, भोरे उठि कऽ खाय कुसियार ।

214. हक्का-भक्का (चढ़लेपरसँ) मीयाँ खाय,
पोते भरन को (अहगरसँ, निश्चिन्त सँ) बीबी खाए ॥

215. हजामकेँ चूड़ा दही, समाङकेँ भूजा ।

216. मरि कऽ एकादशी, मडुआ रोटी पारण ।

217. कोठीमे चाउर सहल ने जाय, सेजपर बहु रहल ने जाय ।

218. चैतक गुड़ बैसाखक तेल, जेठक भाँटा, अखाढ़क बेल ।
साओनक साग, भादवक दही । आसिनक ओस, कातिकक छही ।
एहि सभसँ बचले रही ।

मिथिलाक किछु गामक नामक संग किछु खाद्य पदार्थक नाम संश्लिष्ट भऽ गेल अछि । एहिमे पिपराक खाजा, सरिसबक लड्डु, पोअरियाक दही, पतैलीक पान, पवड़ाक बेल, झखड़ाक गहूम (पान पतैली, बेल पवड़ा, गहूम खाइ के हुअए तँ जाउ झखड़ा) आदि अपन गुणवत्ताक कारणे विशिष्ट बूझल जाइत अछि ।

एहि तरहेँ देखल जाइत अछि जे प्राक्मैथिली भाषा ओ साहित्य ओ आदिकालीन मैथिली साहित्यमे प्रसंगत: भोजन सम्बन्धी प्रचलित शब्दावलीक उल्लेख यत्र-तत्र देखल जाइत अछि । धूर्त समागमक गीत ओ वर्ण रत्नाकरमे भोज्य सामग्रीक किछु विस्तृत नमावली भेटैत अछि । यैह स्थिति मध्यकालीनो मैथिली साहित्यमे देखल जाइत अछि । आधुनिक मैथिली साहित्यमे जहिना गद्य-पद्यात्मक विविध विधाक आविर्भाव ओ विस्तार भेल तहिना भोजनो सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोगक क्षेत्रक विस्तार भेल अछि । मैथिली लोकसाहित्य ओ लोकोक्तिमे ओहनो भोजन सम्बन्धी शब्दावली सभ स्थान पाबि सकल अछि जे शिष्ट साहित्यमे अनुपलब्ध रहल ।

संदर्भ निर्देश :-

1. मिथिला भाषा रामायण-चन्दाझा, मैथिली अकादमी पटना, 1977, पृ.-15
2. तत्रैव, पृ.-25
3. तत्रैव, पृ.-28
4. तत्रैव, पृ.-59
5. तत्रैव, पृ.-71
6. तत्रैव, पृ.-103
7. तत्रैव, पृ.-124
8. तत्रैव, पृ.-181
9. तत्रैव, पृ.-242-243
10. तत्रैव, पृ.-246
11. तत्रैव, पृ.-308
12. तत्रैव, पृ.-378
13. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-लालदास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1999, पृ.-41
14. तत्रैव, पृ.-42
15. तत्रैव, पृ.-43
16. तत्रैव, पृ.-50
17. तत्रैव, पृ.-52
18. तत्रैव, पृ.-56
19. तत्रैव, पृ.-66
20. तत्रैव, पृ.-106
21. तत्रैव, पृ.-115
22. तत्रैव, पृ.-95
23. तत्रैव, पृ.-95
24. तत्रैव, पृ.-96
25. तत्रैव, पृ.-97-98
26. तत्रैव, पृ.-98
27. तत्रैव, पृ.-99
28. तत्रैव, पृ.-106
29. अम्बचरित (पूर्व भाग)- सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, कचौड़ी गली, वाराणसी-पृ.-3
30. तत्रैव, पृ.-4
31. तत्रैव, पृ.-14
32. तत्रैव, पृ.-19
33. तत्रैव, पृ.-100
34. तत्रैव, पृ.-150
35. तत्रैव, पृ.-168
36. राधा विरह- काशीकान्तमिश्रमधुप, हरिनन्दनसिंह स्मारक निधि, राघोपुर, दरभंगा, 1969, पृ.-83
37. तत्रैव, पृ.-86
38. तत्रैव, पृ.-162
39. तत्रैव, पृ.-204
40. तत्रैव, पृ.-213

41. कीचक वध (षष्ठ सर्ग)- तन्त्रनाथझा,
42. रुक्मिणी परिणय-मधुआनीझा अज्ञात, मैथिली अकादमी पटना, 1980 पृ.-127
43. तत्रैव, पृ.-125
44. तत्रैव, पृ.-124
45. तत्रैव, पृ.-123
46. चन्द्ररचनावली, स.- विश्वेश्वरमिश्र, मैथिली अकादमी पटना, 1981 पृ.-93
47. तत्रैव, पृ.-
48. तत्रैव, पृ.-108
49. तत्रैव, पृ.-214
50. तत्रैव, पृ.-214
51. तत्रैव, पृ.-317-318
52. तत्रैव, पृ.-318
53. तत्रैव, पृ.-309
54. तत्रैव, पृ.-313
55. तत्रैव, पृ.-314
56. तत्रैव, पृ.-316
57. तत्रैव, पृ.-313
58. नीति पद्यावली- जनार्दनझा जनसीदन, पुस्तक भण्डार, पटना, पृ.-23
59. मैथिली काव्य षट्रस-सीतारामझा, प्रकाशन भवन, वाराणसी, संवत् 2025, पृ.-31
60. अलंकार दर्पण, भाग-2- सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, कचौरी गली वाराणसी 1341 साल पृ.-88
61. शिक्षा सोपान-कुशेश्वरकुमर, कुमर बाजितपुर, मुजफ्फरपुर, संवत 1993 पृ.-22
62. द्वादशी- काशीकान्तमिश्र, मधुप, शाद्वलसंघ, कोर्थु, दरभंगा, 1979
63. तत्रैव, पृ.-7
64. तत्रैव, पृ.-66-67
65. तत्रैव, पृ.-85
66. तत्रैव, पृ.-92-93
67. तत्रैव, पृ.-26-27
68. प्रेरणापुञ्ज- काशीकान्तमिश्र, मधुप, मैथिली अकादमी पटना 1980 पृ.-74
69. इन्टरमीडिएट मैथिली गद्य-पद्य संग्रह मैथिली अकादमी, पटना 1981 पृ.-27-28
70. लोचन- स. चन्द्रनाथमिश्रअमर, पैत्रस्थान विद्यापति गोष्ठी, रैयाम, 1960
71. कविता संग्रह, मैथिली अकादमी, पृ.-58
72. स्वेदश मासिक, दरभंगा, वर्ष 1 अंक 1, पृ.-42
73. मिथिला मिहिर, 1 अप्रैल 1962
74. कविता कलाप-सं. शंकरकुमारझा, अखिल भारतीय मैथिली परिषद, दरभंगा, 1970 पृ.-76
75. तत्रैव, पृ.-77
76. प्रतिपदा-सुरेन्द्रझा सुमन, मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा 1984, पृ.-17
77. चित्रा-यात्री, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, 1 पी. सी. बनर्जी रोड प्रयाग, 1390 साल, पृ.-82
78. तत्रैव, पृ.-56
79. तत्रैव, पृ.-58
80. तत्रैव, पृ.-67
81. पत्रहीन नग्नगाछ-यात्री, मैथिली एकेडमी, इलाहाबाद, 1976, पृ.-22
82. स्वदेश मासिक, दरभंगा, वर्ष 1 अंक 3, पृ.-153-154
83. तत्रैव, पृ.-154
84. स्वदेश मासिक, दरभंगा वर्ष 1 अंक 4, पृ. 220
85. तत्रैव, पृ.-220
86. तत्रैव, पृ.-220
87. तत्रैव, पृ.-221
88. तत्रैव, पृ.-222

89. तत्रैव, पृ.-222
90. गुदगुदी- चन्द्रनाथमिश्रअमर, नवरत्नगोष्ठी, दरभंगा, 1364 साल, पृ.-12
91. तत्रैव, पृ.-18
92. तत्रैव, पृ.-14
93. तत्रैव, पृ.-54
94. तत्रैव, पृ.-54-55
95. तत्रैव, पृ.-55
96. तत्रैव, पृ.-55-56
97. ऋतु प्रिया- चन्द्रनाथमिश्रअमर मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, हनुमानगंज, दरभंगा, 1976 पृ.-56
98. कविता कुसुम-सं. रमानाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1673 साल, पृ.-67
99. स्वदेश, वर्ष 1 अंक 4, पृ.-231
100. कविता संग्रह-मैथिली अकादमी, पटना 1985, पृ.-183
101. अरिपन-रूपनारायणचौधरी अनूप, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, पृ.-35-39
102. मिथिला मिहिर-जून 1983, सं. कालीकान्तझामधुर, -कर्णपुर पो.-महरैल, मधुबनी।
103. गोलक फुलवारी- सं. परमानन्द / महानन्द, भवानी प्रकाशन, 1985, पृ.-27-28
104. अतिगीत- रविन्द्रनाथठाकुर, पूर्वांचल प्रकाशन न्यू पुनाईचक, पटना-1, पृ.-47
105. तत्रैव, पृ.-49
106. तत्रैव, पृ.-47-48
107. तत्रैव, पृ.-73
108. मिथिला मिहिर, 30 जनवरी 1977
109. आँखिक सोझाँ, राजानन्दझा, पोहदी, 2003, पृ. 64-65
110. जमीनेमे फूटै छै अंकुर, दयानन्दमिश्र, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2010, पृ. 29
111. ऋचा (हस्तलिखित पत्रिका), दरभंगा, अप्रैल 1994, पृ. 4
112. मैथिलीक आरम्भिक कथा- सं. रमानन्दझारमण, अपीत प्रकाशन, पटना, 1978, पृ. 35
113. तत्रैव, पृ.-36
114. अगिलही एवं अन्य कथा-कुमर गंगानन्दसिंह, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, 1966, पृ.-6-8
115. प्रणम्य देवता- हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर बाजितपुर, वैशाली, पृ.-7
116. तत्रैव, पृ.-8
117. तत्रैव, पृ.-34-35
118. तत्रैव, पृ.-90
119. तत्रैव, पृ.-91
120. तत्रैव, पृ.-92
121. तत्रैव, पृ.-93
122. तत्रैव, पृ.-95
123. तत्रैव, पृ.-95
124. खट्टरककाक तरंग- हरिमोहनझा, भारती भवन, एक्जिबीशनरोड, पटना, 1967 पृ.-1
125. तत्रैव, पृ.-1-2
126. तत्रैव, पृ.-2-3
127. तत्रैव, पृ.-3
128. तत्रैव, पृ.-3-4
129. तत्रैव, पृ.-7
130. तत्रैव, पृ.-10-13
131. तत्रैव, पृ.-14
132. तत्रैव, पृ.-37-38
133. तत्रैव, पृ.-74
134. तत्रैव, पृ.-81
135. तत्रैव, पृ.-82
136. तत्रैव, पृ.-140-148

137. तत्रैव, पृ.-160
138. तत्रैव, पृ.-162
139. तत्रैव, पृ.-190
140. तत्रैव, पृ.-219
141. तत्रैव, पृ.-219
142. रंगशाला- हरिमोहनझा, पुस्तक भण्डार, पटना, पृ.-22
143. तत्रैव, पृ.-21
144. तत्रैव, पृ.-28-29
145. तत्रैव, पृ.-29
146. तत्रैव, पृ.-30
147. तत्रैव, पृ.-31-32
148. तत्रैव, पृ.-39-40
149. तत्रैव, पृ.-47
150. स्वदेश मासिक, दरभंगा, वर्ष 1, अंक 5, पृ.-255-256
151. तत्रैव, पृ.-256
152. चर्चरी-हरिमोहनझा, मैथिली प्रकाशन, 6 । 1 वामन पाड़ा लेन, कलकत्ता-19,1960, पृ.-227
153. तत्रैव, पृ.-227
154. तत्रैव, पृ.-232-233
155. तत्रैव, पृ.-86-87
156. तत्रैव, पृ.-88-92
157. तत्रैव, पृ.-112-113
158. तत्रैव, पृ.-124-125
159. जीरो पावर- चन्द्रनाथमिश्रअमर, आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा
160 स्मृति-रमानाथमिश्रमिहिर, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, पृ.-31
161. तत्रैव, पृ.-42
162. दुखिया बावाक खटरास-राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना 1972, पृ.-35-36
163. कथा संग्रह-मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ.-14
164. एक खीरा : तीन फाँक-रामदेवझा, सुधा प्रकाशन, दरभंगा, 1965, पृ.-19
165. मनुक सन्तान-रामदेवझा, भारती प्रकाशन केन्द्र दरभंगा, 1968, पृ.-40
166. तत्रैव, पृ.-40-41
167. मैथिली अकादमी पत्रिका, वर्ष 5, अंक 1-6 पृ.- 96-97
168. सन्धि-समास, शंकरदेवझा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2008, पृ.- 24, 56
169. कन्यादान- हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर-वाजितपुर, वैशाली, 1982, पृ.-15
170. तत्रैव, पृ.-34
171. द्विरागमन- हरिमोहनझा, पुस्तक भण्डार पटना-4, पृ.-39
172. तत्रैव, पृ.-107-108
173. तत्रैव, पृ.-117
174. तत्रैव, पृ.-122
175. तत्रैव, पृ.-124-125
176. नवतुरिया-यात्री, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965, पृ.-52
177. तत्रैव, पृ.-126
178. दू पत्र-उपेन्द्रनाथझा व्यास, पटना, पृ.-12-13
179. भलमानुस-योगानन्दझा, सन् 1353 साल, पृ.-38-39
180. तत्रैव, पृ.-44
181. तत्रैव, पृ.-78-79
182. तत्रैव, पृ.-79
183. तत्रैव, पृ.-128
184. तत्रैव, पृ.-166
185. बिदागरी-चन्द्रनाथमिश्रअमर विद्यापति प्रकाशन दरभंगा, 1971, पृ.-38
186. तत्रैव, पृ.-65-66

187. पृथ्वी पुत्र- ललित, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1965 पृ.-4
188. अंगरेजीफूलक चिट्ठी- रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2002, पृ.- 47, 58, 59, 66, 100, 110
189. रामजोड़ी कागतक पौखिपर रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2002, पृ.- 16, 21, 24, 26, 27, 28, 29, 32, 34, 35
190. कविवर जीवनझा रचनावली- सं. रामदेव झा, मैथिली अकादमी, पटना 1980, पृ.-94
191. तत्रैव, पृ.-94
192. तत्रैव, पृ.-6
193. तत्रैव, पृ.-8
194. तत्रैव, पृ.-11
195. तत्रैव, पृ.-39
196. तत्रैव, पृ.-45
197. तत्रैव, पृ.-45
198. वीर नरेन्द्र नाटक-जीवनाथझा, दीनबन्धु पुस्तकालय इसहपुर रामनगर, दरभंगा, 1956, पृ.-3-4
199. तत्रैव, पृ.-6
200. चीनीक लड्डू-ईशनाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1964, पृ.- 127
201. तत्रैव, पृ.-128
202. तत्रैव, पृ.-134
203. तत्रैव, पृ.-135-137
204. तेसर कनिञा- मणिपद्म, कर्णगोष्ठी, 1-डी, ओमदाराजा लेन, कलकत्ता- 15-1986 पृ.-19
205. छौंक-हरिश्चन्द्रझा हरीश, ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1964, पृ.15-18
206. पक्षिहीन पाथर- रामदेवझा, संकल्पलोक, लहेरियासराय, 1989, पृ.- 9, 27-29
207. तत्रैव, पृ.-69
208. बसात- गोविन्दझा, पृ.-45
209. राजा शिवसिंह-गोविन्दझा, पृ.-36-37
210. मनोरथ- भाग्यनारायणझा, छात्र पुस्तक भण्डार, मधुबनी, पृ.-1-2
211. तत्रैव, पृ.-32
212. क्षमादान-विन्देश्वरमंडल, मैथिली रंगमंच, अपूर्व मित्रोद्य, कलकत्ता-26, पृ.-22-23
213. सोहाग प्रभुनारायणझा प्रदीप, ग्रन्थमाला प्रकाशन दरभंगा, 1971, पृ.-20
214. तत्रैव, पृ.-39
215. तत्रैव, पृ.-47
216. तत्रैव, पृ.-53
217. एकांकी चयनिका- तन्त्रनाथझा, भारती भवन प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, पृ.-33
218. तत्रैव, पृ.-26-27
219. तत्रैव, पृ.-57-58
220. प्रतिनिधि एकांकी-स. चन्द्रनाथमिश्र अमर, मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन हनुमानगंज, मिश्रटोला, दरभंगा, 1980, पृ.-83-84
221. तत्रैव, पृ.-48-49
222. तत्रैव, पृ.-61-63
223. एकांकी संग्रह-स. सुरेन्द्रझा सुमन, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ.-61-62
224. तत्रैव, पृ.-63-64
225. तत्रैव, पृ.-189
226. संकलन-मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ.-8
227. इन्टरमीडिएट मैथिली गद्य-पद्य संग्रह, मैथिली अकादमी, पटना 1981 मे संगृहीत डा. उमेशमिश्रक निबन्ध : अगहन-पूस, पृ.-66-67
228. तत्रैव, पृ.-71
229. संकलन- सं. शैलेन्द्रमोहनझा, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, 1967, पृ.-24-26

230. द्रष्टव्य, मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता (द्वितीयभाग)- म.म. उमेशमिश्र वैदेही समीति, दरभंगा ।

231. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2002, पृ.- 121-124

232. तत्रैव, पृ.-129-130

233. तत्रैव, पृ.-131-135

234. तत्रैव, पृ.-136-138

235. लोक कण्ठसँ संग्रहीत ।

236. गीतनाद-सं. विभूति आनन्द, भवानी प्रकाशन, पटना, 1986, पृ.-83

237. तत्रैव, पृ.-82-83

238. लोकगीत- सं. अणिमा सिंह पृ.-527

239. लोककण्ठसँ संकलित ।

240. लोककंठसँ संकलित ।

241. लोककंठसँ संकलित ।

242. मैथिली लोकगीत-रामइकबालसिंह राकेश-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सं. 2012 पृ.-49

243. लोककंठसँ संकलित

244. उपरिवत्

245. उपरिवत्

246. उपरिवत्

247. उपरिवत्

248. गीतनाद-विभूति आनन्द, पृ. 217-218

249. लोककण्ठसँ संकलित

250. उपरिवत्

251. गीतनाद- विभूति आनंद, पृ.-216 ।

252. लोककण्ठसँ संकलित ।

253. अमरेश महराज, ग्राम- महुआसिमरी जिला- दरभंगासँ प्राप्त ।



सप्तम अध्याय

आधुनिक मैथिली भाषामे भोजनक उपकरण सम्बन्धी शब्दावली

उपकरण कार्य-व्यापार सम्बन्धी ओ साधन थिक जाहि द्वारा पाक सम्बन्धी विविध कार्यक सम्पादन होइत अछि । भोजनसँ सम्बद्ध भिन्न-भिन्न प्रक्रियामे अनेकानेक एहन साधन सभक प्रयोग कयल जाइछ जकर सहायतासँ भोज्य सामग्री तैयार होइछ तथा भोजन-व्यापारक सम्पादन होइछ ।

एहि समस्त स्थूल साधनकेँ भोजन सम्बन्धी उपकरण कहल जा सकैछ । प्रयुक्त द्रव्यक आधारपर एहि उपकरण सबकेँ निम्नलिखित वर्गमे राखल जा सकैछ -

1. धातूपकरण　　2. प्रस्तरोपकरण

3. मृत्तिकोपकरण　　4. काष्ठोपकरण

5. वंशोपकरण　　5. तृणोपकरण

1. धातूपकरण :

पात्रक हेतु सामान्य शब्द **बासन/बरतन/बर्तन-बासन, बासन-कूसन** अछि । धातुक बासनकेँ **दर्बजात/दरबजात** कहल जाइछ । भोजनक उपकरण बनयबामे विभिन्न प्रकारक धातु ओ धात्विक मिश्रणक उपयोग कयल जाइछ । एकरा सभकेँ **दरब** (सं. द्रव्य) कहल जाइछ । बदामी रंगक अत्यन्त नमनशील धातु विशेषकेँ **ताम/तामा/ताम्बा** कहल जाइछ । ताम ओ जस्ताक मिश्रणसँ बनल धात्विक मिश्रणकेँ **पित्तर/पित्तरि** कहल जाइछ । एहि धातुक रंग अल्प पीयर होइत छैक । ई तामक अपेक्षा अधिक दृढ होइत अछि । ताम ओ राङाक मिश्रणसँ बनल उपधातुकेँ **काँस/काँसा** कहल जाइछ । एकर शुद्धतम रूपमे ताम ओ राङाक अनुपात नओ तथा एक रहैत छैक । एहि शुद्धतम रूपकेँ **फूल** कहल जाइत छैक । राङाक अनुपात बढ़ने काँसक गुणमे क्रमिक कमी देखल जाइछ । पित्तरिमे सीसाक मिश्रणसँ बनल उपधातुकेँ **कँसकूट/कसकूट** कहल

जाइछ । ई अपेक्षाकृत ललौन होइछ । **पित्तरिमे** निकिलक मिश्रणसँ बनल चमकदार धात्विक मिश्रण तैयार होइछ जकरा **गिलट** कहल जाइत छैक । पित्तर एवं काटीन नामक उपधातुक मिश्रणसँ बनल धात्विक मिश्रणकेँ **सिल्पर/सिल्वर** कहल जाइछ । एहिसँ बनल उपकरण **सिलवटिया** कहल जाइछ । आइकाल्हि **अल्मुनियम/अलमुनिआ/हरमुनिआ** नामक द्रव्यक उपयोग बासनक हेतु अत्यन्त प्रचलित भऽ गेल अछि । ई श्वेताभ वर्णक धातु विशेष थिक । भोजनसँ सम्बद्ध किछु विशिष्ट बासन सभ **लोह/लोहा** नामक धातुसँ बनैछ ।

विभिन्न धातु ओ धात्विक मिश्रणसँ अनेक विशेषण बनैत अछि जेना तामक बासनकेँ **तमहा** कहल जाइछ । पित्तरक बासनकेँ **पितरिया** कहल जाइछ । काँससँ निर्मित बासनकेँ **कँसहा/कँसही** ओ फूलसँ निर्मित बासनकेँ **फुलहा/फुलही** कहल जाइछ । पित्तरक बासनमे राखल खाद्यमे उत्पन्न विकृत स्वादकेँ **पितराइन** तथा काँसक बासनमे राखल खाद्यमे उत्पन्न विकृत स्वादकेँ **कसाइन** कहल जाइछ ।

मूल धातु ताम, जस्ता आदिकेँ उचित मात्रामे परस्पर मिला कऽ तैयार कयल गेल बासनकेँ **कराउत** कहल जाइछ । ढलाइ द्वारा तैयार बासनकेँ **ढलआ/ढलुआ** कहल जाइछ । पीटि कऽ तैयार कयल बासनकेँ **पिटुआ** कहल जाइछ । उपयोग कयल पुरान बासनकेँ रेस ओ छीलि-छालि कऽ नव बासन बना देलापर ओ **नड़िया/नड़िआ** कहल जाइछ । फूटल बासनक हेतु **फुट्टा** शब्द व्यवहृत होइछ । पुरान फूटल बासनक भग्न अंशकेँ जोड़बाक क्रिया **रेसब** होइछ । एहन बासनकेँ गला कऽ बनाओल नव बासनकेँ **उपटा** कहल जाइछ । बासनक सतहकेँ छीलि कऽ शोभाधायक आकृति उतारबाक क्रिया **छीलब** होइछ आ एहि प्रक्रियासँ तैयार बासनकेँ **छिलुआ/पहलदार** कहल जाइछ । शोभाधायक आकृतिकेँ **पहल** कहल जाइछ ।

पित्तरि, ताम आदिक बासनक बाहरी भागमे शोभाक हेतु उभर-खाभड़ सतह उखाड़ल रहैछ जकरा **मठार/दाग/दग्गी** कहल जाइछ ।

बासनक आधार भागकेँ **पेन/पेनी/पेन्दी** कहल जाइछ । कोनो-कोनो बासनक पेनक निचला भागमे पेनकेँ जमीनक साक्षात् सम्पर्कसँ बचयबाक व्यवस्था कयल रहैत छैक । एहि व्यवस्थाकेँ **गोड़ा** कहल जाइछ । पेनक उपरका पार्श्वभागक घेराकेँ **पाँजर** कहल जाइछ । पाँजरक मोटाइकेँ **देबाल** कहल जाइछ । पाँजरक उपरका खुजल भागकेँ **मुँह** कहल जाइछ । संकुचित मुखाग्र आकारकेँ **थपोल** कहल जाइछ । मुँह ओ पाँजरकेँ सम्बद्ध करऽबला भागकेँ **गर्दनि** कहल जाइछ । गर्दनिक उपरका भागमे क्षैतिज अवस्थामे मोड़ल भागकेँ **कान** कहल जाइछ ।

अनेक बासनमे दू अथवा तीन अवयवकेँ जोड़ि कऽ पूर्ण आकृति तैयार कयल

जाइछ । एहिमे प्रत्येककेँ **खप्पा** कहल जाइछ । खप्पा सभक संयोजन स्थानकेँ **जोड़** कहल जाइछ । टूटल खप्पाकेँ जोड़बाक क्रिया **रेसब** होइत अछि । रेसल बासन **रेसुआ** होइत अछि । खसलासँ वा कठोर चोट लगने बासनक सतह धरि जाइछ । एकरा **पचकब** कहल जाइछ ।

पाक व्यवहारक पात्र :

पित्तरिक करीब एक फूट व्यासक किञ्चित अवतल पेनीवला भात रन्हबाक बासनें **तसला/तसलवा** कहल जाइछ । ई पातर चद्दराक पिटुआ बासन होइत अछि । एकर पाँजरवला भाग पेनीसँ करीब तीस डिग्रीक कोणपर मुड़ल रहैत छैक आ एकर गर्दनि करीब एक आङ्गुर ठाढ़ रहैछ । गर्दनिक परितः करीब दू आङ्गुर चाकर कान बाहर दिस मुड़ल आ मुँह दिस ढालू रहैत छैक । छोट तसलाकेँ **तसली** कहल जाइछ । तसलेक आकृतिक काँस, फूल अथवा पित्तरिक पैघ बासनकेँ **झिंगा/झिड्गा/झिङा** कहल जाइछ । एकर पेनक व्यास करीब दू फीट होइत छैक आ पेन बेसी अवतल रहैत छैक । पेन आ पाँजरक बीच करीब एक सय बीस डिग्रीक कोण बनैत छैक । एकर कान करीब चारि आङ्गुर चाकर, क्षैतिज तथा उत्तल होइत छैक । पैघ झिंगाकेँ **खाँखड़/खँखड़ा/खँखड़हर/खखड़हरा** कहल जाइत छैक । झिंगाक लघु प्रभेदकेँ **झिंङ्गी/झिंकी/झिंगी** कहल जाइत छैक । एकर सभक उपयोग खास कऽ भोजमे चाउर-दालि आदि रन्हबाक पात्रक रूपमे होइत छैक ।

फूल, कसकुट अथवा काँससँ निर्मित गोलाकार पेट, सदृश्य गर्दनि तथा क्षैतिज ओ समतल कानसँ युक्त बरतनकेँ **बट्टुक/बट्टू/बटुआ** कहल जाइत छैक । एकर पेटक व्यास करीब एक बीत होइत छैक आ एकर देबाल मोट ओ ठोस होइत छैक तथा ई वरुआ बासन थिक । एकर छोट प्रभेदकेँ **बटुली/बटलोही/बटलोहिया** कहल जाइत छैक ।

पित्तरक समतल पेनवला पाक पात्रक प्रभेदकेँ **हंडी/हाँड़ी** कहल जाइछ । एकर पेन ओ पाँजरक बीचक मोड़ थोड़े गोलाइ लेने समकोणिक होइछ । पाँजरक उपरका भाग मुँह दिस करीब सय डिग्रीपर मुड़ल रहैत छैक । एकर गर्दनि करीब दू आङ्गुर ठाढ़ होइछ तथा कानक चौड़ाइ करीब तीन आङ्गुर होइत छैक । एकर गर्दनि ओ कानवला भागक बीच करीब सय डिग्रीक मोड़ रहैत छैक तथा कान मुँह दिस ढालू रहैत छैक । पैघ हण्डीकेँ **हण्डा/हाँड़ा/टोकनी/टुकनी** कहल जाइछ । एहिमे करीब तीन सेर धरि चाउर रान्हल जा सकैछ ।

करीब पाँच सेर चाउर रन्हबाक पित्तरक हण्डीक प्रभेदकेँ **टोकना/टुकना** कहल जाइछ । एकर आकृति हण्डीसँ भिन्न होइत छैक । एकर पेनी अवतल होइत छैक

आ पाँजरक निचला भाग ओ बीचक मोड़ थोड़ेक गोलाइ लेने समकोणिक होइछ । मुदा एकर पाँजरक उपरका भाग शंकुक आकृतिक होइत छैक ।

मुसलमान ताम अथवा कसकुटक छोट मुँहवला तौलाक आकृतिक बासनकेँ **पतीला** कहैत छथि । छोट पतीलाकेँ **पतीली** कहल जाइछ । तसलाक आकृतिक पतीलाकेँ **देगचा/डेगचा/डेकचा** कहल जाइछ । छोट देगचाकेँ **देगची/डेगची/डेकची** कहल जाइछ । पैघ देगचाकेँ **देग** (फा.) /**डेग** कहल जाइछ ।

मुसलमानक भोज-भातमे व्यवहृत भात रन्हबाक समतल पेनवला तामक पैघ बासनकेँ **तामी/तमिआ** कहल जाइछ । एकर पाँजरक आकृति टोकनासँ मिलैत छैक मुदा गर्दनि करीब छओ इंच ठाढ़ होइत छैक । एकर छोट प्रभेदकेँ **तम्हेरी** कहल जाइछ ।

विविध उपयोगमे आबऽवला बासनक एकटा प्रभेदकेँ **बहगुना/बहुगुना/बरगुना/बरगुन्ना/टोपिया/गमला/घमला** कहल जाइछ । एकर पेनी समतल होइत छैक तथा एकर पेटवला भागक चारू कात समकोणपर ठाढ़ घेरा रहैत छैक । घेरावला भागक उपरका सतहपर बाहर दिस मुड़ल करीब दू आङुर चाकर समतल कान बनल रहैत छैक । पैघ टोपियाकेँ **टोपा** कहल जाइछ । ओहूसँ पैघकेँ **टोप** कहल जाइछ । कोनो-कोनो टोपा कान रहित होइत छैक तथा एकरा पकड़बाक हेतु उपरका भागक पार्श्वमे दू टाम एक दोसराक समक्ष दूटा धातुक वलय लागल रहैत छैक । एहि वलयकेँ **कड़ा/बाला/बलिया/कड़ी** कहल जाइत छैक ।

तरकारी रन्हबाक हेतु पित्तरि अथवा काँसक खुलल मुँहक बासन सेहो व्यवहृत होइछ । एकरा **कड़ाही/लोहिया/कँसहड़ी/लोहँदा/लोहना** कहल जाइछ । ई लोहाक सेहो बनैत अछि । लोहे जकाँ पित्तरियोसँ **कड़ाह**, **छोलनी**, **कफगीर** (मुसलमानमे), **छनौटा/सनौटा** (ग्रि.)/**झँझरा/झरना/झाँझ** आदि पाक सम्बन्धी पात्र बनाओल जाइछ ।

पाक सम्बन्धी विभिन्न पात्रक मुँहकेँ झँपबाक हेतु व्यवहृत बासनकेँ **ढकना/ढाकन/ढपना/झकना/झपना** कहल जाइछ । मुसलमान एकरे **सरपोस** कहैत छथि ।

भोजन ओ पान सम्बन्धी :

खयबाक हेतु आधार रूपमे व्यवहृत समतल आधार ओ वृत्ताकार परिधिवला काँस, फूल अथवा पित्तरक बासनकेँ **थारी** (सं. स्थाली)/**थाली/थरिया/छीपा** कहल जाइछ । एकर परिधिक चारू कातक उठल भागकेँ **कोर/बाढ़/कान** कहल जाइत छैक । थारीक भीतरी व्यास करीब एक फूटसँ सवा फूट धरि होइत छैक । एक फूटसँ कम व्यासवला थारीकेँ **रिकबी/रिकाबी/रिकेबी/छिपली/छिपुली** कहल जाइछ । छोट छिपलीकेँ **छीप** कहल जाइछ । अत्यन्त छोट-छोट छिपलीकेँ **छीपी/छिप्पी** कहल

जाइछ । पैघ थारीकेँ **थार** कहल जाइछ । काँसक थारीकेँ **ढाँठी** (ग्रि.)/**ठाँठी** (ग्रि.) कहल जाइछ । वर्णरत्नाकरमे एहि हेतु **ठठी** शब्द भेटैत अछि ।[1] मधुर आदि रखबाक हेतु करीब दू हाथ व्यासक ओ चारि आङुर ठाढ़ बाढ़वला पित्तरिक थारकेँ **परात** कहल जाइछ ।

आयातक स्थान, बाढ़क खड़ड़ ओ काटक भिन्नताक आधारपर थारीक अनेक प्रभेद होइत छैक । आगरासँ आयातित थारीक प्रभेदकेँ **अगरैल/अगरैलही** कहल जाइत अछि । एकर कोर करीब दू आङुर ठाढ़ तथा बाहर दिस किञ्चित झुकल रहैत छैक । दू आङुर ठाढ़ तथा ऊपर दिस एक आङुर चाकर कानवला थारीकेँ **गायसरी/गेसरी/गैसरी** कहल जाइत छैक । चारि आङुर सीधा ठाढ़ कानवला पित्तरक थारीकेँ **गिरमी/मिर्जापुरी** कहल जाइछ । ई मिर्जापुर (उ.प्र.)सँ आयातित होइछ । चारि आङुर ठाढ़ तथा बाहर दिस अल्प झुकल बाढ़वला थारीकेँ **झरका/धरका/धरुका** कहल जाइछ । चारि आङुर सीधा ठाढ़ कानवला फूलक थारीकेँ **मलँगिया/पुरबी थारी** कहल जाइछ । करीब पाँच आङुर बाढ़वला कठौतक सदृश थारीकेँ **मलाही/कठौतिया** कहल जाइत छैक । डेढ़ आङुर बाढ़वला थारीकेँ **बलेसरी** कहल जाइछ । जाहि थारीक बाढ़ एक आङुर होइत छैक तथा कान भीतर दिस अवतल सतहसँ युक्त रहैत छैक, ओकरा **बग्गी/बोंगी/बौंगी /बङ्कला** कहल जाइत छैक । डेढ़ आङुर ठाढ़ बाढ़वला उत्थर थारीक प्रभेदकेँ **कंचनी/कंचनपुरी** कहल जाइछ । पैघ आकृति एवं छितनार बाढ़वला थारीकेँ **छैनीकाट** कहल जाइछ । करीब आधा आङुर ठाढ़ बाढ़वला थारीक प्रभेदकेँ **सरैया** कहल जाइछ ।

मुसलमान वृत्ताकार एवं उत्थर धातु पात्रकेँ **तसत** कहैत अछि । ई उपहार देबाक हेतु सामान्यतया प्रयुक्त होइछ । छोट तसतकेँ **तश्तरी** कहल जाइछ जे पान-सुपारी प्रस्तुत करबाक हेतु प्रशस्त बूझल जाइछ । करीब एक आङुर ठाढ़ घेराक ऊपर करीब चारि आङुर चाकर ओ उत्तल कानसँ युक्त मुसलमानमे व्यवहृत उत्थर पात्रकेँ **सेनी/सैनी/सैन** (ग्रि.) कहल जाइछ । ई भोज्य पदार्थक स्थानान्तरणक हेतु व्यवहृत होइछ ।

दालि, तरकारी आदि खयबाक हेतु फोंक गोलाक अर्द्धभागक आकृतिक मोट देवालवला धातु पात्रकेँ **कटोरी** (सं.करोटि) कहल जाइछ । मुसलमान एकरा **प्याली/पिआली/पेआली** सेहो कहैत छथि । पैघ कटोरीकेँ **कटोरा/पिआला/पेआला/प्याला** कहल जाइछ । गोड़ा लागल पैघ कटोराकेँ **बाटी/मेँहिबाटी** (ग्रि.) **गोड़लगुआबाटी/गोड़ावलाबाटी** कहल जाइछ । पैघ बाटीकेँ **बट्टा/बटबा** कहल जाइछ । फूलक गोड़ाविहीन बटबाकेँ **जाम** कहल जाइछ । पातर देवालवाला पित्तरक पैघ जामकेँ **बटिया** कहल जाइछ । मोट देवालसँ युक्त पैघ बटियाकेँ **गमला/घमला** कहल जाइछ । काँस अथवा पित्तरक करीब एक बीत व्यासक समतल पेनीवला कठौतक सदृश बासनकेँ **अढ़िया/कठौत** कहल जाइछ । एकर पाँजरक घेरा पेनसँ करीब एक सय बीस डिग्रीक कोण बनबैत छैक तथा पाँजर बाहर दिस उत्तल होइत छैक । चिक्कस आदि सनबाक हेतु

अढ़ियाक व्यवहार होइत अछि । मुसलमानमे व्यवहृत अढ़ियेक सदृश बासनकेँ लगन कहल जाइछ ।

पानि पीबाक हेतु व्यवहृत पात्रक एकटा प्रभेद **लोटा** होइत अछि । ई सामान्यत: फूलक होइछ । तामक लोटाकेँ **तमहा** कहल जाइत छैक । सामान्य आकृतिसँ छोट लोटाकेँ **लोटकी/लोटिया** कहल जाइछ । पैघ लोटाक हेतु **लोटका** शब्दक व्यवहार अछि । लोटासँ पानि ढारि कऽ पीबाक हेतु छोट सन लोटाक व्यवहार होइछ । एकरा **टुकनी** कहल जाइत छैक । छोट आकृतिक गोल लोटाकेँ **टुनमुन/टुनमुनिआ** लोटा कहल जाइछ । अत्यन्त छोट लोटकीकेँ **लुटकी** कहल जाइछ ।

आयातक स्थान, दरब ओ आकृतिक आधारपर विभिन्न प्रकारक लोटा भिन्न-भिन्न नामे अभिहित होइत अछि । **जयपुरी/जयपुरिया** लोटा फूल अथवा काँसक होइत छैक । एकर पेन समतल तथा गोड़ाविहीन होइत छैक । पाँजरक घेरा गोल तथा पेनपर उदग्र रहैत छैक । पाँजरक उपरका भाग किंचित् शंक्वाकार होइत छैक तथा गर्दनि करीब चारि आङुर नाम ओ पाँजरक शंक्वाकार भागपर उदग्र रहैत छैक । एहि लोटाक पाँजरक गोलवला भाग पहलदार होइत छैक । दानक हेतु व्यवहृत अत्यन्त हल्लुक दरबसँ निर्मित गोड़ा लागल, अवतल पेन शंक्वाकार पाँजर तथा बाहर दिस मुड़ल कानवला लोटाकेँ **बम्बइया/पूर्वी/हवासी/कुमकुमा/मलंगिया/दनहा** कहल जाइछ । अवतल पेनीपर करीब अस्सी डिग्रीक कोण बनबैत पाँजरसँ युक्त गोड़ा विहीन पित्तरिक लोटाकेँ **जगाधरी/मारवाड़ी** कहल जाइत छैक । एकर पाँजरक उपरका भागमे करीब एक आङुर चाकर क्षैतिज कान बनल रहैत छैक । **मुरादाबादी लोटा** फूल अथवा काँसक होइत छैक । एकर पेनी खूब अवतल होइत छैक तथा ई गोड़ायुक्त होइछ । एकर पाँजरक निचला भाग शंक्वाकार होइत छैक तथा गर्दनिसँ उपरका भाग निचला शंकुक विपरीत दिशामे मुड़ि कऽ छिड़िआयल रहैत छैक । पित्तरिक लोटाक एकटा प्रभेद **कलगइआ**[1] होइत अछि । एकर पेन गोड़ाविहीन आ किञ्चित अवतल होइत छैक । एकर पाँजरक निचला भाग बेलनाकार तथा उपरका भाग शंक्वाकार होइत छैक । पाँजरक उपरका भागमे करीब सय डिग्रीक कोणपर दू आङुर ठाढ़ कान रहैत छैक । एहि लोटाक बाहरी भागमे कोदबाक चेन्ह सदृश **मठार** उत्पन्न कयल रहैत छैक । मठार रहित गोड़ाविहीन पितरिया लोटाक चौरस पेटवला प्रभेदकेँ **परयागी** कहल जाइत छैक । गोलाक आकृतिक पेट ओ एक आङुर ठाढ़ कानवला लोटाक प्रभेदकेँ **कासीवाल** कहल जाइछ । वैष्णव बाबाजी लोकनिक गोलपेटवला अत्यन्त छितनार कानवला लोटक प्रभेद केँ **साधूशाही** कहल जाइत छैक ।

अनेक लोटासँ कम-कम मात्रामे पानि चुअयबाक हेतु ओकरा पार्श्वमे धातुक नली लागल रहैत छैक । एहि नलीकेँ **टोंटी/टोटी** कहल जाइत छैक । टोंटीसँ युक्त लोटाकेँ **टोंटीदार** कहल जाइछ । टोंटीदार लोटाक अत्यन्त छोट प्रभेदकेँ **टुइयाँ** कहल

जाइछ । झोझ टोंटीसँ युक्त लोटाक प्रभेदकेँ **हथहड़/गड़ुआ/गेड़ुआ** कहल जाइछ । छोट हथहड़केँ **हथहड़ी** कहल जाइछ । गोल अग्रभागवला टोंटीसँ युक्त लोटाकेँ **सोबरना/सुवर्ना** कहल जाइत छैक । छोट सोबरनाकेँ **सोबरनी/सुवर्णी** कहल जाइछ । नाम शरीर तथा घपोल मुँहवला सोबरनाक प्रभेदकेँ **झारी/झारिल** कहल जाइछ । हाथसँ पकड़बाक हेतु डंटी लागल झारीक प्रभेदकेँ **माधवसिंघी** कहल जाइछ । **राजासाही, सलमशाही** आदि विभिन्न कालमे प्रचलित लोटाक प्रभेद छल ।

मुसलमान पैघ मुँहवला टोंटीदार लोटाक उपयोग करैछ । एकरा **बधना** कहल जाइत छैक । छोट बधनाकेँ **बधनी** कहल जाइछ । पानि पीबाक हेतु मुसलमानमे व्यवहृत तामक गोड़ायुक्त कटोराकेँ **पनिपीया** कहल जाइछ । पनिपीयाक सदृश फूल, काँस आदिक बासनकेँ **अपखोरा/अबखोरा/अमखोरा/खोरा** कहल जाइछ ।

गंगाजल रखबाक हेतु बोतलक आकृतिक धातुपात्रकेँ **गंगाजली/गङ्गाजली** कहल जाइछ । पेंचयुक्त ढक्कनसँ युक्त लोटा जाहिमे कामरक हेतु जल बोझल जाइछ, सेहो **गंगाजली** कहल जाइछ ।

पानियेँ पीबाक हेतु व्यवहृत समतल पेनी ओ किञ्चित बेलनाकार पेटवला धातु पात्रकेँ **गिलास/ग्लास** (अं. ग्लास)/**गलास** कहल जाइछ । छोट गिलासकेँ **गिलसी** कहल जाइत अछि । वक्र पहलसँ युक्त गिलासकेँ **ऐंठुआ गिलास** कहल जाइछ ।

पानिक संचय करबाक हेतु समतल पेनी, बेलनाकार पेट ओ चारि आङुर ठाढ़ कानवला बासनकेँ **गगरा** कहल जाइछ । छोट गगराकेँ **गगरी** कहल जाइछ । तामक गगराकेँ **तमघैल/तमघैला** कहल जाइछ । छोट तमघैलकेँ **तमघैली** कहल जाइछ । काँस अथवा फूलसँ ढरुआ तमघैल सेहो बनैत अछि । एकर आकृति गगरा अथवा घैलसँ भिन्न होइत छैक । एकर पेन करीब चारि आङुर व्यासक गोरादार होइत छैक । पाँजरक व्यास पेनीसँ ऊपर दिस क्रमश: अधिक भेल रहैत छैक आ मध्य भागमे जा कऽ पेट करीब एक फूट चाकर भऽ जाइत छैक । पश्चात् पेटक व्यास क्रमश: ऊपर दिस घटल रहैत छैक आ पुन: चारि आङुर भऽ जाइत छैक । पेटक उपरका भागमे करीब एक बीत नाम घपोल गर्दनि बनल रहैत छैक । गर्दनिक उपरका भागमे बाहर दिस झुकल करीब दू आङुर चाकर कान बनल रहैत छैक । एहि तमघैलक छोट प्रभेदकेँ **कलसा** कहल जाइछ । छोट कलसाकेँ **कलसी/ठिल्ली/ठिलिया** कहल जाइत छैक । समतल पेन, संकुचित मुखाग्र, किञ्चित बेलनाकार पेट ओ करीब एक हाथ नाम गर्दनिवला पानि रखबाक पात्रकेँ **सुराही/सोराही** कहल जाइछ । समतल पेन ओ नीचासँ ऊपर दिस क्रमश: अधिक व्यासवला पेटसँ युक्त धातुक खुलल मुँहक पात्रक उपयोग मुसलमान पानि जमा करबाक हेतु करैत छथि । एहि पात्रकेँ **मटका/मटुका** कहल जाइत छैक ।

लोहे जकाँ पित्तरिक डोल, बाल्टी सेहो बनैत अछि मुदा ई ढरुआ होइत अछि। साधु-संन्यासी पित्तरिक कम व्यासक नाम डोलक उपयोग करैत देखल जाइत छथि, जकरा **कमण्डल/कमण्डलु** कहल जाइत छैक।

भोजन उठा कऽ खयबाक हेतु छोट सन कड़छु सदृश पात्रकेँ **चम्मच/चम्मस/चमचा** कहल जाइछ। एकर अग्रभाग छिछलाह आ अल्प गँहीर होइत छैक। छोट चम्मचकेँ **चमची** कहल जाइछ।

भोजनक क्रममे आधारमे गोल ओ ऊपर दिस पैघ मुँहवला छितनार बासनक उपयोग हस्तप्रक्षालन पात्रक रूपमे होइछ। एकरा **चिलमची/चिलिमची/सिलफची/डाबर** कहल जाइछ।

पान रखबाक हेतु धातुक चौखूट डिब्बाकेँ **पनबट्टा** कहल जाइछ। छोट पनबट्टाकेँ **पनबट्टी** कहल जाइछ। एहिमे सुपारी आदि रखबाक हेतु खोल बनल रहैत छैक। पानक खिल्ली रखबाक हेतु व्यवहृत धातुक खोल रहित डिब्बाकेँ **खिलबट्टी** कहल जाइछ। पैघ खिलबट्टीकेँ **खिलबट्टा** कहल जाइछ। पान रखबाक हेतु मुसलमानक गोल पनबट्टाकेँ **पानदान** कहल जाइछ। किमाम रखबाक डिब्बाकेँ **किमामदान** कहल जाइछ।

चाउर आदि नपबाक हेतु तामक कटोरी सदृश नपनाकेँ **तामा** कहल जाइछ। ई तामा काष्ठनिर्मित सेहो होइछ। डिब्बा आदिक बनाओल पाओ धरिक हेतुक नपनाकेँ **पैली** कहल जाइछ।

लोहाक सामग्री :

भोजन व्यापारमे प्रयुक्त किछु विशिष्ट बासन ओ उपकरण लोहेक होइछ।

भोजन निर्माण व्यापारमे लोहाक चदरासँ बनल गोलार्द्धक आकृतिक गँहीर ओ पैघ बर्तन जकर उपरका भाग खुलल रहैछ से **कड़ाह** कहल जाइछ। एहिमे विभिन्न वस्तुकेँ छानल जाइछ वा अधिक मात्रामे तरकारी करबाक हेतु ई उपयुक्त होइत अछि। छोट कड़ाहकेँ **कड़ाही** कहल जाइछ। **बुन्दा/बुन्ना** लोहाक कड़ाहीकेँ **लोहिया** कहल जाइछ। कड़ाह, लोहिया आदिकेँ पकड़बाक हेतु ओकर पार्श्वमे आमने-सामने लागल गोल वलयकेँ **बलिया** ओ अर्द्धवृत्ताकार वलयकेँ **कान/कड़ा/काड़ा/कड़ी** कहल जाइछ। जिलेबी छनबाक हेतु समतल आधार ओ करीब चारि आङुर ठाढ़ घेराबला कड़ाहीक उपयोग होइछ। एकरा **ताइ** (सं.तापिका) कहल जाइछ। दूध औँटबाक हेतु करीब एक बीत व्यासक गोल ओ गँहीर कड़ाहीकेँ **तबका** कहल जाइछ।

कड़ाहमे देल वस्तुकेँ तेल अथवा घीसँ पृथक् करबाक हेतु लोहक एकटा

छिद्रमय औजारक उपयोग होइछ। एकरा **झाँझ/छन्ना/छनौटा/झरना** कहल जाइछ। एहिमे लोहाक एक गोट गोल छिद्रयुक्त चदरा रहैत छैक जकरा पकड़बाक हेतु डंटी लागल रहैत छैक।

कड़ाहमे देल वस्तुकेँ लाड़बाक हेतु प्रयुक्त औजारकेँ **छोलनी** कहल जाइछ। ग्रियर्सन एकरा **खुरपी/खुरचनी** (ग्रि.) कहलनि अछि।[3] एकर पैघ प्रभेदकेँ **केओँचा** कहल गेल अछि।[4] एहिमे लोहाक एकटा छड़क नीचा तरहत्थीक आकृतिक चाकर फलक लागल रहैत छैक।

विभिन्न पदार्थकेँ एक बासनसँ दोसर बासनमे स्थानान्तरित करबाक हेतु प्रयुक्त औजारकेँ **कड़छु/कड़छुल/करछी** कहल जाइछ। एहिमे लोहाक छड़क निचला भागमे गोलार्द्धक आकृतिक गँहीर कटोरी सम्बद्ध रहैत छैक। छोट कड़छुकेँ **कड़छुल्ली** कहल जाइछ। पैघ कड़छुकेँ **डब्बू/डब्बुक** कहल जाइछ।

कड़ाहीसँ जिलेबी आदि निकालबाक हेतु लोहाक एकटा पातर ओ नोखगर छड़क व्यवहार होइत अछि। एकरा गऽज कहल जाइत छैक। गऽजकेँ मुसलमानमे **सीक/सीख/सिखचा/सीखचा** कहल जाइछ। लोहाक एकटा अन्य औजार जे वस्तुकेँ पकड़बाक हेतु व्यवहृत होइछ से **चुट्टा/चिमटा** कहल जाइछ। छोट चुट्टाकेँ **चूटी/चुट्टी/चिमटी** कहल जाइछ। एहिमे एकटा करीब दू आङुर चाकर लोहाक मध्यसँ मोड़ल चदरा रहैत छैक जकर दूनू छोर अग्रभागमे निकलल रहैत छैक। धातुक गर्म बासनकेँ पकड़बाक हेतु लोहाक कैँचक आकृतिक औजार विशेषकेँ **सड़सी/सनसी/गहुआ** कहल जाइछ।

लोहक वृत्ताकार चदरासँ बनल पातर ओ करीब एक बीत व्यासक उपकरण जाहिपर रोटी आदि पकाओल जाइछ, **तऽब/तबा/तावा** कहल जाइछ।

तऽबसँ रोटी निकालबाक हेतु व्यवहृत मोड़ल सड़सी सदृश औजारकेँ **अरसा/बगुली** कहल जाइछ। तरकारी कटबाक वा कतरबाक हेतु काष्ठाधारमे लागल चाकर ओ टेढ़ फलवला हँसूकेँ **फाँसु/फाँसुल/फहसुल/पहसुल/बैठी/पघरिया** (पगथरिआ)/**हँसु** कहल जाइछ। आधुनिका लोकनि एकर स्थानपर **छूरी/चक्कूक** सेहो व्यवहार करैत छथि। दवाइ, मशाला आदि कुटबाक हेतु खुलल मुँहवला समतल आधार ओ बेलनाकार पेटवला उक्खरि तथा शंकुक आकृतिक ठोस लौह दण्डक समाठक समष्टिकेँ **खल-मूसल/खरलमुसल/खलमुसली/खरलमुसली/ इमामजिस्ता/इमामजस्ता/ हमामजस्ता/ हमामदिस्ता** (ग्रि.) कहल जाइछ।

पानि भरबाक हेतु लोहक चदरासँ बनल गँहीर किञ्चित बेलनाकार पात्रकेँ **डोल/दोल** कहल जाइछ। एकरा पकड़बाक हेतु उपरका भागमे लागल अर्द्धचन्द्राकार

लोहक छड़कें **डंटी/कड़ी** कहल जाइछ । पैघ डोलकें **बाल्टी/बाल्टीन** कहल जाइछ । अत्यन्त पैघ बाल्टीकें **बालट** कहल जाइछ । बालटसँ विशेष पैघ बेलनाकार चदराक जलपात्रकें **टब/टप** कहल जाइछ ।

2. प्रस्तरोपकरण :

भोजन निर्माण प्रक्रियामे पाथरोक विभिन्न उपकरणक व्यवहार होइछ । कारी रंगक पाथरकें उत्तम मानल जाइछ । एकरा **तेलिया पाथर** कहल जाइछ । एहिसँ कने मध्यम कोटिक ललौन पाथर मानल जाइछ । एकरा **गेहुआँ/गहुमा** पाथर कहल जाइछ । उज्जर रंगक पाथरकें **दुधिया/उजरा** कहल जाइछ । एकर एकटा विशिष्ट प्रभेद होइछ जकरा **कर्मच** कहल जाइछ ।

चिक्कस पिसबाक पारम्परिक उपकरणकें **जाँत/जाँता** कहल जाइत अछि । एहिमे समतल दूटा वृत्ताकार आधारवला पाथर होइछ । एकरा दूनूकें **पाट/पट्टा** कहल जाइछ । तरका पट्टाकें **तरका पट्टा/निचला पट्टा/तरौटा/तलौटा** कहल जाइछ । उपरका पट्टाकें **उपरौटा/उपरका पट्टा** कहल जाइछ । एकर मध्यमे मुँह बनल रहैछ । एहिमे अन्न दऽ कऽ पीसल जाइछ तथा दालि दरड़ल जाइछ । दालि दरड़बाक छोट सन जाँतकें **चकरी/चक्की** कहल जाइछ । जाँत जाहि लकड़ीक धूरीपर नचैत अछि ओकरा **कील/किल्ला** कहल जाइत छैक । जाँतक उपरका पाथरकें नचयबाक हेतु ओहिमे एकटा काष्ठ खण्ड ठोकल रहैत छैक । एकरा **हाथर/हाँथर/हँथरा/हथड़ा** कहल जाइत छैक । चकरीक मध्यवर्ती काष्ठक धूरीकें **किल्ली** कहल जाइत अछि । जाँत ओ चकरीक कील ओ हाँथर कमार द्वारा उत्पादित होइत अछि । जाँतक परित: माटिक घेरा जाहिमे पीसल अन्न खसैत अछि, चाकी कहल जाइछ । दालि दरड़बाक प्रस्तरोपकरणकें चकरी कहल जाइछ ।

एक डेढ़ हाथ नाम पाथरक चौकोर चौरस खण्डवला मशाला पिसबाक साधनकें **सिलौट/सिलौटी/सील/सिल्ला/सिलवट/पाटी** कहल जाइछ अछि । विस्तृत सिलौटकें **जहाजी काला** कहल जाइछ । एहिपर मशाला राखि पिसबाक एक बीत लगभग नाम गोलीन पाथरक खण्ड रहैछ । जकरा **लोढ़ी/लोढ़ा** कहल जाइछ । एहि दूनू साधनमे लोहक औजार छेनी तथा हथौड़ीसँ खुरदुराह सतह बनाओल जाइछ । खुरदुराह भागकें **कुटनी** कहल जाइछ । कुटल रहलापर मसल्ला पिसबामे सुलभता होइछ । मसल्लाकें मेँही करबाक क्रिया **पीसब** होइछ । मसल्लाक चूर्णकें सिलौटपर पानि मिला कऽ पिसबाक क्रिया **असारब** कहल जाइछ । नोन आदिकें मेँही करबाक क्रिया **थूकब** होइछ । आद आदिकें कुचबाक क्रिया **थूरब/थकुचब/थूरब** कहल जाइछ । लोढ़ीक चोटसँ छहोछित भेल वस्तुकें **थकुचा** कहल जाइछ । गोल बाटीक आकारक पाथरक पात्र जाहिमे भाङ राखि दण्डक सहायतासँ पीसल जाइछ, से **कुण्डी** कहल जाइछ । प्रयुक्त दण्ड **भङघोटना/भङसोटा** कहल जाइछ ।

बाटी/बट्टाक आकारक गोल पाथरक उपकरणकें **पथरौटी** कहल जाइछ । आम्लिक वस्तु रखबाक ई मुख्य उपकरण थिक ।

3. मृत्तिकोपकरण :

पाक सम्बन्धी विभिन्न कार्यक हेतु माँटिक विविध प्रकारक उपकरणक प्रयोग सभ्यताक आदिए कालसँ प्रचलित रहल अछि । माँटिक उपकरण दुइ प्रकारक होइत अछि- काँच माटिक एवं आगिमे पकाओल माँटिक । तेँ मृत्तिकोपरकरणक दू वर्ग कयल जा सकैछ -

(क) काँच माँटिक उपकरण

(ख) आगिमे पकाओल माँटिक उपकरण ।

(क) काँच माटिक उपकरण-

भानस करबाक हेतु निश्चित स्थान वा घर रहैछ । एहन घरकें **भानसघर/भनसाघर/रसोइघर/चौका** कहल जाइछ । मुसलमानक भनसाघरकें **बबरचीखाना** कहल जाइछ । भानस करबाक हेतु निश्चित स्थान घरक एक कोनमे मानल जाइछ । एतऽ एक बीत वा एक हाथ ऊँच चौकोर चबुतरा बनाओल जाइछ । एकरा **चिनबार/चिनमार/चिनुआर** कहल जाइछ । एही चिनमारपर भानस करबाक लेल माटिक बनल उपकरण रहैछ, जकरा **चूल्हि/चूल्हा/चुल्हा/चुलहा** कहल जाइछ । चूल्हि बैसयबाक दिशा निश्चित रहैछ- पूब तथा पश्चिम मुँह । अशुभ कार्यमे उत्तर-दक्षिण मुँहे चूल्हि बैसाओल जाइछ । ईंटाकें बैसा कऽ बनाओल चूल्हि **ईंटाबला चूल्हि** कहल जाइछ । माटिमे दू-तीन हाथ नाम खाधि खूनि कऽ सेहो ओहिपर पाकक्रिया होइछ । एहन चूल्हि **तीर/तिउर/आरि/अहरी** कहल जाइछ । भूमिमे दू-तीन टा गोल आकृतिक छेद माँटि खूनि कऽ बनाओल जाइछ आ ओहि सभक भितरका माँटि हटा एकेटा मुँह बनाओल जाइछ । एहन बनल चूल्हि **कौल/कौल्ह/भुमकौल्ह/भुमकौल्हा/भुमकौल/भमकौल्ह** कहल जाइछ ।

चूल्हि बनयबाक हेतु पहिने माटिकें फोड़ि कऽ फुलाओल जाइछ । तत्पश्चात् ओहिमे गहूमक भुस्सा मिला कऽ नीक जकाँ सानल जाइछ । भुस्सा दऽ कऽ बनओलापर माँटि नहि फटैछ तेँ भुस्सा देब अनिवार्य रहैछ । एहि भुस्साक मिलावटक कारणेँ चूल्हिकें **भुसकौल्ह** सेहो कहल जाइछ । एहि प्रकारेँ माँटि तैयार कयल जाइछ ।

चूल्हिक हेतु एक बीत चौड़ाइक माटिक आयताकार आधार बनाओल जाइछ । ई आधार अढ़ाइ बीतसँ फाजिल नहि बनाओल जाइछ । एकरा **पट्टा** कहल जाइछ । पट्टा बनयबाक क्रियाकें **पट्टा ठोकब** कहल जाइछ । जखन पट्टा अधसुक्खू भऽ जाइछ तँ ओकरा ठाढ़ कऽ वृत्ताकार पथमे मोड़ि कऽ चूल्हिक घेरा तैयार कयल जाइछ । एकरा

दाबा कहल जाइत छैक । दाबाक दूनू छोरक बीच टुट्ठी भरि दूरी छोड़ि देल जाइछ । दूनू छोरक उपरका भागकेँ माटिक दंड द्वारा जोड़ल जाइत छैक । एहिसँ ओहि भागमे बनल आकृतिकेँ **पूता/पुत्ता/पुत्ती/पुस्ती** कहल जाइछ । पुत्ताक निचला खुलल भागकेँ चुल्हाक **मुँह** कहल जाइत छैक । दाबाक ऊपर तीन ठाम ऊँच कऽ माटिक पिण्ड दऽ देल जाइछ । एहि ऊँच स्थलकेँ **उझकुन** कहल जाइत छैक । पट्टा सुखि गेलापर ओहिमे मजगूती आ सुन्दरताक हेतु माटिक अल्प परत वा लेप चढ़ा देल जाइत छैक । एकरा **माटि लगैब** कहल जाइछ । चूल्हाक पेटवला भाग जाहिमे आगि जरैत रहैत छैक से **आँची/अँचिया/आँछी/अँछिया** कहल जाइत अछि । एकटा अँछियासँ युक्त चूल्हाकेँ **एकचुल्हिया** कहल जाइत अछि । अँछियाक संख्याक आधारपर ई **दुचुल्हिया, तिनचुल्हिया, चौचुल्हिया** आदि कहल जाइछ । धनदसिनियाँ सबमे तीन अँछियाक प्रयोजन पड़ैछ । सामान्यतः एकसँ दू चुल्हियाक व्यवहार घरक पाक क्रियामे कयल जाइछ । कनसारमे तिनचुल्हिया, चौचुल्हिया चलैत छैक । चूल्हि बनयबाक प्रक्रियाकेँ **चुल्हि पाड़ब** कहल जाइछ ।

मैथिल संस्कृतिक अन्तर्गत पावनि-तिहारसँ लऽ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म धरि चूल्हिक आवश्यकता होइछ । छठि पावनिमे एक दिन पहिने देवताक आराधना कयल जाइछ । एहन कार्य-व्यवहारमे आबऽवला चूल्हि **खरनाक चूल्हि** कहल जाइछ । एहि चूल्हिक विशेषता थिक जे एकर पेन जोड़ल रहैछ तेँ एकरा **पेनजोड़ुआ चूल्हा** सेहो कहल जाइछ । श्राद्ध कर्ममे बनल चूल्हिकेँ **सरधिया चूल्हि** कहल जाइछ । यज्ञोपवीत संस्कारमे कुमरमक रातिमे बिना उझकुनक चूल्हिपर खीर वा भात रान्हल जाइछ । एहन चूल्हिकेँ **कुलकल्याणक चूल्हि** कहल जाइछ । जाहि चूल्हिपर माछ-मांस नहि रान्हल जाइछ से **अमनियाँ चूल्हि** कहल जाइछ ।

भानस करबाक हेतु सर्वप्रथम **चूल्हि-चिनबार** आ भनसाघरकेँ नित्य साफ कयलाक पश्चाते पाक क्रिया प्रारम्भ कयल जाइछ । घर निपबाक हेतु पानि, नूर आदि रखबाक बासन **घरनिप्पा** कहल जाइछ । घरकेँ माटिक पोचाड़ा द्वारा साफ करबाक क्रियाकेँ **नीपब/नीपब-पोतब** कहल जाइछ । यत्रकुत्र अल्प नीपबकेँ **हँसोथब** कहल जाइछ । चूल्हिक चारू कात एक-डेढ़ बीत वा निमुठ हाथ धरि ऊँचाइमे भीत सहित निपबाक क्रिया **खार काटब/खार काटि** कऽ नीपब कहल जाइछ । समाजमे कोनो प्रकारक अशौचादि क्रिया भेलाक उपरान्त भीत सहित माँटि-पानिक पोतसँ पोतल जाइछ। एहि प्रकारेँ पोतबाक क्रिया **छछारब** होइछ । भोजनोपरान्त ऐंठ-कुठिकेँ हटाय गोबर तथा अल्प प्रत्येक परिवारमे पीबाक जल-संचयक हेतु घैलक प्रयोग होइछ । घरक देहरिपर पूब मुहेँ वा पच्छिम मुहेँ जल ढारबाक दृष्टिएँ पेयजलपूर्ण घैल रखबाक हेतु चबुतरा वा देबालमे ताखा बनाओल जाइछ जकरा **घैलची/घैसीरी/घैलसी** कहल जाइछ । पानिक छिच्चा/छिट्टा दऽ हँसोथबकेँ **इरुआयब** कहल जाइछ ।

कोनो वस्तुकेँ रन्हबा-पकयबाक हेतु प्रथम साधन थिक जारन । कोनो प्रकारक वृक्षक शुष्क कठोर अंग **जारन/जारनि** कहल जाइछ ।

गाछक माटितरवला भाग ओकर आधार होइत अछि । एकरा **मूल/जड़/जाहर/जाड़ि/जड़िआठ/ जड़िऔठा/जड़िआठी** कहल जाइत अछि । जड़िसँ गाछक अन्य भागकेँ पृथक् कयला उत्तर धड़क शेष भाग सहित जड़िकेँ **ओधि/ओइध/ खूट/बूट** कहल जाइत अछि । छोट खूटकेँ **खुट्टी/बुट्टी** कहल जाइत अछि ।

एहि सम्पूर्ण अंशकेँ चूल्हिमे लगायब सम्भव नहि तेँ हेतु एकरा खण्डशः कयल जाइछ । एहि खण्डशः करबाक क्रिया **काटब** होइछ । वृक्षसँ मात्र डाढ़ि कटलाहा अंश **पाङ/झाँखी** होइछ। एहि पाङकेँ वृक्षसँ अलग करबाक क्रिया **पाङब/पाङ्गब** होइत अछि । पाङल डाढ़िसँ झँखुरी आदिकेँ काटि कऽ पृथक् करबाक क्रिया **छकड़ब** होइछ । एहन छकड़ल पाङ जारनिक कार्यमे अबैत अछि। एकर उपरान्त शेष भागकेँ चीरि कऽ जरयबा योग्य बनाओल जाइछ ।

चीरल लकड़ीक छोट-छोट टुकड़ीकेँ **चेला/चैला/चेरा/जारनि/जारन** कहल जाइत छैक । पैघ चेराकेँ **चेलखा/जरना** कहल जाइत अछि । मोट चेराकेँ **मोढ़ी** कहल जाइत अछि । मोट ओ पैघ चेरा **मोढ़** होइत अछि । अति पैघ आकृतिक चेरा **फरहा/फर्रा** कहल जाइछ। छोट चेराकेँ **चेरी/चेली/चै/चेलखी** कहल जाइत अछि । लकड़ी कटलापर जे छोट-छोट टुकड़ी स्वतः कटि जाइत छैक, ओकरा **खुइदी/खुइड़ी/खुभरी** कहल जाइछ ।

राहड़िक गाछक जड़िवला भाग **खुट्टी** कहल जाइछ तथा एकर सम्पूर्ण गाछ **राहठ/रहठा** कहल जाइछ । सुखायल मकइक गाछ **ठठेर/ठठेरा** कहल जाइछ । एकरो जड़िकेँ **खुट्टिए** कहल जाइछ । कुसियार कटलाक पश्चात जे जड़िवला भाग रहैछ से **मोढ़ि** कहल जाइछ । एकर पातकेँ **पतहर/पगार** कहल जाइछ । रस बहार कयलाक पश्चात् कुसियारक नीरस अवशेष केँ **सिट्ठी** कहल जाइछ । एकरो सुखा कऽ जारनक कार्य लेल जाइछ । वृक्षसँ झरल पात **पतलो** कहल जाइछ ।

सन हटलाक पश्चात् कुतरुमक गाछक जे कठोर अंश रहैछ तकरा **संठी/सनठी** कहल जाइछ । सरिसो, रैंची, तोरीक डाँटकेँ **तोरियाठी/तोरिपठ** कहल जाइछ तथा तिलक डाँट **तिलठी/तिलाठी** कहल जाइत अछि ।

एकर अतिरिक्त तृण विशेषसँ सेहो जारनक कार्य लेल जाइछ । धानक गाछ **नार'/पोआर** होइछ । अन्य तृणक गाछ **खढ़-पात/खढ़पतार** कहबैछ मुदा से जारनक हेतु प्रशस्त नहि होइछ । जारन सभकेँ एक स्थानसँ दोसर स्थान तक लऽ जयबाक हेतु किछु अंशकेँ एकत्रित कऽ बान्हि देल जाइछ । एहन बन्धनयुक्त जारन **बोझ/बोझा** कहल जाइछ । दुनू हाथक बीच अँटयवला जारनक मात्राकेँ **पाँजा** कहल जाइछ ।

वृक्ष कटलाक पश्चात् ओहिमे जलक भाग रहैछ, जाहि कारण ओ जरयबामे सुलभ नहि होइछ तँ एहन जारन **काँच** कहल जाइछ । वर्षा वा अन्य कारणेँ जे जारन भीजि जाइछ से जारन **भीजल** कहल जाइछ, कम भीजल जारन **सिमसिम/समसल** कहल जाइछ । ओससँ भीजल जारन **ओसायल** कहल जाइछ । जाहि जारनमे जलक भाग नहि रहैछ से **सुखायल/सुक्खल** जारन कहल जाइछ । विशेष रउद लगला उत्तर जारन **हरनट्ठ/हनहन** कहल जाइछ ।

गोबरकेँ सुखा कऽ बनाओल विभिन्न जारनक सेहो व्यवहार कयल जाइछ । गोबरक टुकड़ी सभकेँ सोझे रौदमे सुखलापर **कड़सी** (सं.करीष) कहल जाइत अछि । गोबरक सम्पूर्ण चोत सुखलापर **कइड़ा/कर्रा** कहल जाइछ । जखन गोबरकेँ पानिमे सानि कऽ ओकर दू तीन आङुर मोट ओ चाकर टुकड़ा बनाय रौदमे सुखाओल जाइत छैक तँ एहि जारनकेँ **गोइठा** कहल जाइत छैक । छोट गोइठाकेँ **गोइठी/चिपड़ी** कहल जाइत छैक । सूप सनक गोल-गोल ओ पैघ आकृतिक गोइठाकेँ **सुपहा/सुपहर** कहल जाइछ । एहि सुपहा सभकेँ किछु संख्यामे एकत्रित (गँटि-गँटि) कऽ ओकर सम्पूर्ण भागमे **गोबरक मोट परतसँ झाँपि बेलनाकार बना कऽ रौदमे सुखा कऽ** भदवारिक हेतु राखि लेल जाइछ । एकरा **ढोल** कहल जाइछ । दू तीन हाथ नाम दण्ड सन गोबरक बनाओल जारन **गोइहा/गोरहा/गोइहन्नी** कहल जाइछ । गोरहाक भीतरमे खढ़ वा काठी आदिक आधार देल जाइछ जकरा **आलन** कहल जाइत अछि । गोइहाक समन्वेतकेँ **बाक** कहल जाइछ । चरौँतमे सुक्खल गोबरकेँ **बनकरड़ा** कहल जाइत छैक । चरौँतसँ बीछल गोबरसँ बनल गोइठाकेँ **बनगोइठा/बिनुआगोइठा/डमार** कहल जाइछ । गोबरक जारन बनयबाक प्रक्रियाकेँ **पाथब** कहल जाइछ ।

गोइठा सभ रखबाक घरकेँ **गोठुल्ला/गोडुला/गोठहुल/गोइठाघर** कहल जाइछ । जारनिकेँ चूल्हिमे दऽ ऊपरसँ आगि अथवा सलाइकेँ बारि आगि बनयबाक क्रिया **आँच-जोड़ब/आँच फूकब/चुल्हि फूकब/आँच पजारब** कहल जाइछ । गोइठापर आगि दऽ कऽ पुन: गोइठा तोड़ि-तोड़ि कऽ चारू भागसँ झाँपि देल जाइछ, जाहिसँ सभ टुटलाहा गोइठामे आगि पकड़ि लैछ । एहि प्रकारेँ गोइठामे आगि पकड़बाक क्रिया **सुनगायब** कहल जाइछ । भानसक क्रममे जारनकेँ चूल्हिमे घसकयबाक क्रिया **आँच लगायब/आँच घुसकायब** होइछ । आँच लगयबाक क्रममे आगिक जे अंश ठढ़ि जाइछ तकरा **लुत्ती** कहल जाइछ । जारन जरलाक पश्चात्‌वला कठोर आगिक टुकड़ाकेँ **चिनगी/अङ्गोर/अङ्गोरा/अङोरा** कहल जाइछ । धुँआ आ धधरासँ रहित तीव्र आगि **कहकह**, धधरायुक्त आगि **धह-धह**, आँचसँ दूर अबैत ताप **धाह** कहल जाइछ । भानस कयलाक पश्चात् जखन आगिक ताप कम भऽ जाइछ तँ एहन स्थितिक आगिकेँ **भुम्हुर** कहल जाइछ । जारन भीजल रहलापर आँच ठीकसँ नहि लगबाक स्थितिकेँ **धुकुर-धुकुर** कहल जाइछ । खढ़-पातक जारन रहलापर असावधानीसँ जरौलापर एकाएक सभमे आगि पकड़ि लैछ

तकरा **पसाही** कहल जाइछ । आगिक स्वत: मिझा जयबाक क्रिया **मझायब** होइछ । समस्त जरल जारनिक अवशेषकेँ **राख/छाउर/राबिस** कहल जाइछ । भानस कयलाक उपरान्त भीजल जारनकेँ सुखयबाक हेतु चूल्हिपर चढ़ा देल जाइछ जाहिसँ ओकर पानि सुखा जाइछ । एहन चूल्हिपर चढ़ल जारनि **झाँख** कहल जाइछ तथा एहि प्रकारेँ चूल्हिपर जारन देबाक क्रिया **झाँख** देब होइछ ।

भनसाघरमे वा आनो घरमे अन्न राखक व्यवस्था रहैछ । एहि हेतु कतोक उपादानक प्रयोग होइछ ।

अन्न राखक पैघ माटिक बनल उपादानकेँ **कोठी"** कहल जाइछ । ई अनेको आकारक बनाआल जाइत अछि । एकर ऊँचाइ लगभग एक मनुष होइत छैक । एकर आधारकेँ **पेन/पेनी** कहल जाइछ । पेनीसँ कने ऊँचपर गोल आकारक छेद छोड़ल जाइछ । एकरा **मुँह/कोठीक मुँह** कहल जाइछ । एहि मुँहेक आकारक गोल झाँपन रहैछ ।

कोठीक उपरका भागकेँ मोड़ि कऽ कने दूरीकेँ **खुलल** छोड़ि देल जाइछ । एकरा कोठीक उपरका मुँह कहल जाइछ । चारू कातक मोड़ल भागकेँ **कान/कान्हा/कोठीक कान** कहल जाइछ । उपरका मुँहसँ अन्न ढारल जाइछ आ नीचाक मुँहसँ बहार कयल जाइछ । अन्न भरल कोठीक नीचाक मुँहसँ अन्न निकलबाक क्रियाकेँ **भुभुआयब** कहल जाइछ । ओना उच्च स्थलपर राखल अन्नक तीव्रतापूर्वक निर्गमनक क्रिया सेहो भुभुआयब होइछ । मुँहक संख्याक आधारपर एकमुँहासँ लऽ कऽ नौमुँहा तक कोठी बनाओल जाइछ । एकर झाँपनकेँ **पिहना/पिहान/पेहान/पिहान/पेहान** कहल जाइछ । एक बीत ऊँचाइ तथा कोठीक अनुसार नाम आधारपर कोठीकेँ अवस्थित कयल जाइछ । एहि आधारकेँ **गोड़ा** कहल जाइछ। ढक आकारक गोल कोठीकेँ **जबरा** कहल जाइछ । एहिमे **दर्बजात** राखल जाइत छल । बड़का गोल कोठीकेँ **भौरी** कहल जाइछ । छोट गोल कोठीकेँ **धुरकुण्डी** कहल जाइछ । बीया-बालि राखक हेतु बनल कोठी पाँच खण्डमे विभक्त कयल रहैछ मुदा सब खण्ड एकेमे जोड़ल रहैछ । एहन कोठीकेँ **पचकोठिया** कहल जाइछ । गोल आकारक कोठीकेँ **गोलका कोठी** तथा गोलौन चापत कोठीकेँ **पोलिया** कहल जाइछ । चौखूट रहने **चौकनी कोठी** कहल जाइछ । मलाही कोहा आकारक कोठीकेँ **कोठैला** कहल जाइछ । कोठीक बीचमे वस्तु राखक हेतु बनल घनाकारखाली भागकेँ **खोधली/धनहारी** कहल जाइछ ।

परम्परासँ कोठीक संग मिथिलाक संस्कृतिक अनेक विधि चलि आबि रहल अछि । अति लघु माछ आकारक कोठी बना कऽ ढेउरि कऽ ओहिमे अरवा चाउर भरि देल जाइछ आ एहिमे चानीक रूपैया दऽ देल जाइछ । कनियाँ द्विरागमन कऽ कऽ जखन सासुर अबैत छथि तँ कोबरामे एहन राखल कोठीमे हाथ दिअयबाक प्रचलन अछि । एकरा **मछिया कोठी** कहल जाइछ ।

कोठीमे कोनिया आदिसँ अन्न देबाक क्रिया **ढारब** होइछ । कोठीक मोताबिक अन्न देबाक क्रिया **भरब** होइछ तथा भरलापर भरल कहल जाइछ । एक बासनसँ दोसर बासनमे पलटब **उझिलब** होइछ । समान बासनसँ उझिलबाक प्रक्रिया **पलटब** होइछ ।

रान्हल-पकाओल खाद्य सामग्री तथा बासन रखबाक एकटा उपकरण होइछ । एकरा **मोड़ा/मोरा** कहल जाइछ । ई कोठीक सहचर शब्द थिक । भाँड़ा रखबाक पात्रक रूपमे **कोठी-भरली** शब्द व्यवहारमे अबैत अछि । ई कोठी अति लघु आकारक होइछ । एकर आधार तराजू आकारक गहींर होइछ, जकरा **पेनी/पेन** कहल जाइछ । जाहिपर ई अवस्थित कयल जाइछ ताहिमे भानसक छोट-मोट समान राखक हेतु छोट-छोट खल बनल रहैछ । एकरा सभकेँ **घोघड़ा/घोघड़ी** कहल जाइछ । एहि घोघड़ाक नीचाँक भागकेँ **गोड़ा** कहल जाइछ । एकर उपरका झाँपनकेँ **झप्पा/झपना/पिहना** कहल जाइछ । चूल्हिए लग एकर स्थान नियुक्त रहैत छल । मुदा आब बड़ कम देखना जाइछ।

बासन रखबाक माटिक गोल वृत्ताकार थिम्हा रहैछ । एहिपर बासन राखि माँड़ पसाओल जाइछ तेँ एकरा **मँड़पसौना** कहल जाइछ । आगिकेँ संरक्षित राखक हेतु छोट पथियाक आकारक माटिक पात्रकेँ **बोरसि/बोड़सी** कहल जाइछ ।

पाकल माटिक उपकरण :

अन्नकेँ आगिपर चढ़ाय रन्हबाक हेतु करीब एक बीत पैघ मुँहवला गोल पात्र होइत अछि । एकरा **कोहा** कहल जाइत अछि । कोहाक अन्य पर्याय **हंडी/हाँड़ी/हँड़िया/हड़िया** अछि ।[9]

छोट कोहाकेँ **कोही/कोहली/हँड़ोला** कहल जाइत अछि । कोहाक आधारवला भागकेँ **पेन/पेना/पेनी** कहल जाइत अछि। भीतरक मध्यवला गोलभाग **पेट** कहल जाइत अछि । पेटक उपरका खुलल भाग **मुँह** कहल जाइत अछि । कोहाकेँ मुँह लगसँ पकड़बाक हेतु किञ्चित वक्र किनारीवला भाग **कान/कान्हा/कनहा/कंधा/कनखा** कहल जाइत अछि ।

जाहि कोहाक पेट बेसी गँहीर ओ चाकर होइत छैक तथा मुँह अपेक्षाकृत छोट रहैत छैक, ओकरा **तौला** कहल जाइत छैक । दही पौड़बाक हेतु चाकर मुँह, कम गँहीर पेट ओ करीब चारि आङुर ठाढ़ कानवला तौलाक उपयोग होइत अछि । एकरा **खोर/खोरा/अप्खोरा/अबखोरा/आबखोरा/अमखोरा** कहल जाइत छैक ।

धान उसिनबाक हेतु चाकर ओ गँहीर पेटवला तौलाक व्यवहार होइत अछि। एकरा **तेलानी** कहल जाइत छैक । घी बरकयबाक हेतु जाहि तौलाक व्यवहार होइत अछि ओकरा **तेलाय** कहल जाइत छैक ।[10] अत्यंत पैघ आकृतिक तौला **टाँक** कहल जाइत

अछि । अन्न रखबाक हेतु समतल पेनी ओ मोट देवालवला कोहाक उपयोग होइत अछि । एकर खड़ इ तीन फूट अथवा अधिक रहैत छैक । एकरा **माँट/माठ/मटका/मेटकूँड़** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **छोंड़/छोंढ़ी**[11] कहलनि अछि । अँचार आदि रखबाक माटिक कोहा **कोहला/टाँड़** होइत अछि । दालि रन्हबाक हेतु छोट कोहा **हड़कराही/कड़ाही** कहल जाइत अछि ।

बीत भरि व्यासक पेटवला दही पौड़बाक एकटा बासन **मटकी/मटुकी/मटकुड़ी/मटकूही** कहल जाइत अछि । पैघ मटकूड़ी **मटकूड़ा/मटकूड़** होइत अछि । चाकर मुँह ओ गँहीर आकृतिक मटकूड़ **दहियाही हाँड़ी/करना/करुना/कौरना/नदिया/लदिया** कहल जाइत अछि । भार आदिमे दही सँठबाक हेतु एकटा उत्थर बासनक व्यवहार होइत अछि । एकर व्यास एक-सवा हाथ रहैत अछि आ गहराइ चारि आङुर । एकरा **छाँछ** कहल जाइत अछि। छोट छाँछ **छाँछी/छँछिया** होइत अछि । एकर लघु आकृति **छन्ना** होइछ । गँहीर छाँछी **कसतरा/करतरा/करतारा/कहतारा** कहल जाइछ । एकर छोट प्रभेद **कसतरी/करतरी/कहतरी** कहल जाइत अछि ।

माँड़ पसयबाक हेतु मोड़ल कानबला गँहीर ओ चाकर करताराक व्यवहार होइत अछि । एकरा **अथरा/हथड़ा** कहल जाइत अछि । छोट अथरा **अथरी** होइछ । उपरका दुनू पार्श्वमे डंटी लागल रहलापर एकरा **कड़ाही** कहल जाइत छैक । एहिमे तरकारी सिद्ध कयल जाइछ । ई लोहक पात्र **लोहिया** द्वारा स्थानापन्न कऽ देल गेल अछि । एकर छोट प्रभेद **कड़ही/कड़हुल्ली** होहत अछि । उत्थर **कड़हुल्ली**मे रोटी सेदल जाइत अछि । एकरा **रोटपक्का/रोटिपक्का** कहल जाइत छैक । ग्रियर्सन एकरा **चड़िया** कहलनि अछि ।[12]

तौला झँपबाक हेतु एकटा बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **ढाकन/ढकना** कहल जाइत छैक । एकर पेनी गोल समतल ओ चारि आङुर व्यासक होइत छैक । मुँह खुलल ओ बीत भरि व्यासक होइत छैक । पेनी ओ उपरका भागक बीच कोण बनैत छैक । एकर छोट प्रभेद **ढकनी/ढुकनी** होइछ । ग्रियर्सन ढकनाक हेतु **ढिमका** शब्द कहने छथि ।[13]

समतल पेनी ओ गोलाक आधा भागक आकृतिसँ युक्त छोटसन बासन **प्याली/पियाली/पेयाली** कहल जाइत अछि । एकर पैघ प्रभेद **पियाला/पेयाला** होइत अछि । गँहीर पियाली **कपटी/चुक्कर (ड़)** कहल जाइत अछि । करीब दू आङुर ठाढ़ कनखावला पियाली **सरवा** (सं.सराव:) कहल जाइत अछि । छोट सरवा **सरबी** होइत अछि । कनखाविहीन छितनार सरवा **सराय** कहल जाइत अछि । छठि पाबनिमे प्रयुक्त सरवाक प्रभेदकेँ **कोसिया** कहल जाइछ । पानि पीबाक ग्लास आकृतिक छोट पात्र **चुकड़ी/चौड़की/चौरकी** कहल जाइछ । कनेक पैघकेँ **चुक्का** कहल जाइछ ।

विभिन्न प्रकारक मसल्ला अथवा पूजाक विभिन्न सामग्री पृथक्-पृथक् रखबाक हेतु एकटा संयुक्त पात्रक उपयोग होइत छैक । एहिमे तीन-चारि अथवा अधिक संख्यामे छोट-छोट मटकूड़ी सभ परस्पर जोड़ल रहैत छैक । एहि पात्रकेँ उठयबाक हेतु माटिक अर्द्धवृताकार डंटी सेहो एहिमे लागल रहैत छैक । एकर प्रत्येक मटकूड़ी **कोहिया** कहल जाइत छैक । मटकूड़ीक संख्याक आधारपर ई **तिनकोहिया/चरिकोहिया/अठकोहिया** आदि प्रभेदक होइत अछि । एहि बासनकेँ **जोट्टा/लगजोड़ी/चौघारा** कहल जाइछ ।

दालि आदि परसबाक हेतु माटिएक डंटी लागल डब्बुकक आकृतिक बासन **सकोरा** कहल जाइत अछि । लोटाक आकृतिक अत्यन्त छोट पात्रकेँ **भँड़ेड़** कहल जाइछ ।

मुसलमानमे सेहो अनेक प्रकारक माटिक बासनक उपयोग होइत अछि । समतल आधारवला गोल बासन जकर कोरपर करीब एक इंच ठाढ़ कान बनल रहैत छैक, भोजन करबाक व्यवहारमे अबैत अछि । एकरा **थारी/थरिया/छीपा** कहल जाइत छैक । छोट थारी **तसतरी/कसतरी** होइत अछि । शादी-बिआहमे करीब बीतभरि व्यासवाला तसतरीक व्यवहार होइत छैक । एकरा **सेफलिया/सिफलिया** कहल जाइत छैक । छोट ओ उत्थर सिफलियाकेँ **कोसलिया** कहल जाइत अछि । गँहीर कोसलियाकेँ **सनहक/सनहक्की/सनहकी** कहल जाइत अछि । छोट सनहककेँ **फिरनी** कहल जाइत अछि । फिरनीक अत्यन्त छोट प्रभेद **कुज्जा** होइत अछि । रान्हैत काल तरकारी आदिकेँ झँपबाक हेतु पाछू दिस डंटी लागल ढाकन **झप्पा** कहल जाइत अछि । छितनार ढाकनक एकटा प्रभेद **काब/रकाब/रिकबी/रेकबी/रेकाबी/रिकाब/रिकेबी/रिकाबी/रकाबी** कहल जाइत अछि। छोट-छोट ढाकन **ढिकरी/फुहरी** होइत अछि ।

पेय सम्बन्धी पात्रमे जल-संग्रह करबाक ओ पेय ग्रहण करबाक अनेक उपकरण अबैत अछि । नीचा दिस गोलाक आकृतिक ओ ऊपर बेलनाकार कनखासँ युक्त पानि भरबाक एकटा मोट देबालवला बर्तन गगरा कहल जाइत अछि । पैघ गगराकेँ **गागर** कहल जाइत छैक । एकर कनखा चारि आङुर ठाढ़ ओ मुँहक व्यास सेहो चारि-पाँच आङुर होइत छैक । कनखाक उपरका भाग समतल ओ बाहरसँ नीचा दिस कनेक झुकल रहैत छैक । एकर छोट प्रभेद मगरी कहल जाइत अछि । एहिपर कलात्मक आकृति सेहो खीचल रहैत अछि ।

गगराक एकटा अन्य प्रभेदमे शरीरक देवाल अत्यन्त पातर होइत छैक । ई करीब एक हाथ ठाढ़ रहैत छैक । गोलावला भागकेँ कनखाक जोड़पर मुँहक व्यास करीब चारि आङुर रहैत छैक । कनखाक उपरका भागक व्यास छओ-सात आङुर रहैत छैक । पानि संग्रह करबाक एहि बासनकेँ **घैल/घैला** कहल जाइत छैक । छोट घैलाकेँ **घैली/ठिलिया/ठेलिया/लवनी/बसनी** कहल जाइत अछि । मध्य आकृतिक घैला **अघघैली** होइत अछि ।

अत्यन्त पैघ घैलकेँ **रीझम** कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन पानि रखबाक एकटा पैघ बासनकेँ **परछा** कहलनि अछि ।[14] पैघ घैलक अन्य प्रभेद **मरतबान/मर्तबान/मिरतबान/मर्तमान** कहल जाइत अछि । एकर मुँह बेसी चाकर होइत छैक ।

मरणोपरान्त वा अन्य अशौचक कार्य भेने तथा पाँच वार्षिक श्राद्धक अवसरपर एक दिन पूर्व खाय पीबऽवला माटिक बासनकेँ घरसँ बहार कऽ देल जाइछ । एहन बहार कयल बासन **छुतहर** कहल जाइछ । दैनन्दिन जीवनमे व्यवहृत बासन **घरहर** कहल जाइछ । **छुतहरसँ** घैले बूझल जाइछ ।

पाबनि-तिहार शुभकाजमे आम्र पल्लव देल जल भरल घैलकेँ **कलस/कलसा** कहल जाइत अछि । बिआहमे चुमानक हेतु पनिभरनीक माथपर राखल कलस **सिरहर** कहल जाइछ । छोट कलसकेँ **कलसी** कहल जाइत अछि । कोनो-कोनो कलसामे चारिटा टोंटी लागल रहैत छैक आ उपरी भाग विभिन्न फूल-पातक आकृति बनाय ढेंढरल रहैत छैक ।

चूड़ा, मखान आदिक भार सँठबाक हेतु विशेष प्रकारक घैलक व्यवहार होइत छैक । एकर कानक उपरका भाग मोड़ल नहि रहैत छैक । एकरा **कूड़ा/कूँड़ा/कुण्डा** कहल जाइत छैक । छठि पाबनिमे घाटपर एकटा घैल जाइत अछि, ओकर मुँहक मोताबिक पूड़ी पका कऽ झाँपल जाइछ आ ताहिपर दीप सजाओल जाइत छैक । एकरा **कुरबाड़** कहल जाइत छैक ।

गर्मी मासमे पानिकेँ ठंढा रखबाक हेतु एकटा विशेष प्रकारक बर्तनक उपयोग होइत अछि । एकर पेन समतल ओ गोल रहैत छैक । पेटवला भाग गोलाक आकृतिक रहैत छैक आ कनखा करीब एक बीतसँ हाथभरि नाम ओ बेलनाकार होइत छैक । एकर माटिमे बालुक बेसी मात्रा देल जाइत छैक, जाहिसँ ई छिद्रमय रहैत छैक । एहि बासनकेँ **सुराही/सोराही/सुँघैल** कहल जाइछ । एकर मध्यम आकृति **सुमेर** ओ लघु आकृति **सुमेरनी** होइछ । गंगाजल रखबाक माटिक बासन **डगडगी** कहल जाइत अछि ।

इनारसँ पानि भरबाक हेतु पहिने बेलनाकार बासनक व्यवहार होइत छल । एकरा **कटिया/डाबा** कहल जाइत छलैक । छोट कटियामे पानि पीबाक सेहो प्रचलन छल । लोकसाहित्यमे अतिथिकेँ **बुचकट कटियामे** पानि देबाक प्रसंग भेटैत अछि । यद्यपि बुचकट शब्द आब लोकसाहित्येटामे जीवित अछि आ ओकर अर्थ हेरा गेल छैक । अनुमानतः ई फूटल कनखावला बासनक विशेषणक रूपमे गृहीत छल ।

डाबाक छोट प्रभेदक उपयोग पानि पीबाक बासनक रूपमे होइत अछि । एकरा लोटा कहल जाइत छैक । जाहि लोटाक पार्श्वमे एकटा माटिक नली लागल रहैत, छैक, ओकरा सोबरना/टोंटिया कहल जाइत छैक । मुसलमान एहने लोटाकेँ **बधना** कहैत

अछि । छोट सोबरनाकेँ **सोबरनी/दूँआ/दुइयाँ/दुँइ** कहल जाइत अछि । मुसलमान एकरा **बधनी** कहैत अछि ।

बेलनक आकृतिक कलाकृति कयल ओ उठयबाक हेतु माटियेक डंटी लागल सोबरना **झारी/झारिल/झारिललोटा** कहल जाइत अछि ।

पानि पीबाक हेतु उपयोगी आन पात्र **गिलास** होइत अछि । एकर पेनी समतल रहैत छैक आ व्यास करीब दू-तीन आङुर होइत छैक । गिलासक खड़इ छओ आङुर धरि होइत छैक जे नीचा दिस क्रमशः घटैत जाइत छैक । मध्य आकृतिक गिलास **गिलासी/बौरका/धौरका/भरुका/भुरका/बरुका** कहल जाइत छैक । छोट आकृतिवला गिलास **बौरकी/भोरकी/भुरकी/भरुकी/चुकड़ी/सैंका/सैंकी** कहल जाइत अछि । चाह पीबाक हेतु छोट-छोट आकृतिक गिलासक उपयोग होइत छैक । एकरा **करुआ/करेबा/कुल्हिया/कुल्हड़** कहल जाइत छैक । लोटाक आकृतिक छोट-छोट गिलास **चुक्का** कहल जाइत अछि । शराब पीबाक कुल्हड़ **रमकरबा** कहल जाइछ ।

दूध दुहबाक हेतु, दूधकेँ नपबाक हेतु ओ दूधकेँ मथि कऽ मक्खन निकालबाक हेतु अनेक प्रकारक माटिक पात्रक प्रयोजन होइत छैक । दूध दुहबाक माटिक बासन **कटिया/कौंटिया/डाबा/दुधही डाबा** कहल जाइत छैक । एकर पेन गोल, पेट खूब चाकर मुदा कम गँहीर होइत छैक । एहिमे धैले जकाँ पैघ कनखा लागल रहैत छैक । पैघ डाबाकेँ **झबहा/झमहा** कहल जाइत अछि । एकर छोट आकृति **झबही/झमही/डबही** होइत छैक ।

ग्रियर्सन पैघ डाबाकेँ **पाथा/राइस/रासि** ओ छोट डाबाकेँ **बपरी**[15] कहलनि अछि । पाथामे सेर भरि ओ **चुकड़ी/चुक्की**मे चारि सेर दूध अँटैत छैक । दुध रखबाक छोट पात्र **कुढ़िया** कहल जाइत अछि ।

दूध नपबाक सबसँ छोट आकृतिक बासन **फुच्ची** कहल जाइछ ।[16] फुच्चीमे पाओ भरि धरि दूध अँटैत छैक तेँ **पौआही** सेहो कहल जाइछ । सेर भरि दूध अँटऽवला नपना **चपड़** ओ तीन पाओ अँटऽवाला **तिनपड़** कहल जाइछ । चपड़केँ **डाबा/कटिया** सेहो कहल जाइछ । एकर पेटक गँहीरै चारि-पाँच आङुर मात्र होइत छैक मुदा गोलाइ अठारह-बीस आङुर होइत छैक । एहिमे धैले जकाँ **कनखा** लागल रहैत छैक ।

मक्खन महबाक हेतु दू आङुर ठाढ़ कनखावला पैघ ओ गोल तौलाक व्यवहार होइत अछि । एकरा **महना/कंडा** कहल जाइत छैक । घी रखबाक हेतु डाबाक आकृतिक बासन टारा (ड़ा) कहल जाइत छैक । छोट टाराकेँ **टारी(ड़ी)/टाँरी(ड़ी)** कहल जाइत छैक । लघु आकृतिक टारीकेँ **टारि(ड़ि)या** कहल जाइछ । तेल जमा कऽ रखबाक पैघ कोहाकेँ **तेलहाँड़ी/तेलहण्डा** कहल जाइत अछि । ग्रियर्सन तेल रखबाक अन्य पात्रकेँ **खीखी** कहलनि अछि ।[18]

टाड़ीसँ तेल निकालबाक हेतु लोहाक एकटा उपकरणक व्यवहार होइत अछि । एहिमे कनेक गँहीर गोल आकृतिक एकटा चम्मच रहैत छैक जाहिमे लोहाक डंटी ठाढ़ कऽ लागल रहैत छैक । एकरा **कोइया** कहल जाइत छैक । एही कार्यक हेतु बेलक खोइयावला भागमे लकड़ी अथवा बाँसक टुकड़ा लागल करछुलक व्यवहार होइत अछि । एकरा **बेली** कहल जाइत अछि । नारियरक कवचसँ निर्मित एही प्रकारक उपकरणकेँ **नारियली** कहल जाइछ ।

तेल नपबाक हेतु बाँसक पोरसँ अनेक नपना बनाओल जाइत अछि । एकरा सभकेँ **चोङा** कहल जाइछ । छोट आकृतिक चोङाकेँ **चोंङ्गी/चोङी** कहल जाइछ । ई सभ परिमाणक अनुरूप सेर, असेरा, पौआ, अधपइ, कनमा कहल जाइत अछि । एहिमे तेल रखबाक चोङाकेँ **तेलबासा** कहल गेल अछि ।[19]

अल्प अन्नादिक नपबाक कार्य व्यवस्थामे हाथक सहायता लेल जाइछ । मध्यमा, औंठा ओ तर्जनीसँ पकड़ल वस्तु **चुटकी** भरि कहल जाइछ । एक हाथक सटल आङुर सहित तरहत्थीपर जतेक वस्तु अँटैछ, ताहि नापकेँ **लप/पहश** कहल जाइछ । तहिना दुनू हाथकेँ मिला कऽ वस्तु देबाक नाप **आँजुर** कहल जाइछ । हाथक पाँचो आङुर सटा कऽ जतबा अन्न पकड़ि कऽ आङुरक टुड़नी सबकेँ तरहत्थीक निचला भागसँ सटौलापर अँटैत अछि, ओकरा **मुट्ठी/मुट्ठीभरि** कहल जाइछ । हाथक पाँचो आङुरकेँ अधोमुख पसारि कऽ जतबा अन्नक मात्रा पकड़ल जाइछ तकरा **बाकुट/भरिबाकुट/बाकुटभरि** कहल जाइछ अंश मात्र वस्तु देबाक नाप **रत्ती/रत्ती-मिसिया/ घुनसी** भरि कहल जाइछ ।

तेलकेँ एक बर्त्तनसँ दोसर बर्तनमे स्थानान्तरित करबाक हेतु एकटा उपकरणक उपयोग होइत अछि । एकरा **टीप** कहल जाइत छैक । एकर निचला भागमे एक आङुर मोट नली लागल रहैत छैक । ओहि नलीक उपरका छोरपर एकटा कटोरी जकाँ बनल रहैत छैक जकर व्यास ऊपर दिस क्रमशः बढ़ल जाइत छैक ।

अँचार आदि रखबाक हेतु समतल आधार, बेलनाकार पेट ओ तीन इंच व्यासक गोल मुँहवला शीशाक पात्र बनैत अछि । एकरा **बुइयाम/बोइआम** कहल जाइत छैक ।

पानक पीक उगलबाक हेतु डमरूक आकृतिक एकटा बर्त्तन जकर उपरका भागक कटोरी सन छेदमे पीक फेकल जाइछ, **पानदान/पिकदान/पिकदानी/पिरिकदान/पिरिकदानी/थुकदान/थुकदानी/ उगलदान/उगलदानी** कहल जाइछ ।

माटिक बासनक गुण दोषक पता लगयबाक हेतु ओकरा ठोकि-बजा कऽ देखल जाइछ । ठोकलासँ विभिन्न प्रकारक आबाज बहार होइत छैक । कम पाकल बासनक आवाज **बबबब** होइत छैक । बेसी पाकल बासनक आवाज **टनाटनि/टनटन** होइत छैक । सामान्य रूपेँ पाकल बासन चोट कयला उत्तर **झनाक-झनाक** उठैत अछि । एहि प्रकारेँ आवाज करबाक क्रिया **खनखनायब** होइछ । फूटल बासन **खन-खन** आबाज करैत अछि ।

बासन फुटलापर जे पैघ-पैघ टुकड़ा निकलैत छैक, ओकरा **खप्पा/खप्पर** कहल जाइत छैक । छोट-छोट खप्पाकेँ **खापट/खपटा/खुपटी/खिपटी** कहल जाइत छैक । अत्यन्त छोट **खपटी/खिप्पी** होइत अछि । मोट खपटाकेँ **झुकटा/झिकुटा**[33]/**झिकुटी/झुटकी/झिकटा/झिकटी/झिकुटा/झिकुटी/झिटकी** कहल जाइत अछि ।

भुजबाक हेतु बासनक मध्यभागमे बासनकेँ फोड़ि गोल आकृतिक मुँह बना देल जाइछ, जाहि बाटे अन्न देल जाइछ तथा निकालल जाइछ । एहन बासन **खापड़ि/खपड़ी** कहल जाइछ ।

माटिक बासनमे पानि देलापर सूक्ष्म छिद्रक द्वारा पानि बहार होअऽ लगैछ, जकरा **सिसकी** कहल जाइछ तथा एहि प्रकारेँ बहार होयबाक प्रक्रिया **सरबब** होइछ । पानि बासनसँ बून्द-बून्दमे बहार होयबाक क्रिया **चूअब/चूब** होइछ ।

बासनकेँ आगिपर चढ़ओला उत्तर ओकर किछु अंश अलग भऽ जाइछ । एहि प्रकारेँ अलग होयबाक क्रिया **चटकब/चट्ट ओदरब** होइछ । एहन ओदरल अंश **चट्ट** कहल जाइछ ।

बासनमे रेह मात्रक दरारि होयब **सिहकब** होइछ । बेसी स्पष्ट होयब **चहकब** कहल जाइछ, चहकला उत्तर बासन **चहकल** कहल जाइछ । विशेष दरारिवला बासन **चनकल** कहल जाइछ तथा एहि रूपमे परिणत होयबाक क्रिया **चनकब** होइछ । एक बासनसँ दोसर बासनमे बलपूर्वक भिड़लापर **ढेहा लागब** होइछ । ढेहा लगलापर बासन अनेक टुकड़ीमे बँटि जाइछ, जकरा **फूटब** कहल जाइछ । ककरो द्वारा तोड़बाक क्रिया **फोड़ब** होइछ । जलपात्रमे पानि भरलापर कतोक बासन अनेकशः टुकड़ीमे बँटि जाइछ । एकरा **भसकब** कहल जाइछ । भसकि कऽ अनेक टुकड़िमे विभक्त होयबाक क्रिया **छहोछित** होयब कहल जाइछ ।

4. काष्ठोपकरण :

काष्ठक अनेक उपकरण भोजन व्यापारमे सामग्री निर्माण एवं भोजन निर्माण तथा ग्रहणमे सहायक होइछ । तेँ काष्ठोपकरण सभकेँ एहि दु वर्गमे बाँटल जा सकैछ–

(क) सामग्री निर्माणमे सहायक

(ख) भोजन निर्माण ओ ग्रहणमे सहायक

सामग्री निर्माणमे सहायक :

मिथिलाक मुख्य उपजा थिक धान । धानसँ चाउर बनयबाक क्रिया होइछ **धान कूटब** । धान कूटबाक हेतु परम्परागत यंत्र **ढेकी/ढैकी/ढेकुल** कहल जाइत अछि । एहिमे

एकटा नाम लकड़ीक सील रहैत छैक । एकरो **ढेकी/ढेंकी/ढेकुल** कहल जाइत छैक । सीलक मध्यवर्ती भागक काष्ठदंडक धूरीकेँ **अखौता/किल्ला/डंडा/बेलनी/बोलनी/माँझा/मजका** कहल जाइत छैक । माटिमे गाड़ल जाहि दुइ गोट काष्ठ दंडपर ई धूरी अवलम्बित रहैत अछि, ओकरा **खुट्टा/खूटा/खूँटा/खम्हा/खम्हिया/जड़धा/जैंधिया** कहल जाइत छैक । ढेकीक सीलक पछिला भाग अपेक्षाकृत पातर होइत अछि । एहि भागमे **खत** बनल रहैत अछि आ नीचा दिस माटिमे **खाधि** कोड़ल रहैत छैक । ढेकी चलौनिहार सीलक पछिला भागकेँ लातसँ दबा कऽ ओकर अगिला भागकेँ ऊपर उठबैत अछि आ दबाब देब छोड़ि देने अगिला भाग अपन स्थान धऽ लैत छैक । पछिला भागकेँ **पुछड़ा/पुछिया/लतमर्रा/लतमारा** कहल जाइत छैक । ढेकीक अग्रभागमे नीचादिस एकटा, बेलनाकार काष्ठखंड लागल रहैत छैक । एकरा **मूसर/मुसरा/मूसल/समाठ/समाँठ** कहल जाइत छैक । समाठक सबसँ निचला भागमे चढ़ाओल लोहक वलयकेँ **समत/साम/सामी/समौआ** कहल जाइत छैक ।

समाठक निचला भागमे गँहीर **खाधि** खूनल रहैत छैक आ एहिमे काठक एकटा गँहीर पात्र गाड़ल रहैत छैक । एही पात्रमे कूटबाक हेतु धानकेँ राखल जाइछ । पात्रकेँ **उक्खरि/उखरी/कोब** कहल जाइत छैक । ढेकी चलौनिहार दूटा खुट्टापर अवलम्बित वंशदंडकेँ पकड़ि सहारा लैत अछि । एहि दण्डकेँ **अड़गनी/अड़ानी/अलगनी/अस्थम/थमनी** कहल जाइत अछि ।

धान कूटबाक हेतु डमरूक आकृतिक अन्य काष्ठनिर्मित उपकरणकेँ **उक्खरि/उखर/उखरा/उखरि/उखरी/उखेर/उखली/ओखर/ओखरी/ओखल** कहल जाइत अछि । एकर निचला समतल भागकेँ **पेनी** ओ मध्यवर्ती भागकेँ **डाँड़** कहल जाइत छैक । एकर ऊपरवला गँहीर भागकेँ **खाधि** कहल जाइत छैक । खाधिक मध्यवर्ती भागकेँ **कोब** कहल जाइत छैक ।

एहिमे देल वस्तुपर आघात करबाक हेतु काठक करीब पाँच फुट नाम बेलनाकार उपकरणक उपयोग होइत छैक । एकरा **मुसर/मूसर/मुसरा/मूसल/समाठ/समाँठ** कहल जाइत छैक । एकर मध्य भाग किञ्चित छीलल रहैत छैक । एही भागसँ एकरा पकड़ल जाइछ । एहि भागकेँ **मुट्ठी/मुठिया/मूठ/मूठी** कहल जाइत छैक । समाठक एक छोरपर लोहाक वलय लागल रहैत छैक । एहि भागकेँ **समत** कहल जाइत छैक । समतमे लागल लोहाक वलयकेँ **साम/सामी/समी** कहल जाइछ । समाठक जाहि छोरपर साम नहि रहैत छैक ओहि भागकेँ छीलि कऽ उत्तल कयल रहैछ । एहि भागकेँ **नढ़ब** कहल जाइत छैक ।

समाठक नढ़बसँ चूड़ा कूटल जाइत अछि । चूड़ा कुटबाक धानकेँ लाड़बाक हेतु बाँसक पातर ओ तीक्ष्ण अग्रभागसँ युक्त दण्डकेँ **ठकुरा/ठेकरा/ठोकरा** कहल जाइत छैक ।

भूजा भुजबाक हेतु फट्ठीक अग्रभागकेँ चीरि कऽ अन्न लाड़बाक उपकरण बनैत अछि । कखनो-कखनो बाँसक ओ खढ़हीक गोल-गोल पातर दंडक समूह सेहो एही काजक हेतु प्रयुक्त होइछ । एकरा **लाड़नि/लढ़नी/ढ़ढ़ना/लारनि/लरनी/लरना/भुजनाठी** कहल जाइछ । घनउसिनियाँ सभमे आगिकेँ बाहर-भीतर करबाक हेतु एक-डेढ़ हाथक वृक्षादिक दण्डक उपयोग कयल जाइछ, जकरा **खोरना/खोरनी** कहल जाइछ ।

भोजन निर्माण ओ ग्रहणमे सहायक :

चिक्कस सनबाक हेतु काठक गोल ओ गँहीर पात्रकेँ **कठौत/कठौता/कठवता/कठुला/कठोला/अथरा/तगार** कहल जाइत अछि । छोट कठौतकेँ **अथरी/तगाड़ी/कठौती** कहल जाइछ ।

रोटी बेलबाक हेतु गोल ओ समतल आधारकेँ **चक/चकली/चकला/चकुला/चकोला/चाक/चौकी** कहल जाइत अछि । एकर आधारमे लागल लकड़ीक गुल्ली सन **गोरा(ड़ा)** कहल जाइत छैक । जाहि नाम ओ गोल काष्ठ दंडसँ रोटी बेलल जाइत अछि, ओकरा **बेलना/बेलनी** कहल जाइत अछि ।

पकमान बनयबाक काठक पानक आकारक उपकरणकेँ **साँच/साँचा/सचवा/सँचवा/साँचो** कहल जाइत अछि । एकर अग्रभागकेँ **नोँख/नोखी** आ नीचा दिस निकलल भागकेँ **मुंडी** कहल जाइछ । एहिपर खोधल आकृतिकेँ **नक्कासी/खोधामा** कहल जाइछ । जालक आकृतिक खोधामाकेँ **जाली**, फूल-पात आदिक आकृतिक खोधामाकेँ **फूल-पत्ती** आ वृक्षक शाखा-प्रशाखा जकाँ खोधामाकेँ **झार** कहल जाइछ ।

भात आदि लाड़बाक हेतु छोलनीक आकृतिक काष्ठक उपकरणकेँ **दाबि/दबिया** कहल जाइत अछि । खीर लाड़बाक दाबिकेँ **दुद्धीदाबि** कहल-जाइछ । दालि घोँटबाक हेतु काठक दंडक निचला भागमे गोल आकृतिक काष्ठ खंड लागल उपकरणक व्यवहार छैक । एकरा **घोटना/दलघटना/दलघोटना/दलिघोटना/रऽही** कहल जाइत छैक । मक्खन महबाक रऽहीकेँ **मथनी/महन/महनी** कहल जाइत अछि ।

दालि आदि परसबाक हेतु लकड़ीक कड़छुकेँ **सरबा/करछु/कड़छु/कड़छुल/करछुल** कहल जाइत अछि । काष्ठ दंडक अग्रभागमे नारिकेरक फल्ली लागल सरबाकेँ **ओड़िका** कहल जाइछ । एहिसँ दूध आदि परसल जाइछ ।

भानसक पात्रकेँ झँपबाक हेतु काठक उत्थर बासनकेँ **झपना/ढाकन/ढकना/ढपना** कहल जाइछ । छोट ढाकनकेँ **ढकनी** कहल जाइत अछि ।

चाउर आदि नपबाक काठक छोट मुँहवला गोल पात्रकेँ **ताम/तम्मा/ताम/ताम्बा**[22] कहल जाइछ ।

जमीनपर बैसिकऽ भोजन करबाक हेतु काष्ठक करीब चारि-पाँच आङुर ऊँच समतल आधारक व्यवहार होइत अछि । एकरा **पीढ़ी/पिर(ड़)ही/पीढ़ीया/बैसकी/बैठकी** कहल जाइत छैक । विद्यापति पदावलीमे एहि हेतु **पिढ़ि** शब्द आयल अछि ।[23] पैघ आकृतिक पीढ़ीकेँ **पीढ़ा/पिर(ड़)हा** कहल जाइत छैक । एकर छोट आकृतिकेँ **पिढ़िया** कहल जाइत छैक । एकर आधारमे दूनू कात दूटा लकड़ीक नाम-नाम दंड ठोकल रहैत छैक । ई दूनू एकर उपरका तकथाकेँ जमीनसँ उपर उठौने रहैत छैक । एहि दंडकेँ **गोड़ा/गोड़ानी/गोड़िया/गोड़ी/डंटी** कहल जाइत छैक । लघु आकृतिक गोड़ाविहीन पिड़हीकेँ **चटुआ** कहल जाइछ । सामान्यतः पीढ़ी शब्द काठक समस्त चौखूट आसनक हेतु प्रयुक्त अछि। भोजन करबाक स्थानमे बैसबाक हेतु देल गेल कम्मल आदिकेँ **आसन/आसनी** कहल जाइछ ।

साधु-संन्यासी काठक गँहीर ओ अर्द्धवृत्ताकार मूठसँ युक्त, जलपात्रक उपयोग करैत छथि । एकरा **कमण्डल/कमण्डलु** कहल जाइत छैक । सजमनिक सुखायल उपरका आवरणसँ कमण्डल आकारक बनल पात्रकेँ **तुम्मा** कहल जाइछ । एकर छोट आकृतिकेँ **तुम्मी/तुमड़ी** कहल जाइछ ।

बंशोपकरण :

बसकरम द्वारा बाँसक विभिन्न प्रकारक गृहस्थोपयोगी उपकरण सबहिक निर्माण कयल जाइत अछि । बाँसक एहि उपकरण सभकेँ **बसही/बँसही** कहल जाइत अछि । एहिमे अधिकांश भोजन व्यापारक विभिन्न प्रयोजन सभसँ सम्बद्ध अछि ।

बाँसक बत्तीसँ अन्न रखबाक अत्यन्त पैघ गोल आकृतिक भंडारगृहक निर्माण कयल जाइत अछि । एकरा **ढाक/ढाढ़ा/बखारी/बढ़ारी/बथारी** कहल जाइत अछि । अत्यन्त पैघ आकृतिक बखारीकेँ **ढाढ़ा/बखार** कहल जाइत छैक । छोट बखारीकेँ **कोठि/कोठी/ठेक/ढक/ढाढ़ी/बेढ़ी/मड़क** कहल जाइत छैक । ढककेँ **कतहु-कतहु मुनहर** सेहो कहल जाइत छैक । **ढक-मुनहर** युग्म शब्दक रूपमे प्रचलित अछि ।

बखारीक आधारकेँ **पेन/पेना/पेनी/पेँदी/पेँदो** कहल जाइत छैक । एकर मध्यवर्त्ती खाली भागकेँ **पेट/पेटी** कहल जाइत छैक । बखारीक ढक्कन खऽढ़-बत्ती आदिसँ बनाओल चार रहैत छैक । ठेक आदिकेँ झँपबाक ढक्कनकेँ **पिहना/पिहाना/पिहानी** कहल जाइत छैक । बखारीक अन्न निकालबाक खुजल भागकेँ **मुँह/छेद** कहल जाइछ ।

अन्नादिकेँ रखबाक ओ स्थानान्तरित करबाक हेतु अनेक आकृतिक बासन सभ बनैत अछि । एकरा सभकेँ **अखरा** कहल जाइछ । अखरा बासनक सभसँ पैघ प्रभेद **ओड़ा/ओड़िया** होइत अछि । एहिमे दू मोनसँ अधिक अन्न अँटैत छैक । छोट ओड़ाकेँ **ओड़ी** कहल जाइछ ।

ठाढ़ घेराबला ओड़ीक छोट प्रभेदकेँ **डाक/डाका** कहल जाइत छैक । छोट डाककेँ **डाकी** ओ एकर लघु प्रभेदकेँ **डकिया** कहल जाइत छैक ।

आध मन धरि अन्न अँटउवला डाकीकेँ **छिटा/छिट्टा/छीटा/छैंटा** कहल जाइत छैक । एकर लघु प्रभेद **छिटी/छिट्टी/छैंटी** कहल जाइत अछि ।

डालू कोरवला छिट्टाकेँ **पथिया/दउरा** कहल जाइत अछि । छोट पथियाकेँ **पथनी/पथुली/दउरी** कहल जाइत छैक । पान रखबाक छोट पथनीकेँ **पनपथिया/पनबसना** कहल जाइत छैक । सीधा रखबाक छोट पथिया **सिधौकी** ओ कुटान-पिसानमे व्यवहारक छोट पथिया **कुटपिसिया** कहल जाइत अछि ।

कम ठाढ़ घेरावला बासन **टोकरी/टोपरी** कहल जाइत अछि । एकर पैघ प्रभेद **टोपा/टोकरा/टोपरा** होइत छैक । जाहि छिट्टा आदिमे जतेक अन्न अँटैत छैक ताहि आधारपर ओकरा **पँचसेरी, दससेरी, अधमोनी/अधमन्नी, एकमन्नी/मोनही, दुमन्नी** आदि कहल जाइत छैक ।

फलादिकेँ एक स्थानसँ दोसर स्थानपर स्थानान्तरित करबाक हेतु अत्यन्त पातर ओ विरल काइमसँ बनल ढक्कनयुक्त टोकरीक व्यवहार होइत अछि । एकरा **खाँची/खाँझी/खोंची/खैंची/खोड़ची/झब्बा** कहल जाइत छैक । एकर पैघ प्रभेद **खाँच/खाँचा/खैंचा/खैंझा** कहल जाइत अछि आ छोट प्रभेद **खचिया/खचोली** होइत अछि ।

दोहरा बिनाउवला छिट्टाकेँ **धामा/धम्मा** कहल जाइत छैक । एकर छोट आकृतिक सभ **धाइम/धामि/धामी/धमिया** होइत अछि ।

चाउर आदि फटकबाक हेतु पाटसँ बीनल वृत्ताकार बासनकेँ **सूप**[24]**/सूपा** कहल जाइत छैक । किछु क्षेत्र ओ वर्गमे एकरा **डगरा**[25] कहल जाइत छैक । एकर छोट प्रभेद **डगरी** कहल जाइत छैक । डगराक आधारवला भागकेँ **चटबा** कहल जाइछ । चटबाक नीचा दिसुक पाटकेँ **छान** आ ऊपर दिसुक पाटकेँ **बहरौट** कहल जाइत छैक । एकर चारूकात मण्डलीकृत घेराकेँ **मर्रा/मर्री/मरड़ी** कहल जाइत छैक ।

अन्नादिकेँ उठयबाक ओ फटकबाक हेतु पाछू ओ दुनू पाँजर दिस घेरायुक्त बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **कोनिआ (याँ, आ)/कोनसुप/कनसुप/कोलसुप** कहल जाइत अछि । जाहि समाजमे सूपक हेतु डगरा शब्दक व्यवहार होइछ, ताही समाजमे **कोनिआकेँ सूप** कहल जाइत छैक । एहि बासनक घेरा आगूसँ पाछू दिस क्रमशः बढ़ल रहैत छैक आ पछिला दुनू छोरपर कोन बनबैत छैक । छोट कोनियाँकेँ **सुपती** कहल जाइत छैक । चिक्कस आदिकेँ चालबाक हेतु एकटा छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **चालनि**[26]**/चलनिआ** कहल जाइत अछि । एहि बासनक चारू

कात चारि-पाँच आङुर ऊँच वृत्ताकार घेरा रहैत छैक । एकर आधार छिद्रमय होइत छैक । धानक गुड़ाकेँ भुस्सासँ पृथक् करबाक हेतु डगराक आकृतिक छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि । एकरा **गुरचल्ला/गुरचाला/गुरचलना/चलना** कहल जाइत छैक ।

चूल्हि पजारबाक हेतु हवा करबाक क्रिया **हौंकब** कहल जाइछ । एकर चौखूट साधन **बीअ(य)नि/बेना/बेनियाँ(आँ,आ)** होइत अछि । एकर छोट प्रभेदकेँ **बीनी** कहल जाइत छैक । एहिमे एकटा डाँट रहैत छैक । डाँटक निचला भागमे एकटा पातर वंशाग्रक फोंक बेलन पैसाओल रहैत छैक । एकरा **फोंफी/लारी/छुच्छी** कहल जाइत छैक। कोइलाक चूल्हि पजारबाक हेतु डाँट ओ लारीविहीन दोहरा बीयनिकेँ **पंखा/पंखी/दुपट्टा बियनि** कहल जाइछ ।

अन्न आदिकेँ जोखबाक उपकरण **तराजू/तरजू/तरजुल** होइत अछि । तराजूमे जोखबाक हेतु सामान ओ बाट रखबाक अंगकेँ **पलड़ा/तरछा** कहल जाइत अछि । एहिमे कोनो वस्तु जोखबाक क्रिया **तौलब/जोखब** होइछ । क्रय-विक्रय कार्य मध्य अन्नक बराबरि सामान लेला तथा देलापर **बरोबरि** कहल जाइछ । तराजूक अन्नकेँ आधा कउ फाँटि एक हिस्साक मोताबिक वस्तु **अधिया** कहल जाइछ । अन्नक एक चौथाइ तथा सामानक मोताबिक अन्नकेँ **सबाइ** कहल जाइछ । सामानक डेढ़बर अन्नकेँ **डेढ़ी/डेढ़िया** कहल जाइछ । अन्नक दुगुन वस्तुक तौल दोबर, तीनगुनकेँ **तेबर**, चारिगुनकेँ **चौबर** कहल जाइछ । सामान तौलबासँ पूर्व मुट्ठी भरि अन्न निकालि लेबाक क्रिया **खोंची काढ़ब** होइछ

जोखबाक हेतु मानक मात्राकेँ **बाट/बटखरा/बटखारा** कहल जाइछ, जे वजनक अनुसार **कनमा, अधपै, पौआ, असेरा, सेर, अढ़ैया, पसेरी** कहल जाइछ । आइ काल्हि मैट्रिक प्रणालीक बटखरा प्रचलित अछि । एकर मानक ग्राम छैक । दस, बीस, पचास, सय, दू सय, पाँच सय, हजार ग्रामक बटखरा प्रयुक्त होइछ । हजार ग्रामक बटखराकेँ किलोग्राम कहल जाइछ । दू, पाँच, दस, बीस, पचास, तथा सय किलोग्रामक बटखराक प्रयोग सेहो देखल जाइछ । सय किलोग्राम ओजनकेँ **क्विंटल** कहल जाइत छैक ।

पूर्वमे दुइ प्रकारक सेर प्रयुक्त होइत छल । **अस्सी** आओर **अठासी** । ई दुनू क्रमशः अस्सी **भरि/तोला** ओ अठासी भरिक वजनक बराबर होइत छल । भरि/भरी सैह मानक तौल परिगणित छल । देहात क्षेत्रमे छोटको सेरक प्रयोग होइत छल । एकर वजन करीब चौंसठि भरि होइत छल । एकरा **कच्ची सेर** कहल जाइत छल ।

सामान्यतः तराजूक दहिना पलड़ापर वस्तु ओ बामा पलड़ापर बाट राखल जाइछ । एके बेरमे अधिक ओजन जोखबाक हेतु दहिना पलड़ा परक जोखल वस्तुकेँ सेहो बाटेक स्थानपर व्यवहृत कउ लेल जाइछ । एकरा **धारा करब** कहल जाइछ । धाराक क्रममे दहिना पलड़ा परक वस्तुकेँ **अगुआ** तथा बामा पलड़ा परक वस्तुकेँ **पछुआ** कहल जाइछ ।

तराजूक क्षैतिज दण्डकेँ **डंटी/डंडी** कहल जाइछ । दूनू पलड़ापर वजन रहने ई समतल रहैछ । यदि वस्तुवला पलड़ाक दिस डंटी झुकल रहैछ तँ एहि तौलकेँ **लऽत** कहल जाइछ । वस्तु दिस डंटीक ऊपर उठल रहलापर बाटक अपेक्षा वस्तुक वजन कम रहैछ । किञ्चित कम वजन रहलापर तौलकेँ **झंस/झुस/उदास** कहल जाइछ । कखनो-कखनो दुनू पलड़ाक ओजन समान नहि रहबाक कारण अथवा डंटीक मध्यवर्त्ती छिद्रक उचित स्थानपर नहि रहबाक कारण डंटी पलड़ापर भार नहिओ रहलापर क्षैतिज नहि रहि पबैछ एहि स्थितिमे जाहि दिस डंटी ऊपर उठल रहैछ ओहि दिसुक पलड़ापर किछु ओजन राखि देल जाइछ आ डंटीकेँ क्षैतिज कऽ लेल जाइछ । एहि ओजनकेँ **पासङ/पसङा** कहल जाइछ । बाटक अपेक्षा कम मात्रामे वस्तु जोखबाक प्रक्रियाकेँ **टाल मारब/डंडी मारब** कहल जाइछ । विक्रेता द्वारा किछु अंश अधिक धऽ दैछ, ओकरा **लाबा-दुआ** कहल जाइछ ।

क्रय-विक्रयमे लागल मुसलमान जाति विशेषकेँ **कुजरा/कबारी/कुजरा-कबारी** कहल जाइछ । तरकारी उपजयबाक वृत्तिमे लागल जाति **कोइर/कोइरी** होइछ । कोइरक स्त्री **कोइरिन/कोइरिनियाँ** होइछ । विक्रय कयनिहार व्यक्तिकेँ **बनियाँ/दोकानदार/व्यापारी** कहल जाइछ ।

पानक बीड़ा रखबाक दूटा परस्पर सम्बद्ध होअऽबला खोलसँ बनल बन्द पात्रकेँ **बिर(ड़)हरा/बिर(ड़)हारा/साजी/पनबसना** कहल जाइत छैक । एही आकृतिक सीकीक बनल पात्रमे टकुरी, सूत आदि सेहो राखल जाइछ । कृषि कोषमे एकरा **बेलहरा/बेलहारा** कहल गेलैक अछि ।[27]

बँसकरममे डोम द्वारा उत्पादित बासन गृहोपयोग एवं पावनि तिहारोमे प्रशस्त बूझल जाइछ । एहन बासन सभ **डोमढ** कहल जाइत अछि ।

भारमे मिठाइ आदि सैंतबाक हेतु पौतीक आकृतिक गँहीर बासनकेँ **दलबा/कोठी** कहल जाइत छैक । एहिमे पाटक बिनाइ नहि रहैत छैक ।

केरा आदिक भार सैंतबाक हेतु **काइम** ओ **कारा**सँ बीनल अत्यन्त कम घेरायुक्त गोल ओ उत्थर पात्रकेँ **अखरा/दौरा/दउरा** कहल जाइत छैक । अखरापर पाटक बिनाइसँ युक्त दोहरा दौराकेँ **चँगेरी/चङेरा** कहल जाइत छैक । बिआहमे प्रथम परिछन कालमे जाहि चङेरामे ठक-बक आदि राखि वरसँ प्रश्न पूछल जाइत छैक ओहि चङेराकेँ **घानडाला/जानडाला(सं.)ज्ञानडाला)**[28] कहल जाइत छैक । छोट चङेराकेँ **चङेरी/चँगेरी/चँगेली/दउरी/फुलुकी/फुलौकी** कहल जाइत छैक । सौंठक हेतु दही पौरबाक छोट चँगेरीकेँ **ताइ** कहल जाइछ । अत्यन्त छोट आकृतिक चँगेरीकेँ **डाली/डलिया** कहल जाइत छैक । गँहीर डालीकेँ **मौकी/मौनिया/मौनी** कहल जाइछ । पैघ ओ अधिक गँहीर मौकीकेँ **मौका** कहल जाइछ । धियापुताक जलखइ करबाक छोट मौनीकेँ **चाँग/चाङ** कहल जाइछ । भारक हेतु छोट-छोट पथियाकेँ **हकरा पथिया** कहल जाइत छैक । विवाहमे वर-कनियाँ द्वारा लावा छिड़िअयबाक छोट सन सुपतीकेँ **कोनीबेनी/बनडाली** कहल जाइत छैक । गोल आ लघु आकृतिक बनल पात्र **मौनी/मौकी /घुथरी** कहल जाइछ । एकरे विस्तृत आकारक मूजनिर्मित पात्र **मुजेला/मुजेली** कहल जाइछ ।

कोजागरा, द्विरागमन आदिमे गोड़ा लागल उत्थर बासनक व्यवहार अछि । एकरा **डाला** कहल जाइत छैक । वृहदाकार डालाकेँ **साङिवला डाला** कहल जाइछ ।

कन्याक द्विरागमनक साँठमे गोल आकृतिक गँहीर ढक्कनयुक्त बासन देल जाइत छैक । एकरा **पेटार/पेटाढ़/झाँपा** कहल जाइत छैक । एकर पैघ प्रभेद **पेटारा** कहल जाइछ । छोट आकृतिक पेटारकेँ **पेटाढ़ी/पेटारी/पौती** कहल जाइत छैक । शृंगारक वस्तु रखबाक छोट पौतीकेँ **मुँहपोछनी** कहल जाइछ । वस्तुजात रखबाक पैघ पौतीकेँ **सखारी** कहल जाइछ ।

पौतीक नीचावला भागकेँ **तरोटा/तरौटा/तलौटा/खरिका** कहल जाइत छैक । एकर उपरका भाग गुम्बदाकार होइत अछि । एकरा **झाँप/झँपना/झाँपन** कहल जाइछ ।

पौतीक बिनओट दोहरा होइत छैक । बाहरी भाग **कारा** ओ **काइम**सँ बीनल जाइछ आ भीतरी भाग पाटसँ । पाटसँ बीनल भाग **पेन्हौटा** कहल जाइछ ।

तृणोपकरण :

तृणक उपकरण भोजन व्यापारमे अन्नकेँ सुखयबाक साधन तथा आसनक रूपमे व्यवहृत होइछ । तदरिक्तो किछु विशिष्ट साधन तृणेक होइछ ।

अन्न सुखयबाक हेतु तृणसँ निर्मित साधनकेँ **पटिया/चटाइ** कहल जाइछ । एकर छोट प्रभेदकेँ **चटकुनी/चटगूनी** कहल जाइछ । उत्तम तृण मध्य **मोथी** अबैत अछि । एहिसँ बनल पटियाकेँ **मोथीक पटिया** कहल जाइछ। तृणक दोसर प्रभेद **पटेढ़** होइछ । एहिसँ बनल पटियाकेँ **पटेढ़क पटिया** कहल जाइछ । केराक डपौरसँ बनल पटियाकेँ सेहो **पटेढ़क पटिया** कहल जाइछ । एक प्रकारक खढ़ होइछ जकरा **डाभी** कहल जाइछ । एहूसँ पटिया बनाओल जाइछ । एकरा **खिनहरि/सेज** कहल जाइछ । नारसँ बनल पटियाकेँ **गोनइ/गोनर/गोनरि** कहल जाइछ । एक विशिष्ट प्रभेदक तृणसँ निर्मित पटिया **शीतलपाटी/शितलपटिया** कहल जाइछ । खजूरक पातकेँ चीरि कऽ बनाओल पटिया **खजूरक पटिया** कहल जाइछ । ताड़क पातसँ बनल पटिया **तड़छा** कहल जाइछ । पुरान फाटल वस्त्र सभकेँ साटि-साटि कऽ पटिया आकारक बनल साधनकेँ **सुजनी/गेन्हरा/गेन्हरी/खेन्हरा/खेन्हरी** कहल जाइछ । एहूपर अन्न सुखयबाक कार्य कयल जाइछ । सनसँ निर्मित **चट्टी** तथा **बोरा**पर सेहो अन्न सुखाओल जाइछ ।

एहि समस्त तृणसँ आसनक निर्माण करबाक क्रिया **बूनब/बीनब** होइछ । बिनाइ दूर-दूर रहने **छेहर** कहल जाइछ तथा लग-लग रहने **गस्सल-गस्सल** कहल जाइछ ।

विनबाक क्रिया द्वारा प्राप्त उत्पादनकेँ **बिनाइ/बिनाठ** कहल जाइछ । ताड़/तड़ाइक पातक बियनि सेहो बनाओल जाइछ । ई चूल्हि पजारक कार्यमे सेहो अबैत अछि । जनिकालोकनिकेँ भोजनोपरान्त दाँत खोधबाक आदति रहैत छनि ओ अनेक प्रकारक तृणक कठोर भागक टुकड़ी द्वारा दाँत खोधैत छथि । एकरा **खड़िका/सीकी** कहल जाइत छैक । खाद्य पदार्थकेँ टाङि कऽ रखबाक हेतु सनक रस्सी वा साबे घासक जौड़सँ निर्मित व्यवस्थाकेँ **सीक/सिक्का/सिकहर** कहल जाइछ ।

आम राखक हेतु डोरीकेँ गूहि कऽ बनाओल झोड़ीकेँ **जलखरी** कहल जाइछ । गाछसँ आम तोड़बाक लेल जौड़क बनल छोट अर्द्धवृत्ताकार जाली लग्गामे लागल रहैछ जकर सहायतासँ आम तोड़ल जाइछ । आम तोड़बाक एहि वस्तुकेँ **डेली** कहल जाइछ । भूमिमे खधिया खूनि एक दिस मुँह छोड़ि ऊपरसँ फट्ठी, खढ़ आदिसँ झाँपि घर जकाँ बनल रहैछ जकरा **साजी/अमधारा** कहल जाइछ ।

स्थलकेँ बहारि कऽ साफ करबाक हेतु खढ़क दूटा मुट्ठासँ कैँचक आकृतिक बनाओल उपकरणकेँ **बाढ़नि/बढ़नी** कहल जाइछ । बाढ़नि द्वारा साफ करबाक क्रिया **बहारब/बढ़ारब** होइछ । बाढ़निजे द्वारा घरक उपरका झोल आदि हटयबाक क्रिया **झाड़ब/झोलब/घर झोलब** होइछ । बाढ़नि द्वारा तेजसँ आघात करबाक क्रिया **झाँटब** होइछ । आब तृणक फूलसँ निर्मित **फूल बाढ़नि** आ नारियरक पातक पुट्ठीसँ बनल **झाड़ूक** प्रयोग होइत अछि ।

भोज आदिमे पञ्चलोकनिकेँ बैसबाक हेतु तृणादिकेँ मोड़ि कऽ बनाओल एकगोट दण्डाकृति आसन देबाक विधान अछि जकरा **बीढ़ा/बीढ़ी/बिड़िया** कहल जाइछ ।

घैलक पेनी तरमे देबाक लेल गोलवृत्ताकार तृणादिसँ बनल उपकरणकेँ **बिड़बा** कहल जाइछ । सिक्की, मूज इत्यादि तृणसँ भूजा इत्यादि खयबाक निमित्त, थारी-छिपलीक आकारक बनाओल पात्रकेँ **डाली/डलिया** कहल जाइत अछि । गमछाक चौड़ाइवला भागक दुनू खूटकेँ जोड़ि गीरह दऽ कऽ गजिया जकाँ बना देल जाइछ जकरा **घोकड़ी** कहल जाइछ । एहिमे भूजा इत्यारि राखि फाँकल जाइछ ।

ऐहबकेँ आँचरमे अन्न, फल, पाइ दऽ विदा करबाक परिपाटी अछि । आँचरमे देल वस्तु **खोंइछ** होइछ तथा देबाक प्रक्रिया **खोंइछ देब** होइछ । नमहर आकारक खोँइछाकेँ **फाँफड़** कहल जाइछ । तृणादिकेँ दुनू छोड़पर बान्हि देल जाइछ जाहिसँ ओकर बीचमे वस्तु राखल जा सकैछ । एहन बनल साधनकेँ **खोंचड़ि** कहल जाइछ । सन वा सूतसँ बनल चौकोर दूटा पाटकेँ मिला कऽ वस्तु रखबाक खोलकेँ **झोड़ा** कहल जाइछ । एकर छोट आकृति **झोड़ी** कहल जाइछ । चौड़ाइक अपेक्षा विशेष नाम रहलापर गजिया कहल जाइछ । एहि सभ साधनक एक दिस मुँह खूजल रहैछ तथा तीन दिस सिअल रहैछ । पकड़बाक हेतु दूटा साधन डंटी कहल जाइछ । सुतरीसँ बनल झोड़ाक अति

विस्तृत आकारक साधन **बोरा/धोकड़ा/धोकड़ी** कहल जाइछ । लघु आकृतिक पाइ रखबाक साधन **बगुली** कहल जाइछ ।

धातुक पात्रक अतिरिक्त भोजन ग्रहण करबाक अन्य पात्र मध्य किछु पात्र विशेषक सहायता लेल जाइछ जकरा **पात/पत्तल** कहल जाइछ । कदली वृक्षक पात्रकेँ **केराक पात** कहल जाइछ । केराक सम्पूर्ण पातकेँ **भालरि** कहल जाइछ । एकरा उपयोगमे अनबाक हेतु खण्डमे विभक्त कयल जाइछ जकरा **केरापातक खण्ड** कहल जाइछ । भालरिक छीप दिसक खण्डकेँ **अगहरी** कहल जाइछ । पात विभक्त नहि रहलापर दऽढ़ कहल जाइछ तथा विभक्त रहलापर **फाटल** कहल जाइछ । कमलसँ उत्पन्न गोल वृत्ताकार पत्र विशेष **पुरइनिक पात/पुरैनिक पात** कहल जाइछ । कटहरक पातकेँ मोरि कऽ कटोरी आकृतिक बनाओल पात्रकेँ **दोना** कहल जाइछ । पातमे बान्हल खाद्य वस्तु **पतौरा/पतौड़ा** कहल जाइछ । वस्तु रखबा लेल कागतकेँ मोड़ि कऽ बनाओल पात्र **पुड़िया/पुड़िया** कहल जाइछ । कागतकेँ साटि कऽ बनाओल गजियाकेँ **ठोंगा/ठोङा** कहल जाइछ ।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. वर्णरत्नाकर, पृ.-12
2. ई नाम क्षेत्र-विशेषसँ सम्बद्ध बुझना जाइछ- द्रष्टव्य एकर विकास-क्रम: कहलगाम>कहलगाम> कहलगमिआ>कहलगइआ>कलगइया
3. बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.- 94
4. तत्रैव
5. प्रसिद्ध कहबी- जानय जी जानय जाँता ।
   जाइ छी पटना जोड़ा एक जाँत ।
   एक चिड़ैया ऐसनी खूट्टा पर बैसनी,
   लप्पे-लप्पे चाउर फांकै से चिड़ैया कैसनी (पिहानी)
6. प्रसिद्ध कहबी- मूसा मोटैहें तँ लोढ़ाबे होइहैं ।
7. प्रसिद्ध कहबी- रसिहऽ बसिहऽ चार दीप लेसिहऽ ।
8. प्रसिद्ध कहबी- देखले कनियाँ देखले वर, कोठी तर बिछौना कर ।
9. प्राचीनो साहित्यमे हाँड़ीक प्रयोग भेटैत अछि । हाड़ी त भात नहि नित आवेसी- बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त, पृ. 160
   प्रसिद्ध कहबी- (क) दु पैसाक हाँड़ी गेल कुकुरक जाति चीन्हल गेल ।
   (ख) काठक हाँड़ी एक्के बेर
10. बिहार पीजैन्ट लाइफ पृ.- 138
11. तत्रैव, पृ.-137

12. तत्रैव, पृ.-135
13. तत्रैव, पृ.-137
14. तत्रैव, पृ.-138
15. तत्रैव, पृ.-26
16. छौं रखने पौआही फुच्ची दैवहिक देल
दै छही मिला तैयो अँटकरसँ पानि नित
तैयो तोरहिसँ दूध उठौना लैत छियइ ।
चित्र- यात्री-
17. बिहार पीजेन्ट लाइफ, पृ.-26
18. तत्रैव, पृ.-26
19. मिथिला भाषा कोष - पृ.-172
20. प्रसिद्ध कहबी- झिटकीसँ फुटि जाइछ घैल ।
हारल नटुआ झिटका बीछय ।
21. प्रसिद्ध कहबी- मन चङ्गा तऽ कठौतीमे गंगा
22. प्रसिद्ध कहबी :-
(क) सात तामाकेँ सात पकौलहुँ, चौदह तामामे एके ।
तोँ कुलबोरना साती खेलेँ, हम कुलबोरनी एके ॥
तोँ कुलबोरना तीमन खेलेँ, नून तेल मिरचाइ ।
हम कुलवन्ती छुच्छे खेलौं, दही चूड़ा मिठाइ ॥
(ख) विद्यापति, मित्र-मजुमदार, पद संख्या- 913
माँगि चाँगि लयलाह माइ हे, ताना दुइ मिसिया ।
एका चरित्र देखि हँसय परोसिया ॥
(ग) सपता विपता कथामे कहल जाइछ-
एक गाँव मङलनि तऽ एक तम्मा, दू गाँव मङलनि तँ एक तम्मा ।
23. विद्यापति, मित्र-मजुमदार, पद सं.- 596 । के तोँ थिकाह ककर कुल जानि ।
बिनु परिचय नहि देब पिढ़ि पानि ।
24. प्रसिद्ध उपलक्षण- सूपक चाँटा तवैत डगराक बैगन ।
25. प्रसिद्ध कहबी- खाइ-पिबै लय सुखराती, ठेढबै लय सूप ।
26. प्रसिद्ध कहबी- (क) चालनि दुसलनि सूपकेँ जनिका सहस्सर भोट छेद ।
(ख) कोन पुरुषक भेलहुँ गाय, चालनि तऽ दुहावय जाय ।
27. कृषि कोष
28. तत्रैव, भाग-2, पृ.- 233

अष्टम अध्याय

भोजनक आधार सामग्री सम्बन्धी शब्दाबली

भोजनक आधार सामग्रीसँ तात्पर्य ओहि समस्त सामग्रीसँ अछि जे भोजन-व्यापारमे प्राकृतिक संसाधन वा मानवीय प्रयत्न द्वारा उपलब्ध होइत अछि एवं जकरा मूल रूपमे वा रूप-परिवर्त्तन कऽ भोजनक उपयुक्त बनाओल जाइछ ।

भोजनक एहि समस्त आधार सामग्रीकेँ सुविधाक हेतु तीन वर्गमे बाँटल जा सकैछ -

(क) मूल आधार सामग्री

(ख) आनुषंगिक आधार सामग्री

(ग) विशेष आधार सामग्री ।

मुख्य आधार सामग्रीसँ एतऽ तात्पर्य अछि सामान्य जनमे प्रचलित भोज्य पदार्थक मुख्य आधार सामग्री । एहि वर्गमे विभिन्न प्रकारक अन्नकेँ राखल जा सकैछ ।

विभिन्न प्रकारक कन्द, मूल ओ फल यद्यपि विशेष अवसरक उपयोग्य आधार सामग्री अछि तथापि अल्हुआ, सुथनी, केसौर, सारुख, कइहर, चिचोड़/ढ़ी इत्यादि कन्दक मिथिलाक जन जीवनक अत्यधिक संपृक्तिक कारणेँ मुख्ये आधार सामग्री मध्य विवेच्य अछि ।

आनुषंगिक आधार सामग्रीसँ तात्पर्य एहन भोज्य सामग्रीसँ अछि जे मुख्य भोजनमे सहयोगीक रूपमे व्यवहृत होइछ । यथा- विविध प्रकारक व्यञ्जन, माछ-मांस, मशाला इत्यादि ।

विशिष्ट अवसरपर रुचि परिवर्त्तनक हेतु प्रयुक्त एहन आधार सामग्री जे जनसामान्यक क्षुधातृप्तिक आनुषंगिके आधार अछि, विशेष आधार सामग्री मध्य वर्णित अछि जेना फल, दूध, मधु, मिष्टान्न, पान, नशायुक्त पेय इत्यादि ।

अन्न -

कृषि कर्मसँ उत्पन्न तृणादि वर्गक फलकेँ अन्न कहल जाइछ । मिथिलामे अन्नक उपजाकेँ **फसील** कहल जाइछ । जे अन्न बीआक हेतु राखल जाइछ ओकरा **बीहन/बीया-बालि** कहल जाइछ तथा जे अन्न खयबाक कार्यमे अबैछ तकरा **खैहन** कहल जाइछ । खैहन प्रकृतिक आधारपर दुइ प्रकारक होइछ । नीक कोटिक अन्न **सुअन्न** कहल जाइछ । अधलाह कोटिक अन्न **कदन्न** कहल जाइछ । परम्परासँ अन्न उपजयबाक विशिष्ट समय अगहन, बैसाख ओ भादव रहल अछि । तदनुसार अन्नक तीन गोट कोटि होइछ । अगहनमे तैयार अन्न **अगहनी**, बैसाखमे तैयार अन्न **बैसक्खा/रब्बी/रबिया** अन्न तथा भादवमे होअऽबला अन्नकेँ **भदइ/भदइया** अन्न कहल जाइछ ।

अगहनी-

अगहनमे होअऽवला मुख्य अन्न अछि **धान** । धानकेँ संस्कृतमे **धान्य/शालि** कहल गेल अछि । मुदा एही समयमे **राहड़ि, कुर्थी,** ओ उड़ीद आदि सेहो तैयार होइत अछि । तथापि अगहनी शब्द धानेक हेतु रूढ़ अछि । धान मिथिलाक प्रमुख खाद्य थिक । मिथिलाक प्रधान भोजन **भात** एही अन्नसँ तैयार होइत अछि । धानक बहुतो प्रभेद होइछ । धानक आकृति, बाओगक समय ओ तैयार होयबाक समय, चाउरक रंग-गंध आदिक आधारपर विभिन्न धानकेँ चीन्हल जाइत अछि । एक्केँ धानकेँ क्षेत्र विशेषमे एक नामे तथा दोसर क्षेत्रमे दोसर नामे जानल जाइत अछि । धानक दूटा वर्ग अछि । सुगन्ध रहित मोट आकृतिवला धानकेँ **मोटधना** कहल जाइछ । सुगन्धियुक्त वा सुगन्धिहीन किन्तु पातर आकृतिवला धानकेँ **हलुकधाना** कहल जाइछ । सुगन्धियुक्त धानकेँ **गमकौआ** कहल जाइछ। मिथिलामे प्राप्त मोटधनाक किछु विशिष्ट प्रभेद सब अछि- **अनन्दा, कटमा, कजरधर, कलमदान, कलमखोड़ा, कसौन, कुसुमसारि, गेहुआँ, गहुमा, गजपत्ता, छब्बीसनम्बर, जगरनथिया, जेमरा, जोगा, टुढ्ढी, टुधराज, देसरिया, देसावरी, देइया, दोलडी, दलगंजन, देवसारि, धुम्माखेरा, धुसरी, पाखड़ि, पिच्चड़ि, बैतरनी, बल्लमबर्छी, भोलासिंह, भेड़कावर, मुट्ठनी, मुड़रा, मुट्ठीरी, मेघनाद, मोरड्डिया, राटिन, रामदुलारी, ललदेइया सतकनमा, सरिहन, सिलहट, सीतासारि, सेल्हा, सोनाझाड़ी, सौंथी** आदि ।

चओरमे सामान्यतः मोटधनेक उपजा होइछ । एहन धान सबकेँ **चरहा धान** कहल जाइछ ।

हल्लुक धानमे निम्नलिखित प्रभेद परिगणित अछि-

अघनुआँ, कनकचूर, कनकजीर, कनियारि, कामोद/कमोद/करिया कामोद/कामधु, कलमकाठी, कालानोनियाँ, गोकुलसार, गोपालभोग, गौरिया, चन्दनचूर, जसबा, जूही बंगाल, जलहोर, ठाकुरभोग, तुलसीफूल, दौनाफूल, दुधगिलास, धनियाँ, नाजिर, नन्हियाँ, बासमती, बतासफेनी, बर्माभूसी, बहरनी, बासफूल, भाटाफूल, मर्चा, मनसरी/मनसूरी/मसूरी, महाजोगिन, मालदेही, मालभोग, रमुनी, राजभोग, रामअजवाइन, रामभोग, रामजीरा, रमुनी, लालसर, लालकेसर, लौंगचूरा, सतरिया, सुपारीपंखी, श्यामजीरा, हंसराज, हरिनकेर/हरिनकेल आदि । ई सभ अगहनी प्रभेद थिक । एही आधारपर **अघनुआँ** शब्द प्रचलित अछि । किछु धान भादव मासमे सेहो तैयार होइछ । एहिमे **गम्हड़ी, गद्दड़ि/ गादड़/गदड़ा, आँसु/आँउस** आदि प्रभेद प्रमुख अछि । गम्हड़ी धान **घोघेमे** पाकि जाइछ । ओना कृषि अनुसन्धान समिति द्वारा सम्प्रति अनेको नव प्रभेदक धान सभक उपजाक व्यवस्था होइत जा रहल अछि जाहिमे किछु विशिष्ट धानक नाम एहि प्रकारेँ अछि- **आरेआठ (आइ. आर. आठ) जाया, दिलसुनरी, लरमा, सीता** आदि ।

आसिन मासमे तैयार होअऽवाला धान **असिनी** तथा कातिकेमे अगता कटि जायवला धानक प्रभेदकेँ **कतिकी** कहल जाइछ ।

रब्बी-

फागुन, चैत, बैसाख मासमे विभिन्न प्रकारक अन्न उपजैत अछि जकरा **रब्बी/रबिया** अन्न कहल जाइत अछि । एहि मास सभमे उपजऽबला मुख्य **खैहन** रोटीक अन्न थिक एकर एक मुख्य प्रभेद गहूम (सं. गोधूम)/**गेहूँ/गेहूम/गोहूँ/गोहूम** कहल जाइछ । नीक प्रभेदक गहूमकेँ **मुरली गहूम** कहल जाइछ । स्थानीय बीयासँ उत्पन्न गहूम **देशी/देसला/देसिला** कहल जाइछ । ई नावक आकृतिक होइछ तथा एकर पार्श्वक मध्यमे गँहीर रहैत छैक । सामान्यतः ई अल्प पीताभ ओ अल्प रक्ताभ होइत अछि । एही आधारपर **उजरा/उजरी** तथा **ललका/ललकी** गहूम कहल जाइछ । गहूमक अन्य विशिष्ट प्रभेद **सोनरा/सुनरा** होइछ ।

गहूमेक आकृतिक एकटा अन्न **जओ/जौ**- (सं.यव) कहल जाइछ । जओ अन्नमे शुद्ध मानल जाइत अछि । जओमे गहूम फेंटल रहलापर **गोजइ** कहल जाइछ । जौ-केराओ मिश्रित अन्न **जौ-केरैया/जकेरैया**, तथा बूटक संयोग भेने **जैबुट्टा/जबुट्टा** तथा खेसाड़ी फेंटयलापर **जौखेसरिया** कहल जाइछ । एहिना सात प्रकारक अन्नक मिश्रण **सतञ्जा/सतंजा** कहल जाइछ । अनेको प्रकारक अन्न फेंटल रहबाक कारणेँ मिश्रित अन्न **बेझार/बेझड़ा** कहल जाइछ । एक अन्न दोसरामे फेंटा गेलापर **मिग्झड़** कहल जाइछ । आन अन्नसँ अमिश्रित अन्न **छेहा/एकछाहा** कहल जाइछ । गहूम ओ जओक एक विशिष्ट प्रभेदकेँ **नड़िश** कहल जाइछ ।

रब्बी फसिलमे दलिहनक सेहो प्रधानता अछि । अन्नक आवरणक भीतर दूटा फाँक वा दल होइछ जकरा **दालि** कहल जाइछ । एकरा नोन-मसल्ला दऽ सिझा कऽ जे तरल व्यंजन बनैछ तकरो **दालि** कहल जाइछ । दालिक जे अन्न सैह **दलिहन** कहल

जाइछ। विभिन्न दलिहनक आवरण, आकृति ओ स्वाद भिन्न-भिन्न होइत अछि। मुख्य दलिहनमे **रहड़ि'/रहड़ी** थिक। विशिष्ट प्रकारक नमहर आकारक राहड़िकेँ **पजवा राहड़ि** कहल जाइत अछि। अति छोट आकृतिवला राहड़ि **चनकी/तुलबुलिया** नामे जानल जाइत अछि। माघ मासमे उपजऽवला राहड़ि **मघही/मगही** तथा अगहनमे होअऽवला **अघनुआँ** नामे अभिहित अछि। राहड़िक आवरण रक्ताभ कत्थइ रंगक होइत अछि। ई अण्डाकार होइछ। एकर दल पीताभ होइत अछि। तदरिक्त अन्य दलिहन सभमे अछि- **खेरही/मूङ/मूंग**। एकर आकृति बेलनाकार तथा लघु होइछ एवं आवरणक रंग हरियर होइत छैक। **मसुरीक** आवरण सिलेटी रंगक होइत छैक। एकर आकार वृत्ताकार तथा दुनू पार्श्व उत्तल होइत अछि। एकर दालिक रंग लाल होइत अछि। **बूट/बदामक** आवरण हल्लुक कत्थी रंगक आ गोल आकृतिक होइछ। एकर पार्श्वमे नाक सदृश आकृति बनल रहैत छैक। एकर दल मोट ओ पीयर रंगक होइत अछि। **कुर्थी** चापट आकृतिक तथा कत्थइ चित्रवर्णक होइछ। एकर दालि भुल्ल रंगक रहैछ। **खेसारी/खेसाड़ी** त्रिपार्श्वक आकृतिक होइछ तथा एकर आवरणक रंग मठरंग चित्रवर्णक होइछ। **रहड़िया/बड़ला/बकलाक** आकृति पैघ बेलनाकार होइछ। एकर आवरण सभ दलिहनक आवरणसँ मोट होइत अछि। **उड़ीद/उरीद/तेबखाक** आवरणक रंग कारी, हरियर तथा हरियरकारी चित्रवर्णक होइत अछि। एकर आकृति मूङक दोबर होइछ। एकर दल उज्जर रंगक होइत अछि। हरियरका उड़ीदकेँ **केलाइ** कहल जाइछ। एकर अन्य प्रभेदकेँ **मेथ** कहल जाइछ **केराओक** आकृति बेलनाकार होइत छैक। एकर आवरण हरियर ओ पीयर मिश्रित चित्रवर्णक होइत छैक। एही प्रभेदक पैघ आकृतिक दलिहन थिक **मटर/मट्टर**। एकर रंग उज्जर तथा हरियर होइछ।

भदइ-

भादव मासमे तैयार होअऽवला अन्नकेँ **भदइ/भदइया** अन्न कहल जाइछ। भदइक अन्तर्गत अबैत अछि। प्रथमतः मकइ जे त्रिकोण ओ पैघ आकृतिक अन्न थिक। एकर शतशः दाना एक बीत नाम बेलनाकार दण्डमे सृजित रहैछ, जकरा मकइक **बालि/शीश/सीस** कहल जाइछ। बालिक समस्त भाग अनेक परतसँ झाँपल रहैछ जकरा **बाकल/बकला/बकलो** कहल जाइछ। एकर उपरका भागमे केश सदृश रहैछ जकरा **मोच/मोछ** कहल जाइछ। रंगक आधारपर **उजरी मकइ** ओ **ललकी मकइ** तथा आकारक आधारपर छोटको दानाबला मकइक प्रभेद **तुलबुलिया/सोनाझाड़ी** कहल जाइछ तथा पैघ दानावला मकइकेँ **मक्का/दाँतवला मकइ/संकर मकइ** कहल जाइछ।

बालिमे दानाक अंश विशेष रहलापर **गस्सल-गस्सल बालि** कहल जाइछ तथा छेहर दानाबला बालि **भोर/भोराह/भोरहा** कहल जाइछ। अपक्वावस्थाक बालिकेँ **दुद्धा/सच्चा/खिच्चा/खिम्जा** कहल जाइछ।

मकइ जखन पाकि जाइछ तँ एकर दानाकेँ बालिसँ फराक कयल जाइछ। दाना फराक करबाक क्रिया **छोड़ायब** होइछ। छुटल दाना **झड़** कहल जाइछ। दाना छुटलाक पश्चात् बचल गोल नामदण्ड **नेड़हा/नेढ़ा/लेढ़ा/बलुरी** कहल जाइछ। अत्यन्त छोट-छोट भोराह सीसकेँ **गोलड़ी** कहल जाइत अछि।

दोसर भदइ अन्न **मड़ुआ** कत्थै लाल रंगक अत्यन्त लघु ओ गोल आकृतिक होइछ। एकर शीशकेँ **डेसर/डेढ़ी** कहल जाइछ। दाना निकाललाक पश्चात् बचल अंश **पुत्ती/काँढ़ू** कहल जाइछ तथा एकर भुस्साकेँ **भुस्सी** आ मोट अवशेष एकर गाछकेँ **डाँटी** कहल जाइछ। जितिया पावनिमे मड़ुआक रोटी आ माछ अइहबक प्रधान खाद्य होइछ। प्रसवक समयपर कठिनाइ भेलापर मिथिलामे मड़ुआक चिक्कस उड़िअयबाक रूढ़ि प्रचलित अछि। अन्य भदइया अन्नमे **जनेर** गोल आकृतिक तथा सामान्यतः लाल ओ उज्जर रंगक होइछ। एही आकृतिक एकर अन्य प्रभेदकेँ **बजरा** कहल जाइछ। **साम/सामा** ओ **काउन/ कउनी/काउनि** पुतीक पातर आवरणसँ घेरल मड़ुएक आकृतिक होइछ। कहल जाइछ जे साममे सातटा भुस्सा होइछ आ काउनमे एकेटा। सामक वाह्य आवरण सिलेटी रंगक होइछ तथा भीतरक दाना उज्जर होइछ। मुदा काउनक बाह्य ओ भीतरक रंग पीयर होइछ। साम शुद्ध अन्न मध्य गनल जाइछ। काउनक आकृतिक अन्य अन्न **कोदो** तथा **चीन** होइछ। चीनक वाह्य रंग कारी होइछ।

संग्रहीत अन्नमे अनेक प्रकारक कीट सामान्यतया लगैत देखल जाइछ। एकटा कीट अन्नक मध्यवर्ती गुदगर अंश सभकेँ खखरी बना दैछ। एहि कीटकेँ **फाँड़ा** कहल जाइछ। फाँड़ेक आकृतिक अन्य कीट **भेड़वा** होइत अछि। चाउरमे लागऽवला लाल रंगक अत्यन्त सूक्ष्म कीट **सूड़ा/चिकना/चिकनी/चटना** कहल जाइछ। पुरान चाउरमे उज्जर रंग ओ नाम आकृतिक एक गोट कीट लगैछ जे **पिलुआ** कहल जाइछ।

पुष्टसँ इतर दुर्बल आयुष्ट अन्न **मिरहिन्नी** कहल जाइछ सत्वहीन विवर्ण अन्न **मेरखी/मेरुखी** होइछ। ऊपरसँ दानाक आकार रहैछ मुदा भीतर खाली रहैछ, एहन अन्न **फोंकिला/फोकला** (फोंक+इला) कहल जाइछ।

कन्द वर्गक खाद्य

कन्द वर्गक प्रधान खाद्यक रूपमे मिथिलामे **अल्हुआ/पतालपेड़ा/सकरकन्द** नामक कन्दक उपयोग होइत अछि। ई लतीमे माटिक तर फड़ैछ। एकरा काँच आ उसिनि कऽ ग्रहण कयल जाइछ। एकर दुइ गोट प्रभेद भेटैत अछि। **अघनुआँ** तथा **बैसक्खा** जे उपजयबाक समयक आधारपर प्रचलित नाम अछि। अघनुआँ अल्हुआ नाम आकृतिक तथा मीठ प्रकृतिक होइत अछि एवं बैसक्खा अल्हुआ गोल ओ मोट आकृतिक तथा बलुआह प्रकृतिक होइछ। अल्हुआपर अत्यन्त पातर **खोइया** होइछ। खोइयाक

प्रकृति, अल्हुआक आकार तथा स्वादक आधारपर अल्हुआक अनेक प्रभेद भेटैत अछि। अत्यन्त मीठ स्वादवला अल्हुआक एकटा प्रभेद **अलपान** कहल जाइछ। अत्यन्त लाल त्वचासँ युक्त गोल एंव पैघ आकृतिक अल्हुआक विशिष्ट प्रभेद **कोटहा** कहल जाइछ। झिङ्गुनीक आकृतिसँ युक्त प्रभेद **झिङ्गुनियाँ** कहल जाइछ। सलगमक आकृतिक अल्हुआक प्रभेदकेँ **पनमा** कहल जाइछ। अल्हुआमे गुच्छक संगहि सूत जकाँ अखाद्य भाग रहैत छैक। एहन अल्हुआकेँ **सिराह/सोराह** कहल जाइत छैक। जाहि अल्हुआमे एही भागक प्रधानता रहैत छैक आ गुद्दावला भाग नहिएँ जकाँ रहैत छैक ओकरा **सुतिआयल/सोइरी/सोर** अल्हुआ कहल जाइछ। रंगक आधारपर अल्हुआक ललका ओ उजरा प्रभेद होइछ। अल्हुआकेँ समयपर खेतसँ नहि उखाड़बाक कारणेँ ओहिमे विशेष कीट **दिबाड़** लागि जाइछ। एहन दिबाड़ लागल अल्हुआ **दिबड़ा/दिबड़लगू** कहल जाइछ।

अल्हुआ काँचो खायल जाइछ। मुदा विशेषत: उसिनि ओ पका कऽ खायल जाइछ। आगिमे घुसिआय सिद्ध कयल अल्हुआ **पकाओल अल्हुआ** कहल जाइछ तथा पानिमे सिद्ध कयल **उसिनल अल्हुआ** कहल जाइछ। उसिनबाक क्रममे पानि कम रहलापर बासनक पेनमे अल्हुआ पकड़ि लैछ। एहन अल्हुआ **पेनलग्गू** कहल जाइछ तथा बासनमे तरमे अल्हुआक लत्ती दऽ कऽ अल्हुआ आ कम पानि दऽ कऽ ऊपरसँ फेर लत्ती दऽ देल जाइछ आ ढाकनसँ बासनकेँ झाँपि कऽ माटिसँ मूनि देल जाइछ। तखन आँच दऽ अल्हुआ सिझाओल जाइछ। एहि प्रक्रियासँ सिझाओल अल्हुआ **झप्पा** कहल जाइछ। तहिना काँच दूधमे गरम भात दऽ कऽ किछु समयक हेतु छोड़ि देल जाइछ। एहन खाद्य **झप्पा दूध-भात** कहल जाइछ।

लत्तीयेमे उत्पन्न होअऽवला अन्य खाद्य होइछ- **सुथनी/मिसरीकन्द**। एकर खोंइचाक रंग उज्जर मलिछओन होइछ तथा ओहिपर पातर-पातर सोर लागल रहैत छैक। स्थान-स्थानपर खोंइचामे सूक्ष्म कारी-कारी बुनका पड़ल रहैत छैक। एहि कन्दक स्वाद मधुर तथा आकृति अल्हुयेक सदृश होइछ। ई कन्द उसिनिये कऽ खायल जाइछ।

प्रत्यक्षत: ग्रहण करबा योग्य लत्तीमे उत्पन्न होअऽवला अत्यन्त लोकप्रिय एवं मधुर स्वादक एक गोट कन्द होइछ **केसौर/रामकेसौर/किसोर**। एकर खोंइचा मोट तथा गदौस रंगक होइछ। एकर गुद्दा दूध सन उज्जर होइत अछि।

पानिमे उत्पन्न होअऽवला विभिन्न कन्द सेहो आहारक रूपमे प्रचलित अछि। एहिमे कारी रंगक आवरणसँ युक्त छोट आकारक एक गोट कन्द अछि **सारुख**। ई उसिनि कऽ खायल जाइछ तथा एकर स्वाद **अकथाइन** होइछ। जलसँ प्राप्त होअऽवला एही जातिक पैघ आकारक अन्य कन्द अछि **कइहर**। एकरो उसिनि कऽ ग्रहण कयल जाइछ। एकर भीतरक रंग पियरौंछ होइछ।

चरहा खेतमे मोथी सदृश गाछक जड़िमे उत्पन्न होअऽवला अत्यन्त लघु आकृतिक कन्द **चिचोड़/चिचोढ़ी** कहल जाइछ। ई कन्द सामान्यत: निर्धन वर्ग द्वारा क्षुधा शान्तिक हेतु ग्रहण कयल जाइछ। एकरे पैघ आकारक कन्द होइछ **सौरखी/सेउरकी**। एकर उपरका रंग कारी तथा भीतरक रंग दूध सन उज्जर होइछ तथा ई स्वादमे अति मिट्ठ होइछ।

मुरइक छोट आकृतिक लाल रंगक एकटा कन्द अछि **गाजर/गजरा**। एकर स्वाद मिठओंस होइछ।

व्यञ्जन

अन्नक अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक लता, कन्द, मूल, फल आदिसँ भोजन समृद्ध होइत अछि। माटिक तऽरमे उपजऽवला कन्दसँ निर्मित खाद्यकेँ **तरकारी** तथा फलसँ निर्मित खाद्यकेँ **फरकारी** कहल जाइछ। ई अन्नक सहचरक रूपमे स्वादक हेतु व्यवहृत होइत अछि।

तरकारी ओहि गाछकेँ कहल जाइछ जकर जड़ि, डाँट, पात, फूल तथा फऽड़ सहित रान्हि-पका कऽ खायल (ग्रहण) कयल जाइछ।

एहि सभकेँ उत्पन्न होयबाक आधारपर तीनगोट वर्ग कयल जा सकैछ -

(1) कन्द-मूल जातिक (2) फल जातिक (3) पत्र-पुष्प जातिक।

कन्द-मूल जातिक :

कन्द-मूलसँ तात्पर्य थिक एहन वनस्पति जे माँटिक नीचामे उपजैत अछि। एहिमे भोजन सामग्रीक रूपमे सर्वसाधारण ओ सर्वसामयिक होइछ **आलू/अल्लू/अल्हू**। एकर आकृति गोल ओ नाम दुनू प्रकारक होइछ। एकर आवरणक रंग अल्प लाल तथा पिरौंछ होइत छैक। ताहि आधारपर क्रमश: दुनू प्रभेदकेँ **ललका आलू** तथा **उजरा आलू** कहल जाइछ। मिथिला क्षेत्रमे आलूक जे प्रभेद उपजाओल जाइछ तकरा **देशी/देसिला** कहल जाइछ। आलूक अन्य प्रभेदकेँ **सुनरी कुपरी** कहल जाइछ। एकरा विशिष्ट प्रभेदक आलूकेँ **शीशापानी** आलू कहल जाइछ। आयातित आलूक प्रभेदकेँ **पहाड़ी आलू** कहल जाइछ। एकर स्वाद मिठओन होइछ। आलूपर पातर खोइँचा रहैछ तथा एकर भीतरी भाग गुदगर होइत छैक।

ओल' मिथिलामे प्रचलित विशिष्ट कन्द थिक। ई उज्जर तथा लाल वर्णक होइत अछि। एकर उपरका भागमे करिऔन अत्यन्त पातर आवरण रहैत छैक। एकर आकृति अर्द्धगोलाकार होइत छैक। ओजन (तौल)मे ई कखनो-कखनो पसेरियोसँ फाजिल होइत छैक। ओलक पृष्ठपर निकलल शूलाकार भागकेँ **टोंटी/टोटी** कहल

जाइछ । ओलक टेंटी रोपलापर पुन: गाछ जनमैछ । एही अवस्थाक ओलक गाछकेँ ओलक **पेंप/पेंपी** कहल जाइछ । ओलक प्रधान गुण थिक **कबकब** होयब । जाहि ओलमे कबकबी अत्यल्प होइछ तकरा **भतओल/भतोल** कहल जाइछ ।

तेकुना/टेकुना एक हाथ नाम बेलनाकार कन्द होइछ । एकर लत्तीवला भाग उज्जर रंगक तथा आवरण भुल्ल रंगक होइछ । स्वादमे ई अत्यल्प कबकबी जकरा **रिबरिब** कहल जाइछ । एकर भाववाचक **रिबरिब्बी/रबरब्बी** होइछ ।

आरु/अरुआ/अरुइ/अरुबी/अरबी सेहो विशिष्ट कन्द थिक । एकर आकृति नाम ओ लम्बाइ करीब आङुर भरि होइत अछि । आकृतिमे इहो बेलनाकार होइछ । ई अत्यल्प **रिबरिबी** तथा **लसलसी**सँ युक्त होइत अछि ।

खम्हरुआ/खम्हारु/खम्हाडर/फडइ करीब डेढ़-दू हाथ नाम बेलनाकार कन्द विशेष थिक । लत्तीमे उत्पन्न फडइकेँ **कदुआ/फरुहा/फइचोका** कहल जाइछ । एही कदुआकेँ रोपला सन्ता जे कन्द उत्पन्न होइछ तकरा **फडइ** कहल जाइछ । **फड़** सामान्यत: **खम्हाडर**सँ छोट आकृतिमे बैसैत अछि । एकर ऊपरी आवरण कत्थइ तथा **भुल्ल** रंगक होइछ । ई लसलसीसँ युक्त होइत अछि ।

सालगम/सलगम/सलजम उज्जर रंगक कन्द विशेष थिक । हरियर रंगक ओल आकृतिक कन्द **ओलकोबी** कहल जाइछ ।

फल

अप्रत्यक्षत: खाद्य फलमे किछु समैया गछुलीसँ एवं अधिकांश समैया लत्तीसँ प्राप्त होइत अछि । समैया गछुलीसँ प्राप्त एक गोट प्रमुख खाद्य फल होइछ **भाँटा/भंटा/बैगन** (सं.बंग:) कहल जाइछ । एकर रंग सामान्यत: उज्जर, हरियर ओ बैंगनी होइछ । आकृतिमे ई नाम प्रभेदक तथा गेनक आकृतिक पाओल जाइछ । गेनक आकृतिवला प्रभेदकेँ **भाँटी/भाँटिन** कहल जाइत छैक । नाम आकृतिवला प्रभेदमे अत्यधिक फड़ऽवला तथा पातर आकृतिक विशिष्ट प्रभेद **सतपुतिया/झिङुनियाँ** कहल जाइछ । अत्यधिक बीयासँ युक्त भाँटाक प्रभेद **चलानी** भाँटा कहल जाइछ । रंगक आधारपर ललका, उजरा तथा हरियरका भाँटा कहल जाइछ ।

मुरइ/मूर/मूड़ पातर ओ नाम आकृतिक मूल थिक । एकर आवरणक रंग सामान्यत: उज्जर होइछ । एकर स्वाद अल्प कड़ु होइछ । काँचो खयबामे एकर उपयोग होइत अछि ।

रामतोरइ/रामझिमनी/रामझिङुनी/रामपरोड़/भिण्डी आङुरक आकृतिक पञ्चफलक खाद्य फल थिक जे समैया गछुलीसँ प्राप्त होइछ ।

मुनिगा/मुनगा/सहजन/सहिजन/सोहिजन वृक्ष जातीय खाद्य फल थिक । एकर आकृति पातर दण्डाकार होइछ तथा ई करीब हाथ भरि नाम होइछ ।

लताफल

प्रसिद्ध लत्तीएसँ प्राप्त खाद्य फल थिक- **सजमनि/कद्दू/कदुआ/लौकी** । एकर आकृति गोल ओ नाम दुनू प्रभेदक होइछ । उपरका भागमे रेखासँ युक्त सजमनिक एकटा प्रभेद **रेघवा सजमनि** कहल जाइछ । सजमनिक एक विशिष्ट नाम प्रभेदकेँ **तगबा** कहल जाइछ तथा गोल आकृतिवलाकेँ **तुम्मावला सजमनि** कहल जाइछ । थीक स्वाद सँ युक्त सजमनिकेँ **थिबहा/थिबही** कहल जाइछ ।

लत्तीसँ सेहो विभिन्न प्रकारक खाद्य फल भेटैछ । एहिमे लाल रंगक एवं गोल आकृतिक फल विशेष **टमाटर** कहल जाइछ । एकरा प्रत्यक्षत: सेहो खायल जाइछ । लत्तीयेमे फड़ऽवला एक गोट अन्य फल होइछ **कदीमा/कुम्हड़ा** (सं.पीतकुष्माण्ड) । एकर आकृति नाम ओ गोल दुनू प्रभेदक होइछ तथा आकारमे ई अत्यन्त पैघत्वकेँ सेहो प्राप्त कऽ लैछ । एकर स्वाद मिठओंस होइछ । एकर आवरणक रंग **चित्तिर-बित्तिर** तथा गुद्दाक रंग पीयर होइछ। एकर बीचक भाग फोंक होइछ । एकर लत्तीमे आध-आध मन धरिक फल होइछ ।

एही प्रकारक लत्तीसँ प्राप्त अन्य खाद्य फल थिक **कुम्हड़/सजकुम्हड़/सेजकुम्हड़/सिसकोहरा/सिजकोंहरा/भतुआ** (सं.श्वेत कुष्माण्ड) । परिक्वावस्थामे एकर उपरका भागक रंग चुनेटल देबाल जकाँ भऽ जाइछ, जकरा **चुनायल कुम्हड़** कहल जाइछ ।

लत्तीमे फड़ऽवला तीत स्वादसँ युक्त एकटा फल विशेष **कई(र)ल'/कई(र)ला/कई(र)ली** कहल जाइछ । एकर उपरका भाग उभर-खाभर रहैछ । ई दू प्रभेदक होइछ- उजरा **करैल** तथा हरियरका **करैल** ।

करैलेक आकृतिक मुदा लघु आकारक फल विशेषकेँ **चठैल** कहल जाइछ । एकर एकटा प्रभेदकेँ **फुलचठैल** कहल जाइद । एकर उपरका सतह काँटयुक्त होइछ ।

एकटा अन्य लता फल होइछ **घेड़ा(र)/घीड़ा(र)/घिउड़ा(र)/नेनुआँ** । एकर आकृति बेलनाकार होइछ तथा सतह समतल रहैछ । ई लगभग डेढ़-दू बीत धरि नाम ओ दू इंच व्यासक होइत अछि । ई लघुपाकी तरकारी मानल जाइछ ।

एही जातिक अन्य लताफल अछि **झिमनी/झिङुनी/झिङनी** । एकर उपरका सतहपर खाँच सदृश बनल रहैत छैक । विशेष नाम आकृतिक झिमनी तगबा कहल जाइछ तथा मोटगर आकृतिवला **खरोंआ** कहल जाइछ ।

बलुआह प्रदेश, खास कऽ नदी तटपर उपजऽवला लताफलक विशिष्ट ओ

लोकप्रिय प्रकार **परोड़/परबल/पट्टर** होइछ । एकर लम्बाइ करीब आङ्गुर भरिक ओ आकार ढोल सदृश होइछ । ई रंगमे हरियर होइत छैक ।

तिलकोड़क फड़क आकृतिक लताफल विशेष जे तिलकोड़े सन लत्तीमे फड़ैछ तथा खटैन स्वादक होइछ । **कुण्डली/कुन्दरी/कुरी** कहल जाइछ । एहिमे अत्यधिक बीया रहैत छैक । एही आकृतिक एकगोट लताफल थिक **तितपरड़ी/तितपड़ड़ी/तितपरी** । एकर स्वाद तीत होइत छैक तेँ खाद्य नहि होइछ ।

तिनपतिया लत्तीमे फड़ऽवला अन्य खाद्य फल **सीम** कहल जाइछ । ई चापत, नाम ओ आङ्गुर सन गोल विभिन्न आकृतिक होइछ । लाल रेघासँ युक्त एकर एक गोट प्रभेद **डेड़बा सीम** होइछ । सीमक एक अन्य प्रभेद होइछ **तरुअरिया/तरोरिया** । ई तरुआरिक आकारक होइछ । रोंआदार प्रभेदक सीमकेँ **कबछुआ सीम** कहल जाइछ ।

लत्तीयेमे फड़ऽवला एकटा खाद्य फल होइछ **कैता** । ई करीब हाथ भरि नाम बेलनाकार होइछ तथा एकर उपरका रंग उज्जर ओ हरियर मिश्रित होइछ । एकर अग्रभाग नोखगर होइत छैक ।

छिम्मीक स्वरूपमे पाओल जायवला लताफल विशेषकेँ **बोरा/बोरो/बोरी** कहल जाइछ ।

पुष्प जातीय

पुष्पजातीय व्यञ्जनमे **कोबी** अत्यन्त प्रशस्त अछि । ई अगहनसँ फागुन धरि उपजैत अछि । एकर उपरका भागमे उज्जर रंगक गोल पिण्डक खाद्य रहैछ जकरा **कोबी/फूल/फूलकोबी** कहल जाइछ । फूलक समेकित भाग कहल जाइछ । छत्ताक निचला भागकेँ चारू कातसँ पात घेरने रहैछ । किछु कोबीक फूल अत्यधिक बढ़ि कऽ छिड़िया जाइत अछि जाहिसँ ओकर पिण्ड नहि बनि पबैत छैक तथा पछाति ओहिमे बीज उत्पन्न भऽ जाइत छैक । एहन कोबीकेँ **फुलायल कोबी** कहल जाइछ । कोबीकेँ छोट-छोट अंशमे काटि कऽ रउदमे सुखा लेल जाइछ । एहन सुखायल कोबी **सुखौंत/कोबीक सुखौंत** कहल जाइछ, जे गृष्मसँ वर्षाऋतु धरि उपयोगमे अबैत अछि ।

पातक पिण्डाकार कोबीक अन्य प्रभेदकेँ **बन्धा/बञ्झा/पतकोबी** कहल जाइछ । एकर पिण्डमे पातक क्रमशः पैघ आकृति सभ मिलि कऽ पिण्डक निर्माण कयने रहैत छैक । एकरो सुखऔंत बनाओल जाइछ ।

कदीमाक फूल, बेला, इन्द्रकमलक फूलक तरुआ तरि कऽ खायल जाइ । पिड़ार एकटा वृक्ष होइछ जकर फड़क तरकारी होइते अछि, सबसँ बेसी पिड़ारक फूलक तरुआ प्रशस्त अछि ।

साग

विभिन्न झाड़क डाँट ओ पात सेहो खायल जाइछ । एहन खाद्यकेँ साग कहल जाइछ । मिथिलाक जीवनमे साग अत्यन्त जनप्रिय अछि । एकर कारण थिक एकर सहज सुलभता जाहिसँ गरीबो-गुरबाकेँ, जकरा नीक तरकारीक उपभोग सम्भव नहि छैक, ई प्राप्त करब असम्भव नहि रहैत छैक ।

साग मध्य **अरिकोंच/अरिकोंछ/अरिकंचन/कञ्चु** अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि । एकर पात वृहदाकार होइछ । एकर डाँट कमल नाल सदृश कन्दसँ जुड़ल रहैछ । ई लाल तथा हरियर रंगक होइछ । तेँ **ललका कञ्चु** तथा **उजरा कञ्चु** नामे अभिहित होइछ । कञ्चु जलक सम्पर्कमे विशेष होइछ । एकर प्रधान गुण **कबकब/रिबरिब** होयब थिक । एकर पातकेँ क्रमशः मेथी अथवा बेसनक लेप लगा कऽ अनेक पात साटि लेल जाइछ । एहन साटल पातकेँ लपेटला उत्तर नाम बेलनाकार वस्तु बनैछ जकरा **लोढ़ा** कहल जाइछ । एकरा किछु समयक पछाति खण्ड-खण्डमे विभक्त कऽ रउदमे सुखबाक हेतु देल जाइछ । एहन काटल खण्ड **चक्का/कञ्चुक चक्का** कहल जाइछ ।

सागक एक प्रभेद **कुसुमक** साग कहल जाइछ । एकर छोटसन गाछ होइछ जकर पात तमाकू पातक आकारक होइछ ।

लताविशेषसँ प्राप्त साग मध्य **करमीक** नाम अबैत अछि । ई जलक सतहपर होअऽवला साग थिक । ई दू आङ्गुर चाकर एवं एक आङ्गुर भरि नाम आकारक पातसँ युक्त लत्तीमे होइछ । जकर मुड़ीक भाग खोंटि कऽ साग बनाओल जाइछ । ई साग गरीबक सम्बल मानल जाइत अछि ।

गेनहारी/गेन्हाड़ी(री)/गेन्हड़ी(री)क साग विशेष महत्वक मानल जाइछ । एकर पात गोल होइछ । अनेकशः डाँटसँ युक्त होयबाक कारणेँ एकर एकटा प्रभेरद **चतरीगेन्हारी** कहल जाइछ । एकर अनेरुआ प्रभेद **फुलगेन्हाड़ी(री)/जलगेन्हाड़ी(री)** कहल जाइछ ।

सागक अन्य प्रभेद होइछ **ठढ़िया/ठरिया** साग । एकर डाँट मोट-मोट होइछ । ई लाल तथा हरियर होइछ ।

एक प्रकारक अनेरुआ साग होइछ - **गजपुरैन/गजपुरैना/गदहपुरैन/गदहपुरैना** । एकर पात गोल होइछ । एही जातिक नाम पातवला साग **चिड़ैया/दलिचिनियाँक** साग कहल जाइछ । एकटा अनेरुआ साग **झुरखुना** चौमास खेतमे होइछ ।

दूभि जकाँ चतरल एक प्रकारक साग होइछ जकरा **नोनीक साग/नूनीक साग** कहल जाइछ । एकर स्वाद खटगर होइछ । अहिबातीक हेतु नोनीक साग खायब जितिया पावनिमे अनिवार्य मानल जाइछ ।

जाड़ मासमे पाओल जायवला साग मध्य **बथुआ** पहिने अबैत अछि । एकर पात खाँचदार होइछ । गोल आकृतिक पातवला बथुआकेँ **चमरबथुआ** कहल जाइछ । बथुआक एक विशिष्ट वृहदाकार गाछकेँ **झल्ला/झल्ला बथुआ** कहल जाइछ । श्वेताभ पातवला बथुआकेँ **चननबथुआ** कहल जाइछ ।

चर-चाँचर, गाछी-बिर्छीमे पाओल जायवला एक प्रकारक साग होइछ **सरहच्ची/सरहैंच्ची** । एहने स्थानमे लस्सासँ युक्त एक प्रकारक साग पाओल जाइछ जकरा **फुटियाक साग** कहल जाइछ ।

मिथिलाक प्रशस्त साग मध्य **पटुआक** नाम लेल जाइत अछि । एकर साग झाड़ीदार वृक्ष सदृश होइछ । एकर पात नाम खाँचदार होइछ । ई लाल तथा उज्जर रंगक होइछ । उज्जर प्रभेदकेँ **छौका पटुआ** कहल जाइछ, एकर प्रधान गुण थिक कनेक तीत होयब । एकर एकमात्र झोरेटा बनाओल जाइछ । मिथिलाक **पटुआक झोर** नामी अछि। सागक एक प्रभेदकेँ **पलाँकी/पालक/पालक्र** कहल जाइछ । अनेरुआ साग खटगर होइछ तथा कोमल सेहो, तेँ ई अन्य साग मध्य फेँटि कऽ बनाओल जाइछ । जङली सागक एकटा प्रभेद होइछ- **भुटका/भुटकुइयाँ** ।

लत्तीबला साग मध्य **पोरो** साग सेहो अबैत अछि । एकर पात पानक पातक सदृश मुदा मोटगर होइछ । वृहदाकार पातबला साग **ढकनपोरो** कहल जाइछ । ई लाल तथा हरियर रंगक होइछ ।

चारि-पाँच पत्तीसँ युक्त फूल आकारक पातवला एकटा साग **अमरोड़ाक साग** कहल जाइछ । खटाइक स्थानमे एकर उपयोग कयल जाइछ ।

पानेक पातक आकारक एक प्रकारक जंगली साग **कन्ना** कहल जाइछ । एकर साग वृहदाकारक पातवला प्रभेदकेँ **कउँआँ** कहल जाइछ । एकर पातक मात्र तरुऐटा होइछ ।

अन्न विशेषक साग मध्य **बूट, खेसारी, केराव, मट्टर** आदिक लत्तीक उपरका भागकेँ तोड़ि कऽ साग बनाओल जाइछ । कुम्हड़ तथा कदीमाक लत्तीक मुड़ी परहक पातकेँ तोड़ि कऽ सेहो साग बनाओल जाइछ ।

सागक एकटा अन्य प्रभेद थिक **सोआ**, जकर गाछ धनीक गाछक झाड़ सदृश होइछ । ई मात्र फोड़नक कार्यमे अबैछ ।

गेन्हारीये सागक सदृश चतरल साग होइछ **पुदीना/पोदीना** । एकर पातक आकार गोल होइछ । पातेक हेतु ई प्रशस्त मानल जाइछ । पेटक हेतु ई रामवाण मानल जाइछ । पेटक गड़बड़ीमे एकर पातकेँ पीसि कऽ अर्क बना कऽ पिआओल जाइछ । एकर पातकेँ

बेसनमे मिला कऽ **बऽड़ा/तरुआ** बनाओल जाइछ । एकर पात चटनीक नीक भेजन थिक ।

विशिष्ट प्रकारक लत्तीसँ प्राप्त सागेक एक गोट प्रभेद थिक **तिलकोर** । एकर पातकेँ तरि कऽ खयबाक प्रचलन अछि । अपन विशिष्ट स्वाद एवं औषधीय गुणक कारणेँ एकर तरुआ मिथिलाक प्रसिद्ध व्यञ्जन मध्य गनल जाइछ ।

विभिन्न सागकेँ भविष्यक लेल सुरक्षित रखबाक हेतु ओकर कने-कने अंश एक ठाम गोलिआय बेसनक घोरमे लेपटाय-लेपटाय रौदमे सुखा लेल जाइछ । एहि तरहेँ जे नाम आकृतिक व्यंजन सामग्री बनैछ, तकरा **झुड़ी/बीड़ा/बिड़िया** कहल जाइछ । प्राकृतिक प्रकोपक कारणेँ सागक मूड़ी कठोर भऽ जाइछ । एहन साग **कठिआयल साग** कहल जाइछ तथा एकर कठोर होयबाक क्रिया थिक **कठिआयब** । कोमल सागकेँ **फोकायल/फोकगर साग** कहल जाइछ । साग तथा लत्ती-फत्तीक रोग विशेषक कीटकेँ **लाही** कहल जाइछ । ई कारी रंगक बिन्दु आकारक होइछ । विशेष ठंढाक कारणेँ ई रोग पकड़ैछ । एकरा पकड़लाक पश्चात् ओहि सागक विकास नहि होइछ । एहि प्रकारेँ रोग पकड़बाक क्रिया **झाँसी/झाँसी मारब** होइछ ।

माछ

मिथिलाक भोजन सामग्री मध्य माछकेँ सेहो प्रधाने स्थान छैक । एहि ठामक भौगोलिक ओ सांस्कृतिक परिवेशमे माछ तेना सन्निहित देखि पड़ैछ जे माछकेँ पृथक् राखि मैथिल जीवन-पद्धतिक, खास कऽ भोजन-पद्धतिक परिकल्पनो असम्भव । एहि ठामक लोक सामान्यत: **मछगिद्ध/मछगिद्धा** होइत अछि । एते धरि जे भारतीय धार्मिक ओ वर्णाश्रम परम्पराक अनुकूल होइतहुँ एहिठामक ब्राह्मण पर्यन्त माछ खाइत छथि । यात्राकालमे तँ माछकेँ शुभसूचक बूझले जाइछ । नदीमातृक देश ओ बाढ़िप्लावित प्रदेश होयबाक कारणेँ माछ एतऽ सभ दिन सर्वजनसुलभ रहैत अछि । तेँ मिथिलाक भोजन पद्धतिपर माछक अपन खास वर्चस्व छैक । माछ गरीबक आहार ओ अमीरक शृंगार थीक से कहल जाइत छल ।

जलमे रहऽवला खाद्य जन्तु विशेष **माछ'/मछरी'/मछली** कहल जाइत अछि। माछक हेतु प्राचीन शब्द **मीन'/मत्स्य/झख'** अछि । हास्य-व्यंग्यमे माछक हेतु **जलसेम/जलपरोड़** शब्दक व्यवहार कयल जाइछ । माछक हेतु एकटा रूढ़ शब्द **काँट-कूसक** सेहो लोकजीवनमे प्रयोग होइछ ।

अदुग्धपायी प्राणीमात्रक गर्भसँ नि:सृत सजीव गोल वस्तु जे पश्चात् बच्चाक रूप धारण करैत अछि ओकरा **अण्डा** कहल जाइत अछि । माछक अण्डाकेँ **आङा/ स्थान** कहल जाइत छैक । **आङा** एक इंच नाम भेलापर सूक्ष्म बच्चाक रूपमे प्रकट होइत अछि ।

एहि सूक्ष्म बच्चाक प्रभेदकेँ चीन्हल जा सकैत छैक । यैह पोखरि आदिमे वृद्धिक हेतु देल जाइत अछि । एकरा **ग्यौरा/जियारा/जिअओरा/जियौरा/जीरा** कहल जाइत अछि ।

माछक छोट-छोट बच्चा सभकेँ **छवड़ा** कहल जाइत अछि । अपन **छवड़ा** सभक संग माछक रहबाक स्थान **घर/घरि/घइर/घरी** होइत अछि ।

फड़ीसँ माछक एक संख्याक बोध होइत अछि । संस्कृतमे माछक पर्यायक रूपमे सफरी शब्द भेटैत अछि, जाहिमे ध्वनि ओ अर्थ परिवर्तनसँ **फड़ी** शब्द बनल अछि ।

माछकेँ एक स्थानसँ दोसर स्थान पर लऽ जयबाक हेतु खऽढ़ आदिमे बान्हल मोटरीकेँ **खोंचड़ि** कहल जाइत अछि ।

नदी मात्रमे पाओल जायवला माछ **नदियारी** कहल जाइछ । जे माछ सभ पोखरि आदिमे सेहो होइत अछि से **पोखरइन/पोखरौनी** कहल जाइत छैक । जाहि ठाम माछ नहि होइछ से **अमच्छ** कहल जाइछ छैक । अधिक माँछसँ युक्त जलाशय **मछगर** कहल जाइछ । कोनो जलाशयमे वृहत् स्तरपर माछ मारबाक (पकड़बाक) क्रिया **मछहर** कहल जाइछ । जलाशयमे कहियो माछ सभ उबिया-उबिया कऽ सतह पर आबि जाइछ । एकरा **उजाहि/उजहिया** कहल जाइछ ।

सुदूर प्रदेशमे माछक निर्यात करबाक हेतु तथा अधिक दिन धरि उपयोगक योग्य बनयबाक हेतु माछकेँ रौदमे सुखाओल जाइत छैक । एहन माछ **सुकठा/सुकठी**[7]**/सुखोंत/सुखौंत** कहल जाइत छैक । सुकठी अधिकांशतः छोटे माछ सभक बनाओल जाइत अछि । सुकठी बनयबाक स्थान **खटाल** कहल जाइत अछि ।

माछक शरीरक विभिन्न भाग

माछक शरीरकेँ मुख्य तीन भागमे बाँटल जा सकैत अछि । अग्रभाग **मूड़/मूड़ा/मूड़ी/सीरा**[8] कहल जाइत अछि । बीचक भाग **पेट/पेटी** कहल जाइछ । पाछूवला भाग **पुच्छी/पुछड़ी** होइत अछि ।

मूड़ाक अगिला खुजल भाग **मुँह** ओ मुँहक भीतरबला भाग **गलफर** कहल जाइत अछि । गलफरक दुनू कात दूटा केवाड़ जकाँ कवच रहैत छैक । एकरा **कनखुर** कहल जाइत छैक । कनखुरक भीतरी भागमे लाल रंगक केश सन पातर-पातर अंशक समूहसँ बनल बनावटि रहैत छैक । एकरा **कसेल/केशी** कहल जाइत छैक ।

पेटीक ऊपरी भाग, कनखुरक पार्श्व, पुच्छी आदिमे पंखी लागल रहैत छैक । एकर सहायतासँ माछ पानिमे हेलबामे सक्षम होइत अछि । एकरा **पेखना/पंखी** कहल जाइत अछि । माछक शरीरपरक छिलकाकेँ **खोइचा/खोइया/चोंइटा/चोइयाँ/चोइआ/सइर** कहल जाइत छैक ।

पेटीक भीतर अँतरीवला भाग **पचौनी** कहल जाइत अछि । फेफड़ावला भागकेँ **खोखस/खोखसा/फोकचा** कहल जाइत छैक । हल्लुक लाल वर्णक गुर्दावला भाग **तेल** कहल जाइत अछि । गाढ़ लाल रंगक मोलायम अङ्गकेँ **कलेजी/करेजी** कहल जाइत अछि । पीत वर्णक एकटा थैली **पित्त** कहल जाइत अछि । पचौनीमे माछक खायल वस्तुक पचल अनपचल अंशकेँ **गदरी/लेदी** कहल जाइत छैक । माछकेँ अनेक खण्डमे कटबाक क्रिया **बनायब/निकायब/निकैब** होइत अछि । खण्ड सभकेँ **कुट्टी/कुटिया/खण्ड** कहल जाइत छैक । पेटीवला कुटिया **पलइ/पलै** होइत अछि । पीठ दिसुक खंडकेँ **पिठकट** कहल जाइत छैक ।[9]

माछक शरीरक भीतरी भागमे कठोर अंश रहैत छैक, जकरा **काँट/काँटा** कहल जाइत छैक आ मोलायम मांसल अंशकेँ **गुद्दा** कहल जाइत छैक । तुरत मारल माछ **ताजा/जिवैत/जिविते/जिते/जित्ता** कहल जाइत अछि । ताजा माछ छूलापर किञ्चित कठोर होइत छैक । ओकर कठोरताकेँ **तरख** कहल जाइत छैक । तरख क्रमहि समाप्त होयबाक क्रिया **लहब** होइत अछि । लहि कऽ खराब ओ अखाद्य स्थितिमे परिवर्तित माछ **सड़ल** कहल जाइछ । सड़ल माछ छूलापर **गजगजा/पलपल** करैत छैक । एक दू दिनक भीतर उपयोग नहि कऽ लेलापर माछ सड़ि जाइत छैक ।[10] माछक विक्रय स्थल **मछहटा/मछहट्टा/मछट्टा** कहल जाइछ ।

माछक प्रभेद

माछक अनेक प्रभेद पाओल जाइत अछि । किछु माछक रंग स्वच्छ ओ श्वेताभ होइत छैक । किछु माछक रंग मलिछौन होइत छैक । कोनो-कोनो माछ वार्द्धक्य प्राप्त कयला उत्तर अधिक ओजन जेना आध मोन तथा ओहूसँ उपरक होइत अछि ओ लम्बाइयो तहिना डाँड़ भरिक भऽ जाइत छैक । मुदा किछु माछ बढ़लोपर छोटे आकृतिक रहैत अछि । माछ सभक मुँहक आकृति, पंखीक बनावटि, शरीरक आकार, काँटक स्थिति आदिमे सेहो फर्क रहैत छैक । ओना तँ सभ माछमे **सइर** रहिते छैक मुदा कोनो-कोनो माछक **सइर** ततेक छोट होइत छैक जे खयबाक हेतु बनयबाकाल ओकरा पृथक् करब आवश्यक नहि बूझल जाइत छैक । एकर विपरीत अनेक माछक **सइर** बहुत पैघ-पैघ सेहो होइत अछि । एहि भिन्नता सबहिक आधारपर माछकेँ चीन्हल जाइत छैक । तकर पश्चातो एकेटा माछ स्थान भेद भेला उत्तर विभिन्न नामे जानल जाइत अछि । स्थानजन्य वातावरणक प्रभाव सेहो माछक आकृतिपर अपन महत्त्वपूर्ण प्रभाव दैत छैक ।

अधिकतम एक फूट धरि लम्बाइवला माछकेँ **छोटका** ओ ताहिसँ पैघ जातिक माछकेँ **बड़का** कहल जा सकैछ । अत्यन्त लघु आकृतिक माछकेँ **गिधनी/घिनसी** कहल जाइत अछि ।

छोटका माछ

उज्जर रंगक अत्यन्त सूक्ष्म चोइयाँवला माछक एक गोट प्रभेदकेँ **इलङा** कहल जाइत अछि । एही प्रकृतिक किञ्चित नाम आकृतिक माछकेँ **खरां/खरोड़/खरिका** कहल जाइछ । चप्पत शरीर ओ गोल मुँहसँ युक्त लाल, पीयर, हरियर मिश्रित चोइयाँवला छोट आकृतिक माछक एक गोट प्रभेदकेँ **खेसरा** कहल जाइछ । एकर मूड़ामे सामान्यत: पीलु पाओल जाइत अछि । एकर छोट आकृतिक प्रभेद **खेसरी/कचरी/कोतरी** कहल जाइछ । करीब एक आङुर नाम आकृति ओ छिलछाह वाह्यावरणसँ युक्त माछक अन्य प्रभेद अछि **गल्ला/गलरा/गलकबइ** । एही प्रभेदक एकगोट माछक निचला भाग समतल होइत छैक । एकरा **गत्ता/गुर्त्ता/गुर्दी/गुलता** कहल जाइत अछि । नदीमे अत्यन्त तेज गतिसँ चलऽवला छोट माछक एकटा प्रभेद **घुड़चाला/घोड़चाला/घोड़चाल्हा** कहल जाइत अछि । स्वच्छ वर्णक चोइयाँसँ युक्त करीब एक आङुर नाम माछक प्रभेदकेँ **चल्हा/चल्हवा/चाल्हा/चेल्हा/चेल्हवा** कहल जाइछ । चित्रवर्णक चेल्हे सदृश माछक प्रभेदकेँ **तिलकिया/तिलिकिया/तिलिपिया** कहल जाइत अछि । चाकर मुँह ओ चित्रवर्णक चोइयाँसँ युक्त उज्जर रंगक पेटीवला भागसँ युक्त छोटका माछक प्रभेद **धनारी/धनेरा** कहल जाइछ । नदीमे पाओल जायवला माछकेँ सामान्यत: **नदियारी** कहल जाइछ । एही आधारपर अनेक अपरिचित माछकेँ सेहो **नदियारी** कहल जाइछ । समूहमे रहि पानिक भीतरवला घासक चरी करऽवला लघु माछक एकटा प्रभेद **नुनचट्ट/नुनचट्टी** कहल जाइछ ।

पानिक भीतर पथराह भागपर आकृष्ट माछक अन्य प्रभेद **पथरचट्टा/पथलचट्टा** कहल जाइछ । पूर्णियाँ रिपोर्टमे एकरा **गंगाजली/घटपौना** कहल गेल अछि[11] । अत्यन्त पातर शरीर तथा शरीरक परित: केश सदृश पातर काँटसँ युक्त माछक एकटा प्रभेद **पलवा** कहल जाइछ । एक आङुर नाम उज्जर रंगक पातर शरीरवला माछ **थुकचट्टा** कहल जाइछ, किएक तँ ई जलमे फेकल गेल थूक-खखार खा लैछ । उज्जर रंगक चोइयाँवला एकटा अत्यन्त प्रसिद्ध माछ होइछ-**पोठी**[12]। छोट पोठीकेँ **पोठिया** कहल जाइछ । पैघ आकृतिक पोठीकेँ **पोठा** कहल जाइछ । पोठीयेक सदृश मुदा अपेक्षाकृत अधिक नमगर शरीरवला माछ विशेष **फाँसा** कहल जाइछ । एकटा लघु आकृतिक माछ पानिसँ बाहर कयला उत्तर सीटी जकाँ ध्वनि करऽ लगैछ । एकरा **बजहा** कहल जाइछ । छोट बजहाकेँ **बजही** कहल जाइछ । पीठपर धारीदार काँटसँ युक्त माछक एकटा प्रभेद **बनकबइ** कहल जाइछ । बाँसक पातक आकृतिवला एवं ओकरे जकाँ अत्यन्त पातर शरीरसँ युक्त माछक एकगोट प्रभेदकेँ **बँसपत्ता/बँसपत्ती** कहल जाइत अछि । दपदप उज्जर रंगक अत्यन्त लघु आकृतिक उज्जर चोइयाँसँ युक्त माछक एक गोट प्रभेद होइछ **माली/माल्ही** । एकरा **मिरका** सेहो कहल जाइत छैक । मुँहपर लालरंगसँ युक्त माछक प्रभेदकेँ **ललमुँहा/ललमुँही/ललमुहियाँ** कहल जाइछ ।

माछक एकटा प्रभेदक रंग मलिछओन होइछ जे पानिक सतहपर दौड़ैत रहैत अछि एकरा **अरुआरी/उररा(ड़ा)** **हुर्रा/हुड़ड़ा** कहल जाइछ । बुकनन हुर्रा माछकेँ **मुरैल** कहने छथि ।[13]

कबइ/कबै बड़ स्वादिष्ट माछ होइछ । एहि माछमे काँट बेसी होइछ । एकर पीठपर धारीदार काँट होइछ । आकृतिमे ई चपटओन होइछ । एकर लम्बाइ अधिकसँ अधिक एक-डेढ़ बीत धरि होइछ । एकर उपरका रंग करिछओन होइछ मुदा कण्ठ लगक नीचाक भाग पियरौंछ होइछ । साओन-भादवमे एकर आधिक्य देखल जाइछ । ई अधिकतर खत्ता-खुत्ती तथा पैघ-पैघ डबरामे पाओल जाइछ । अण्डायल कबै देखबामे आओरो पीयर तथा हिलसगर लगैछ । कबइ माछक छवड़ाकेँ **कचुरी** कहल जाइछ ।[14] **गरइ** माछ रोगीक पथ्य मानल जाइत अछि । ई माछ कारी-पीयर मिश्रित चित्रवर्णक होइत अछि । ई बेलनाकार होइत अछि । ई लम्बाइमे लगभग एक-डेढ़ बीत धरिक होइत अछि । छोट गरइकेँ **गरचुनी** कहल जाइछ । **चेंगा/चेङा** गरइयेक दोसर प्रभेद थिक । एकर कण्ठ लगक भाग नील रंग तथा सम्पूर्ण देह करिछओन रहैत अछि । ई माछ अशुद्ध मानल जाइत अछि, किएक तँ एहन सुनल जाइछ जे ई माछ अखाद्य खाइछ । चाकर आकृति श्वेत चोइयाँसँ युक्त माछक अन्य प्रभेद **डेढ़ा/डेढ़वा/डेड़वा** कहल जाइछ । **ढल्ला/ढलइ/ढलवा/ढलै/ढलोइ**[15] माछक एक प्रभेद थिक । एकर लम्बाइ एक-डेढ़ आङुर धरि होइत अछि तथा ई गुदगर चाकर आकारक होइछ । एकर मुँहक फाड़ि अन्य माछक अपेक्षा बेसी होइछ । ई अल्प कत्थइ तथा कारी मिश्रित चित्रवर्णक होइछ । एकर स्वाद नीक नहि मानल जाइछ । **बुल्ला/भुल्ला**[16] भुल्ल रंगक तथा गरइयेक आकारक होइछ । एही आकृतिक श्वेताभ चोइयाँवला माछ अछि **मलङा** । मूसक आकृतिक एक गोट माछक प्रभेदकेँ **मुसिया** कहल जाइछ । सारविहीन श्वेताभ माछक एक गोट प्रभेद थिक **इच्चा/इचना/झिंगा/झिङा/कौड़िया झिंगा** । ई मोड़ल आङुर आकृतिक टेढ़ रहैछ । एकरा देहपर सहस्रोटा केशसन आकृति होइछ । एकर अण्डा हरियर रंगक होइछ । एकर पैघ आकृतिकेँ **गोर्रा/गुर्रा/गोरड़ा (रा) गोड़ड़ा (रा)** कहल जाइत छैक । ई माछ पैघ-पैघ नदीमे पाओल जाइछ । **ककहिया/सुही** माछमे गहे-गहे काँटेटा रहैत छैक । एकर पैघ प्रभेदकेँ **सुहा/सुही** तथा लघु प्रभेदकेँ **सुहिया/लुहिया/लुही** कहल जाइत छैक । **खोखसा/खोखसी/फकड़ा/फोकचा/फोकची** माछ नाम आकृतिक होइछ । एकर मुँह नाम होइत छैक । **खुद्दी** माछ अत्यन्त लघु आकृतिक होइछ । एहिमे चोइयाँ नहि होइत छैक । **चरबा/चरुआ/चड़िया/चचरा/चेचरा/पपता/पोपता** अत्यन्त पातर शरीरवला माछ अछि । एकर छोट प्रभेद **चचरी/चेचरी** कहल जाइछ । एही तरहक अन्यो माछ सभ पाओल जाइछ ।

चन्दा/चना/चन्ना छोट चाकर पातक आकारक होइछ तथा एकर वर्ण पीताभ

होइत छैक । **टेंगरा/टेङरा/डेङरा/बजही टेङरा** बड़ नीक प्रभेदक माछ थिक । साओन-भादवमे एकर वर्ण किछु पीताभ भऽ जाइछ अन्यथा ई मलिछओन रंगक होइछ । एकर दूनू पार्श्वमे तीक्ष्ण काँट होइत छैक । पैघ आकृतिक टेङराकेँ **बड़का टेङरा/ सुसना टेङरा** कहल जाइत छैक । छोट टेङराकेँ **टेङ्गरी/टेङरी** कहल जाइछ । एही आकृतिक मुदा अपेक्षाकृत पैघ अन्य माछ होइछ-**ठेङहा** । **धोली** माछक रंग मलिन होइत छैक । ई सामान्यत: नदीमे पाओल जाइत छैक । छोट माछक अन्य प्रभेद मध्य **नड़िया/नेरुका, बचवा** आदि सेहो प्रमुख अछि । बचवाकेँ **कचकी** सेहो कहल जाइछ । **पदना** माछ छोट आकृतिक होइछ । पानिसँ निकललापर इहो विशिष्ट ध्वनि करैछ । **भकुरचन्ना/भकुरचाना** माछक मुँह अत्यधिक चाकर होइछ । एकर लम्बाइ एक बीतक लगभग होइछ । **ललिया** माछक सम्पूर्ण शरीर लाल रंगक होइछ । **सिसरा/सिरसा** माछ किञ्चित मैलछओन रंगक तथा एक बीत धरिक होइछ । मैलछोन रंगक सहर विहीन छोट माछ सभ मध्य **कठगैंची** एकटा अन्य प्रभेदक माछ थिक । **पतसिया/पतासी** अति लघु आकृतिक तथा पात आकारक होइछ । **पिठिया, बाघी** तथा **लट्टा/लटवा** सभ एक आङुरक लम्बाइक होइछ । ई तीनू क्रमश: मलिन, कारी तथा अल्प कत्थी मिश्रित चित्र वर्णक होइछ । लटवाकेँ **घिवही** सेहो कहल जाइछ ।

बड़का माछ

उज्जर कारी मिश्रित रंगक सइरयुक्त बड़का माछक प्रतिनिधि **रउहु/रहु/रेहु/ रोहु/रहुआ** (सं. रोहित) होइत अछि । एकर मूड़ा बेसी पसिन्न कयल जाइत छैक[17] । जुअयलापर एकर वर्ण कत्थइ भऽ जाइछ । एकर जिअओराकेँ **गोंजी/गोंजरी** कहल जाइछ । गोंजीसँ पैघ माछकेँ **लबही** कहल जाइछ। बीत भरिक लबहीकेँ **खरुल्ली** आ हाथ भरिक भऽ गेला उपरान्त एकरा **भमरी** कहल जाइत छैक ।

एहि जातिक अत्यन्त चाकर मुँहवला एकटा माछ **कतरी/कोतरी** होइत अछि । एकरा पैघ प्रभेदकेँ **कतरा/कतला/कोतरा** कहल जाइत छैक । जुआयल अति पैघ अकारक माछ **भाकुर/भकुरा/भकुरी/भोकरा/भकुरवा** कहल जाइत छैक । भाकुर सन चाकर मुँहवलाकेँ **भकुरमुँह/भकुरमुहाँ** कहल जाइत छैक ।

रहुयेक जातिक पियरौंछ रंगक एकटा माछक प्रभेद होइछ, जकरा **नएन/नेन/नैनी** कहल जाइछ । एहिमे रहु-भाकुरक अपेक्षा काँटक मात्रा अधिक होइछ ।

अत्यन्त चाकर शरीरवला अन्य माछ **भूना/भुन्ना**[18] होइत अछि । छोट भुनाकेँ **फल्ली/भुन्नी** कहल जाइछ तथा पैघ वृहदाकार भुन्नाकेँ **मेदिनी/मोदिनी/मोइ** कहल जाइत छैक । शरीरक अपेक्षा एकर मूड़ीक भाग अति लघु होइछ । एकर खोइंचा सेहो शरीरमे बिन्दु आकारक सट्टल रहैछ । सभ माछक अपेक्षा एहिमे काँट बेसी मात्रामे रहैछ ।

एकर पेटकट भागक महत्त्व बेसी होइछ किएक तँ ओहिमे कम तथा मोट काँट होइछ जकरा निकालबामे सुलभता होइछ । भुन्ने माछक आकृतिक मुदा छोट प्रकृतिक श्वेताभ माछक एकटा प्रभेद **भुनचट/भुनचट्टी/भुनचट्टी/भुईंचट्टी** कहल जाइछ । कहल जाइछ जे ई माछ माटि चाटि कऽ भोजन ग्रहण करैछ । बेलनाकार आकृतिसँ युक्त अन्य श्वेताभ माछक प्रभेद होइछ- **गोल्हा/गोलहा/गोल्ही/गोलही/गोला/गोली** । एकरा **कंधली** सेहो कहल जाइछ । कतहु-कतहु एकरा **कठगोला** सेहो कहल जाइछ । एकरे छोट आकृतिक अन्य माछक प्रभेदकेँ **कपटी/कनपट्टी** कहल जाइछ । त्रिभुजाकार आकृति एवं अल्प पीताभ वर्णक एकटा सइरयुक्त माछक प्रभेद अछि **भौंटी** । एकर काँट अपेक्षाकृत अधिक कठोर होइछ । भौंटीक मुँहवला भाग चौरस होइछ । सइरयुक्त भौंटी माछक प्रभेदकेँ **कनहुआ/कोनहुआँ** कहल जाइछ । एकटा माछक प्रभेदमे अत्यन्त पैघ-पैघ सूत्र सदृश अग्रभाग थुथुन लग निकलल रहैत छैक । माछक ई प्रभेद **मोछना** कहल जाइछ । एकर सूक्ष्म आकृतिक प्रभेदकेँ **करसा/कुर्सा/कुर्सा/सुरसा/नारा** कहल जाइत छैक । अत्यन्त **इछाइन** गन्धसँ युक्त पैघ कबइ माछक आकृतिक प्रभेदकेँ **गन्हकबइ** कहल जाइत छैक । **नदियारी** माछक एक गोट प्रभेदकेँ **गोह/गोही** कहल जाइत छैक । अत्यन्त चमकैत सइरवला करीब 6 इंच धरि नाम माछक एक गोट प्रभेदकेँ **छही/रेवा** कहल जाइत छैक । एकर मुँहवला भाग अत्यन्त छोट तथा मध्यभाग अत्यन्त चाकर होइत छैक । एही आकृतिक अन्य माछकेँ **घोघररिया** कहल जाइछ ।

मलिन रंगसँ युक्त करीब 6 इंच धरि नाम माछक एक गोट प्रभेदकेँ **तेलचट्टा/तेलचिट्टा** कहल जाइछ । एही प्रकृतिक अन्य माछ **तोइ** होइछ । एकर आकृति अपेक्षाकृत नाम होइत छैक । रहुयेक आकृतिक तथापि अपेक्षाकृत छोट प्रकृतिक माछक एकगोट प्रभेदकेँ **दही/दरही** कहल जाइछ । एकर नदियारी प्रभेद जे अपेक्षाकृत अत्यन्त पैघ होइछ **बड़दरही/खरदरही** कहल जाइछ । रक्ताभ सइरसँ युक्त नदियारी माछक एक गोट प्रभेद जकर आकृति रहुयेक सदृश होइछ, **हिलसा** कहल जाइछ । मिथिलाक लोकगीतमे एहि माछक अत्यधिक प्रशस्ति भेटैत अछि । गोल अग्रभागसँ युक्त पैघ-पैघ सइरवला माछक एकटा, प्रभेद- **बिलड़ा/बेलड़ा** कहल जाइछ । पुच्छी दिस वक्र आकृतिसँ युक्त नदियारी माछक एक गोट प्रभेद **नकुरा/नेकुरा** कहल जाइछ । रहुयेक आकृतिक तथा सिलेटी रंगक सइरसँ युक्त पैघ माछक एक गोट प्रभेदकेँ **बचोइ** कहल जाइछ । उज्जर सइरवला एही प्रकृतिक अन्य माछ **बाटा** होइछ । नदियारी माछक अन्य सइरयुक्त पैघ प्रभेदमे **रेखरा/रेखरी/सहरा** इत्यादिक सूचना भेटैछ ।

सइर सहित एवं श्वेताभ वर्णक पैघ माछक एकटा प्रभेद **कुब्जा/कुबजा** होइत अछि । त्रिभुजाकार आकृति एवं अल्प पीताभ वर्ण तथा चौरस मुँहवला माछक सइरविहीन प्रभेदकेँ **काँटी/औंड़िया/गगरी** कहल जाइछ । कतहु-कतहु एकरा **सरङा** सेहो कहल

जाइछ । एही प्रभेदक अन्य माछ होइत अछि- **गच्चर** । अल्प श्वेताभ वर्णक तथा गोल आकृतिक माछक प्रभेदकेँ **घोघैल** कहल जाइछ । अत्यधिक मांसल गुद्दासँ युक्त सइरविहीन माछक प्रभेद होइत अछि- **लोदरा** । सइररहित नदियारी माछक एकटा प्रभेद **पगाँस/पघाँस/पघाँसा/पङसा/पङास/पङ्हास/पङ्हासा/पनसा/सीलन/सीलोन** कहल जाइछ । मिथिलाक जातीय लोकगीतमे एहू माछक अत्यधिक चर्चा देखि पड़ैत अछि । अत्यधिक कठोर काँट एवं त्रिभुजाकार आकृतिक सइरविहीन माछक एकटा प्रभेद **काँटी/गगरी** कहल जाइछ । छोट गगरीकेँ **टोही** कहल जाइछ । एकर पैघ आकृतिक माछ **गगरा/गागर** होइछ तथा मैलछओन रंगक एकर नदियारी प्रभेद **तेलगगरा** कहल जाइछ । अत्यन्त कम चाकर तथा करीब एक हाथ धरि नाम माछक एकटा प्रभेद **सर्रा/सरड़ा** होइछ ।

मैलछओन रङ्गक सइरवला बड़छ माछमे एकटा **बसरा/बसराहा/बसराही/बसाढ़ी/बसाढ़ी/बसार/बिसाढ़ी/बिसार** (सं.बिसारः) होइछ । अत्यन्त पैघ बिसाँढ़ी माछकेँ **कालबोछ** कहल जाइत छैक । साँपक आकृतिक एकटा माछ होइत अछि **बामी** । एकरा सामान्यतः असवर्ण ग्रहण करैछ । ई गाढ़ कत्थै रंगक होइछ । बामीक पैघ प्रभेदकेँ **बाम/राजबाम** कहल जाइछ । **भोरा/भौंरा/भोणा**[18] सेहो पैघ सइरविहीन माछक प्रभेद थिक । छोट भोराकेँ **भोड़ही/भोणही** कहल जाइछ ।

सौरा (सं.सकुल) गरइये आकारक होइछ मुदा ओजनमे ओकर दसगुन्ना बेसी होइत अछि । छोट सौराकेँ **सौरी/सौराठी/सौर/बचबा सौरा** कहल जाइत छैक । खयबामे एकर स्वाद उसरठ लगैछ । ई माछ गर्मीमे लोकप्रिय अछि ।

कत्थइ रंगक एकटा सर्पाकार माछ **अन्ही/अन्हइ/अन्है** होइत अछि । गाढ़ लाल रंगक एहने माछक अन्य प्रभेदकेँ **बम्मच** कहल जाइत अछि । अन्य सइरविहीन मझोला आकृतिक कारी रंगक माछ मध्य होइछ- **सिंघी/सिङ्ही** । पैघ सिंघीकेँ **सिंघाठ/सिङाट/सिङ्हाठ** कहल जाइत अछि । एकर कण्ठ लग काँट होइत छैक ताहिसँ शरीरपर आघात कऽ चीरि दैत छैक । एहि तरहेँ चिरबाक क्रिया **बीन्हब** होइत अछि । एकरे सदृश मुदा अपेक्षाकृत पैघ आकृतिक माछ होइछ **मङ्गुरी/मगुरी** । पैघ मगुरीकेँ **माङुर**[19] (**सं.मद्गुरः**) **मङ्गुरा/मगुरा** कहल जाइत छैक । ई माछ बड़ स्वादिष्ट मानल जाइछ तथा रोगियोकेँ देल जाइत अछि । ई माछ डबरा-खत्तामे पाँकमे विशेष पाओल जाइछ । अत्यन्त पैघ आकृतिक प्रभेदक माछ **मुङ्गाठ** कहल जाइछ । ई माटि घयने रहैछ । एकटा अत्यन्त सइर विहीन माछमे **गैंची** लोकप्रिय अछि । अति छोट गैंचीकेँ **कठगैंची** कहल जाइछ तथा पैघ आकृतिवला गैंचीकेँ **गैंचा** कहल जाइछ । एकर रंग पियरौंछ होइछ । लम्बाइमे ई लगभग एक-डेढ़ बीत होइछ । एकर बगलमे बीचोबीच कारी रंगक डाँड़ि रहैत छैक । गैंचीयेक सदृश अन्य प्रभेद थिक- **कौआ माछ** । एकर लोल चुट्टा सन नाम तथा बड़ीटा होइत छैक ।

सइरविहीन माछ मध्य अन्य माछ होइछ- **बेलओना/बेलौना** । बेलौनाक पैघ प्रभेदकेँ **बेलौन/बेलओन** ओ छोट प्रभेदकेँ **बेलौनी/बेलओनी** कहल जाइछ । ई बेलनाकार होइछ । एकर मुँह सीपक आकृतिक चपता होइछ । लम्बाइमे ई एक-डेढ़ हाथ धरिक होइछ । **चपुआ/चिपुआ** माछ सइरविहीन पैघ माछक अन्य प्रभेद थिक । एकर शरीर अत्यन्त चप्पत होइत छैक । सइरविहीन माछमे सबसँ लोकप्रिय प्रभेद **बुआरी/ बोआरी**[21]**/बोगारी/बोङारी** होइत अछि । बोआरीक बच्चाकेँ **लपची** कहल जाइत अछि तथा पैघ आकारक बोआरीकेँ **बोआर/बोगार** कहल जाइत छैक । विभिन्न प्रकारक पैघ माछक समष्टिकेँ **रहुआ-बोआर** कहल जाइत छैक । मिथिला भाषा कोषमे एकरा समुद्री मत्स्य विशेष कहल गेल अछि । रहुआ-बोआर माछ मात्रक हेतु युग्म शब्दक रूपमे व्यवहार होइत अछि । मिथिला भाषा कोषमे **रघबा बोआर**[22] नामक एकटा मत्स्य विशेषक सेहो उल्लेख अछि । **बोआरी** माछक लम्बाइ भरि आँघ धरिक होइछ । वजनोमे ई आध मोन धरिक तथा बेसिओक होइछ । पैघ बोआर माछ सामान्यतः धारेमे पाओल जाइछ ।

भुल्ल रंगक पैघ माछक एकटा प्रभेद **चोन्हा/चोनहा** होइत अछि । एकर छोट प्रभेदकेँ **चोन्ही/चोनही** कहल जाइत छैक । एही जातिक अन्य माछ सभ **बलगारा/बलगऐंरा, गोंछ/गोछारा** आदि होइत अछि । पैघ गोंछराकेँ **बघाइर/बघारि/बघैर** कहल जाइत छैक ।

दूटा माछक गुणसँ समन्वित माछकेँ **दोगला/बेसर/बेसरा/बेसरी** कहल जाइत छैक । **पोठी, चुन्ना, खेसरा, मारा/मरबा, झिंगा** आदि माछ एक सङे फँटल रहलापर **इच्चा/ इचना** कहल जाइत अछि तथा एहि हेतु **इचना-पोठी** युग्म शब्दक व्यवहार कयल जाइछ ।

सरकारक मत्स्य विभाग द्वारा आइकालिह अनेक प्रकारक आयातित माछ सभक प्रचार मलाह सभक बीच अधिक उत्पादनक दृष्टियेँ कयल जा रहल अछि । एहि माछ सभक नाम अपन मूलसँ विकृत भऽ प्रचलित भेल जा रहल अछि । एहन किछु नाम सभ अछि- **कमलकाठ/कोमलकाठ/कललकाठ, गिलासकप, घासकाठ, चाइनापोठी, पबनकाठ, मेजरकाठ, लोहाकाठ, सिलभरकाठ** आदि ।

वर्णरत्नाकरमे वाडसि, बसाढ़, बोआर, बचा, वामु, अरि, मोजे, कोन्थ, नयना, सौर, मिलिन्धि, सफरी प्रभृति माछक उल्लेख अछि ।[23] एहिमे वाडसि, मिलिन्धि, कोन्थु आदि शब्दक अर्थलोप भऽ गेल अछि । पैघ बिसाढ़ीकेँ **बसाढ़**, पैघ बोआरीकेँ **बोआर**, बचबाकेँ **बचा**, बामीकेँ **बामु**, गगरीकेँ **अरि**, पैघ मुन्नाकेँ **मोजे**, पैघ नयनीकेँ **नयना** ओ पैघ सौराकेँ **सौर** कहल जाइत अछि । **सफरी** माछक प्रभेद थिक । ई शब्द **फड़ीक** रूपमे माछक एक संख्याक हेतु सेहो व्यवहृत होइत अछि ।

बुकनन कोसी नदीक करीब डेढ़ सय माछक उल्लेख कयने छथि । एहिमे

आँजन, कुकुरा, कुम्हड़ी, कोढ़ी, कोसौती, खपरा, खाँड़ी, गरहन, गोहाली, चमार, चिकड़ा, जाया, गोंगा, टिटुआ, ढुडिआ, ढोंगा, टिलुआ, टिल्ली, दुधिया, देसरी, धनी, नौड़िन, पेमा, पोठकी, फूआ, बझा, मनौआ, धू, धोंटी, मशाल, मलदी, महुअर, मंगोड़, सोली, ससुआ, सुवर्ण, खरिका, हलुआद आदि अतिरिक्त नाम अछि ।[24]

कविचन्द्र रचित वाताह्वानमे जासर[25], ठकुरी[26], तीर्थदल[27], योगनासिल[28] आदि नवीन नाम भेटैत अछि ।

मिथिला भाषा कोषमे **चनसूर**[29], **चमरमाछ**[30], **जहरी**[31], **दरसा**[32], **नान्दन**[33] **बकाची/बकुची**[34] आदि माछक नाम भेटैत अछि। एहिमे **चमरमाछ** वस्तुतः माछ नहि थिक । ई कारी रंगक नाङरिवला एकटा जलजन्तु थिक जे पछाति बेङ बनि जाइत अछि । एकरा **चमरमछरी/बेङमछरी/फुलौंचा/बेङची** सेहो कहल जाइत छैक ।

अन्य खाद्य जलीय जन्तु

माछेक जकाँ खाद्य अन्य जलीय जन्तु अछि - **काँकोड़/कँकोड़ा/कँकोड़बा**। ई बिल बना कऽ रहैत अछि । एकरा आठटा सामान्य टाङ ओ दूटा कैंचीयुक्त चाङुर रहैत छैक । चाङुरेसँ ई अपन शत्रुपर आक्रमण करैत अछि । एकर पैघ प्रभेद **तेलिया-काँकोड़** कहल जाइत छैक । छोट जातिक काँकोड़कँ **कठकाँकोड़** कहल जाइत छैक । काँकोड़क बिल **कँकड़ोहरि/ककड़ौर** होइत अछि ।

पीठपर कठोर कवचसँ युक्त गोल आकृतिक एकटा जलीय जन्तु **काछु/कछुआ**[35] होइत अछि । आकृति ओ कवचक रंगक आधारपर एकर अनेक प्रभेद **कठकाछु**, **पतकाछु**, **सिमकाछु**, **हड़काछु** आदि होइत अछि । एकरो मांस खायल जाइत अछि ।

अन्य खाद्य जलीय जन्तुमे कवचसँ युक्त एकटा जन्तुक मांस मिथिला मध्य अत्यन्त प्रचलित खाद्य अछि । एकरा **डोका/घोंघा/घोंङहा** कहल जाइछ । ई पानिक सम्पर्कवला जमीनमे रहैछ । एकर अँतड़ीवला भागकँ **पेनी** आ मुँहवला भागकँ **मुँहठी/मुट्ठी** कहल जाइछ ।

खाद्य पशु-पक्षी

खाद्य पशुमे अनेक खास-खास पशु विशेष वर्ग, वर्ण अथवा जातिमे ग्राह्य मानल जाइछ । एक वर्ग, वर्ण वा जातिमे जे पशु-मांस ग्राह्य से दोसरमे अग्राह्य वा त्याज्य होइछ । प्रजाति-संरक्षण एवं पर्यावरण-सुरक्षाक दृष्टिएँ वन्य प्राणी एवं पक्षीक शिकार आब प्रतिबन्धित भऽ गेल अछि । अतः पूर्णमे जे वन्य पशु ओ चिड़ै सभ मनुष्यक खाद्य-श्रेणीमे गृहीत छल से सभ आब प्रतिबन्धित भेलासँ अखाद्य ओ अग्राह्य श्रेणीमे चल आयल अछि । अवश्ये आमिष-भोजी वर्गमे **छागर/खस्सीक** मांस बहु ग्राह्य अछि । यद्यपि ई माछक

तुलनामे बेसी आकस्मिक रूपमे ग्राह्य होइछ । खास कऽ बलि-प्रदान भेलापर, बरियातीक निमित्त, विशेष प्रकारक **भोज-भातमे** तथा फगुआ इत्यादि पाबनिमे छागर **मांस/माँसु/माँउस** खायल जाइछ । अभिनव आभिषासी वर्गमे **मुर्गा, मुर्गी** आ ओकर **अंडाक** ग्राह्यता बढ़ल जा रहल अछि ।

छागरक पैरक भागवला मांसकँ **गोड़ी** कहल जाइछ । जांघवला मांसकँ **राङ/रान** कहल जाइछ । एकर अँतड़ीवला भाग **पचौनी** कहल जाइछ । करेजक भाग **करेजी/कलेजी** कहल जाइछ । मांसमे जे हड्डी रहैछ तकरा **सहरी** कहल जाइछ । मूड़ीवला भागकँ **सीरा** कहल जाइछ । मांसक खण्डक हेतु **बुट्टी** शब्दक व्यवहार होइछ ।

अन्य चतुष्पद पशुक मांसक वर्गीकरणक स्वरूप सेहो यैह अछि । सूगरक मांस निर्माणसँ सम्बद्ध अनेक विशिष्ट शब्द भेटैत अछि । साधारण प्रक्रिया द्वारा निर्मित एकर मांसकँ **भतमसैया** कहल जाइत छैक । करेजीकँ भूजि कऽ बनाओल मासुकँ **सतघरा** कहल जाइत छैक । रसगर मासु **कोहरा/कोहरी** कहल जाइछ । हड्डी सहित रान्हल मासु **हरमसुरिया** कहल जाइछ । सूगरक पीठपरक उपरका मासु **पिठिया** ओ तरवला मासु **गभिया** कहल जाइछ । मासुक पैघ-पैघ टुकड़ी काटिक रन्हलापर बनल तीमनकँ **चारिछन्ना** कहल जाइछ । नवजात सूगरक मासुसँ बनल चारिछन्नाकँ **चारिबैल** कहल जाइछ । सूगरक थाढ़ीवला भागक मांस **घोघ**, माथक उपरका पृष्ठभागक **कनफर**, पाँजरवला भागक पित्ताशयक **पिल्ही**, अन्याशयक **बट**, पेट चर्बीवला भागक **बक्खी**, रीढ़क दुहू भागक **खिरस्सी**, चमड़ाक **साढि**, करेजक **करेजी**, जांघक **जङ्छेली**, पैरक **गोड़ी**, नाङरिक **नङरेट**, पतरका अँतरीक **जाली** एवं मोटका अँतरीक **भौरी** नाम कहल जाइछ । **भौरी-बक्खी** ओ **करेजीकँ** भूजि कऽ सूगरक सोनित मिला कऽ बनाओल तीमनकँ **सोहरी** कहल जाइछ । चमड़ाक टुकड़ीकँ रान्हला उत्तर बनल मांसकँ **कुट्टी/खुट्टी** कहल जाइछ ।

पक्षीक मांस बनयबासँ पूर्व ओकर पाँखि ओदारबाक क्रिया **चोथब** होइछ ।

मशाला

भोज्य सामग्री निर्माणक क्रममे किछु एहन पदार्थक उपयोग होइछ जकर सहयोगसँ भोजनक स्वादमे विशिष्टता उत्पन्न भऽ जाइत । एहि समस्त वस्तुकँ **मशाला/मसल्ला/गरममसल्ला** कहल जाइछ ।

मशालाक रूपमे खाद्य तेल, किछु विशिष्ट कन्द एवं अन्य अनेक वस्तुक उपयोग मैथिल भोजन परम्परामे होइत रहल अछि ।

तेल

खाद्य पदार्थमे एक प्रकारक चिक्कन द्रवक प्रयोग होइछ जकरा **तेल** कहल जाइछ । ई द्रव पदार्थ किछु अन्नकेँ पेड़ि क' बहार कयल जाइछ । एहि वर्गक अन्नकेँ **तेलहन** कहल जाइछ ।

तेलहन मध्य पीत वर्णक अत्यन्त लघु आकृतिक अन्नकेँ **गोट/सरिसो** (सं.सर्षप) कहल जाइछ । सरिसोक जातिक कत्थी रंगक तेलहन **तोरी** होइत अछि आ एही प्रभेदक कारी रंगक तेलहन **राइ/रैंची** कहल जाइछ । अपुष्टदानावला तेलहनकेँ **मुठही** कहल जाइछ ।

तेलहनक एकटा प्रभेद अत्यन्त सूक्ष्म आकृतिक, चपता ओ अग्रभागमे नोखगर होइछ । एकरा **तीसी/अतिसी/ आलसी/अलस/आलस/चिकना** कहल जाइछ । खाद्य सामग्रीमे सामन्यत: एहि चारिगोट तेलहनक उपयोग होइछ ।

तेलहनकेँ पेड़ि क' बहार कयल द्रवकेँ **तेल/चिकनइ/चिकनै** कहल जाइछ । सरिसोक तेलकेँ **कड़ूतेल/कड़ुआतेल** कहल जाइत अछि । आन तेल सभ तेलहनक नामेसँ अभिहित होइत अछि । कोल्हुक पेड़ल शुद्ध तेलकेँ **सुच्चातेल** कहल जाइछ । मील द्वारा पेड़ल शुद्ध तेलकेँ **खाँटी तेल** कहल जाइछ ।

तेल पेड़ला उत्तर तेलहनक नीरस अवशेषकेँ **खरि/खइर/खड़ी/खड़ी/खल्ली** कहल जाइछ । तेलक मैलकेँ **काटि/काइट/जमड़ी/गादि** कहल जाइछ ।

आइकाल्हि अनेक प्रकारक वनस्पति तेलक सेहो उपयोग होइछ, जे सामान्यत: **डालडा** कहल जाइछ । ई वनस्पति तेलक एक गोट ट्रेड मार्क प्रभेदक आधारपर समस्त वनस्पति तेलक हेतु प्रचलित शब्द भ' गेल अछि ।

कन्द

मशालाक रूपमे व्यवहृत एक गोट विशिष्ट कन्द थिक **हरदि/हरदी** । हरदि सामान्यत: पीयर गुद्दासँ युक्त जट्टा आकारक कन्द थिक । एकर उपयोग कोनो खाद्य वस्तुमे रंग अनबाक हेतु कयल जाइछ । व्यञ्जन- दालि मध्य एकरा अनिवार्य मानल जाइछ । परम्परासँ हरदि शुभ मानल जाइछ । खोंइछमे धान-चाउर, दूभि आ हरदि अनिवार्य रहैछ । कोनो मांगलिक कार्यमे एकर व्यवहार कयल जाइछ । समष्टिमे हरदिक कन्दकेँ **गेंठी/हरदिक गेंठी** कहल जाइछ ।

अति पैघ आकारक मूल गेंठीकेँ **मूड़ी हरदि** कहल जाइछ । प्राकृतिक प्रकोपक कारणेँ कोनो-कोनो हरदिक रंग कत्थी भ' जाइछ आ अपुष्ट भ' चोकटि जाइछ । एहन हरदिकेँ **रकती हरदि** कहल जाइछ । एही जातिक कन्द थिक- **आद/आदी/**

अदरक/अदरख । सुखायल आदकेँ **सोंठि/सोंइठ/सूठि** कहल जाइत छैक । एकर स्वाद कड़ू होइत छैक तथा रंग पियरौंछ रहैछ ।

अण्डाकार लघु आकृतिक मशाला होइछ- **धउनी/धनियाँ** । ई भुल्ल रंगक होइछ तथा एकर गाछ छोट-छोट होइछ । एकर दुनू पार्श्व नोकदार होइछ । धनीक पातकेँ सेहो स्वादक हेतु व्यञ्जन मध्य व्यवहार कयल जाइछ ।

लघु वृक्ष जातीय कड़ू मशाला मध्य **मिरचाइ/मेरचाइ/मरचाइ** होइत अछि । मुनिगाक लघु आकृतिक मिरचाइ **नमका मिरचाइ** कहल जाइछ । मोट आङुरक आकृतिक मिरचाइ **अँचारवला मिरचाइ** कहल जाइत अछि । लघु आकृतिक विशेष कड़ू प्रकृतिक मिरचाइ **लौङिया/लोङिया** कहल जाइछ । गोल आकृतिवला मिरचाइक प्रभेद **भुटिया/बुटेलिया मिरचाइ** कहल जाइछ । विशेष कड़ू प्रभेदक चैत मासक अन्तिम समयमे जे मिरचाइ होइछ, ओकरा **चैती/चरकी/दोंजी मिरचाइ** कहल जाइछ । एकर अग्रभागकेँ **टुरनी** कहल जाइछ तथा गाछसँ सम्बद्ध भाग **डंटी** कहल जाइछ । एकर आवरण काँचमे हरियर तथा पकलापर लाल भ' जाइछ । एहि आधारपर एकरा **काँच मरचाइ/हरियर मरचाइ** अथवा **लाल मरचाइ** कहल जाइछ । एकरा वर्षो भरि खयबाक हेतु सुखाओल जाइछ । एहन सुखायल मरचाइ, **सुखलाहा मरचाइ** कहल जाइत अछि । खेतमे पहिल **खेप/छोहनिमे** तोड़ल बढ़िया मिरचाइकेँ **मुरहन** कहल जाइछ तथा अल्प कड़ू एवं रोगाह प्रकृतिक मिरचाइकेँ **मिरहिन्नी** कहल जाइछ । आधा लाल तथा आधा भटरंग लालवला मिरचाइ कम कड़ू होइछ । एहन मिरचाइकेँ **चित्ती मिरचाइ** कहल जाइछ ।

अन्य मशाला

अन्य अनेक मशालाक योगसँ व्यञ्जनकेँ स्वादिष्ट ओ झाँसिगर कयल जाइछ जाहिमे सरिसो, तोरी, रैंची आदि प्रमुख अछि । तदतिरिक्त लघु आकृतिक मटमैल रंगक एकटा मशाला **जमाइन/जमानि** कहल जाइछ । एकर स्वाद कड़ू होइछ । सामान्य: एकर व्यवहार **फोड़न** तथा **अँचारक** मशालामे कयल जाइछ तथा विशेष समयमे जेना पेट खराब भ' गेलापर एकरा पीसि क' नोन-पानि मिला क' आगिपर खदका क' खायल जाइछ । एकरा जमानिक **खदका/खदकी** कहल जाइछ । परसौतीकेँ नित्य जमानि खायब अनवार्य रहैछ ।

पीत वर्णक नाम बेलनाकार लघु आकृतिवला दाना **मेथी** कहल जाइछ । इहो **फोड़नेक** कार्यमे अबैत अछि । कारी रंगक लघु आकृतिक नमोन मसल्ला **मङरैल/मँगरैल** कहल जाइछ ।

विशिष्ट प्रभेदक वृक्षक पातकेँ **तेजपात/तेजपत्ता/तजपता/तऽज** कहल जाइछ ।

एकर पातक सुगन्ध विशिष्ट प्रकारक होइछ । ई **छौंकबाक** हेतु प्रयुक्त होइछ । नाम दण्डाकार खाँचदार आकृतिक मशाला **सौंफ/सौंफ** कहल जाइछ । एकर दूनू छोड़ नोकदार होइछ । एकर स्वाद मिठऑस होइछ । एकर व्यवहार पकमान तथा भाँग एवं अँचारमे विशेष कऽ कयल जाइछ । एकरे सन लघु आकृतिवला मशालाक एकटा प्रभेद **जीर** कहल जाइछ । एकर सुगन्ध विशिष्ट प्रकारक होइछ । गरम मशाला मध्य एकर स्थान सर्वोपरि अछि । कारी रंगक गोल खाँचदार आकृतिक मशाला **मरीच** कहल जाइछ । ई कडू प्रकृतिक होइछ । एकरे विशिष्ट प्रभेदकेँ **गोलमरीच/गोलमिरिच** कहल जाइछ ।

नाम लघु आकृतिक मशाला **मेथी** कहल जाइछ । एकर रंग पीयर होइछ तथा स्वाद तितओन होइछ ।

कारी रंगक नाम दण्डाकार लघु आकृतिक आयातित मशाला जकर उपरका भागमे फूल आकारक बनल रहैछ तकर **लौंग/लौङ्क** फूल कहल जाइछ । एकर स्वाद कडू होइछ । अल्प हरियर कवचसँ युक्त कारी दाना आकारक पदार्थ **दक्षिनी/दछिनी इलाँयची** कहबैछ । ई अपन विशिष्ट सुगन्धक कारणेँ प्रसिद्ध अछि । एकरे पैघ आकारक कारी रंगक मशाला **अड़ाँची/अराँची** कहबैछ । छौंकबाक हेतु प्रयुक्त मशालाक एक गोट आयातित प्रभेद **हींग** (सं.हिंगु:) कहल जाइछ । ई तीक्ष्ण गंधयुक्त पदार्थ थिक ।

गरममशाला मध्य एक विशिष्ट प्रकारक छालक प्रयोग होइछ जे **दालचीनी/दलिचीनी** कहल जाइछ ।

लौंग, इलायची, दालचीनी, सोंठि आदिक मिश्रणकेँ गरममशाला कहल जाइछ । जीर, सौंफ, मङरैल, मेथी, जमाइन आदिक मिश्रणकेँ **पँचफोड़ना/पाँचफोड़न** कहल जाइछ । धनी, मिरचाइ, हरदि आदिक चूर्णकेँ **बुकनी/कूट** कहल जाइछ ।

कणमात्रक उज्जर रंगक गोल दाना **पोस्तादाना** कहल जाइछ । खास कऽ एकर व्यवहार पकमानमे कयल जाइछ । मुदा कखनो कऽ सरिसोक मशालाक स्थानपर एकरे व्यवहार होइछ ।

एकटा जातिक कन्द विशेष **लहसुन/रसुन/रस्सुन** होइछ । समष्टिमे लहसुनक ढेंढीकेँ **जाबा** कहल जाइछ । ई जाबा बहुतो भागमे विभक्त रहैछ जकरा **पोट/लहसुनक पोट** कहल जाइछ । लहसुनक एक अन्य प्रभेद जाहिमे एकेटा पोट होइछ, एकरा **एकपोटिया लहसुन** कहल जाइछ । ई उज्जर रंगक आवरणसँ झाँपल रहैछ तथा एकर भीतर पियरौंछ रंगक खाद्यांश रहैछ ।

मशालाक रूपमे व्यवहृत कन्द विशेष **पियाज/पिआउज/पेयाज/ प्याजु/पेयाजु** अछि । एकर भीतरी भाग अनेक परतसँ बनल रहैछ । समष्टिमे एकर कन्दकेँ **ढेंढी/डस्सर** कहल जाइछ । पियाजक रंग लाल तथा उज्जर होइछ । पियाजक गाछवला

भागकेँ **सग्गा** कहल जाइछ । एकरो उपयोग मशालाक रूपमे कयल जाइछ । ई तीमन, भुजियामे मेजन तथा काँचहु रूपमे प्रयुक्त होइछ ।

मशाला मध्य विभिन्न प्रकारक शुष्क फलक व्यवहार सामान्यत: खाद्य पदार्थकेँ सुस्वादु बनयबाक हेतु होइत अछि । एहि प्रकारक मशाला सभकेँ **कटुक मशाला/करकटुक/मेवा** कहल जाइछ । एहिमे सामान्यत: **नारियल/नारियर/गड़ी, छोहाड़ा/छुहाड़ा, किसमिस, अखरोट, मनक्का, पिस्ता, बदाम, चिनियाबदाम/मूंगफली, काजू**, इत्यादि अबैत अछि । सुगन्धिक लेल केसरी ओ **कर्पूर/करपूरक** प्रयोग होइछ ।

मधुर स्वादक हेतु खाद्यान्नमे **गुड़, शक्कर, चीनी** तथा लवणयुक्त करबाक हेतु **नून/नोनक** प्रयोग होइछ । नोनक विशिष्ट प्रभेद जे नोनक पहाड़सँ प्राप्त होइछ तथा शुद्ध मानल जाइछ, **सेन्धा नोन** कहल जाइछ । पाचक प्रकृतिक प्रभेदवला नोन **काला नोन/कलानोर/बीटनोन** कहल जाइछ । सधुक्करी भाषामे नोनकेँ **रामरस** कहल जाइछ ।

फल

वृक्ष ओ छोट-छोट गाछ एवं लत्तीमे उत्पन्न होअऽवला गुदगर खाद्यकेँ **फल** कहल जाइछ । किछु फल प्रत्यक्षे रूपमे ग्रहण कयल जाइछ तथा किछुकेँ रान्हि कऽ ग्रहण कयल जाइछ । अनेको प्रत्यक्षत: खाद्यो फलकेँ अवस्था विशेषमे रान्हि-पका कऽ ग्रहण कयल जाइछ । एहि आधारपर खाद्य फलक दुइ गोट प्रभेद कयल जा सकैछ ।

(1) प्रत्यक्षत : खाद्य फल तथा (2) अप्रत्यक्षत: खाद्य फल

प्रत्यक्षत: खाद्य फल

फल आदिकालहिसँ मानवक प्रिय आहार रहल अछि । ई सामान्यत: पैघ पैघ वृक्षसँ प्राप्त होइछ। अनेक फल सामयिक लत्तीमे सेहो फड़ैत छैक । मिथिलामे विभिन्न प्रकारक फल पाओल जाइछ जकरा गाछसँ खसलाक बाद सद्य: ग्रहण कयल जाइछ ।

एहि प्रकारक फल मध्य सर्वाधिक प्रशस्त अछि- **आम** । मिथिला आ आम जेना एक दोसराक पर्याय भऽ गेल अछि । ई प्रदेश प्रारम्भहिसँ **आम**, पान, **धान, माछ** ओ **मखानक** लेल प्रसिद्ध रहल अछि ।

आम सदाबहार वृक्ष विशेषसँ प्राप्त होइत अछि । एकर प्रारम्भिक अवस्था माघ-फागुनमे देखि पड़ैत अछि तथा पकबाक सामान्य समय अछि- जेठ-आषाढ़ । एहि समयमे पाकऽवला आमकेँ **समैया** कहल जाइछ । किछु आम भादव मासमे पकैत अछि । एकरा **भदैया** आम कहल जाइत छैक । रोहिणी नक्षत्रमे पाकऽवला आमक प्रभेद **रोहिनियाँ** कहल जाइछ । बारहोमास फड़ऽवला आमक प्रभेद **बरहमसिया** कहल जाइछ ।

आमक वृक्षक उत्पत्तिक आधारपर एकर दुइ गोट प्रभेद होइत अछि **बिज्जू/सरही** ओ **कलमी** । आमक आँठीसँ जनमल गाछसँ प्राप्त आमकेँ **बिज्जू/सरही** कहल जाइछ जे रस ओ सनसँ युक्त रहैछ । ई आकृति ओ स्वादमे यद्यपि मूलवृक्षयँ मिलैत-जुलैत अछि तथापि किञ्चित भिन्न प्रकृतिक होइछ । बिज्जू गाछक जड़िवला भागकेँ मूल वृक्षक शाखामे जोड़ि कऽ उत्पन्न कयल गाछकेँ **कलमी** कहल जाइछ । एकरामे गुद्दाक आधिक्य रहैछ । एहिमे फड़ऽवला आमक प्रकृति मूल वृक्षसँ सर्वथा मिलैत अछि । कलमी आमक आकार, स्वाद ओ प्रकृति यथावत् रहैछ । कलमी आमक किछु प्रभेद नाम एतऽ देल जाइछ- **मालदह, कलकतिया, बम्बइ, फजली, नजिरा, केरबा, दुर्गीलालक केरबा, कृष्णभोग, कर्पुरिया, बथुआ, सुकुल, सिपिया, राढ़ी, राढ़ी भदैया** आदि ।

रंग, आकार, गंध-स्वाद आदिक आधारपर आमक विभिन्न नाम भेटैत अछि । एहिमे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि- **मालदह** । किछु आमक नाम व्यक्ति विशेषक नामक आधारपर भेटैत अछि । जेना- **कृष्णभोग** आमक नाम कृष्ण प्रसाद ठाकुरक नामपर पड़ल । एकर एक इतिहास भेटैछ जे गाछक पहिल फल नवद्वीपक कृष्णभगवानकेँ भोगमे चढ़ाओल गेल तेँ ओकर नाम कृष्णभोग भऽ गेल ।[33]

किछु आमक नाम स्थानक नामक अनुरूप भेटैत अछि जेना- **कलकतिया, बम्बइ/बम्बैया** । मालदह जिलाक आधारपर **मालदह** आमक नाम पड़ल । मालदहेक एक विशिष्ट प्रभेदकेँ **लङ्ङा मालदह** कहल जाइछ तथा रंग साफ होयबाक कारणेँ एकर एकटा प्रभेदकेँ **दुधियामालदह/सपेता मालदह** कहल जाइछ । तहिना **सियालदह** आमक नाम शहरक आधारपर पड़ल ।

किछु आमक नाम ओकर आकारक नामपर राखल गेल । जेना- केराक सदृश आकारवला **केरबा**, एकरे छोट आकारवला आम **केरबी** कहल जाइछ । परोड़क सदृश आकार वला **परोड़िया**, करैलक आकारवला **करैलबा**, कुलडरि सदृश आकारवला **कुलहरिया** कहल जाइछ ।

जाहि आममे नाक सदृश आकार बनल रहैछ ओ **नकुब्बा** नामे अभिहित होइछ । एकरे छोट आकारवला आम **नकुब्बी** कहल जाइछ । मिरचाइ सदृश आकारवला **मिरचइया**, बरहड़ सदृश आकारवला **बरहड़बा**, अति पैघ आकारक सजमनि सदृश आम **सजमनियाँ**, चापत आकारवला आम **चपड़ा** नामे जानल जाइत अछि । खरबुज्जाक सदृश आकारवला **खरबुजबा** कहल जाइछ । सुपारीक आकृतिवला **सुपरिया**, अत्यन्त छोट आकृतिवला **बरबरिया** कहल जाइछ ।

रंगक आधारपर निम्नलिखित आम सभक नाम भेटैछ अछि:-

सिन्दुरक रङ्गीसँ युक्त **सिनुरिया/सिन्दुरिया/सेन्दुरिया** कहल जाइछ । एकरे जातिक एकटा प्रभेद होइछ, जकरा **पहाड़पुरी सेन्दुरिया** कहल जाइछ ।

किछु एहन आमक प्रभेद होइछ जकरा पकलोपर आवरण हरियरे रहैछ । जकरा **करिअम्मा** कहल जाइछ । एकरे अन्य प्रभेदक आमकेँ **बरम्मा** कहल जाइछ ।

किछु आम अपन विशिष्ट स्वादक आधारपर अभिहित होइछ । जेना- घीवक स्वादवला आम **घिबहा/घिबही** कहल जाइछ । कर्पूरक स्वादसँ युक्त आमकेँ **कपुरिया/करपुरिया** कहल जाइछ । आमक एक विशिष्ट प्रभेद पाओल जाइछ जे काँचोमे मिट्ठ होइछ तेँ एकरा **चोरबा** कहल जाइछ । धुमनक गन्धसँ युक्त आमक प्रभेद **धुमनाहा** कहल जाइछ । नोसिक सुगन्धवला आमकेँ **नोसिदनियाँ** कहल जाइछ । किछु आम एहन पाओल जाइछ जे सामान्य आमक अपेक्षा विशिष्ट मिट्ठ होयबाक कारणेँ **सकरचिनियाँ/ मिसरीभोग, मिठौआ** आदि नामे जानल जाइत अछि । भेम्हक गन्ध सनक गन्धवला आम **भेमहा** कहल जाइछ । किछु आम एहन होइछ जे पकलोपर अमते होइछ । एहन आम **अमताहा** कहल जाइछ तथा मात्र आँठी अम्मत भेने **आँठिअम्मत** कहल जाइछ । गोबर सन स्वाद भेने आम **गोबराहा** कहल जाइछ । आमक एकटा एहन प्रभेद होइछ जाहिमे पीलु फड़ब ओकर प्रधान दुर्गुण थिक, तेँ एहन आम **पिलुआहा** कहल जाइछ ।

एकर अतिरिक्त आमक विभिन्न प्रभेद ओ नाम भेटैत अछि जे स्थान भेद ओ गुण भेदक आधारपर प्रचलित देखल जाइछ । मुदा अधिकांश नाम पारिभाषिक स्वरूपमे अगृहीत अछि । अनुसंधानक क्रममे आमक किछु अन्य प्रभेदक नामावली प्राप्त होइछ, जेना-**लतिआहा, जनमरै, पञ्चानन, केरबी** इत्यादि । प्रशंसात्मक आम मध्य **फजली** आमक नाम अबैत अछि । कहल जाइछ जे फजले अली नामक कोनो मुसलमान प्रशासकक नामपर एकर नाम **फजली** पड़ल । **भदैया** आमक विभिन्न प्रभेद सभ अछि- **सुकुल, सिपिया, राढ़ी, राढ़ी भदैया, बथुआ** इत्यादि ।

आमक प्रारम्भिक स्वरूप **गुजरब** होइछ । एहिसँ विकसित भेलापर फूल रूपमे परिवर्तित भऽ जाइछ, जकरा **मज्जर** कहल जाइछ । प्राकृतिक प्रकोपक कारणेँ मज्जर झरकि जाइछ । एहि अवस्थाकेँ **मधुआ लागब** कहल जाइछ । एकर पश्चात् ओ मज्जर गाछसँ झड़ि जाइछ । झड़बाक एहि क्रियाकेँ **तुअब** कहल जाइछ ।

एकर पश्चात् बचल अंशसँ अति लघु आकारक आम बहराइछ जकरा **सरिसोसन/राइसन** कहल जाइछ । कने पैघ भेलापर **केराव सन, मटर सन** तत्पश्चात् **टिकुला/टिकोला/टिकोलबा** कहल जाइछ । एकर मध्यवर्ती भागकेँ **कोइली** कहल जाइछ । टिकुला जुअयलापर कोइलीक ऊपर कठोर कवच बनि जाइछ । कवचकेँ **कोसा** कहल जाइछ । कोसा होयबाक क्रिया **कोसायब** होइछ । सम्मिलित रूपमे कवच ओ कोइलीवलाभागकेँ **आँठी** कहल जाइछ । पाकल आमक आँठीक भीतरी भागकेँ **पकुआ/पकोहा/पाको** कहल जाइछ । एकरा सुखा-पीसि कऽ भात जकाँ रान्हि कऽ खयबाक प्रचलन अछि ।

टिकुला स्तरमे आमक खोंइचा सामान्यत: हरियर रंगक होइछ । पश्चात् रउद लगला उत्तर पीताभ भऽ जाइछ । एहन आमकेँ **बनायल** कहल जाइछ । पाकऽमे किछु कसरि रहि जाइछ तँ आम **डम्हक** कहल जाइछ । जे आम गाछमे सर्वप्रथम पकैछ ओ **गोपी** कहल जाइछ । गाछमे पूर्ण परिपक्व अवस्थाकेँ प्राप्त आमकेँ **गछपक्कू/सुपक्क/सुपत** कहल जाइछ । जखन आम गाछीमे अधिक मात्रामे पाकऽ लगैछ तँ **भरखरि पाकब** कहल जाइछ । काँच आमकेँ पकयबाक हेतु पसारल खढ़केँ **पाल** कहल जाइछ । एहिपर पाकल आम **पालपरक** आम कहल जाइछ ।

प्राकृतिक प्रकोपक कारणेँ जे आम फाटि जाइछ आ खसि पड़ैछ, एहन फाटल आम **फटौन/रसफट्टू** कहल जाइछ । वर्षाक समयमे पाथरक चोट आहि आममे लागि जाइछ ओहि आमक ओ भाग दगि जाइछ । एहन आम **कोलिपत/कोइलपत** कहल जाइछ । रोगाह आममे बुनकी सन कारी-कारी दाग पड़ि जाइछ, जकरा **दग्गी** कहल जाइछ । दग्गी पड़बाक एहि क्रियाकेँ **दग्गीमारब/छेनी मारब** कहल जाइछ । एहन आम **छेनिआयल/छेनी मारल** कहल जाइछ । आमक खोंइचाक उपरी परतपर ठाम-ठीम कठोर परत पड़ि जाइछ जकरा **खैंरी** कहल जाइछ । एहन अवस्थाकेँ **खैंरी पकड़ब/खैंरी मारब** कहल जाइछ । जाहि आमक खोंइचा असमय स्वत: सिकुड़ि जाइछ, ओकरा **चोकइ/चोकड़ी/ चोकटी** कहल जाइछ ।

आमक समय जखन बीति जाइछ आ आमक मात्रा कम-सम भऽ जाइछ तँ एहना स्थितिकेँ **आम झखड़ब** कहल जाइछ तथा स्वयं गाछसँ तोड़बाक क्रिया **झखायब/झखारब** होइछ ।

आमकेँ विशेष पकलापर जे स्थिति होइछ तकरा **परसायब** कहल जाइछ । विकृत स्वादवला आमकेँ **उतरल/बजबज** कहल जाइछ । पूर्णत: विकृत आमकेँ **सड़ल** कहल जाइछ ।

आमक खोंइचाक निचला भाग **गुद्दा** कहल जाइछ । गुद्दाक रेसा सऽन कहल जाइछ । अधिक मांसल भागसँ युक्त आमकेँ **गुदगर** कहल जाइछ । गुद्दावला भागमे सनसँ युक्त आमकेँ **सनाह/सनहा** कहल जाइछ । एहन आम प्राय: पूर्ण रसयुक्त होइछ जकरा **रसवला/रसगर** आम कहल जाइछ ।

पकलापर जे आम अम्लीय स्वादक होइछ, तकरा **खट्टा/अम्मत** कहल जाइछ । अत्यधिक खट्टा आमक प्रभेद **अम्मत-चुक्क** कहल जाइछ । अल्प खट्टा तथा अल्प मिट्ठक संयोग भेलापर **खटमधुर** कहल जाइछ । अल्प मिट्ठ रसवला आम **मधुरौंठ** कहल जाइछ । भेमहा आमक स्वादकेँ **भेम्हाइन** कहल जाइछ ।

आमक उपरका भाग **मुँहठी/मुट्ठी** कहल जाइछ । आमकेँ तीन भागमे काटल

जाइछ । दुनू भागक कटलाहा अंश **कतरा** कहल जाइछ आ बिचला भाग **आँठी** कहल जाइछ ।

सौंस पाकल आमक मुट्ठी काटि कऽ मुँहमे लगा कऽ रसग्रहण कयल जाइछ । एहि प्रकारेँ मुँहमे लगयबाक क्रिया **चोभा** कहल जाइछ । तत्पश्चात् रस ग्रहण करबाक क्रिया **चोभा लगायब/चोभब/चूसब** होइछ । **चोभा** शब्द आमेक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि ।

काँच आमक बनल सामग्री :

आमक अनेको प्रकारक सामग्री बनाओल जाइछ । आमकेँ सोहि कऽ ओकर गुद्दाकेँ सिलौटपर पीसि कऽ नोन, मिरचाइ, भूजल मशाला मिला देल जाइछ आ सङहि अल्प मात्रामे काँच तेल मिला कऽ तुरत खयबाक कार्यमे आनल जाइत अछि । एहि विधिसँ बनल सामग्री **चटनी** कहल जाइछ । सोहल काँच आमकेँ खण्ड-खण्डमे चीरि कऽ सुखाओल जाइछ तँ एहन सुखाएल आम **आमिल/खटाइ** कहल जाइछ । ओही सुखलाहा आमिलकेँ चूरि लेला पर ओ **अमचूर** कहल जाइछ । अधिक मात्रामे काँच आमकेँ चूरि कऽ अँचारक पात्रमे दऽ देल जाइछ । आवश्यकतानुसार राइ, मिरचाइ, नोन, अन्य मशाला मिला कऽ जे वस्तु तैयार कयल जाइछ ओ **कुच्चा/कसौंझी/कसौनी/कसौन्ही** कहल जाइछ ।

सौंस काँच आमकेँ चारि फाँक बनाओल जाइछ आ धो कऽ कने रौद देखा कऽ ओकरा नोन दऽ कऽ फूलऽ देल जाइछ जाहिसँ ओ आमक फाँक नोनक पानिमे सिद्ध भऽ जाइछ । तखन ओहि फाँककेँ तैयार अँचारक मशालासँ भरल जाइछ । एकरा **फाँड़ा/फाँक/आमक फाँड़ा** कहल जाइछ आमकेँ छोट-छोट खण्डमे काटि नोन, मशाला, तेल आदि एकहि संग मिला कऽ दऽ देल जाइछ । नाम मात्रक रौद देखाओल जाइछ । क्रमिक रूपेँ ओहिमे पानि छुटि जाइछ आ मशालाक रसमे सराबोर भेल ओ हरियर खण्ड सभ रहैत अछि । एहन अँचारकेँ **पनिअल्ला/पनिआहा अँचार** कहल जाइछ ।

काँच आमकेँ आगिमे पका कऽ ओकर गुद्दाकेँ मथि कऽ पानिमे घोरि कऽ शर्बत बनाओल जाइछ । एकरा **अमरस/अमझोरा** कहल जाइछ । एहन शर्बत लू लगलापर दवाइक रूपमे देल जाइछ । विभिन्न प्रकारक आम्लिक फल तथा व्यंजनकेँ अँचारक विधिसँ बनओलापर ओ भिन्न-भिन्न नामे जानल जाइछ-जेना **मरचाइक अँचार**, **कटहरक अँचार**, **करैल-परोड़क अँचार**, **ओलक अँचार** आदि । आमकेँ सोहि कऽ खण्ड बना कऽ नूनक पानिमे फुला लेल जाइछ । तत्पश्चात् पानिसँ निकालि अल्प रौद देखा कऽ तरकारी जकाँ भूजल जाइछ । तखन गूड़क पाग बना कऽ ओहिमे छोड़ि देल

जाइछ। पश्चात भूजल धनी, मिरचाइक कूट छीटि देल जाइछ । चाशनी गढ़ा गेलापर आगिसँ उतारि भोजन व्यापारमे आनल जाइछ । एकरा **खटमिट्ठी/आमक खटमिट्ठी, गुड़म्मा** कहल जाइछ ।

पाकल आमसँ बनल सामग्री :

पाकल आमकेँ खोंइचा हटा कऽ ओकर रस तथा गुद्दाकेँ हाथसँ गारि लेल जाइत अछि । एहन गारल रस **आमक गारा/गारा** कहल जाइछ । एहि गाराकेँ कोनो वस्त्र वा काठनिर्मित वस्तुपर पसारि देल जाइछ । पसारबाक एहि क्रियाकेँ **बोर देब** कहल जाइछ । बोरकेँ संख्यामे गनल जाइत अछि । एवं प्रकारेँ रउदमे सुखा-सुखा कऽ बनल सामग्री **अमौट/अमओट/अमोट** कहल जाइछ । एहि अमोटकेँ खण्ड-खण्डमे विभक्त कऽ कऽ राखल जाइछ । एहन काटल अमोट **घरिका** कहल जाइछ ।

सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त समैया फलमे विशिष्ट अछि- **लिच्ची/लीची/लुच्ची** । ई अर्द्ध गोलाकर होइछ तथा करीब डेढ़ इंच नाम ओ एक इंच चाकर होइछ । एकर मध्य भागमे नाम आकृतिक लाल रंगक ठोस ओ कठोर बीया रहैत छैक जकरा चारू कात उज्जर रंगक करीब आधा सेंटीमीटर मोट रसदार गुद्दाक आवरण रहैछ । ई गुद्दा पातर त्वचाक सदृश आवरणसँ आवृत्त रहैछ जकर उपरका भाग उत्तलोत्तल ओ खरखर होइत छैक। परिपक्व लीचीक त्वचाक रंग गाढ़ लाल होइछ । एकर पकबाक समय बैसाख-जेठ अछि ।

अत्यन्त पैघ ओ स्वादिष्ट लीचीक प्रभेद **शाही लिच्ची** कहल जाइछ । सुगन्धित गुद्दावला लिच्चीक प्रभेदकेँ **गुलाबी लिच्ची** कहल जाइछ । लिच्चीक देरीसँ पाकऽवला प्रभेद **चाइना लिच्ची** कहल जाइछ । लीचीक एक विशिष्ट प्रभेद थिक- **चीनीफल** । अत्यन्त कम गुद्दा ओ अति पैघ आँठीवला लीचीक प्रभेद **अँठियालिच्ची** कहल जाइछ। मिथिलामे लीचीक हेतु मुजफ्फरपुर ओ वैशाली जिला सम्पूर्ण भारतवर्षमे प्रसिद्ध अछि।

सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त फल मध्य **कटहर/कटहल/कण्टकिफल** सर्वाधिक दीर्घकाय फल थिक । एकरा संस्कृतमे **पनस** कहल गेल अछि । एहि फलक बाह्य भाग काँटदार होइछ तथा एकर भीतरी भागमे कोमल गुद्दावला अनेक खाद्य भाग रहैछ जकरा **को/कोआ/कटहरक को** कहल जाइछ । कोआक भीतरी भागमे कटहरक **आँठी** रहैत छैक । आँठीक ऊपरमे पातर झिल्लीक आवरणकेँ **पेटाढ़ी** कहल जाइछ । कोआक समूह एक-दोसरसँ नाम-नाम रेशा द्वारा पृथक्कृत रहैछ । एहि अंशकेँ **कमड़ी/कमरी** कहल जाइछ । कटहरक मुखभाग गाछसँ सम्बद्ध रहैछ । ओही भागक भीतरी अंश क्रमशः मोट दण्डाकृति भऽ जाइछ, जकर चारू कात कमरी ओ कोआ आवृत रहैछ । एहि मध्यवर्ती दण्डाकार भागकेँ **नेढ़ा/नेरहा/मुसरा** कहल जाइछ । पैघ ओ कठोर कोवला कटहरक

प्रभेद विशेषकेँ **खजवा** कहल जाइछ । रोहिणी नक्षत्रमे पाकऽवला कटहर रोहिनिञा तथा भादवमे पाकऽवला प्रभेदक कटहरकेँ **भदइया/भदैया** कटहर कहल जाइछ ।

जामुन अषाढ़ मासमे सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त होअऽवला अन्य फल थिक । एकर आकृति गोल तथा करीब एक-डेढ़ इंच धरि नाम होइत अछि । ई गुच्छामे फड़ैत अछि । ई अर्द्ध पक्वावस्थामे लाल रंगक तथा पूर्ण पकलापर कारी रंगक होइत अछि । इहो **समैया, भदैया** ओ **बरहमसिया** प्रभेदक होइछ । **समैया** प्रभेद आषाढ़ मासमे तैयार होइछ । पैघ आकृतिक अत्यधिक गुच्छावला जामुनक प्रभेद **फलजामुन/गुलजामुन/जामु** कहल जाइछ । छोट आकृतिक जामुनक प्रभेदकेँ **जमुनी** कहल जाइछ । एकर प्रत्येक फलक मध्यवर्ती भागमे एकटा नाम आकृतिक बीया होइछ ।

जेठ-आषाढ़ मासमे एक गोट सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त होअऽवला फल विशेषकेँ **जिलेबी** कहल जाइछ । एकर फल जिलेबीये जकाँ घुमावदार होइछ । फलक आवरण हरियर रंगक होइत छैक जे पकलापर किञ्चित ललओन भऽ जाइत छैक । पश्चात् आवरण फूटि जाइत छैक आ भीतरवला गुदगर अंश प्रकट होइत छैक जे अनेक खण्डमे विभक्त रहैछ । एहन अंशमे बटल भागक प्रत्येककेँ **पोट** कहल जाइछ । एहि गुदगर भागक रंग उज्जर होइत छैक तथा एहिमे फलक कारी बीया फसल रहैत छैक । फल स्वादमे किञ्चित मधुर होइछ एवं एकरा खयला उत्तर खूब **गारा** लगैत छैक ।

बैसाख मासमे काँटवला वृक्षसँ गोलकक आकृतिक एकगोट विशेष फल प्राप्त होइछ । एकरा **बेल** कहल जाइछ । एकर बाह्य आवरण अत्यन्त कठोर होइत छैक । एकर रंग परिपक्व अवस्थामे किञ्चित पीत वर्णक भऽ जाइछ । एहि फलक भीतरी भागमे पीयर रंगक गुद्दावला भाग रहैत छैक जकर स्वाद अत्यन्त मधुर होइछ । मिथिलामे **पवड़ा** गामक बेल नामी अछि । बेलक गुद्दामे बीच-बीच भागमे बीजक क्षैतिज शृंखला रहैछ। एकर वर्ण उज्जर होइछ एवं आकृतिक छोट-छोट । एहि भागमे अत्यधिक लस्सा रहैत अछि जकरा बेलक **लस्सा** कहल जाइछ । छोट आकृतिक बेलकेँ **बेली** कहल जाइछ । बेसी बीयावला बेलक प्रभेदकेँ **अँठिया बेल** कहल जाइछ । बेलक बीयासँ जनमल गाछक बेलकेँ **कठबेल** कहल जाइछ । कठबेल छोट आकृति रहलापर ओकरा **कठबेली** कहल जाइछ । बेलक फलक आवरणवला दृढ भागक टुकड़ाकेँ **खप्पा/खपड़ोइया/खपलोइया** कहल जाइछ । धार्मिक दृष्टएँ एहिमे सातबेर पानि पीबाक परिपाटी अछि ।

पाकल बेलक गुद्दाकेँ पानिमे घोरि कऽ चीनी मिला कऽ शर्बत बनाओल जाइछ, जकरा **बेलक शर्बत** कहल जाइछ । बेलक मूड़ी परका पातकेँ पीसि कऽ मिसरीक योग दऽ शर्बत बनाओल जाइछ । एहन मूड़ी परहक पातकेँ बेलक **टुस्सा/टूसा** कहल जाइछ । एहि टुस्सासँ बनल सर्बत **बेलक टुस्साक शर्बत** कहल जाइछ ।

सदाबहार वृक्षमे फड़ऽवला प्रसिद्ध प्रचुरसंख्यक फल होइछ **लताम/अमरुथ/अमरुद/अमदुर** । एकर आकार गोल ओ नाम दुइ प्रकारक होइछ । एकर मध्यवर्ती भागमे लघु आकृतिक बीजसमूह केन्द्रित रहैछ आ ओकर चारू कात मोट गुद्दाक परत रहैत छैक । एकर मुख्य स्थल एकटा डंटी द्वारा वृक्षसँ सम्बद्ध रहैछ । ओहि मुख्य स्थलक ठीक विपरीत पछिला भागमे एकर पुष्पक अवशेष स्पष्ट देखाइत रहैछ । लतामक प्रारम्भिक रूप **फुल्ली** कहल जाइछ । फुल्लीसँ कने पैघ आकारक भेलापर **दुर्री/ढुल्ली/बजरी** कहल जाइछ । एकर बादक स्तरक लतामक पहिलरूपकेँ **कट्ठम** आ परवर्ती रूपकेँ **डम्हक** कहल जाइछ तथा पूर्ण पीयर ओ कोमल भेलापर **पाकल** कहल जाइछ । एकर गुद्दाक रंग सामान्यतः उज्जर होइछ, मुदा किछु प्रभेदक गुद्दा लाल रंगक होइत अछि । लाल रंगक गुद्दावला प्रभेदक लतामकेँ **सदियाम/सजियाम** कहल जाइछ । एकर बाहरी रंग प्रारम्भिक स्थितिमे सामान्यतः हरियर होइछ तथा पकलापर पीताभ भऽ जाइछ । लताम **समैया** ओ **बरहमसिया** दुहू प्रकृतिक होइछ । एहन देखल गेल अछि जे अनेरुआ बीजसँ उत्पन्न गाछक लताम अति लघु आकारक होइछ तथा स्वादोमे निकृष्टे, तेँ एहन लतामकेँ **छेइलताम** कहल जाइछ । सुपारी आकृतिक लताम **सुपरिया/सहेलिया** कहल जाइछ । लतामक प्राचीन नाम **बीजपोर** छल ।

सदाबहार वृक्षमे फड़ऽवला एकगोट फल होइछ **अनरनेबा/अइरनेबा/अड़नेबा/पपीता** । ई गोल तथा नाम दुनू आकृतिक होइछ । मुदा एकर उपरका भाग चापट होइछ । काँचमे एकर उपरका आवरण हरियर तथा भीतरमे उज्जर खाद्य अंश रहैछ । एकर भीतरमे बीया रहैछ । पकलापर ई पीयर रंगक होइछ ।

वृक्षमे फड़ऽवला पवित्र फल थिक- **नारियर/नारियल/नारिकेर/नारिकेरि/नारिकेल** । ई गोल तथा नमीन दुनू आकृतिक होइछ । एकर उपरका भाग रेसादार सक्कत मोट आवरणसँ घेरल रहैछ । एकरा भीतर कठोर कवचक बीच दूध सदृश उज्जर खाद्य फल रहैछ जकर बीच जल भरल रहैछ । काँच नारियरक पानि **डाभ** कहल जाइछ । फलक उपरका कठोर कवचकेँ नारियरक **खप्पा** (सं. खर्पर)कहल जाइछ । एकर सुक्खल फलकेँ **गड़ी** कहल जाइछ । ई वर्षो भरि मशालाक कार्य करैत अछि ।

एकर खपड़ोइयाक अर्द्ध भागसँ कने बेसी काटि कऽ दुनू छोरपर छेद बना कऽ ओहिमे फट्ठी वा लकड़ीक नाम दण्ड लगा देल जाइछ । एकरा **ओरिका** कहल जाइछ । एहि ओरिकासँ दूध औंटबाक कार्य लेल जाइत अछि । ओरिकाका उपरका कटलाहा भागसँ दही कटबाक कार्य कयल जाइछ । जकरा **दहिकट्टा/दहिकटना/खीप** कहल जाइछ । नारिकेरमे जखन पुनः वृक्ष होयबाक हेतु अंकुरण होइछ तखन ओकर भीतरमे अतिकोमल फोंक खाद्य अंश रहैछ, जकरा **गोभा/गुल्फा** कहल जाइछ ।

ताड़ एक प्रकारक फल थिक । ताड़ दू प्रकारक होइछ । मरद्दन्ना गाछमे फल

नहि निकलैछ, मात्र पुष्प युक्त एक डेढ़ हाथक नाम डाँट बहराइछ । एकरा **फूलदो ताड़/फूलताड़/बलताड़** कहल जाइछ । जाहि ताड़क गाछमे फऽड़ निकलैछ ओकरा **धौरहा/फल्ला/फलताड़** कहल जाइछ । एहिमे वैसाख मासमे फऽड़ बहराइछ । एकरा **मौगियाही ताड़** बूझल जाइत अछि । एकर फऽड़केँ **बजरबट्टू** कहल जाइछ । बजरबट्टूक भीतरी भागमे दू अथवा तीनटा चौखूट ओ मोलायम खाद्य फल रहैछ, जकरा **को/कोआ/तड़कुन/ताड़कुन** कहल जाइछ, बजरबट्टूसँ **को** निकालबाक क्रियाकेँ **छेबब/ताड़ छेबब** कहल जाइछ ।

ताड़ जखन गाछमे पाकि जाइछ तँ स्वतः पीयर भऽ खसि पड़ैछ । एकरा भीतरमे सनाह गुद्दा रससँ युक्त रहैछ जकरा लकड़ीक सहायतासँ घुमा-घुमा कऽ रस निकालि कऽ खायल जाइत अछि । रस निकालबाक एहि क्रियाकेँ **पेड़ब** कहल जाइछ । रस बाहर कयलाक पश्चात् जे आँठी बचैछ तकरा माटिमे गाड़ि देल जाइत अछि । किछु दिनक पश्चात् ओहिमेसँ अंकुर फेकैछ । तकर बाद उखाड़ि कऽ ओकरा फोड़ि कऽ खायल जाइछ । आँठी फोड़लापर ओहिमेसँ कोमल खाद्य अंश बहराइछ । एकरा **गुलफा/ताड़क गुल्फा/गोभा/ताड़क गोभा** कहल जाइछ ।

ताड़ेक जातिक वृक्षमे फड़ऽवला अति छोट फल होइछ- **खजूर** । ई आङुरक एक पोरक लम्बाइक आकृतिक होइछ । एकर उपरका आवरण काँचमे हरियर तथा पकलापर पीयर होइछ । एकर भीतरमे नाव आकारक पाथर सदृश बीया रहैछ ।

गुल्लड़ि/डुम्मरि एक प्रकारक सदाबहार वृक्षक फल थिक । ई गोल-गोल, छोट आ पैघ सुपारीक आकारक होइछ । काँच फड़क तरकारी होइत छैक । पाकल फड़ ओहिना खायल जाइछ ।

बड़हर अषाढ़ मासमे परिपक्व होअऽवला अन्य फल थिक । एकर बाह्य सतह उभर-खाभर होइत छैक । एहि फलक मध्य गोल आकृतिक किञ्चित कठोर भाग रहैत छैक, जकर चारूकात खाद्य गुद्दावला मोलायम भाग रहैत छैक । प्रत्येक फलमे उज्जर रंगक छोट-छोट सैकड़ो बीया होइत छैक । स्वादमे ई किञ्चित खटमधुर होइछ तथा पकला उत्तर एकर वर्ण पीताभ होइत छैक ।

अन्य काँटवला वृक्षसँ वसन्त ऋतुमे प्राप्त होअऽवला फल अछि- **बेर/बइर/बएर/**(सं.बदर) । एकर आकार करीब डेढ़ इंच धरि नाम होइत अछि । बैरक मध्यवर्ती भागमे नाम आकृतिक बीया होइत छैक तथा ओकर चारू कात गुदगर खाद्य भाग रहैत छैक । पाकल बैरक बाह्य भाग कत्थी ओ अल्प पीयर रंगक होइत अछि । बेसी नाम आकारक बैरक एक गोट प्रभेद **सुगबा बैर** होइछ । बैरक बीयासँ जे वृक्ष उत्पन्न होइछ ताहिमे फड़ल बैरकेँ **झड़बैर/औंठिया बैर** कहल जाइछ । ई स्वादमे **मधुराह** होइत अछि ।

बैरकेँ चूरि कऽ ओहिमे आओरो अन्य पदार्थ सभ मिला कऽ चूर्ण बनाओल जाइछ । एकरा **बैरचून** कहल जाइछ ।

अत्यधिक पैघ आकारक सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त अन्य फल थिक- **कदम/कदम्ब** । एहि फलक आकार छोट गेन्दक सदृश होइछ तथा पकलापर एकर रंग पीताभ होइत छैक । एकर बाहरी आवरणपर रोमांच सदृश पुष्पाकृति रहैत छैक तथा फलक भीतरमे अत्यन्त सूक्ष्म सहस्रो बीया रहैत छैक । खयबामे ई फल खटमधुर होइछ ई बीज सहित खायल जाइछ । एकर फड़बाक समय साओन-भादव होइछ । एकर चटनीयो बनैछ ।

अनार/दाड़िम जाड़क मासमे एक गोट छोट सन आकृतिक गाछसँ प्राप्त होअऽवला फल थिक । ई छोट सन तुम्माक आकृतिक होइछ तथा एकर लम्बाइ करीब दू-अढ़ाइ इंच होइछ । एकर वाह्य आवरण किञ्चित कठोर परतसँ युक्त होइछ तथा परिपक्वावस्थामे एकर रंग अल्प कत्थी होइत छैक । अनारक पुष्पक अवशेष ओकर फलमे गोरा जकाँ दृष्टिगोचर होइत छैक । अनारक भीतरी भागमे दाँतक सदृश दाना होइछ । एहि दानाक मध्य भागमे बीज रहैत छैक तथा बीजक चारू कात सरस आवरण रहैत छैक । यैह भाग चोष्य होइछ । अनेक दानाक परस्पर सम्बन्द्ध चारि-पाँच गोट शृंखला अनारमे पृथक्-पृथक् पाओल जाइछ । एकर एक गोट विशिष्ट प्रभेदकेँ **बेदाना** कहल जाइछ ।

समइया वृक्षमे फड़ऽवला फल होइछ- **केरा/रम्भाफल/कदली/कड़री** । एकर गाछ जलयुक्त नाम बेलनाकार होइछ, जकरा **थम्ह/कड़रीक थम्ह** कहल जाइछ । एहि वृक्षसँ बीजकोष बहार होइछ । एकरा **कोसा** कहल जाइछ । कोसासँ डाँट सहित कदली फलक गुच्छा निकलैछ जकरा **घौर/धौर/केराक घौर** कहल जाइछ । एही डाँटमे दससँ बीस संख्यामे एकत्रित फलक गुच्छाकेँ **हत्था** कहल जाइछ । हत्थाक प्रत्येक फलकेँ **छिम्मी/छिम्मड़ि** कहल जाइछ । घौरक नीचा भागक केरा अति छोट होइछ जे **मुनियाँ केरा** कहल जाइछ ।

मोटका केराक प्रभेदकेँ **भोस/मुठिया** केरा कहल जाइछ । केराक प्रभेद बत्तीसटा हत्थावला **बत्तीसा** कहल जाइछ ।

विशिष्ट केराक प्रभेदकेँ **बागनर/वंशीवट** कहल जाइछ । एकरे पैघ आकारक केरा **सिंगापुरी** कहल जाइछ । अति छोट छिम्मी, पातर खोइया आ सुगन्धित गुद्दासँ युक्त केरा **चिनियाँ/चम्पापुरी/अनुपान** कहल जाइछ । **आँठीवला** केराक प्रभेदकेँ **आँठिया केरा** कहल जाइछ ।

माटिमे खाधि खूनि कऽ ओहिमे पोआर आदिकेँ ओछा देल जाइछ । तखन एहिपरसँ केराक हत्था वा सम्पूर्ण घौरकेँ दऽ देल जाइछ । ऊपरसँ नार-पोआरक आवरण दऽ ओहिपरसँ माटि लऽ कऽ झाँपि देल जाइछ तथा एकर एक भागमे छोट सन मुँह छोड़ि

देल जाइछ जाहिमे आगि दऽ कऽ मुँहसँ फूकल जाइछ । धुआँ केरा तक चलि जाइछ । एहि प्रकारेँ फुकबाक क्रिया **धूकब** होइछ । जतेक बेर धूकल जाइछ तकरा **धुकान** कहल जाइछ । एहि प्रकारेँ धुकलापर केराक आवरण पीयर भऽ जाइछ तथा भीतरक गुद्दा **गलगल** भऽ जाइछ । एहन केरा **पाकल केरा/धूकल केरा** कहल जाइछ । एहि धुकबाक क्रममे बेसी धुआँ लागि गेलापर केराक आवरण कखनो-कखनो करिअओन तथा भीतरक गुद्दाक स्वाद धुआँ सन भऽ जाइछ । एहन केरा **धुआँइन केरा** कहल जाइछ । जे केरा स्वयं गाछेमे पीयर भऽ जाइछ **गछपक्कू** केरा कहल जाइत अछि । ताहिसँ पूर्वधरि घौड़ **काँच** कहल जाइछ ।

गर्मीक मासमे फड़ऽवला लत्ती-जातीय फल होइछ **काँकड़ि** (सं. कर्कटि) । ई बेलनाकार आकृतिक होइछ । एकर उपरका खोंइचा हरियर-पीयर मिश्रित चित्रवर्णक होइछ । एकर गुद्दा स्वादमे अंश मात्रक मीठ होइछ । एकरे एक अन्य प्रभेदकेँ **फूटि** कहल जाइछ । पकलापर ई स्वतः फाटि जाइछ । एकर उपरका आवरण उज्जर रंगक होइछ । एकरे जातिक छोट आकारक एक अन्य प्रभेदकेँ **गुड़मी/गुरमी/गुड़मा/घुरमी** कहल जाइछ । केरा उपजयबाक स्थान **करजान/केरजान** कहबैछ ।

तरबुज/तरबुज्जा/ तार्भुज/तरभुज्जा लत्तीजातीय गोल वृहदाकार फल विशेष थिक । एकर आवरणक रंग कारी, हरियर तथा दूनू मिश्रित चित्रवर्णक होइछ । एकर उपरका परतक अखाद्य भाग मोट होइछ । भीतरक जलयुक्त गुद्दा लाल रंगक होइछ । एकर बीया कारी रंगक होइछ ।

खरबूज/खरबुज्जा/खरभुज्जा/खुर्बुज लत्तीजातीय जलयुक्त फल विशेष थिक । ई गोल आकारक होइछ । एकर दूनू पार्श्व चपकल रहैछ । एकर उपरका आवरण पीयर रंगक होइछ जाहिमे हरियर रंगक डाँड़ि बनल रहैछ । फूटि-काँकड़िक अपेक्षा ई विशेष मिट्ठ होइछ । एकरा **लालमी** सेहो कहल जाइछ ।

एक डेढ़ बीत नाम दण्ड आकारक लत्तीजातीय फल थिक **खीरा**/**सोहास** (सं. त्रपुस) । खीराक आवरण उज्जर तथा हरियर-पीयर मिश्रित चित्र वर्णक होइछ । खीराक उपरका भागकेँ **मुहठी/मुट्ठी** कहल जाइछ । नीचाक भाग **पेनी** कहल जाइछ । एकर मुट्ठी तीत होइछ । तेँ एकरा काटि कऽ खायल जाइछ । खीराक भीतरक गुद्दा तीन भागमे विभक्त रहैछ । एहि विभक्त भागकेँ **फाँक** कहल जाइछ ।

खीराक एक प्रभेदकेँ **बालम खीरा** कहल जाइछ । छोट खीराकेँ **बच्चा/बतिया/खिम्चा** कहल जाइछ । ई काँचे खायल जाइछ । नाम दण्डाकृतिक एही जातिक खाँचदार फल **बतिया** कहल जाइछ ।

मखान/मखाना पानिमे उपजऽवला एकटा फल थिक । एकर बीयाकेँ

बीहन/बीहिन/बीहनि कहल जाइत अछि । एकर आकार गोल आ रंग कारी रहैत छैक । कारी रंगवला ऊपरी भाग कठोर कवचक रूपमे रहैत छैक । एकर तरमे उज्जर रंगक गुद्दा रहैत छैक । आकारमे ई मट्टरक दानासँ कने पैघ होइत अछि ।

मखानक **बीहनि** कातिकमे जलाशयमे छीटल जाइत छैक । किछु समयक बाद बीहनिसँ काँट युक्त डंटी निकलैत छैक । डंटीक उपरका माथ पातक आकृति ग्रहण करैत छैक । पात गोल लगभग हाथ भरि व्यासक ओ काँटसँ युक्त होइत छैक । गाछसँ निकलल डंटी सभमे अनेकसँ नील वर्णक फूल बहराइत छैक । फूल झड़लाक पश्चात् डंटीक उपरका भागमे गेनक आकृतिक काँटयुक्त आवरणवला फड़ बहराइत छैक । एहि फड़केँ **पुर/पउट** कहल जाइत अछि । पउटक भीतरी भागमे मखानक बीया रहैत छैक । एहि बीयाकेँ **गुर्री/गूड़ी/गुड़िया** कहल जाइत छैक । बीया पकलाक बाद पउट स्वत: गलि जाइत अछि आ गूड़ी सभ जलक भीतर खसि धरती धऽ लैत अछि । ओहि गूड़ीकेँ जलसँ ऊपर करबाक क्रिया **मखान खरड़ब/बहारब** होइछ ।

जलाशयसँ बाहर कयल गूड़ीक उपरका भागमे एकटा पातर आवरण रहैत अछि । एकरा **चोंइटा** कहल जाइत छैक । चोंइटा छोड़यबाक हेतु गूड़ीकेँ **खूब लतिखुर्दन** कऽ साफ पानिसँ धो देल जाइत छैक । एहि साफ गूड़ीकेँ रौदमे सुखा लेल जाइछ । सुखायल गूड़ीकेँ समान आकृतिक अनुरूप छँटबाक हेतु ओकरा सात आकृतिक छेदसँ युक्त सातटा चालनिसँ होइत क्रमश: चालल जाइत छैक ।

गूड़ीसँ मखान बनयबाक क्रिया **भूजब** होइत अछि । भुजबासँ पूर्व गूड़ीकेँ हल्लुका गर्म करबाक क्रिया **भाड़(र)ब** होइत अछि । भारल गूड़ीकेँ एक ठाम जमा कऽ एक-दू दिन छोड़ि देबाक क्रिया **जमायब** होइत अछि ।

जमल गूड़ीकेँ खापरिमे लाल कऽ भूजि गर्ममे तीन-चारिटा गूड़ी एकटा काठक चाकर आधारपर राखि काठेक हथौड़ीसँ पीटल जाइत छैक । काठक-चाकर आधारकेँ **तरिहट** ओ हथौड़ीकेँ **मुङरि/मुङरी/पिटना** कहल जाइत छैक । एहि तरहेँ कयलासँ गूड़ीक उपरका आवरण टूटि कऽ छिड़िया जाइत छैक आ भीतरवला उज्जर अनेक गुणित आकार पकड़ि बाहर होइत अछि । एहि फूटल गूड़ीकेँ **मखान** कहल जाइत अछि ।

फूटि कऽ अत्यधिक पैघ भेल मखानकेँ **फोका/फोका मखान** कहल जाइत अछि । बिनु फूटल अथवा कम फूटल मखानकेँ **किर्री/तुर्री** कहल जाइत छैक । आघातक कारणेँ जे किर्री टूटि कऽ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइत छैक ओकरा दालि/दाइल कहल जाइत छैक ।

पानिमे उपजऽवला एकटा खाद्यफल **सिंघाड़ा/सिङहारा/सिंहारा/पानी फल** कहल जाइत छैक । एहि फलक आकृति त्रिकोण होइत छैक । एकर बाह्य आवरण हरियर तथा लाल रंगक होइत छैक । देशी प्रभेदकेँ **देशवाली** ओ आयातित प्रभेदकेँ **कनपुरिया/कानपुरी** कहल जाइत छैक । देशवाली प्रभेदक फल कनपुरियाक अपेक्षा छोट होइत छैक । संगहि जुअयला उत्तर देशवाली प्रभेदक सिंहाराक आवरण कठोर भऽ जाइत छैक आ ओकरा दाँतसँ काटि कऽ खायब संभव नहि रहैत छैक । कनपुरियाक आवरण जुअयलोपर नरमे रहैत छैक । तेँ जुआयल देशवाली सिङहाराकेँ उसिनि कऽ हँसूसँ छीलि खयबाक प्रचलन अछि । नरम गुद्दावला सिङहाराकेँ **खिच्चा/खिञ्जा/अजोह** कहल जाइत अछि ।

पानिमे वर्षा कालमे उपजऽवला एक गोट फूलक गाछ होइछ **भेंट** । एकर फलवला अजोह भागमे मडुआ सदृश खाद्य पदार्थ होइछ जकरा **मडुअनि** कहल जाइछ । एहिसँ बनल लावा **भेंट लाबा** कहल जाइछ ।

आम्लिक फल

कोनो खाद्य वस्तुमे अमती अनबाक हेतु निम्नलिखित आम्लिक फलक सहायता लेल जाइछ जेना- अमड़ा, इमली, करौना, नेबो तथा धातरी आदि । स्वतन्त्रो रूपमे एकर सभकेँ खाद्य वस्तु बना कऽ ग्रहण कयल जाइछ ।

सदाबहार वृक्षसँ प्राप्त समैया आम्लिक फल मध्य **अमड़ा** अबैत अछि । एकर आकृति अण्डाकार होइछ तथा आवरणक रंग हरियर रहैछ । एहिमे खोइया नहि होइछ । एकर भीतरमे दूटा चापल बीज रहैछ । एकरे सदृश मुदा छोट आकृतिक अन्य फल **करौना/करोना** होइछ । पकलापर ई जामुनक रंगक भऽ जाइछ । एकर गाछ झाड़युक्त होइछ ।

झाड़युक्त गाछमे बारहोमास फड़ऽवला फल होइछ **नेबो/नेमो/नेमुआँ/निबू/निम्बू** । मुख्यत: एकर दुइ गोट प्रभेद होइछ - **कागजी ओ जमीरी/जम्बीरी** । कागजीक आकृति नमौन अण्डाकार होइछ । एकर बाह्य आवरण खुरदराह होइछ । काँचमे एकर आवरणक रंग हरियर तथा पकलापर पीयर होइछ । एकर उपरका भाग **खोइया** कहल जाइछ तथा भीतरक रसयुक्त गुद्दावला भाग अनेक पातर आवरणमे मुनल रहैछ जे **पोट** कहल जाइछ । उपयोगमे अनबाक हेतु एकरा काटल जाइछ । काटल खण्डकेँ **फाँक** कहल जाइछ । फाँककेँ हाथसँ दबओलाक पश्चात् जे जलीय पदार्थ बहराइछ तकरा **नेबोक रस** कहल जाइछ । जमीरी नेबोक आकृति गोल होइछ । एकर दूनू पार्श्व चापट ओ गँहीर रहैछ । एकर आवरणक रंग हरियर होइछ । नेबोक अन्य प्रभेदकेँ **पहाड़ीनेबो/नेपलिया नेबो/सनतारा** कहल जाइछ । एकर आकृति कागजी नेबोक तिगुना-चौगुना होइछ । लघु आकृतिक विशिष्ट सुगन्ध संयुक्त कागजी **देशी कागजी** कहल जाइछ तथा पैघ आकृतिवला **कागजा** कहल जाइछ । जमीरी नेबोक दशगुना पैघ आकारक अन्य फल

होइछ टाभ **नेबो** । एकर भीतरक खाद्य अंश पकलापर लाल रंगक होइछ । एकर स्वाद खटमधुर होइछ । ई फल सद्यः ग्रहण कयल जाइछ ।

नेबोकेँ उपरका आवरणकेँ घसि कऽ नोन दऽ कऽ सिझओलापर बनल सामग्री **निमकी** कहल जाइछ । नेबोक फाँकपर नोर छीटि आगि पर खदकाओल जाइछ जकरा **चुक्क/चुक** कहल जाइछ । एकर उपयोग पेट खराब भेलापर कयल जाइछ ।

काँटबला झारीदार वृक्षमे फड़ऽवला गोल लघु आकृतिक फल होइछ- **अमती** । काँचमे एकर रंग हरियर तथा पकलापर करिछओन होइछ । विशाल वृक्षमे मटर आकृतिक अन्य आम्लिक फल होइछ- **फरसा** । इहो पकलापर कारी रंगक होइछ तथा स्वादमे खटमधुर होइछ । आम्लिक फल मध्य छोट करैल आकृतिक एकगोट फल **तूति/तूँति** होइछ ।

आसिन-कातिकसँ माघ मास धरि सदाबहार वृक्ष विशेषसँ प्राप्त होअऽवला अन्य फल थिक- **धातरी/धात्री/अओरा** । एकर स्वाद खट्टा ओ किञ्चित कषाय होइत अछि। ई जुअयला उत्तर खायल जाइछ । एकर आकार गोल तथा रंग किञ्चित हरियर-पीयर मिश्रित होइछ । सम्पूर्ण फल अनेक क्षैतिज खण्डमे विभक्त रहैछ तथा मध्यवर्ती भाग गोल बीजसँ युक्त होइछ । एकर चटनी, अँचार तथा मोरब्बा बनैछ ।

बेढ़मे प्रयुक्त बेलसन नमहर काँटसँ भरल गाछमे धातरीक आकारक एकटा फल होइछ जकरा **पनिअओला/पनिअल्ला/पनिझाला** कहल जाइछ । ई हरियर होछ आ पकलापर लल्हौन भऽ जाइछ । काँचमे एकदम खट्टा तथा पकलापर किछु मिठौंस भऽ जाइछ । काँचकेँ क्यो-क्यो चटनी बना कऽ खाइछ । पाकलकेँ तरहत्थीपर गुलगुला कऽ खायल जाइछ । धातरीये सदृश रंग ओ आकारक अमत फल होइछ **हरफा/हरफरौड़ी** । झाड़ीदार गाछमे एक इंच नाम ओ पातर होइछ **धमौरी/धम्हौरी** । ई पकलापर नारंगी रंगक होइछ । स्वाद एकर खटनुरूस होइछ । खाँचदार बेलनाकार फल होइछ **अनानास/अननास/अनारस** । पूर्णिया-किसनगंजमे एकर बृहत् खेती होइछ ।

अत्यन्त छोट-छोट पातवला सदाबहार वृक्ष विशेषमे करीब बीत भरि नाम एकटा फल बैसाखमे उत्पन्न होइछ, जकरा **इमली/तेतरि/तितरी** (सं. तितरी) कहल जाइछ । एकर स्वाद काँच रहला उत्तर अत्यन्त खट्टा होइछ तथा पकलापर किञ्चित मधुरतासँ युक्त भऽ जाइत अछि । एकर व्यवहार समान्यतः खटाइक रूपमे होइछ । मुदा रुचि परिवर्तनक लेल कखनो क्यो-क्यो प्रत्यक्षतः सेहो ग्रहण करैछ । एहि फलक ऊपरी भागमे एकटा आवरण बनल रहैत छैक । ओहि आवरणक भीतर गुद्दावला भाग रहैछ । गुद्दावबला भाग छोट-छोट अंशमे बाँटल रहैछ । प्रत्येक अंशमे गुद्दाक भीतर एक-एकटा बीज रहैछ । बीजक आकार चौखूट ओ रंग गाढ़ कत्थी रहैछ ।

आयातित फल

अनेक फल मिथिलामे आयातित भऽ जनसामान्यक भोजन-व्यवहारमे प्रचलित देखल जाइछ । एहिमे बदामी रंगक गोल आकृतिक फल होइछ **समतोला/सन्तरा** । एकर दूनू पार्श्व चापत तथा गँहीर होइछ । एकर भीतरक खाद्य अंश नेबो आकृतिक होइछ । एकर स्वाद मिट्ठ होइछ । एकरे अन्य प्रभेद **मोसम्बी/मौसमी/मोसमी** कहल जाइछ । एकर फलक बाह्य आवरण हरियर तथा भीतर पीयर रंगक होइछ । पैघ लतामक आकारक रसदार आयातित फल **नासपाती/नसपाती** होइत अछि ।

कत्थइ लाल-हरियर मिश्रित गोल आकृतिक फल **सेव** होइछ, जकर दूनू भाग चापत तथा गँहीर होइछ । एकर नीक प्रभेद **कश्मीरी सेव** कहल जाइछ ।

गोल अण्डाकारक कत्थी रंगक अन्य फल **सपादू** कहल जाइछ ।

गोल आकृतिक एकटा फल होइत अछि **सरीफा/सरिफ्फा** । एकर उपरका आवरण उभर-खाभर पहाड़क आकृतिक रहैछ जकर रंग हरियर होइछ । एकर भीतरक खाद्य अंश उज्जर रंगक होइछ जे अनेक भागमे विभक्त रहैछ । एकरा बीचमे कारी रंगक बीया होइछ । एकर स्वाद अति मिट्ठ होइछ । एकरे अन्य प्रभेद **सीताफल/आँता/अता** कहल जाइछ । पीयर रंगक जलीय खाद्य अंशसँ युक्त गोल लघु आकृतिक फल **मकइया** कहल जाइछ । एकर उपरका आवरण पत्रप्राय रहैछ, जाहि मध्य ई फल होइछ ।

अण्डाकार लघु आकृतिक हरियर रंगक जलयुक्त फल थिक **अंगूर/अंगुर** । एकर फल अनेक संख्यामे एकत्रित रहैछ जकरा **झब्बा/अंगूरक झब्बा** कहल जाइछ । एकर स्वाद अति मीठ होइछ । एकटा खट्टा प्रभेदक अंगूर सेहो होइछ । पैघ आकृतिक अंगूरकेँ सुखलापर **मोनका/मुनक्का/मनक्का** कहल जाइछ तथा छोट आकृतिक अंगूर सुखओलापर **किसमिस** कहल जाइछ । आयातित फलमे **कागजी बदाम/काबुली बदाम** अबैछ । **चिनियाँ बदाम/मूङफली** सेहो आयातिते सामग्री थीक । मैथिली भोजनक अन्य आयातित फल सब अछि- **काजू, अखरोट, चिरौंजी** आदि ।

दूध

मैथिल भोजन-विन्यास मध्य दूध ओ दहीक महत्त्व अत्यधिक रहल अछि । ई पशुधनसँ प्राप्त आहार थिक । मिथिलाक पशुधनमे गाय, महींस, बकरी ओ भेँड़ी दूधक स्रोत अछि । बकरी ओ भेँड़ीक दूध मात्रामे अल्प प्राप्त होयबाक कारण सद्यः पीबाक हेतु प्रयुक्त होइछ मुदा गाय ओ महींसिक दूधसँ दही, घी एवं अनेक मिष्टान्न तैयार कयल जाइछ । गाय ओ महींसिक स्तन (दूधकस्थान)केँ **थन/अकआर** कहल जाइछ । एहिसँ हाथक सहायतासँ दूध गाड़ल जाइछ । गाड़बाक एहि क्रियाकेँ **दूहब** कहल जाइत अछि ।

दूध दुहबाक क्रममे दूधक धारक चोटसँ दूधक बासनमे बुलबुलाक रूपमे दूध ऊपर चलि अबैछ । एकरा फेन कहल जाइछ । एहन फेनवला दूध **फेनायल दूध** कहल जाइछ । ई दूधक धार कोनो बासनमे नहि दुहि बच्चाक मुँहमे दुहल जाइत अछि तँ एकरा **गाली/गाली देब/गाली पियैब** कहल जाइत अछि ।

दूध दुहबाक सामान्य समय अछि साँझ ओ भिनसर । जे दूध भिनसरमे दूहल जाइछ ओ **भोरका दूध/भिनसरुआ दूध** कहल जाइत अछि । साँझ वा रातिमे दूहल दूध **सँझुका दूध/रतुका दूध/रतिया दूध** कहल जाइछ । रतिया दूध प्रात भेने **बासि / बसिया** भऽ जाइछ । सद्यः दूहल दूध **टटका** कहल जाइछ । बेसी दिनक बिआयल गाय-महिसिक दूधकेँ **गाढ़ दूध** कहल जाइछ ।

सद्यः प्रसूता गाय-महिसिक दूधकेँ **खिरसा** कहल जाइछ । बिन औँटल दूध **काँच दूध** कहल जाइछ । काँच दूधकेँ राति भरि छोड़ि देलासँ ओकर ऊपरी भागमे गाढ़ पदार्थ जमि जाइछ जकरा **माबा/गाभ** कहल जाइछ । एहि गाभकेँ हटेबाक क्रिया **काछब** होइछ । गाभ काछल दूध **गभकच्छू** कहल जाइछ । दूध अधिक काल धरि काँच रहला पर वा अन्य कारणसँ दोषयुक्त भऽ गन्ध करऽ लगैत छैक । एहन स्थितिमे दूधमे अत्यन्त सूक्ष्म कण सभ दृष्टिगोचर होअऽ लगैत छैक । एहि तरहेँ दोषयुक्त होयबाक क्रिया **मसकब** होइछ ।

जखन दूधक जलीय अंशपर ठोस कण सभ स्पष्टतः पृथक् बुझना जाइछ, तँ ओकर दोषयुक्त होयबाक क्रिया **खुदिआयब** होइछ । अधिक दोषयुक्त दूधक पानि पृथक् भऽ जाइछ आ ओकर सारतत्वक थक्का बनि जलीय भागसँ फराक भऽ जाइत छैक । एकरा **दूधक फाटब** कहल जाइछ । फाटल दूधक थक्कावला अंश **फटोन/फटौन/फट्टन** कहल जाइछ । मधुर आदि बनयबाक लेल अम्मत पदार्थ मिला कऽ फाड़ल दूधक थक्कावला अंश **छन्ना/छेना** कहल जाइछ । एकर पानि **छेनाक पानि** कहल जाइछ ।

दूधकेँ गर्म करबाक क्रिया **औँटब** होइत अछि । औँटबाक क्रममे दूधक द्वारा बासनक ऊपरी भागक विस्तृत क्षेत्रमे पसरि जयबाक क्रिया **उधियायब** होइछ । एकरा **उधियान** सेहो कहल जाइछ । कनेके गर्म कयल दूधक गर्म होयबाक क्रिया **कुकुहायब/कुहकुहायब** कहल जाइछ । दूधकेँ खूब औँटलापर ओकर जलीय अंश वाष्पीकृत भऽ उड़ि जाइत छैक आ सारतत्त्व गील पदार्थक रूपमे बचि जाइछ । एकरा **खोआ** कहल जाइत छैक । पातर खोआकेँ **रावड़ी/रबड़ी** कहल जाइत छैक ।

दूध जाहि बासनमे औँटल जाइत छैक ओकर पेनीमे दूधक किछु अंश जरि कऽ पकड़ि लैत छैक । एहि पदार्थकेँ **डाढ़ी** कहल जाइत छैक । दूध जरलापर ओकर स्वादक विकृतिकेँ **डढ़ाइन** कहल जाइत छैक ।

औँटल दूधकेँ ठंढयलापर ओकर उपरका सतह पर दूधक तत्व एकत्रित भऽ परत पड़ि जाइत छैक । एहि जमल गाढ़ पपड़ीकेँ **छाल्ही** कहल जाइत छैक । छाल्हीक पातर परतकेँ **ममुरी** कहल जाइछ । नीक दूधक छाल्ही मोटगर होइछ जकरा **छलिहगर** दूध कहल जाइछ । एहन छाल्ही **तरहत्थी सन मोट छाल्ही** कहल जाइछ । दूधक सतह परसँ काछि कऽ निकालल छाल्हीकेँ **मलाइ/मलीदा** कहल जाइत छैक । दूधक सार तत्वक हेतु माबा शब्दक व्यवहार होइत अछि । छाल्ही सेहो दूधक सारतत्व थिक तँ एकरो **माबा** कहल जाइत छैक ।

दूधक सारतत्त्वकेँ एकत्रित करबाक हेतु अनेको प्रक्रियाक व्यवहार कयल जाइछ ।

दूधकेँ संचालित करबाक क्रिया **मथब/महब** होइछ । महलासँ दूधक सारतत्व अलगि जाइत छैक । एहि सार तत्वकेँ **नेनु/ननु/नेउन/नेन/मक्खन/माखन** कहल जाइछ । मक्खन निकाललाक पश्चात् दूधक अवशिष्ट अंशकेँ **दुद्धी** कहल जाइत छैक । आइकालि दूधकेँ मशीन द्वारा संचालित कऽ मक्खन निकालल जाइछ । एहि तरहेँ मक्खन निकालबाक क्रिया **पेड़ब** होइछ । दूधसँ काछल गाभ दूध ओ दहीक छाल्हीकेँ मथलासँ सेहो मक्खन पृथक् होइत छैक । छाल्हीकेँ माटिक गोल अर्द्धवृत्ताकार **बासनमे** राखि महल जाइछ । एकरा **नदिया** कहल जाइछ । मथबाक हेतु काठक नाम डाँट लागल उपकरण रहैछ, जकरा **रही/मथनी/महबा** कहल जाइछ ।

मक्खनमे पानि मिला कऽ दोबारा मथलासँ ओ अधिक कठोर स्वरूप धारण कऽ लैत छैक । एहि गोल पदार्थक रूप धारण कऽ लेलापर बासनमे बचल पानि ओ मक्खन मिश्रित अंशकेँ **घोर/मट्ठा/माठा/मही** कहल जाइछ ।

एहि महीमे चाउरकेँ रन्हलापर ओ **घोरजाउर/घोरजारी/मठजाउर/महियाउर** कहल जाइछ । दूधसँ मक्खन निकालबाक कार्य वृहत् उद्योगक रूपमे चलैत अछि । एहि उद्योगमे लागल व्यक्तिकेँ **मखनिआ/मखनियाँ** कहल जाइछ । मक्खन तैयार करबाक स्थलकेँ **मखनाहा/मखनाही** कहल जाइत अछि ।

मक्खनकेँ गरम कऽ द्रवीभूत करबाक क्रिया **बरकायब** होइछ । अधिक काल धरि गर्म कऽ ओकर जलीय अंशकेँ सर्वथा वाष्पीकृत करा देबाक क्रिया **टाँसब** होइछ । टाँसला उत्तर जे द्रव प्राप्त होइत छैक तकरा **घी/घिउ/घृत** कहल जाइत छैक । एहि क्रममे जे अंश लोहियामे लागि जाइछ ओ **डाढ़ी/घीवक डाढ़ी** कहल जाइछ ।

छाल्हीसँ तैयार कयल घी **छाल्हीक घी** कहल जाइछ एवं मक्खनसँ तैयार घिउ **मक्खनक घिउ** कहल जाइछ ।

मधु

माछीक आकारक कीट विशेष द्वारा विभिन्न फूलक परागसँ निर्मित एकटा अत्यन्त पौष्टिक द्रवकेँ **मधु** कहल जाइछ । मधु निर्माण करऽवला कीटकेँ **मधुमाछी/मक्खी/मधुमक्खी** कहल जाइछ । मधुमाछीक खोंताकेँ **छत्ता** कहल जाइछ । छत्तासँ मधु बाहर करबाक व्यापार **मधु छोड़ायब** होइछ ।

मिथिलामे मधुमाछीक तीन गोट प्रभेद भेटैत अछि । पीताभ पाँखिसँ युक्त मधुमाछीक सबसँ पैघ आकृतिवला प्रभेद **भौंरा** कहल जाइछ । चितकाबर पाँखिवला मध्यम आकृतिक मधुमाछीकेँ **खोखवला मक्खी** कहल जाइछ । कारी रंगक पाँखिवला अत्यन्त छोट आकृतिक मधुमाछीकेँ **गोइठी/कनौजिया** कहल जाइछ ।

मधुमाछी घरक देबाल, गाछ आदिपर छत्ता लगबैत अछि । घरक देबालमे दिवाड़ नामक कीटक ओ गाछपर घोरन नामक कीटक आक्रमणसँ मधुमाछी छत्ता छोड़ि कऽ भागि जाइत अछि । **मधुपी/मधुपीया** नामक एकटा पक्षी मधुमाछीक छत्ता तोड़ि कऽ उड़ि जाइछ आ मधु तथा अंडा-बच्चा समटा खा जाइत अछि ।

मधु छोड़यबामे छत्ताकेँ कटबाक हेतु कचिया हँसुक व्यवहार होइत छैक । छत्तासँ मधुमाछीकेँ भगयबाक हेतु खड़क चारू कात भाँगक गाछ दऽ रस्सीसँ बान्हि कऽ दण्डाकार उपकरण बनाओल जाइछ । एकरा **ढक्का/लुक्का** कहल जाइत छैक । मधु रखबाक पैलाकेँ **कटिया** कहल जाइछ । मधुमाछीक छत्ताकेँ लोहक डोल/बाल्टीमे राखल जाइछ । छत्ताकेँ सड़यबाक हेतु कपड़ाक बान्हल मोटरीकेँ **झोड़ा/धोकड़ा** कहल जाइछ । छोट धोकड़ाकेँ **धोकड़ी** कहल जाइछ । मधुमाछीक सड़ल छत्ताकेँ औंटबाक हेतु टिनक उपयोग होइत अछि ।

मधुक उत्पादन मुख्यत: चैतसँ अषाढ़ मास धरि होइछ । चैत मासमे आमक मज्जरसँ मधुमाछी मधु बनबैत अछि । ई मधु स्वच्छ, गाढ़ ओ सुगन्धित होइछ । एकरा चैती मधु कहल जाइत छैक । बैसाख मासक मधु **बैसक्खा** कहल जाइछ । ई गाढ़, दानेदार आ हलुक लाल रंगक होइत अछि । जेठ मासक मधु **जेठी मधु** कहल जाइछ । ई पातर ओ गाढ़ लाल होइछ । आषाढ़ मासक मधु कारी रंगक, पातर ओ कम मधुर होइछ ।

मधुमाछीक पछिला भागमे पातर ओ नोंखगर अंग होइत छैक । एकरा **सूइ/सूंघ** कहल जाइत छैक । एहिसँ मधुमाछी दंश मारैत छैक । दंश मारलापर पीड़ा होयबाक क्रिया **बिसबिसायब** होइछ । मधुमाछी मधु छोड़ौनिहारकेँ खेहारि कऽ दंश मारि दैत छैक । खेहारबाक क्रिया **चहेटब** होइछ ।

छत्ता लग जयबासँ पूर्व कुरेड़ी एकटा मन्त्र पढ़ैछ जकरा **मन्तुर**[38] कहल जाइत छैक । कुरेड़ी सभक मान्यता छैक जे मन्तुर पढ़ि लेने मधुमाछी ओकरा नहि कटैछ ।

मधुमाछीक छत्ता अर्द्धअंडाकार होइत छैक । एकर उपरका भागमे मधु भरल रहैत छैक जकरा **कोढ़ा/कोरहा** कहल जाइछ छैक । अण्डा-बच्चासँ भरल निचला भागकेँ **खखरा** कहल जाइछ ।

दबाव द्वारा मधु गाड़ल मुट्ठी भरि कोढ़ाकेँ **मुठरा/मुठला** कहल जाइछ । मुठरा ओ खखरा मोमक उत्पादनक हेतु आधार सामग्री होइछ ।

पान

पान भोजनोपरान्त मुखशुद्धिक रूपमे प्रयुक्त पदार्थ थिक । नागवल्ली/नागबेल नामक लता विशेषक पातकेँ **पान** (सं. पर्ण) तथा **तमोर/तमोल/तबोल** (सं. ताम्बूल) कहल जाइछ ।

पानक पातक अगिला नोंखगर भागकेँ **मुहरा/टुस्सी/सूड़/सूर** कहल जाइत छैक । पातक पृष्ठ भागकेँ लतासँ सम्बद्ध राखऽवला शलाकाक आकृतिक भाग **डंटी** कहल जाइछ ।

पानक प्रभेद

पानक अनेक प्रभेद होइत अछि । स्थानीय पानकेँ **देशी** कहल जाइछ । एहि ठामक पानक पात छोट, मोट ओ कड़ा होइत अछि । आयातित बेलकेँ रोपलापर ओहिमे पहिल वर्ष जे पात निकलैत छैक ताहिमे मौलिक बेल जकाँ पात उगैत छैक मुदा बादक वर्षमे निकलल पातमे स्थानीयताक प्रभाव दृष्टिगोचर होअऽ लगैत छैक । एहन पानकेँ **दोगला** कहल जाइछ । मिथिलाक देशी पानक एकटा प्रभेद **साँची** कहल जाइछ । एकर पात-पैघ ओ स्वादमे कड़ू होइछ । मध्यमे चाकर ओ अगिला-पछिला भागमे गोल पातवला पानक प्रभेद **करजोड़ी/करजोड़िया/कलजोड़ी/कलजोड़िया** होइत अछि । कपूरक सुगंधसँ युक्त पानक प्रभेद **कपूरी/कपुरिया/कर्पुरिया/ककीर/ककेर/ककेरा** होइत अछि । मधुर स्वादवला पानक एकटा प्रभेद **बेलहरी साँची** कहल जाइत अछि[39] । साँची पानसँ कम कड़ु स्वादवला छोट-छोट पातवला पानक प्रभेद **बंगला** होइत अछि ।

आयातित पानमे **कलकतिया, मद्रासी, बनारसी** ओ **मगही** प्रभेद भेटैत अछि ।

लोकगीतमे **ढाटरि** पानक उल्लेख भेटैत अछि ।[40] लोकगाथा सभ मे **पाकल बीड़ा** पानक उल्लेख भेटैत अछि । ई **बीड़ा** नामक पानक प्रभेद होइत छल ।[41]

पानमे अनेक प्रकार बीमारी पकड़ि लैत छैक । पातक चितिर-बितिर ओ कड़ू भऽ जयबाक लक्षणवला बीमारी **झलमा** कहल जाइछ । पातक कोनो भागक गलि जयबाक बीमारी **फुट्टा** होइत अछि । सम्पूर्ण पात गलि कऽ तूबि जयबाक बीमारी

तेलगमरा कहल जाइछ । पातक सुखबाक क्रिया **झरकब** होइछ । पानक पातक अग्रभाग झरकि जयबाक बीमारी **बकुती** कहल जाइछ ।

पानक गनती

बीस संख्यक पानक पात एक **कोरी** कहल जाइछ । पचास पातक **चौठी/चौठेया** ओ एक सय पातक **आधा ढोली** होइत अछि । दू सय पानक पातक समूहकेँ **ढोली** कहल जाइत छैक । **सात ढोलीक एक कनमा, अठाइस ढोलीक एक पौआ, छप्पन ढोलीक आधा** सेर आ **एक सय बारह ढोलीक एक लेसो** होइत अछि । एक ढोलीसँ कम पातक बान्हल समूहकेँ **भीड़ा** कहल जाइछ । छोट भीड़ाकेँ **भीड़ी** ओ अत्यन्त छोट भीड़ीकेँ **भिरौड़ी** कहल जाइछ । पातमे बान्हल भीड़ीकेँ **पतौड़ा** ओ भिरौड़ीकेँ **पतौड़ी** कहल जाइछ ।

पानक उपयोग

पानकेँ खाद्य बनयबाक हेतु एकरा धो साफ कऽ डंटीवला अंश तथा टुस्नी काटि देल जाइछ । पश्चात् एहिपर चूनक प्रलेप लगाओल जाइछ । चून जलाशयसँ प्राप्त जन्तु विशेष जकरा सीप कहल जाइत छैक, तकर खपड़ोइयावला अंशकेँ आगिमे पका कऽ ठंढओलापर पानिक फुहार दऽ भड़कओलापर प्राप्त होइत छैक आ एहिमे आवश्यक पानि दऽ गील कऽ लेल जाइत छैक । चूनक पश्चात् पानपर आयातित मशालाविशेषक गील प्रलेप लगाओल जाइछ । एहि मशाला विशेषकेँ **कऽथ/कत्था** कहल जाइत छैक । चून, कऽथक अतिरिक्त पानक संगे खाद्य विभिन्न पदार्थमे **सुपारी** नामक फल प्रमुख अछि । ई नारीयरेक लघु आकारक फल थिक । एकरा **सोपारी/कसैली/गुआ/पूग/पुंगी/पुंगीफल/मुखशुद्धि** कहल जाइत छैक । सुपारीक अत्यन्त छोट प्रभेद **मनिचन/मानचन/मानचन्दी/मानिकचन/मानिकचन्दी** होइत अछि । अपेक्षाकृत पैघ ओ कठोर सुपारीकेँ **छलिया** कहल जाइत अछि । छलियाकेँ **बम्बइया** सेहो कहल जाइछ । **अमीनताज, गोटाकाँटा** आदि छलियाक अन्य प्रभेद अछि । अत्यन्त कठोर सुपारीक प्रभेद विशेष **कालापानी** कहल जाइत अछि । आसामसँ आयातित सुपारीक प्रभेद **आसामी/असमियाँ** कहल जाइत अछि । चापत आकृतिक कषाय स्वादसँ युक्त सुपारीक प्रभेद **चिकनी** कहल जाइत अछि । नेपालसँ आयातित सुपारीक सदृश एकटा अत्यन्त छोट ओ कठोर फल सेहो पानक संगे व्यवहार कयल जाइछ । एकरा **निरमली/निरमलिया** कहल जाइत छैक । संस्कृतमे सुपारीकेँ **सुप्रीय** कहल गेल अछि ।

दू भागमे काटल सुपारीकेँ **फाँक** कहल जाइछ । फाँककेँ अनेकशः खण्डित कयला उत्तर प्राप्त टुकड़ी सभकेँ **टूक/टुकड़ी/टूक-टाक** कहल जाइछ । सुपारीक पातर-पातर कच्चीकेँ **कतरा/कटुआ** कहल जाइछ । भूजल सुपारीकेँ **सेका/सकेली/भूजा** कहल जाइछ ।

पूजा-पाठमे सम्पूर्ण सुपारीक व्यवहार कयल जाइछ । एकरा **सौंस सुपारी** कहल जाइछ ।

पानक संगे मशाला मध्य निम्नलिखित नामसभ अबैत अछि- **लौंग/लवङ्ग** नामक कटुपुष्प, जाफर नामक कटु स्वादयुक्त फल, **हरीड़** नामक काषाय स्वाद युक्त फल, **इलैंची/अणा(इाँ)ची)**/दछिनी नामक सुगन्धित फल; **कपूर, पिपरमिन्ट** आदि सुगन्धित द्रव्य, आमक सुखायल आँठीक गुद्दा आदि । बिआहमे वर-कनियाँकेँ एक दोसराक हाथेँ **हरीड़ पान** खोअयबाक विधान छैक ।[42]

आइकाल्हि पानक संगे सुगन्धित तमाकुल खयबाक प्रचलन अछि । एहन तमाकुलकेँ **जर्दा**[43] कहल जाइछ । पानमे ऊपरसँ सटबाक पन्नी जकाँ अत्यन्त पातर सुगन्धित बस्तुकेँ **तबक** कहल जाइछ ।

डंटी सहित बिनु काटल पानक पातकेँ **डटार/छुट्टा** कहल जाइछ । पानक पातमे कऽथ ओ चूनक संयोग कऽ मोड़बाक क्रिया **पान लगायब** होइछ । काटल पानकेँ त्रिभुजाकार मोड़ला उत्तर **खिल्ली** बनैत छैक । सौंस पातक खिल्लीकेँ **बीड़ा/बिड़वा/बिड़िया** (सं.) **बीटक** कहल जाइछ । छोट बीड़ाकेँ **बीड़ी** कहल जाइछ । गोल कऽ मोड़ल बीड़ाकेँ **गिलौरी** कहल जाइछ । लोकगीतमे **हसाना बीड़ा पानक** उल्लेख भेल अछि ।[44] लोककथामे **हँसतापान** ओ **बोलता सुपारीक** उल्लेख भेटैत अछि ।[45] मिथिला भाषा कोषमे पानक बीड़ीक **काड़ा, चम्पा, टिकुलिया** ओ **पखिया** प्रभेदक उल्लेख अछि ।[46] लोकगीतमे **दशोनहा** पानक उल्लेख भेटैत अछि ।[47] एहिमे दसटा पदार्थ मिलाओल रहैत छल ।

साधारण पानकेँ **सादा** ओ मधुर खाद्य युक्त पदार्थ मिलाओल पान **मीठा** कहल जाइछ ।

नशायुक्त पेय

मिथिलाक जनजीवनमे अनेक प्रकारक नशायुक्त पेय करबाक सेहो चलनि रहल अछि । एहिमे सर्वाधिक प्रमुख अछि **भाङ/भांग** । ई गाछ विशेषक पातकेँ पीसि कऽ तैयार कयल जाइछ । एकरा **बूटी/शंकरजीक बूटी** सेहो कहल जाइत । ई बरहमसिया पेय थिक । एकर गाछ छोट झाड़ीदार होइछ जे **बाड़ी/झाड़ीमे** सर्वत्र पाओल जाइछ ।

गाछकेँ कटबाक प्रारम्भ जूड़शीतल दिनसँ होइत अछि । भांगकेँ रौदमे नहि सुखा छाहरियेमे सुखाओल जाइछ जाहिसँ एकर तत्त्व नष्ट नहि होइछ । तत्पश्चात् झाड़ि कऽ एकर पातसँ काठी-कूठी बिछि बना कऽ ठसिनि देल जाइछ । एकर तेजीकेँ बढ़यबाक हेतु ठसिनिते समयमे कनेकटा तामक टुकड़ी वा हरदि दऽ देल जाइछ । एकर दूनूक योगसँ ओ भाङ **जहरमोहराक** काज करैत अछि ।

भाङकेँ पिसलाक पश्चात गोल-गोल बनाओल जाइछ । एकरा **भाङक गोली** कहल जाइछ । पैघ गोलीकेँ **गोला** कहल जाइछ । एहि गोलीकेँ दूध वा जलमे घोरि कऽ सेहो व्यवहार कयल जाइछ, जकरा **भाङक शर्बत/ठंढइ** कहल जाइछ । भाङक चूर्णकेँ खोआमे मिला कऽ पेड़ा वा अन्य आकृतिक बनाओल वस्तु **माजुम/मोदक/मदनानन्द मोदक** कहल जाइछ । भाङक चूर्ण मिला कऽ बनाओल **जिलेबी भाङवला/भाङक जिलेबी** कहल जाइछ ।

भाङक सेवन कयनिहारकेँ **भंगपीवा/भङिया/भङेरी** कहल जाइछ ।

पाचन-क्रियाकेँ संतुलित रखबाक हेतु औषधिक रूपमे भांगमे सोँठि, सिंधव नोन, जमाइन, मरीच, बड़की अड़ाँची दाना तथा अनारदानाक चूर्ण मिला कऽ एकर सेवन कयल जाइछ । अधिक मादकता ओ स्वादक हेतु भांगमे बदाम, सौंफ, मरीच, मनक्का, काजू, गुलाबक फूलक पती, समतोलाक खोइया, केसरि, कस्तुरी, छोट-पैघ इलायची, चीनी, दूध आदि सेहो मिलाओल जाइछ ।

ताड़ ओ खजूरक गाछसँ सेहो नशायुक्त पेयक उत्पादन होइत अछि । ई पेय एहि दूनू गाछक रस होइछ । एहि रसकेँ **ताड़ी** कहल जाइछ ।

खजूरक ताड़ीकेँ **खजुरिया** कहल जाइछ । ताड़ीक हेतु **अकाशजल** शब्दक सेहो व्यवहार होइत अछि ।

ताड़ ओ खजूरक गाछसँ रस बहार करबाक क्रिया **ताड़ी चुआयब** होइछ । निशाक अवधिमे चुअल निसाँहीन ताड़ीकेँ **नीरा/मिट्ठीताड़ी** कहल जाइछ । रौद लगलासँ ताड़ीमे फेन आबऽ लगैत छैक आ ओ निसाकारक भऽ जाइछ । एही ताड़ीकेँ **खट्टी ताड़ी** कहल जाइछ । बैसाख मासक फूलदोक ताड़ीकेँ **बैसक्खा** ओ आसिन मासक फूलदोक ताड़ीकेँ **बसन्ती** कहल जाइछ ।

दारू उत्तेजक पेय थिक । एहि पेयक उत्पादन भारतमे अवैध अछि तेँ पारम्परिक विधिसँ एकर उत्पादन चोरा नुका कऽ होइछ । नेपालक मैथिली भाषी क्षेत्रमे एहि पेयक उत्पादन पारम्परिक विधिसँ होइत अछि । आइकाल्हि आधुनिक यंत्रक सहायतासँ सेहो एहि पेयक निर्माण कयल जाइछ ।

दारू मुख्यत: गुड़ ओ महुआ तथा कुसियारक रससँ बनाओल जाइत अछि । चाउर, गहूम, मकइ, जनेर, मड़ुआ आदि अन्नक चिक्कस तथा भातकेँ सड़ा कऽ सेहो मदिरा तैयार होइछ । सुगन्धित ओ सुस्वादु मदिरा बनयबाक हेतु केरा, बेल, समतोला, आम, कटहर आदि फलक गुच्छाकेँ सेहो मथि कऽ महुआक सड़े फेँटि देल जाइत छैक । सौंफ आदि सुगन्धित मशाला एवं जंगली जड़ी-बूटी सेहो मदिरा बनयबाक क्रममे व्यवहृत होइछ । आइकाल्हि एहि पेयक सेहो खूब प्रचार अछि तथा एकर विभिन्न संशोधित स्वरूप

बजारमे उपलब्ध तथा जनसामान्यमे प्रचारित देखल जाइछ । आयातित दारूकेँ **शराब/मदिरा** कहल जाइछ । एकर निर्माण क्रिया दारू चुआयब ओ बेचबाक स्थानकेँ **दारूभट्ठी/गद्धीकलाली** कहल जाइछ ।

सन्दर्भ निर्देश :

1. प्रसिद्ध कहबी - बोल कोहन ओल सन, ठोँटी कोहन कबकब ।
2. तथैव - एक तँ कड़ैल अपने तित्ता दोसर चढ़ल नीमक भिता ।
3. तथैव - पानीमे मछरी नौ नौ कुटिया बखरा ।
4. तथैव - माछ-भात पाँच हाथ ।
5. तथैव - मड़ुआ मीन चीन संग दही कोदोक भात दूध संग सही ।
6. माछक अर्थमे झख शब्द आब लुप्त भऽ गेल अछि । मुदा प्रयोगमे झखब/झख मारब आदि रूपमे झखक लक्ष्यार्थ जीवित अछि । दूनू क्रियापद निष्क्रिय होयबाक अर्थमे प्रयुक्त अछि । ई अर्थ माछ मारबाक हेतु बनसी पथने निष्क्रिय बैसल व्यक्तिक व्यापारसँ उद्‌भूत अछि ।
7. प्रसिद्ध कहबी - सुकठीक बनिज पशुपतिक दर्शन ।
8. तथैव - सीरा खाय मीरा, पुच्छी खाय गुलाम ।
9. तथैव - ककरो कुटिया ककरो झोर, ककरो आँखिसँ खसै छै नोर ।
10. तथैव - माछ आ पहुना, तीन दिन कहुना ।
11. एन एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णियाँ- बुकनन, पृ.-297
12. प्रसिद्ध कहबी -(क) अभागल बककेँ पोठी तीत ।
    (ख) टेङरा पोठी चाल दिअअ रोहूक सिर बिसाव ।
    (ग) एक पोठपर नौ रोट ।
13. एन एकाउन्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णिया, पृ.-297
14. मिथिला भाषाकोष, पृ.-44
15. प्रसिद्ध कहबी- तोरा के पूछौ गे दलोइ ।
16. तथैव- भुल्ला माछ कबइके झोर, तै लय भुल्ला फण्ठी तोड़ ।
17. तथैव - रहुक मूड़ी भुनाक पेट । दहीक ऊपर गुड़क डेप ॥
18. तथैव - सड़लो भुना तऽ रहुक दुना ॥
19. तथैव - भोय खाय से घोड़ा खाय ।
20. तथैव : - माघ मास जँ माङुर खाइ, ससरि-फसरि वैकुण्ठे जाइ ।
21. तथैव : - माघ बोआरी हांड़ी रन्हाई, ताहिमे दी किछु आम्लिक योग।
    नहि-नहि-नहि-नहि-नहि-नहि रौ, तहूं की बुझलें नहि नहि रौ ।
22. मिथिला भाषा कोष - पृ. 305

23. वर्णरत्नाकर, पृ.-40

24. एन एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया, पृ.-293-299

25. चन्द्ररचनावली, स.-विश्वेश्वर मिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981 पृ.-353

26. तत्रैव, पृ.- 354

27. तत्रैव, पृ.- 355

28. तत्रैव, पृ.- 358

29. मिथिला भाषाक कोष- पृ.-110

30. तत्रैव, पृ.- 111

31. तत्रैव, पृ.- 134

32. तत्रैव, पृ.- 180

33. तत्रैव, पृ.- 201

34. तत्रैव, पृ.- 241

35. धर्मयुग, हिन्दी साप्ताहिक, बम्बइ, पृ.-32-33

36. प्रसिद्ध कहबी- निकौड़िया गेला हाट, कौंकड़ि देखि हिया फाट ।

37. तथैव - सौंसे खीरा खा कऽ पेनी तीत ।

38. औंट बान्दू सौंट बान्दू, बान्दू अपन काया । सत गुरु के बान्दू काया, सूर महामाया ॥

39. बिहार पीजैन्ट लाइफ, पृ.-248

40. कोशी गीत, पृ. 43

41. मि. भा. कोष

42. प्रसिद्ध गीत- खाधु हरीढ़ पान, पिबु जुड़ि पानि हे ।

43. प्रसिद्ध कहबी- पान बिना जर्दा की ? माउगि बिना पर्दाकी ?

44. कोसी गीत, पृ. 2

45. मिथिला मिहिर, 15 जनवरी, 1961, पृ. 13

46. मिथिलाभाषा कोष

47. कोसीगीत, पृ. 7

●

नवम अध्याय

भोजनक कार्य-व्यापार सम्बन्धी शब्दावली

प्रकृतिसँ प्राप्त सामग्रीकेँ खाद्य पदार्थक रूपमे परिवर्त्तित करबाक तथा भोजन ग्रहण करबाक क्रममे सेहो विविध विशिष्ट शब्दावलीक प्रयोग होइत अछि । एहन शब्दावलीकेँ भोजनक कार्य-व्यापार सम्बन्धी शब्दाली कहल जा सकैछ ।

एहि शब्दावलीकेँ निम्नलिखित वर्गमे बाँटल जा सकैछ -

(क) अन्नसँ सम्बद्ध शब्द

(ख) व्यञ्जनसँ सम्बद्ध शब्द

(ग) दूधसँ सम्बद्ध शब्द

(घ) मिष्टान्न एवं पकमानसँ सम्बद्ध शब्द

(ङ) भोजनग्रहणसँ सम्बद्ध शब्द

(क) अन्नसँ सम्बद्ध शब्दावली-

अन्नकेँ भोज्य बनयबासँ पूर्व ओकर प्राकृत भागकेँ विभिन्न प्रक्रियासँ गुजरऽ पड़ैत छैक । एहि क्रममे अनेक नाम ओ क्रियापदक प्रयोग होइछ । चूँकि धान मिथिलाक प्रमुख खाद्य अन्न थिक तेँ धानसँ चाउर बनयबाक प्रक्रियासँ सम्बद्ध शब्दावली एतऽ विवेच्य अछि ।

फटकबाक क्रममे सूपक अगिला भागक अन्न **अगिलाइ** कहल जाइछ । धानक उपरका परतकेँ **भुस्सा** कहल जाइछ । एकर आवरणक भीतरवला अंश **चाउर** कहल जाइछ । चाउरसँ रहित धानकेँ **खखरी/खखड़ा** कहल जाइछ । खेतसँ प्राप्त धानक भुस्सा हटयबाक प्रक्रियाक बाद जे चाउर प्राप्त होइत अछि ओकरा **अरब/अरबा** कहल जाइछ । भुस्सा हटयबासँ पूर्व धानकेँ पानिक संग गर्म कऽ सुखओला उत्तर चाउर बनयबाक

प्रक्रियासँ प्राप्त चाउरकेँ **उसिना/उसना** कहल जाइछ । धानकेँ खापरिमे भूजि कऽ ओकर भुस्सा हटओलापर तैयार चाउरकेँ **उलबा** कहल जाइछ ।

चाउरक बाह्य आवरणक रंगक आधारपर एकर दुइ गोट कोटि अछि । लाल तथा उज्जर धानकेँ चाउर बनयबाक क्रममे अनेक दिन रौदमे सुखबऽ पड़ैत छैक । धान वा आनो वस्तुक समन्तात पसारकेँ **पथार** कहल जाइछ । सुक्खल धानकेँ मूसर द्वारा आघात करबाक क्रिया करब **चोट देब** होइछ । भुस्साकेँ पृथक् करबाक हेतु चोट देल धानकेँ सूपक सहायतासँ जे पृथक्करणक प्रक्रियासँ गुजारल जाइछ ओकरा **फटकब** कहल जाइछ । फटबाक बोनिकेँ **फटकाओन** कहल जाइछ । फटकबाक क्रममे आङुरक सहायता लेल जाइछ जकरा **झटकन** कहल जाइछ । सूपमे राखल अन्नादि सूपक अर्द्धभागमे लऽकऽ एक भागसँ दोसर भाग दिस चलाओल जाइछ जाहिसँ ओकर अपरिष्कृत अंश अग्रभागमे एकत्रित भऽ जाइछ जकरा बहार करबामे सुलभ होइछ । एहि प्रकारेँ बहार करबाक क्रिया **पैंचब** होइछ । सूपमे राखल अन्नकेँ चारू दिस घुमाओल जाइछ जाहिसँ असंपृक्त अन्न बीचमे गोलिया कऽ एकत्रित भऽ जाइछ । एहि प्रकारेँ अन्न एकत्रित होयबाक क्रिया **हिलड़ब/हिलोड़ब** कहल जाइछ । गोल दानावला अन्नकेँ निकालबाक क्रिया **टघारब** कहल जाइछ । अल्प अन्न सूपमे लऽ उपरे-ऊपर फटकबाकेँ **लोकब/डोकब** कहल जाइछ ।

धान कुटबाक प्रक्रिया

धानकेँ उक्खरि वा ढेकीमे दऽ कऽ मूसरक समौ दिससँ बलपूर्वक आघात कयल जाइछ । एकरा **चोट देब** कहल जाइछ । कुटबाक मजदूरी **कुटाओन** होइछ । एहिमे जतेक व्यक्ति जएटा मूसर लऽ कऽ चोट दैछ ताहि आधारपर **दु चोटिया/तिनचोटिया** कहल जाइछ । एवं प्रकारेँ किछु काल चोट देलापर किछु धानक उपरका परत हँटि जाइछ । एकरा **खीजब** कहल जाइछ । कम खीजल धान **अधखिन्जु** कहल जाइछ । खिजलाहा धानकेँ सूपसँ फटकि ओकर भुस्सा फराक कऽ देल जाइछ । प्रथम बेर धानसँ भुस्सा हटयबाक क्रियाकेँ **एकसायब** तहिना दोसर बेर कूटल धानक भुस्साकेँ हटयबाक क्रिया **दोहरायब** कहल जाइछ । तत्पश्चातो धानमे किछु भुस्सा बाँकी रहैछ । एहि प्रकारेँ धानसँ चाउर परिणत भऽ जाइछ । एहन चाउरकेँ **बोकरा/अकड़ा** कहल जाइछ । एहिमे पुनः चोट दऽ चिक्कन करबाक क्रियाकेँ **छाँटब/चिकनायब** कहल जाइछ । तै छाँटल चाउरकेँ **छट्टा** कहल जाइछ । छँटलाक पश्चातो चाउरपर स्थित किञ्चित लाल रेखाकेँ **जनउ** कहल जाइछ ।

टूटल चाउरकेँ **खुद्दी/टुट्टा/टूटल** कहल जाइछ । पैघ अंशमे टूटल चाउर **मोटका खुद्दी** कहल जाइछ तथा अति छोट अंशवला खुद्दी **मेहिक्की खुद्दी** कहल जाइछ । एहि खुद्दीमे धानक उपरका कठोर अंश कण मात्रक रहैछ जे खुद्दीमे समायल

रहैछ । एकरा **कउन** कहल जाइछ । एहिमे सम्मिलित खुद्दीकेँ **कनखी** कहल जाइछ । कुटला-छँटलासँ चाउरक ऊपरसँ गरदा जकाँ बहरायल चूर्णकेँ **गुण्डा/गुड़ा** कहल जाइछ । भुस्साक अति छोट अंश सेहो **धानक गुड़ा** कहल जाइछ । गूड़ासँ युक्त वस्तुखण्ड **गुड़ाह** कहल जाइछ । छँटल चाउरक गूड़ाकेँ **छट्टा गुड़ा** कहल जाइछ ।

उसिना चाउर बनयबाक प्रक्रिया

धानकेँ कोनो पैघ पात्रमे दऽ कऽ अन्दाजसँ पानि देल जाइत अछि । तखन चूल्हिपर चढ़ा कऽ आँच देल जाइछ । किछु काल आँच देलाक पश्चात् ओहिमेसँ भाफ चलऽ लगैछ । एकरा **भफायब** कहल जाइछ । जखन धान सिद्ध भऽ जाइछ तँ धानक उपरका परत कनेक फाटि जाइछ । एकरा **सिहकब/फूटब** कहल जाइछ । जखन धान सभ पूर्ण फूटि जाइछ तखन चूल्हिपरसँ अखराही छिट्टामे उझिलि देल जाइछ, जाहिसँ एकर बचल पानि छिट्टाक तरमे देल बासनमे गड़ि जाइछ । धानकेँ चूल्हिपरसँ एहि प्रकारेँ उतारबाक क्रियाकेँ **झाँकब/झाँखब** कहल जाइछ । एहि समस्त व्यापारकेँ **धनउसिनियाँ** कहल जाइछ । एहि क्रममे देखल जाइछ जे जँ धान सिझबामे कसरि रहि जाइछ तँ कुटलापर चाउर टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइछ । तेँ हेतु कम सीझल धानकेँ **अधसिन्झू/अरबैठ** कहल जाइछ । झँखलाक पश्चात धानकेँ सुखाय लेल रउदमे देल जाइछ । पहिने मोटगर कऽ धानकेँ नीचेमे देल जाइछ । एकरा **बरोबरि करब** कहल जाइछ । **बरोबरि** धानकेँ पैरसँ लाड़ल जाइछ जकरा **गोड़िआयब/गोड़ियारब** कहल जाइछ । एकर तेसर दिन पटिया वा अन्य वस्तुपर पातर कऽ सुखाय लेल देल जाइछ । एहि धानकेँ हाथसँ पसारल जाइछ । एकरा **लाड़ब/पथार लाड़ब** कहल जाइछ । एक बेर लाड़लासँ सुखयबाक क्रिया सम्पन्न नहि होइछ तेँ पुनः-पुनः पथारक धानकेँ समेटि-सुमेटि कऽ लाड़ल जाइछ । जाहिसँ धानक दोसरो कअ सुखाइछ । एकरा **पथार उनटायब** कहल जाइछ । आवश्यकतानुसार रौद लगाओल जाइछ, जकरा संख्यामे गनल जाइछ । एक रौद, दू रौद कहल जाइछ । आवश्यकतासँ बेसी रौद लागि गेने धानकेँ **रखायल** कहल जाइछ । कम सुखायल धानकेँ **काँचेधान** कहल जाइछ । सामान्य रौद लगला उत्तर **चिम्मड़ ताक** कहल जाइछ । एहि क्रिया सभक उचित कालकेँ **ताक** कहल जाइछ । संयोगवश मेघ लागि जयबाक कारणे धान **ढेरिआओले** रहि जाइछ तँ एहिमेसँ सड़ाइन गन्ध आओर भाफ बहार होमऽ लगैछ । एहि स्थितिकेँ **गुमसब/भखरब** कहल जाइछ । गुमसल धानक गन्धकेँ **गुमसराइन** कहल जाइछ । एहन धानकेँ कुटलापर चाउर अनेकशः टुकड़ीमे बँटि जाइछ ।

मुरहीक चाउर बनयबाक प्रक्रिया

चाउरक पैघ-पैघ फोंकगर भूजाकेँ **मुरही** कहल जाइछ । एकर निर्माणक हेतु चाउरकेँ विशिष्ट विधिसँ तैयार कयल जाइछ । एहि हेतु कोनो बासनमे पानिकेँ **इनहोर**

कयल जाइत अछि। पानिक एहि अवस्थाकेँ **अदहन** कहल जाइत अछि। इनहोर पानिमे धान दऽ थोड़ समय धरि आँच देबाक क्रिया **तारब** कहल जाइत अछि। एहि तरलाहा धानकेँ दू-तीन दिन धरि ओही पानिमे फुलबाक हेतु छोड़ि देल जाइत अछि। तत्पश्चात् पहिल पानि पसा कऽ अल्प पानि दऽ पुनः आगिपर चढ़ा देल जाइत अछि। तावत् धरि आँच देल जाइत अछि यावत् धरि ओ नीक जकाँ ओही भाफमे सिद्ध नहि भऽ जाइछ। एहि प्रकारेँ सिद्ध करबाक क्रिया **उसनब/उसिनब** कहल जाइछ। आँचसँ उतारि छाहरिमे धानकेँ हवा-बसात लागक हेतु छोड़ि देल जाइत अछि। दू-तीन दिनक पश्चात् आवश्यकतानुसार रौदमे दऽ कऽ कूटल जाइछ। एकरा **उसिनुआ मुरहीक चाउर** कहल जाइछ।

मुरहीक चाउर तैयार करबाक दोसर विधिमे तारल धानकेँ पानिसँ छानि **खापड़िमे** पैघ-पैघ घानी दऽ ओकर जलीय अंशकेँ सुखा लेल जाइत अछि। एहि प्रकारेँ तारल धानक जल सुखयबाक क्रियाकेँ **भाड़ब** कहल जाइछ। भाड़ल धानकेँ तीन-चारि दिन धरि झाँपि कऽ घरमे राखि लेल जाइत अछि। एकरा **जमायब** कहल जाइछ। एकर बाद अल्प रौद देखा कऽ कूटल जाइछ जाहिसँ नीक चाउर होइछ। एहि विधिसँ तैयार कयल चाउर **तरुआ मुरहीक चाउर** कहल जाइछ।

मुरहीक चाउर तैयार करबाक तेसर विधिमे धानकेँ दस-पन्द्रह दिन धरि पानिमे भिजा कऽ भाड़ि कऽ तथा छोट-छोट घानी कऽ भूजल जाइत अछि। प्रत्येक घानीकेँ भुजलाक पश्चात् झाँपब अनिवार्य रहैछ, जाहिसँ ओकर भाफ उड़य नहि। तत्पश्चात् चारि-पाँच दिन धरि जमबाक हेतु छोड़ि देल जाइछ। आवश्यकतानुसार किञ्चित रौद देखा चाउर कूटल जाइछ। एहि प्रक्रियासँ तैयार कयल मुरहीक चाउर **भिजौआ मुरहीक चाउर** कहल जाइछ। एहि चाउरसँ तैयार मुरहीकेँ **अरबा मुरही** मानल जाइत अछि। मुरही भुजबाक समयमे अल्प मात्रामे नून ओ पानिकेँ सानि देबाक क्रिया **मो देब/मोब/मोअब** कहल जाइछ। देय पानिकेँ **मोह/नुनपनियाँ** कहल जाइत अछि। मोअल चाउरकेँ भुजलापर चाउरक चौगुन अकृतिक पैघ-पैघ मुरही होइछ।

चूड़ा बनयबाक प्रक्रिया

धानक चूड़ा मिथिलाक प्रधान खाद्य वस्तु थिक। एकर निर्माणक हेतु धानकेँ तीन-चारि दिन धरि भिजबाक हेतु देल जाइछ एकरा **तारब** कहल जाइछ। तखन एकरा पानिसँ अखराही बासनमे निकालि कऽ पानि गड़बाक लेल देल जाइछ। एहि प्रकारेँ पानिसँ धानकेँ निकालबाक क्रिया **छानब** होइछ। छनलाहा धानकेँ झाड़ि लेल जाइछ। फरहर भेल धानकेँ भूजि-भूजि कऽ उखरिमे दऽ कऽ कूटल जाइछ जाहिसँ धानक उपरका परत हँटि जाइछ आ भीतरक परत चाकर-चाकर रूप धारण कऽ लैछ। एकरा **चूड़ा** कहल जाइछ। दोसर विधिमे धानकेँ पानि दऽ कऽ **भाफि** देल जाइछ तकरा बाद

धानकेँ माड़ि-माड़ि कऽ समानान्तर छोट-छोट घानी कऽ कऽ चूड़ा कूटल जाइछ। एहन अल्पसमयमे तैयार कयल चूड़ा **भफलरुआ चूड़ा** कहल जाइछ। तारल धानसँ तैयार कयल चूड़ा **तरुआ चूड़ा** कहल जाइछ। उसिनल धानक चूड़ा **उसना चूड़ा** कहल जाइछ तथा भिजुआ धानक **अरबा चूड़ा** कहल जाइछ। चूड़ा कुटबाक क्रममे ठकुरसँ लाडैत रहल जाइछ जाहिसँ उखरिक एकत्रित धान अलग-अलग भऽ जाइछ। कारण चोट पड़लापर चूड़ा सभ एक-दोसरासँ सटि कऽ थक्का बनि जाइछ। एहन थक्काकेँ **लट्टा** कहल जाइछ। लट्टा युक्त चूड़ा **लटहा चूड़ा** कहल जाइछ। चूड़ा कुटबाक क्रममे जे धान उक्खरिसँ छिड़िआय नीचा खसि पड़ैछ एकरा **उखरड़/उखरीड़** कहल जाइछ। धानक भूजल धानीकेँ उक्खरिमे दऽकऽ समाठक नड़ी भागसँ निरन्तर प्रहार कऽ थकुचल जाइछ। एकरा चूड़ा **कूटब** कहल जाइछ। बेसी कालधरि चूड़ा कूटबकेँ **चुड़कुट्टी** कहल जाइछ। चूड़ा कुटनिहारि **चुड़कुटनी** होइछ।

चाउरसँ निर्मित सामान्य खाद्य सामग्री

चाउरकेँ सिझओलाक बाद जे खाद्य बनैछ ओ भात (सं) **भक्तं/ओदिन/ओदनं** .-कहल जाइछ। सम्पूर्ण मिथिलाक जनजीवनमे प्रमुख ओ अत्यन्त लोकप्रिय खाद्य पदार्थक रूपमे भात' प्रचलित अछि। भातक एहि क्षेत्रक निवासीक संपृक्ति एहि **ठाम** प्रचलित अनेक विशिष्ट शब्दावलीमे सेहो देखल जा सकैछ जेना-भातेपर आधारित रहनिहारकेँ **भतभुल्लुक/भतखोखरा/भतपेलुआ** कहल जाइछ। तहिना परिवारमे अनका हेतु भात रहओ वा नहि मुदा भगिनाक हेतु अवश्य भात जोगाओल जाइछ तेँ भगिनाकेँ **भतुआ** कहल जाइत अछि।

परिवारमे नियमित भोजन कयनिहार जतेक व्यक्ति रहैछ तकर समवायकेँ **आश्रम/आसरम** कहल जाइछ। पहिने आश्रमक अन्दाजसँ बासनमे पानिकेँ खौलबाक हेतु देल जाइत अछि। एकरा **अदहन/अधन** कहल जाइछ। अदहन जखन खूब गर्म भऽ जाइछ तँ ओहिमेसँ सन-सन आवाज होअऽ लगैछ जाहिसँ बूझल जाइछ जे अदहन भऽ गेल। एकरा अदहनक **सुसुआयब** कहल जाइछ। अदहन भऽ गेलापर चाउरकेँ धो कऽ बासनमे देल जाइछ। चाउरकेँ एहि प्रकारेँ बासनमे देबाक क्रिया **चाउर लगायब** कहल जाइछ। चाउरकेँ धोलापर बचल पानि चाउरक **धोनि/धोइन** कहल जाइछ। चाउर बरकबाक विभिन्न क्रिया **खुदखुदायब, टभकब, बरकब** कहल जाइछ। बरकबाक क्रममे पानि भाफ बनि ऊपर कऽ फेकैछ जे **उधिआयब** कहल जाइछ। चाउर सिद्ध भेलापर अतिरिक्त द्रवकेँ भातसँ हटयबाकेँ **पसायब** कहल जाइछ आ ओ पसाओल तरल पदार्थ **माँड़** कहल जाइछ। परस्पर असंलग्न भात **फरहर/झटगर** कहल जाइछ। भात सट्टल रहने **गील** कहल जाइछ। माँड़ समेत लटपट भात **मँड़गिल्ला/गोलहत्थी/लबेदथा** कहल जाइछ। जाहि भातसँ माँड़ नहि निकालल जाइछ ओ **मड़सटका** कहल जाइछ। नोन-हरदि

मिला कऽ गील कऽ भात रन्हलापर **रिन्हकी** कहल जाइछ । भात पूर्ण नहि सिझलापर **अधसिन्झू/गलफुल्लू/हिरगर/हिराह** कहल जाइछ । असमान आँच लगने भात पूर्ण नहि सिझैछ, तखन भात **कोनाह/असिद्ध** कहल जाइछ ।

गर्मीक समयमे भात विशेष काल रहने ओहिमे विकृति आबि जाइछ, एकरा **लहब/लसिआयल/अलसायब/अलसायल/अरुआयब** भात कहल जाइछ । एहन भातमे पानि दऽ देल जाइछ जाहिसँ ओ नहि अरुआइछ । भातमे पानि देबाक क्रियाकेँ भात **पनिआयब** कहल जाइछ । एहने पनिआयल बासि भात **बसिया पावनि/जुड़शीतल** पावनिमे प्रात: भेने खयबाक प्रथा थीक । एहि हेतु वर्णरत्नाकरमे **वारिभक्त** शब्द भेटैत अछि । साधुक भाषामे भातकेँ **प्रसाद** कहल जाइछ । दालि ओ चाउरक सहपक्व खाद्य **खिच्चड़ि/खिचड़ी**[1] कहल जाइछ । खिच्चड़ि बनयबामे पानिक मात्रा अन्दाजसँ रहने खिच्चड़ि **छरहर/छरगर** कहल जाइछ तथा पानिक मात्रा कम रहलापर **कट्ठिल** भऽ जाइछ जकरा **लट्ठा** कहल जाइछ । गरम भातकेँ काँच दूधमे दऽ देलापर एकरा **झप्पा भात** कहल जाइछ । मात्र चाउरकेँ नोन-हरदिक संग सिझओला पर **रिन्हकी/रिन्हुकी** कहल जाइछ ।

गमकौआ मेही चाउरकेँ बीछि -बना-धो कऽ अल्प रौदमे सुखा लेल जाइछ, जाहिसँ चाउरक पानि सुखि जाइछ आ ओ **फरहर** भऽ जाइछ । तखन घीमे अल्पे मात्रामे भूजल जाइछ । बासनमे चाउरसँ दू आङुर ऊपर पानिक मात्रा दऽ चाउर सिझाओल जाइछ । एहि प्रक्रियासँ बनल खाद्य **पोलाओ** कहल जाइछ । नोन, हरदि गरम मशाला, मटर, आदि मिला कऽ बनल पोलाओ **निमकीन पोलाव** कहल जाइछ तथा कटुक मशाला एवं अंशमात्रामे चिनी दऽ कऽ बनओलापर **मीठा पोलाओ** कहल जाइछ ।

धाने जकाँ दैनन्दिन खाद्यमे गहूम, मकइ ओ मड़ुआक सेहो व्यवहार होइछ । भानसक हेतु गहूमहिसँ जे आधार सामग्री तैयार कयल जाइछ ओकरा **चिक्कस/आँटा** कहल जाइछ । अन्नक आधारपर ई विभिन्न नामे सेहो जानल जाइछ जेना मकइक चिक्कस, मड़ुआक चिक्कस । तहिना चाउरक चिक्कसकेँ **चौरट्ठा** कहल जाइछ । दालिक पीसल वस्तु **घाठि/बेसन** नामे जानल जाइछ । एहि हेतु एहि अन्न सभकेँ विभिन्न प्रक्रियासँ गुजारल जाइत छैक । जाहि अन्नसँ घाठि बनैत अछि तकरा **बठिअन/बठिजन** कहल जाइछ ।

गहूमक चिक्कस तैयार करबाक विधि-

सर्वप्रथम गहूमकेँ बीछि बना कऽ पानिमे धो कऽ उक्खरिमे कूटल जाइछ जाहिसँ ओकर उपरका परत हँटि जाइत अछि । एहन हँटल परत **भुस्सी/भुस्सा/कुटौंस** कहल जाइत अछि । जे अन्न वा गहूम नहि कूटल जाइत अछि ओ **अखरा** कहल जाइछ ।

पावनिक निमित्त कूटल गहूम **अखीन** कहल जाइछ तथा सभदिन खायवला **छुट्टा** कहल जाइछ । चिक्कसक हेतु अन्न पीसल जाइछ । पिसबाक क्रियाकेँ **पिसिया** कहल जाइछ । पिसबाक मजदूरी **पिसाओन** होइछ । **कुटिया-पिसिया/कुटान-पिसान** युग्म शब्दक रूपमे व्यवहृत अछि तथा एकर मजदूरिनकेँ **कुटनी-पिसनी** कहल जाइछ । पिसबाक हेतु जतेक परिमाणमे अन्न लऽ कऽ पीसल जाइछ, तकरा **ओसारी** कहल जाइछ । पिसबाक क्रममे जतेक अन्न जाँतमे देल जाइछ, तकरा **झीक** कहल जाइछ । एहि क्रिया द्वारा निष्पन्न तत्व बहार होइछ से **चिक्कस/आँटा** होइछ । उलाओल अन्नसँ तैयार कयल आँटा **उलबा चिक्कस** तथा बिन उलाओल अन्नक तैयार कयल चिक्कस **अरबा** कहल जाइछ । मीलमे पीसल पाउडर सन चिक्कन चिक्कस **मैदा** कहल जाइछ । मीलेमे तैयार खुरखुर; दर्रासँ पातर आ चिक्कस मोट पिसानक आँटाकेँ **सुज्जी** कहल जाइछ ।

पिसबाक क्रममे बेसी झीक पड़ि गेलापर मोट-मोट पीसल अन्न **दोखड़ा** कहल जाइछ । एहन मोट पिसबाक क्रिया **दोखड़ब** होइछ । दलिहनकेँ विदालित करबाक क्रिया **दरड़ब** होइछ । चिक्कस पिसलाक पश्चात् चालनिमे चालल जाइछ । चालनि द्वारा सूक्ष्मक नि:सारण करबाक क्रिया **चालब** होइछ । चाललापर चालनिमे बचल अवशेष **चोकर/चलनस** होइछ ।

गहूम ओ मकइसँ खाद्य सामग्री बनयबाक प्रक्रिया

मकइसँ खाद्य सामग्री बनयबाक हेतु मकइक **झाइकेँ** सुखा कऽ छाँटल जाइछ आ छँटलापर ओकर आगूक अंश तथा भुस्सा निकलैछ । एकरा **कौंची** कहल जाइछ, तत्पश्चात् फटकि कऽ जाँतमे एकरा दरड़ल जाइछ, एहिसँ मकइ छोट-छोट अंशमे विभक्त भऽ दाना-दाना भऽ जाइछ । एकरा मकइक **दर्रा/दरड़ा** कहल जाइछ । दर्राकेँ रन्हलापर **मकइक भात** कहल जाइछ । दूध-चीनीक संयोगसँ रन्हला पर **मकइक खीर** कहल जाइछ ।

गहूमे जकाँ मकइक चिक्कस सेहो पीसल जाइछ । गहूम एवं मकइसँ जे खाद्य सामग्री तैयार होइछ ओकरा **रोटी** कहल जाइछ । गहूमक रोटी अत्यन्त पातर होइछ तेँ **सोहारी** कहल जाइछ । गहूमक रोटीकेँ चकला-बेलनाक सहायतासँ तैयार कयल जाइछ । मुदा मकइ, मड़ुआ वा अन्य बठिअन अन्नसँ बनयबाक प्रक्रिया दोसर अछि । एहि हेतु एकर चिक्कसकेँ सानि कऽ हाथक माध्यमसँ गोल आकृतिक बनाओल जाइछ । एहन गोल आकृतिक बनल वस्तु **लोइया** कहल जाइछ । एहि लोइयाकेँ तरहत्थीक सहायतासँ गोल आकृतिक मोट रोटी तैयार होइछ । एहि तरहेँ रोटी बनयबाक प्रक्रियाकेँ **ठोकब** कहल जाइछ । एहि प्रक्रिया सँ बनल रोटीकेँ **ठोकुआरोटी/हथरोटिया** कहल जाइछ । ठोकल रोटीकेँ तऽबपर राखि आगिसँ सिद्ध कयल जाइत अछि । तबपर एक परतसँ दोसर परत पलटल जाइछ जाहिसँ ओहो परत सिद्ध भऽ जाइछ । एक परतसँ दोसर परत पलटबाक क्रियाकेँ **कऊर** कहल जाइछ । तखन तेसर बेर पलटलापर ओहिमे भाफ भरि

जाइछ जाहिसँ ओ दू भागमे विभक्त भऽ जाइछ । विभक्त होयबाक क्रियाकेँ **फूलब** कहल जाइछ । एहन रोटी **फुल्लल-फुल्लल** कहल जाइछ। एहि फूलल रोटीक एक परत पातर रहैछ जकरा **पपड़ा** कहल जाइछ । रोटी बनयबाक क्रममे ताकपर रोटी नहि उनटौलापर कड़ा भऽ जाइछ । एकरा **खपड़सुक्खू** कहल जाइछ । टाम-ठीम जरि गेलापर **लहकल** कहल जाइछ तथा एकर मात्रा विशेष भेलापर जरल/जरल-जरल रोटी कहल जाइछ । एही प्रकारेँ मड़ुआ आदिक सेहो रोटी बनाओल जाइछ । मुदा गहूमक रोटी तैयार करबाक हेतु सर्वप्रथम गहूमक चिक्कसकेँ सानि कऽ एक सोहारिक हेतु परिमाण निकालल जाइछ जकरा **लोइया/गट्ठा/गिट्ठी/गट्टा/गट्टी** कहल जाइछ । बेलना द्वारा गट्ठाकेँ वृत्ताकार रूप देबाक क्रिया **बेलब** होइछ । चकलापर गील चिक्कस सटबासँ बचयबाक हेतु गट्ठामे लगाओल सुक्खल चिक्कसकेँ **परिथन/परथन** कहल जाइछ । एहि प्रकारेँ गहूमक चिक्कससँ बनल गोल ओ पातर आकृतिक खाद्यकेँ **सोहारी** कहल जाइछ । विभिन्न प्रकारक चिक्कससँ बनल मोट सोहारीकेँ **रोटी** कहल जाइछ । अन्नक भिन्नताक कारणेँ ई भिन्न-भिन्न नामे जानल जाइछ । चाउरक रोटीकेँ **तण्डुल** कहल जाइछ । एकरे विशिष्ट प्रभेद **तन्दूरी** रोटी कहल जाइछ । गुड़ सानल चिक्कसक मोट रोटी घी दऽ कऽ बनओलापर **रोट** कहल जाइछ जे मंगल दिन कऽ महावीरजीक प्रसादक प्रतीक रूपमे चढ़ाओल जाइछ । गहुमकचूर्ण, गुड़, चिन्नी, शक्कर, दूध, केरा इत्यादि मिलल वस्तु **प्रसाद/परसाद** कहल जाइछ ।

छोट ओ पातर सोहारीकेँ घीमे छानि कऽ सिद्ध कयला उत्तर **पूड़ी/सादा पूड़ी** कहल जाइत छैक । लघु आकृतिक मुदा खूब फूलल पूड़ीकेँ **फुलकी** कहल जाइछ । घी लगाकऽ सेदल आ मोड़ल तिकोणात्मक सोहारीकेँ **पराठा/परोठा/परौठा/फराठा** कहल जाइछ । गहूमक चिक्कसकेँ घी, मङरैल, नोन आदिक संगे सानि कऽ छानल पूड़ीकेँ **कचौरी** कहल जाइछ तथा आकृति विशेषक बनओलापर **निमकी** नामक वस्तु बनैछ ।

चौरट्ठाकेँ सानि कऽ गोली बना हाथेसँ ठोकि कऽ मध्यमे चाकर ओ दूनू कात नोंखगर आकृति बना लेल जाइछ । एकरा खौलैत पानिमे सिद्ध कयलासँ **पिट्ठा/पिट्ठी/पीठा/बगिया/बगेया** नामक पकमान बनैत अछि । मधुरता अनबाक हेतु चिक्कसेमे गुड़केँ सानि देल जाइछ । पानिक बदला दूधमे तैयार कयल बगेया **दुधबगिया/दुधपिट्ठी** कहल जाइछ । भापमे सिद्ध कयल चौरट्ठाक बेलनाकार पकमानकेँ **भक्का** कहल जाइछ ।

दालि ओ सम्बद्ध सामग्री बनयबाक विधि

दलिहनकेँ गर्म कऽ **खोइया** छोड़यबाक हेतु ओकरा चकरी (हल्लुक जाँत)मे दऽ जाँतकेँ घुमाओल जाइछ जाहिसँ ओ अन्न द्विदलमे विभक्त भऽ जाइछ । एकरा **दालि** कहल जाइछ । उला कऽ तैयार कयल दालि **उलबा** तथा बिना उलायल दालि **अरबा**

कहल जाइछ । उलयबाक क्रममे विशेष ताप लागि गेने दालि विशेष कठोर भऽ जाइछ जकरा **रोड़** कहल जाइछ । दालिक भुस्साकेँ **कोड़ाइ** कहल जाइछ । दरड़बाक क्रममे जे दालि टुटि जाइछ से **खुद्दी** होइछ तथा पिसा गेलापर ओ दालिक **चुनी/चुनी-चुनी** कहल जाइछ ।

दालियो भाते जकाँ रान्हल जाइछ । दालि रन्हबाक क्रममे पानिक मात्रा अधिक आ दालिक मात्रा कम रहैछ तँ एहन दालि **गंगाजल/पनिगर/पनिछक्का/पनिघुर्रा** कहल जाइछ । पानिक मात्रा कम तथा दालिक मात्रा विशेष रहलापर दालि **गाढ़/गढ़गर/गोइठासनक** दालि कहल जाइछ। दालिक जलकेँ **दालिक पानि** कहल जाइछ तथा एकर शेष अंश **सिट्ठी/दालिक सीट्ठी** कहल जाइछ । जे दालि रन्हलापर गलि कऽ पानिमे मिलि जाइछ एहन दालि **घाठि-घाठि भऽ कऽ मिलल/गलि कऽ राड़ भऽ जायब** कहल जाइछ तथा नहि मिललापर ओकर अवशेषकेँ दालिक **चक्का** कहल जाइछ ।

दालिक संग साग मिला कऽ रन्हलापर ओ **दलिसग्गा/सकपैता/सगपहिता** कहल जाइछ । बूटक दालिक अपन खास विशेषताक कारणेँ ओहिमे अनेक वस्तु मिला कऽ बनाओल जाइछ । बूटक दालिमे प्याज, गरम मशाला, घी आदि दऽ कऽ बनौलापर **ओ दलिया** कहल जाइछ । एकरा संगे तरकारी मिला कऽ बनौलापर **दलितरकारी/दलिधबिया** कहल जाइछ । भूजल दालिमे सजमनि मिला कऽ रन्हलापर **दलिकदुआ** कहल जाइछ । मुनिगाक मिलान **दलिमुनिगा** कहल जाइछ । दालिक सङ गहूमक **पिट्ठी/पिट्ठा** बना कऽ रन्हलापर **दलिपिट्ठी/दलिपिट्ठा/दलिपिठौरी** कहल जाइछ । दलिपिट्ठीक हेतु राहड़िएक दालि प्रशस्त मानल जाइछ । ओहुना दालिक राजा राहड़िये मानल जाइछ । अनेको प्रकारक दालिकेँ एक संग रन्हलापर **केवटी दालि** कहल जाइछ । **फुटहाकेँ** दालिक प्रक्रियासँ बनओलापर **उसना/उसिना** कहल जाइछ । एही प्रक्रियासँ मसुरीयोक **उसना/तड़का** बनाओल जाइछ । अधिक मसुरी तथा कम चाउर मिला कऽ रन्हलापर तैयार खाद्य **भतुसना/भतउसना** कहल जाइछ । राहड़ि तथा कुर्थीकेँ छोड़ि सब अन्नक घाठि बनैछ । दालिकेँ जाँतमे वा मशीन द्वारा पीसि कऽ **बेसन** तैयार कयल जाइछ । दालिकेँ पानि मे फुला कऽ सिलौटपर पीसल जाइछ जकरा **सिलौटिपिस्सा दालि** कहल जाइछ ।

नोन फेंटल बेसनकेँ गाढ़ कऽ सानि ओकरा साँचामे भरि दबाब देलासँ बेसनक लच्छी निकलैत छैक । एहि लच्छीकेँ गर्म होइत तेलमे घुमा-घुमा कऽ खसाय छनलापर अनेक अन्तर्वृत्तयुक्त पदार्थ तैयार होइत अछि । एकरा **झिल्ली** कहल जाइत छैक । अत्यन्त पातर छिद्रयुक्त साँचा द्वारा गाढ़ ओ नोनगर बेसनक पातर-पातर लच्छी बनाय तेलमे छनला उत्तर सेहो **झिलिखा** बनैत छैक ।

घाठिक अनुपातमे पानि मिला कऽ हाथसँ चलाओल जाइछ । एहि प्रकारेँ

चलयबाक एहि प्रक्रियाकेँ **फेनब** कहल जाइछ । विशेष फेनलापर एहिसँ बनल वस्तु हल्लुक होइछ तथा कम फेनलापर कठोर जे हाथसँ छिटकि जाइछ । एहि प्रकारेँ छिटकबाक क्रियाकेँ **छट-छट** कहल जाइछ । एहन फेनल बेसनकेँ औँठा ओ अन्य आङुरक माध्यमसँ कड़कल तेलमे गोल-गोल आकृति बना खसाओल जाइछ । एकरा **बड़ी** कहल जाइछ । एहि प्रकारेँ बड़ी बनयबाक प्रक्रियाकेँ **खोंटब** कहल जाइछ । एकर पैघ आकृतिकेँ **बाड़ा/बड़ा** कहल जाइछ । एहि बड़ीकेँ गर्म जलमे दऽ एहिमे जीर-मरीच, मिरचाइ, तेजपात, हरदि-नोन इत्यादि पीसि कऽ मिला देल जाइछ । एहिमे अल्प मात्रामे बेसन घोरि कऽ मिला देल जाइछ । बेसनक एहि मिलावटकेँ **अड़िचन/अड़िअन** कहल जाइछ । जखन खूब बरकि जाइछ तँ ओहिमे आमिल मिला देल जाइछ । तत्पश्चात् छौंकि कऽ उतारि लेल जाइछ । एकरा **बड़ी/जलायल बड़ी/झोरायल बड़ी** कहल जाइछ । बड़ीक जलकेँ **बड़ीक झोर/बड़ीक रस/बड़ीक जल** कहल जाइछ । **आमिल** देबाक कारणेँ बड़ी **अमिलौल बड़ी** कहल जाइछ । बिना जल देल बड़ी **रुख बड़ी** कहल जाइछ । उड़ीदक दालिकेँ फुला-पिसि कऽ चाकर आकृतिक बनाओल बड़ाकेँ दहीक घोरमे दऽ देल जाइछ । तत्पश्चात् काला नोन, भूजल जीर, अंश मात्रक हींग, भूजल कतोक मशालाक चूर्ण मिला देल जाइछ । एहि विधिसँ बनल सामग्री **दहिबाड़ा/दहिबड़ा** कहल जाइछ । बड़ीक घाठिकेँ विशेष जल दऽ कऽ दालिक समान घोरि लेल जाइछ आ बड़ीक मशाला दऽ ओही प्रक्रियासँ तैयार कयला उपरान्त ई **कढ़ी** कहबैछ । एकरा बड़ीक संग मिला देलापर युग्म शब्दक रूपमे **कढ़ी-बड़ी** कहल जाइछ । घाठिक चाकर-चाकर पिण्ड आकारक कम तेलमे बनाओल वस्तु **चटका** कहल जाइछ । एकरो बड़ीयेक प्रक्रियासँ खयबा योग्य बनाओल जाइछ । जकरा **चटकाक झोर** कहल जाइछ । एही चटकाक विस्तृत आकारक खाद्य वस्तु बनैछ । एकरा **भभरा/भभरी** कहल जाइछ । उरीदक घाठिकेँ तऽबपर तेलक छिटका दऽ भभरी आकारक बना कऽ पुनः लोहियामे विशेष तेलमे छानि लेलापर ओ **बड़** कहल जाइछ । ई बड़ विशेष प्रयोजन वा पाहुन-अतिथिक सत्कारक अवसरपर बनाओल जाइछ । घाठिक हेतु उपयुक्त दलिहनसँ अनेक प्रकारक व्यंजन सामग्री सेहो तैयार कयल जाइछ । बेसन अथवा फुला कऽ पीसल दालिमे कतरल प्याज, नोन मिरचाइ दऽ सानि कऽ तेलमे छनला उत्तर **कचुरी/कचरी/पेयजुआ** बनैत छैक । ई आकृतिमे चपता होइछ । झोराओल कचुरीकेँ **कच** कहल जाइत छैक । डा. सुनीति कुमार चटर्जी **कच** शब्दक अर्थ दालि कहलनि अछि । **कच, कचुड़ी** ओ **कचौरी** शब्दक मूलमे यैह **कच** शब्द बुझना जाइत अछि । कचक जलीय भागकेँ **झोर/सिरुआ** कहल जाइछ ।

गोल कचुरीकेँ **पकौड़ी** कहल जाइछ । पैघ आकृतिक पकौड़ीकेँ **पकौड़ा** कहल जाइछ ।

पीसल आदसँ युक्त फेनल घाठिकेँ कपड़ा वा केराक पातपर खोंटि रौदमे सुखाकऽ तैयार कयल वस्तु **अदौड़ी** कहल जाइछ । अदौड़ी कोनो प्रकारक घठियनसँ बनाओल जाइछ । मुदा उड़ीदक प्रशस्त मानल जाइछ । उड़ीदक बेसनमे तिल दऽ कऽ खोंटलापर **तिलौड़ी** कहल जाइछ । रामदानाक मिलावटसँ बनल सामग्री **दनौड़ी** कहल जाइछ । तीसीक योग दऽ खोंटलापर **तिसिऔड़ी/तिसिऔड़ी** कहल जाइछ । कुम्हड़केँ कदुकसपर घसि कऽ घाठिमे मिला कऽ फेनि कऽ खोंटल जाइछ । एकरा **कुम्हरौड़ी** कहल जाइछ । कुम्हरौड़ीक भीतरमे जीर-मरीच तथा गरम मशालाक चूर्ण दऽ खोंटलापर **फूटियला कुम्हरौड़ी** कहल जाइछ । कुम्हड़क बीया दऽ कऽ खोंटलापर ओ **बिच्चा बड़ी/बिऔड़ी** कहल जाइछ । मुरइ दऽ कऽ खोंटलापर मुरौड़ी कहल जाइछ । तिलौड़ी, दनौरी, तिसिऔड़ी, बिच्चाबड़ी आदि नोनगर वस्तु रहैछ। एकरा सभकेँ तेल मे छनलाक पश्चाते भोजनमे खायल जाइछ ।

उड़ीदक जतेक खाद्य सामग्री तैयार कयल जाइछ ताहि हेतु सर्वप्रथम उड़ीदकेँ दरड़ि कऽ ओकरा पानिमे फुला देल जाइछ । एहि फुललाहा दालिकेँ चङेरामे लऽ कऽ पोखरि तथा घार आदिमे जा कऽ हाथसँ दालि मलि-मलि कऽ खोइया पानिमे दहा देल जाइछ । जखन पूर्णरूपेण खोइया दालिसँ फराक भऽ जाइछ तखन सुखाय हेतु रौदमे देल जाइछ । एहन धोअल दालिकेँ **धोइ** कहल जाइछ । धोइ शब्दक व्यवहार उड़ीदक दालिक हेतु कयल जाइछ । उड़ीदक बेसनकेँ घोरि कऽ कोनो वस्तु भूनल जाइछ तखन एकरा **चाँस/उड़ीदक चाँस** कहल जाइछ । मूङक बेसनसँ तैयार कयल अदौड़ी **मुङौड़ी** कहल जाइछ ।

पापड़ बनयबाक प्रक्रिया

कोनो प्रकारक घठिअनमे नोन तथा मसाला सब मिला कऽ सक्कत कऽ सानि लेल जाइछ । तत्पश्चात तेल मिला-मिला कऽ उक्खरिमे कूटल जाइछ। जखन ओ छूलापर कोमल (हल्लुक) बूझि पड़ैछ, तखन कूटब क्रिया छोड़ि छोट-छोट गोली बना कऽ अतिपातर सोहारी आकारक बना कऽ रौदमे सुखा लेल जाइछ । एहन तैयार कयल खाद्य पदार्थकेँ पापड़ कहल जाइछ । विभिन्न अन्नसँ तैयार कयल पापड़ भिन्न-भिन्न नामे जानल जाइछ, जेना-मूङक पापड़, उड़ीदक पापड़, खेसारीक पापड़ आदि ।

मुदा चाउरक चिक्कस तथा साबुरदानाक पापड़ बनयबाक हेतु चिक्कसकेँ सर्वप्रथम काँच पानिमे घोरि कऽ ओहिमे नोन-मशाला मिला कऽ आगिपर चढ़ा कऽ बरका लेल जाइछ, जाहिसँ ओ सिद्ध भऽ गाढ़ भऽ जाइछ । एकरा **रान्ह करब** कहल जाइछ । एहन गाढ़ भेल वस्तु **रान्ह/लइ** कहल जाइछ । एहि **रान्ह/लइकेँ** केराक पातपर पापड़ आकृतिक बना लेल जाइछ आ रौदमे सुखा कऽ तैयार कयल जाइछ । एहन विधिसँ बनल पापड़ **चाउरक पापड़** कहल जाइछ तथा साबुरदानासँ बनल पापड़ साबुरदानाक पापड़

कहल जाइछ । एही लइकेँ अदौरी आकृतिक खोंटलापर **चरौड़ी/फुलौड़ी/चरिअउरी** कहल जाइछ । चाउरक चिक्कसकेँ इनहोर पानिमे दऽ कऽ सानि लेलासँ चिक्कस सिद्ध भऽ जाइछ । एहन चिक्कसकेँ चालनिपर घसि झिल्ली झाड़ि लेलापर ओ चाउरक **सेव/सेवइ** कहल जाइछ ।

बूटक दालिसँ निर्मित सामग्री

बूट अनेकानेक कारणेँ प्रधान मानल जाइछ । एहिसँ बहुतो प्रकारक खाद्य सामग्री तैयार कयल जाइछ । बूटकेँ फुला लेल जाइछ । तत्पश्चात् एकरा तेल-फोरन दऽ सिद्ध कऽ खायल जाइछ । एकरा **तरल बूट** कहल जाइछ । एहीमे मसल्ला दऽ रस दऽ देलापर बूटक **घुघनी** कहल जाइछ । घुघनीक हेतु मट्टर बेसी प्रशस्त होइछ । मट्टरसँ बनल घुघनीकेँ **छोला** कहल जाइछ । पौष्टिक आहारक रूपमे फूलल बूट आ गुड़ वा मधु भोर कऽ जलखइ कयल जाइछ । एहिमे एक दिनक पश्चात् **डेभा/डेफा** फेंकि दैछ जकरा **अंकुर** कहल जाइछ । एहन अंकुरवला अन्न **अँकुरी** कहल जाइछ । केराओक अँकुरी देव-पितर कर्ममे अनिवार्य रहैछ । बूटमे अंकुर निकललापर अँकुरायल बूटे जकाँ अंकुर निकलल मूङ **अँकुरायल मूङ** कहल जाइछ । बिन अँकुरैल फूलल बूटकेँ रौदमे कने सुखा कऽ भूजि लेल जाइछ । तखन एक दिन भरि छोड़ि देल जाइछ । आवश्यकतानुसार रौद देखा कऽ दालि दरड़ि लेल जाइछ । तत्पश्चात् पिसल जाइछ । एहन पीसल दालि **सातु/सतुआ/सतुइ/शितलबुकनी/सत्तू** कहल जाइछ । एही सतुआवला दालिकेँ गुड़क पागमे पागि कऽ लाइ बना लेल जाइछ । एकरा **मसका** कहल जाइछ । बूटक दालिसँ पूड़ी सेहो बनैछ । एहि हेतु काँच दालिकेँ उसिनि कऽ पानि फेंकि देल जाइछ । अवशेष सिट्ठीकेँ जीर-तेल, मेरचाइ-नोन आदिक फोड़न दऽ भूजल जाइछ । एहन भूजल दालि **फूटि/फुड़ुट** कहबैछ । गहूमक चिक्कसकेँ सानि एकर गोलीमे फूटि भरि कऽ सोहारी आकारक बेलि कऽ तेलमे छानि लेल जाइछ । एकरा **दलिपूड़ी/दलिहीपूड़ी/बेरहा/बेरहिया/फूटिपुरी** कहल जाइछ । ई फूटि आनो वस्तुक होइछ । कूटल तीसीकेँ भरि कऽ बनाओल पूड़ी **तीसीक फूटि भरल पूड़ी** कहल जाइछ । आलूक चोखा भरल पूड़ी **आलूपूड़ी** कहल जाइछ । तथापि फूटि बूटेक दालिक प्रसिद्ध मानल जाइछ । सातु भरल पूरीकेँ **भभरी/मकुनी** कहल जाइछ । सातु भरल लोइयाकेँ आगिमे पकबाक विधिसँ सिद्ध कयल खाद्यकेँ **लिट्टी** कहल जाइछ । एकर पैघ आकृति **लिट्टा** होइछ ।

अन्य दालिसँ निर्मित खाद्य

खोंइचा लागल गोटा मूङकेँ उला कऽ अल्प पानिमे सिझा कऽ अथवा मूङक दालिकेँ सिद्ध कऽ पानि पसा कऽ ओकर सिट्ठीमे हरियर मिरचाइ, तेल-नोन, नेबो मिला कऽ सानि देल जाइछ । एकरा मूङक **चोखा/मूङक सन्ना** कहल जाइछ । एहि प्रक्रियासँ मसुरीयोक सन्ना बनाओल जाइछ ।

'कुर्थीक दालिकेँ पीसि कऽ रान्हल जाइछ । एकरा कुर्थीक **झोर** कहल जाइछ । कुर्थीक झोर कफ नाशक होइछ । कहल जाइछ जे एकरा खयलासँ पेटक **पाथर** तक गलि जाइछ ।

किछु दलिहनक काँचे छिम्मड़िसँ निखुरल दानाकेँ उसिनि कऽ पीसि चहटगर दालि बनाओल जाइछ । एहि खाद्यान्नकेँ **गोदिला** कहल जाइछ ।

भूजा

चाउर, चूड़ा, मकै, बूट ओ अन्य विभिन्न प्रकारक दलिहनकेँ आगिक परोक्ष सम्पर्कमे गर्म कऽ खयबाक व्यवहार अछि । एहि प्रक्रियासँ तैयार खाद्यक हेतु **भूजा-भरी** शब्दक होइछ ।

भूजा सामान्यत: खापड़िक सहायतासँ तैयार कयल जाइछ । खापड़िमे अन्नकेँ दऽ कऽ ओकरा स्फुटित करयबाक क्रिया **भूजब** होइछ । बिना बालुक योगसँ अन्नकेँ भुजबाक प्रक्रियासँ बनल खाद्य **खपरभुन्जा** कहल जाइछ । बालुक योग रहला उत्तर **बलुआयल** कहल जाइछ । बालुक योग देबाक क्रिया **बलुआयब** होइछ ।

अन्नकेँ खापड़िमे इतस्तत: चलयबाक क्रिया **लाड़ब** होइछ । लाड़बाक हेतु बाँसक कमची, करची, खरहीक दण्डक प्रयोग होइछ, एकरा **लाड़नि** कहल जाइछ अल्प समय धरि अन्नकेँ भुजबाक प्रक्रियामे अन्न पूर्णत: प्रस्फुटित नहि भऽ पबैछ । एही स्थितिमे ओकरा उतारि लेलापर **उलायल** कहल जाइछ । भुजबाक एहि प्रक्रियाकेँ **उलायब** कहल जाइछ ।

ग्राम प्रदेशमे भूजा भुजबाक व्यवसायमे एकटा जाति विशेष लागल रहैछ । एकर कार्यस्थल **कनसार** कहल जाइछ । कनसारमे भूजा भुजबाक पेशामे लागलि स्त्रीकेँ **कानुन/कानुनि/कनुनियाँ** कहल जाइछ ।

भूजा सामान्यत: पूर्णत: प्रस्फुटित खाद्यक हेतु प्रयुक्त होइछ । चाउर, बूट मकइ, मट्टर इत्यादिक भूजा जनसामान्यमे प्रचलित अछि । मकइक भूजा अत्यधिक प्रस्फुटित होइछ । एहन भूजाकेँ **लावा** कहल जाइछ । अल्प प्रस्फुटित वा अप्रस्फुटित भूजा **किर्री/किड़री** कहल जाइछ । कम भूजल भूजा **झोरल** ओ तथा बेसी सोन्ह कऽ भूजल **झुर** भूजा कहबैत अछि । जओक भूजाकेँ **फरही/फरूही/फरुभी** कहल जाइछ । राहड़िक प्रस्फुटित भूजाकेँ **फुटहा** कहल जाइछ । अल्प प्रस्फुटित फुटहाकेँ **फुटही** कहल जाइछ । नवका मकइक भूजा खूब नहि फुटैत अछि । मुदा ई खयबामे हल्लुक होइछ । एकरा **मखानी** कहल जाइछ । काँच मकइक भूजाकेँ **गलबल/गलबलिया** कहल जाइछ । काँच मकइ ओ बूटकेँ आगिमे प्रत्यक्षत: पकयबाक विधि **ओराहब** होइछ । एहि विधिसँ तैयार खाद्यकेँ **ओरहा** कहल जाइछ ।

व्यंजनसँ सम्बद्ध

कोनो प्रकारक व्यंजनादिकेँ **तरकारी/तीमन** कहल जाइछ ।

आकृति विशेषमे व्यंजनादिकेँ कटलापर ओ **तरुआ/चक्का** कहल जाइछ । लघु आकृतिक काटल तरकाड़ी **भुजिया/भुजुआ** कहल जाइछ ।

व्यंजनकेँ आगिमे पका कऽ अथवा उसिनि कऽ ओकर उपरका आवरणकेँ हँटा देल जाइछ आ ओहिमे, नोन, तेल, मरचाइ आदि दऽ हाथसँ मरदि कऽ मिला देल जाइछ । एहन तैयार खाद्य **सन्ना/साना/चोखा/भरता** कहल जाइछ ।

आलूसँ निर्मित तरकारी

आलूकेँ सामान्य विधिसँ काटि कऽ तेल-फोड़न, मशाला दऽकऽ रन्हलापर आलूक तरकारी बनाओल जाइछ । एहिमे कोनो अन्य वस्तुक मिलान भेलापर युग्मशब्दक रूपमे व्यवहृत होइत अछि, जेना-**आलू-कोबी/आलू-परोड़/आलू-कुम्हरौड़ी, आलू-मुरौरी, भाँटा-आलू, आलू-बिड़िया** आदि ।

आलूक पातर-पातर खण्डकेँ तेलमे छनलापर आलूक **भुजिया** कहल जाइछ । तहिना आनो व्यंजनक भुजिया बनाओल जाइछ आ ओ सभ विभिन्न नामे अभिहित होइछ । तहिना आकृति विशेषमे व्यंजनकेँ काटि तेलमे छनलापर विभिन्न **तरुआ चक्का** नामे जानल जाइछ । उसिनल आलूकेँ गरम मशाला दऽ कऽ बनल तरकारी **आलूक दम** कहल जाइछ ।

आलूक सानाक भीतरमे मटर, कोबी, आदि भूजि कऽ भरि देल जाइछ तथा बेसनमे लेपटा कऽ छानि लेलापर **आलूचप** कहल जाइछ ।

काँच आलूकेँ औजारक माध्यमसँ धारीदार अति पातर-पातर चक्का जकाँ काटि लेल जाइत । एकरा खौलैत पानिमे दऽ कऽ चारि-पाँच मिनट धरि छोड़ि देल जाइछ । ओही पानिमे अन्दाजसँ नोन मिला देल जाइत अछि । तखन आँचसँ उतारि पानि पसा कऽ रौदमे सुखा कऽ राखि लेल जाइछ । एकरा आलूक **चिप्स** कहल जाइत अछि ।

एही प्रक्रियासँ ओलोक तरकारी बनैछ । ओलक सन्नाकेँ बड़ीक प्रक्रियासँ बनओलापर **ओलबड़ी** कहल जाइछ ।

भाँटाकेँ छोट-छोट खण्डमे काटि कऽ भुजलापर भाँटाक **भुजुआ** कहल जाइछ । एहि भुजियामे नीमक टुस्सा दऽ कऽ भुजलापर **नीमभाँटा भूजल** कहल जाइछ जे चैत मासमे अवश्ये खयबाक विधान अछि । भाँटाकेँ चक्का काटि कऽ बेसन वा पिठार लेपटा कऽ तेलमे छनलापर भाँटाक **तरुआ/भँटवर/बैंगनी** बनैत अछि । भाँटामे

अदौड़ी मिला कऽ बनओलापर **भाँटा-अदौड़ी** कहल जाइछ । भाँटाकेँ चारि फाँक काटि कऽ तेल मसल्ला दऽ कऽ सिद्ध कऽ बनओलापर **बैसउआ/मझउआ** कहल जाइछ । सम्पूर्ण भाँटाकेँ गोले दू-तीन खण्डमे काटि बीचमे मशाला भरि कऽ तरलापर **कलौंजी** कहल जाइछ । तीसी देल भाँटाक सन्ना सेहो बनाओल जाइछ ।

सम्पूर्ण "करैलकेँ" दूनू छोर छोड़ि कऽ एक भाग बीचोबीच चीरि कऽ भाफि लेल जाइछ । तखन सरिसो, मेरचाइ, धनी, खटाइ आदि पीसि कऽ तेलमे भूजि कऽ करैलमे भरि कऽ तरलापर करैलक **भरुआ** बनैछ । एही प्रक्रियासँ अनेको व्यंजनक भरुआ बनैछ ।

सरिसोक साग तथा सजमनिकेँ मिला कऽ भुजलापर बनल पदार्थ **लौसग** कहल जाइछ । अरिकोंचक पातकेँ क्रमश: मेथी वा बेसनक लेप लगा-लगा कऽ अनेक पात साटि लेल जाइछ । एकरा क्रमश: लपेटलापर नाम बेलनाकार वस्तु बनैछ । एकरा **लोढ़ा** कहल जाइछ । लोढ़ाकेँ किछु समयक पश्चात् खण्ड-खण्डमे काटि लेल जाइछ । एहन काटल खण्डकेँ **चक्का/अरिकोंचक चक्का** कहल जाइछ ।

एहि चक्काकेँ तरि कऽ रस दऽ कऽ **रसदार तरकारी** बनैछ ।

काँच अरड़नेबासँ बनल सामग्री

अरड़नेबाकेँ छीलि बना कऽ उसिनि लेल जाइछ तथा तरकारीक विधिसँ बनओलापर अड़रनेबाक **तरकारी/अड़रनेबाक घंट** कहल जाइछ । उसिनल अरड़नेबामे कूटल रैंची, नोन, तेल, मिरचाइ तथा दहीकेँ तोड़ि कऽ मिला देल जाइछ । एकरा **रतुआ/रइता/रायता** कहल जाइछ । एही प्रक्रियासँ आनो वस्तुक रायता बनाओल जाइछ आ विभिन्न नामे अभिहित होइछ ।

काँचमे नोन, तेल अँचारक मशाला मिलाकऽ खयलापर **झक्का/झक्खा** कहल जाइछ । कोनो वस्तुमे नोन तेल मिलओलासँ **झक्का** बनैछ । सद्य: ग्रहण करबाक हेतु टमाटर, मुरइ, प्याज, खीरा, आदिकेँ छोट-छोट खण्डमे विभक्त कऽ ओहिमे नोन, तेल, मेरचाइ, धनीकपातकेँ कतरि कऽ मिला देल जाइछ । एहि प्रकारेँ बनाओल वस्तु **सलाद** कहल जाइछ । टमाटरकेँ काटि कऽ तेल-फोड़न दऽ सिद्ध कऽ ओहिमे मिरठक योग देल जाइछ । एकरा टमाटरक **चटनी/टौक** कहल जाइछ तथा मशाला भरि कऽ तरलापर **गोलगप्पा** कहल जाइछ ।

दूधसँ सम्बद्ध

भोजन व्यापारमे दूध सद्य: पीबाक हेतु तँ व्यवहृत होइते अछि, संगहि एहिसँ दही, खीर इत्यादि विविध पदार्थ सेहो बनाओल जाइत अछि । दही दूधकेँ जमा कऽ बनैत

अछि । आङ्कुर सहबा योग्य दूधकेँ **सुसुम/आङ्कुर सह** कहल जाइछ । सुसुमे दूधमे दहीक अल्प मात्रा मिलाओल जाइछ । एकरा **जोड़न/लेसन** कहल जाइछ । जोड़न देलापर किछु समयक पश्चात् दूधक द्रव रूप छोड़ि कऽ कोमल ठोस रूप धारण करबाक क्रिया **जमब/जनमब** होइछ । दहीकेँ जमयबाक क्रिया **पौड़ब** होइछ । दूधक शुद्धताक हेतु **सुच्चा/निठुर** शब्दक व्यवहार होइत अछि । निठुर दूधक दहीकेँ **सजबी/सरही** दही कहल जाइछ । ठंढाक प्रभावसँ दहीक नहि जमबाक क्रिया **ठरकब** होइछ ।

कलमे पेड़ल दुद्धीक दहीकेँ **कलहा दही** कहल जाइछ । महल दूधक दुद्धीक दहीकेँ **महुआ दही/महाउर** कहल जाइछ । महुआ ओ कलहा दहीकेँ **गोपाल दही** सेहो कहल जाइछ । बिनु जोड़नक जमल दहीकेँ **कुमारि दही** कहल जाइछ । एहन दही मधुश्रावणीमे पुजबाक काजमे अबैत अछि ।

दहीक उपरका सतहपर जमल पियरौंछ पदार्थकेँ **छाल्ही** कहल जाइछ । मोट छाल्हीवला दहीकेँ **छल्हिगर दही** कहल जाइछ । दही पौड़बाक समय जाहि बासनमे दूध ढारल जाइछ, दूधक धारक चोटसँ ओहि बासनमे दूधक फोका सन-सन बुलबुला भऽ जाइछ जे फुटलापर दहीक छाल्हीपर भूर-भूर बनि जाइछ । एहि भूरकेँ **बरड़ी** कहल जाइछ। छल्हिगर दहीक सतहपर भूर बनबाक क्रिया **बरड़ी पड़ब** कहल जाइछ । वर्णरत्नाकारमे **एगारह आङ्कुर बरली पललि दहीक** वर्णन भेटैत अछि ।[7]

जमि कऽ अत्यन्त संश्लिष्ट दहीकेँ **कट्ठिल/कट्ठम/कठम/कठगर/ढेपासनक/भीतसनक** कहल जाइछ । खूब कठगर दहीकेँ **भैंसाठ** कहल जाइछ ।

दहीकेँ बासनसँ निकालबाक हेतु एक बेरमे जतेक दही काटल जाइत छैक तकरा **छओ** कहल जाइछ । छओक हेतु प्राचीन शब्द **छेओब** छल ।[8]

दहीक अम्लीय स्वादकेँ **अम्मत/अम्मत-चुक्क/खट्टा/खटहा** कहल जाइछ । अधिक दिनक पौड़ल दहीक उपरका भागमे उत्पन्न विकारकेँ **फुफड़ी** कहल जाइछ आ फुफड़ी बनबाक क्रिया **फुफड़ब/फुफड़िआयब/फुफड़ी पड़ब** होइछ ।

दूधकेँ नीक जकाँ अऔंटलाक पश्चात् ओहिमे चाउर सिद्ध कऽ चिन्नी तथा सुगन्धित मसाला दऽ बनल खाद्य **पायस/तसमै/तस्मै/खीर/तनुका** कहल जाइछ । दन्तकथा अछि जे भोरे-भोरे एकर नाम लेलासँ यात्रा बिगड़ि जाइछ तेँ ओहना समयमे एकरा **रन्हुआ/कठियालाइन** कहल जाइछ ।

मिट्ठक स्थानमे चिन्नी दऽ कऽ बनओलापर **चिनीवला खीर/उजरा खीर** कहल जाइछ । गुड़ दऽ कऽ बनओला पर **गुड़खीर/गुड़खिच्चड़ि/ललका खीर** कहल जाइछ । कुसियारक रसमे चाउर सिद्ध कयला उत्तर **रसखीर** कहल जाइछ । मात्र दूधमे बनल खीर **दुधखीर** कहल जाइत अछि ।

जाहि कोनो अन्न वा फलक खीर बनाओल जाइछ तकरा ताहि नामे अभिहित कयल जाइछ । दूधकेँ गाढ़ कऽ औंटि कऽ ओहिमे चिन्नी, कटुक मशाला, सुगन्धित इत्र आदि मिला देल जाइछ तथा एहिमे बेसनक बुनिया छोड़ि देल जाइछ । किछु समयक पश्चात् आँचसँ उतारि लेल जाइछ। एकरा **सकरौड़ी** कहल जाइछ। दूधकेँ औंटैत-औंटैत जखन खूब गाढ़ भेलाक पश्चात् तरलावस्थासँ कठोरावस्थामे परिणत भऽ जाइछ, प्राप्त पदार्थकेँ **खोआ** कहल जाइछ जे विभिन्न मिष्टान्नक आधार सामग्री थिक । एहिना दूधकेँ फाड़ि कऽ **छेना** तैयार कयल जाइछ जे विभिन्न मिष्टान्नक आधार सामग्री थिक ।

मिष्टान्नसँ सम्बद्ध शब्दावली

विभिन्न प्रकारक मिष्टान्न सभकेँ **मधुर/मिठाइ/मरमिठाइ** कहल जाइत छैक । किछु खाद्य वस्तुमे विशिष्ट गुण होइछ जकरा **मिट्ठ/मधुर** कहल जाइछ । मिष्टान्नक विशिष्ट स्वादकेँ **मधुराइ** कहल जाइछ । किञ्चित्मात्र मधुरतासँ युक्त मिठाइकेँ **मधुरौंठ/मधुराह** कहल जाइछ ।

मधुर सभमे मधुरता उत्पन्न करबाक हेतु गुड़ ओ ओकर विभिन्न परिष्कृत रूप सबहिक व्यवहार होइत अछि । कुसियारक रसकेँ गर्म कऽ गाढ़ भेलापर जमओलासँ **गुड़/मीठा** नामक पदार्थ बनैत अछि । कुसियार तृण जातिक शाखा-फल विहीन उत्पाद थिक । एक **डाँट/थड़** एक-सवा इंच धरि मोट एवं पाँचसँ सात फीट धरि नाम होइछ। एकरा **छड़/छड़क्का** कहल जाइछ । छड़मे नीचासँ ऊपर धरि थोड़े-थोड़े अन्तरपर गोल बनल रहैछ जकरा **गीरह** कहल जाइछ । दू गीरहक मध्य भागकेँ **पोर** कहल जाइछ । नमहर पोरवला कुसियारकेँ **पोरगर** कहल जाइछ । एकर जड़ि दिसक भागकेँ **जठियाही** आ छीप दिसक भागकेँ **छिपाठी** कहल जाइछ । पात खूब नमहर होइछ जकरा **पगार/पतार/पतलो** कहल जाइछ । एकर **लालगड़ा, कालागड़ा, नरकटिया** अनेक प्रभेद होइछ । एकर खोँइचा सोहि बिचला भागक छोट-छोट टुकड़ी बनाओल जाइछ जकरा **कुसियारक गुल्ला/गुल्ली** कहल जाइछ । गुल्लीकेँ मुहमे राखि दाँतसँ चिबाय रस चूसल जाइछ । रसहीन गुल्ली **सिट्ठी** कहल जाइछ । एक विशेष प्रकारक नमहर यन्त्रसँ वृहत स्तरपर रस बहार कयल जाइछ । यन्त्रकेँ **कोल्हु/कोल्ह्‌/केल्ह्‌/केल्हुआ** कहल जाइछ । समतल खेत, खरिहान वा गाछीमे कोल्हु स्थापित कयल जाइछ । एहि स्थानकेँ **कोल्हुआड़** कहल जाइछ। यन्त्रसँ रस निकालक प्रक्रिया **पेड़ब** होइछ । कोल्हुआड़मे माँटिक ढेपकेँ देवताक रूपमे स्थापित कऽ पड़ल पहिल रस चढ़ाओल जाइछ । ई देवता **महँकार/महकार** कहबैत छथि । समतल भूमिमे यथा रुचि एक-सवा हाथ व्यासक गोल ओ ओही अनुपातमे गँहीर पथियाक आकारक **खथिया** खूनि देल जाइछ । ओहि भीतरमे पहिने झट्टा, पोआर, पगार अथवा खढ़ ओछा कऽ सनक बोढ़ा, वा चट्टी ओछाओल

जाइछ । एकरा **धोकड़ा/धोकड़ी** कहल जाइछ । कुसियारक रसकेँ पहिने कड़ाहमे औँटल जाइछ खूब गाढ़ भेलापर रस सेरा कऽ ठोस भऽ जाइछ । गूड़क एहि अर्द्धगोल ठोस आकारकेँ **चेकी** कहल जाइछ । चेकीकेँ फोड़लापर बनल नमहर खण्ड **चेखान** कहल जाइछ । छोट आकारक खण्ड **ढेप/ढेपा** कहल जाइछ । अत्यन्त छोट छोट खण्ड **ढेकुड़ी** कहल जाइछ । बिनु जमल गुड़केँ **राब** कहल जाइत छैक । गुड़केँ परिशुद्ध कऽ जमओलापर दानासँ युक्त गुड़क प्रभेदकेँ **शक्कर** कहल जाइछ । भुल्ल रंगक परिशुद्ध ओ शुष्क शक्कर जकर सभटा दाना पृथक्-पृथक् रहैत छैक, से **भुर्रा-चीनी** कहल जाइछ। रंगहीन रससँ तैयार सूक्ष्म दानासँ युक्त पदार्थकेँ **चीनी** कहल जाइत छैक । कुसियारक रसकेँ विशेष रीतिसँ बनाओल गूड़क गोलाकेँ **भेली** कहल जाइछ । चीनीक परिष्कृत रूप **मिसरी** कहल जाइछ । कुसियारक रसमे अरबा चाउर सिझाय **रसखीर** बनैत छैक ।

मिठाइ

दूध, चीनी, मैदा, बेसन आदिक योगसँ बनल खाद्य सामग्रीकेँ **मिठाइ** कहल जाइत छैक । मिठाइमे चीनीक उपयोग बेसीकाल ओकर रस बना कऽ कयल जाइछ । पानिमे चीनी दऽ गर्म कयलापर बनल पदार्थकेँ **रस/चाशनी/सिरका/सिरा/खाँड़** कहल जाइत छैक । चीनीक अपेक्षा पानिक मात्रा अधिक रहलापर सीराकेँ **पातर** ओ कम रहलापर **मोट** कहल जाइत छैक । सीरा पातर अछि कि मोट से बुझबाकलेल ओकर अल्प मात्रा छोलनीपर लऽ नीचा दिस चुआओल जाइत छैक । चुबैत सीरा जे वायुक प्रभावमे पातर तारक सदृश ठोस रूप धारण कऽ लैत अछि तँ **मोट सीरा** बुझल जाइछ । सीराकेँ अडँठा ओ तर्जनीक बीच लऽ दूनूक दूरी बढ़ाओल जाइत छैक । एहिसँ जे सीराक तार बनैत छैक तकर आधारपर सीरा **एक तार**, **दू तार** अथवा **तीन तारक** बूझल जाइत अछि । सीराकेँ गर्म करबाक क्रममे ओहिसँ निकालल फेनयुक्त मैलीकेँ **काह/काही/मैली** कहल जाइत अछि ।

चासनीक पाग कड़ा भऽ गेलापर मिठाइ **कठोर** भऽ जाइछ । एहन मिठाइकेँ **रोड़ाह** कहल जाइछ । सीराकेँ **पाक/पाग** कहल जाइत छैक । सीरामे वस्तुकेँ डुबा कऽ ओकरा मधुरता युक्त करबाक क्रिया **पागब** होइछ । सीराकेँ गर्म कऽ जलीय अंश जरा देलाक पश्चात् अवशिष्ट चीनीक अंशकेँ **भूरा/भुर्रा** चीनी कहल जाइत अछि । एकरा पुनः सीरा बनयबामे उपयोग कऽ लेल जाइत अछि ।

मिठाइ बनयबाक क्रममे घी अथवा तेलकेँ गर्म करबाक क्रिया **टहकायब/कड़कायब** होइछ । घीमे बनाओल पदार्थकेँ **घिवही** ओ तेलमे बनाओल पदार्थकेँ **तेलही** कहल जाइछ । वस्तु बनलाक बाद लोहियामे बचल तेल **पकतेल** कहल जाइछ ।

मिठाइकेँ एक-दोसरापर थकिया कऽ रखबाक क्रिया **रद्दा लगायब** होइछ । पाँच गोट मधुरक मिश्रणकेँ **पचमेर** कहल जाइत अछि । पचमेरमे सामान्यतः **पेड़ा**, **लड्डू**, **सिरनी**, **बताशा** ओ **जिलेबी** अबैत अछि ।

ओना तँ मधुर मात्र बिना गुड़ अथवा चीनीक सहयोगेँ नहि बनि सकैछ मुदा किछु मधुरमे ई विशिष्ट रूपेँ प्रयुक्त होइछ । गुड़केँ पानिक संगे गर्म कऽ ठंढयलापर ओकर नाम-नाम दण्डाकार मिठाइ बनाओल जाइत अछि । एकरा **गुड़लाठी** कहल जाइत छैक । बरकल गुड़मे सोडा मिला कऽ साँचापर रोटीक आकृतिक मिठाइ बनाओल जाइत अछि । एकरा **गुड़क मिठाइ** अथवा **गुड़क रोटी** कहल जाइत छैक । बरकल चाशनीमे रंग मिलाय गर्म कऽ शुष्क कयलापर गीलमे पंखा, छिट्टा आदिक आकृतिक मिठाइ बनाओल जाइछ । एकरा सभकेँ **लाल छड़ी/गुलाबछड़ी** कहल जाइत छैक ।

तीन तारक चाशनी बनओलाक पश्चात् ओहिमे चीनीक दशमांश मैदा ओ थोड़ेक खाइवला सोडा दऽ खूब घोँटल जाइत छैक । कने पतरे रहलापर एहि चासनीकेँ चूल्हिपरसँ उतारि ओकरा एकटा डब्बुकमे उठा लेल जाइछ । बामा हाथमे डब्बुक पकड़ि दहिना हाथेँ कोनो काठक टुकड़ीसँ थोड़े-थोड़े कऽ चासनीकेँ ओछाओल कपड़ा पर खसाओल जाइत छैक । सुखलापर एकटा अत्यन्त फोँक मिठाइ बनैत छैक । एकरा **बतासा** कहल जाइत छैक । पैघ बतासाकेँ **फेंचा** कहल जाइत छैक । एकर उल्लेख वर्णरत्नाकरोमे भेटैत अछि ।[9]

तीन तारक चासनी बना कऽ उतारि लेल जाइत अछि आ एकटा दोसर कड़ाहमे चासनीमे प्रयुक्त चीनीक दशमांशकेँ छोलनीसँ निरन्तर चलबैत गर्म कयल जाइत छैक । एहि गर्म चीनीपर ओहि चासनीकेँ ढारि तीव्र गतिसँ संचालित कयने गोल-गोल आकृतिक मिठाइ तैयार होइत अछि । एकरा **गोलदाना/इलायचीदाना/अइँचीदाना/मकुनदाना** कहल जाइछ । ई दाना प्रसादक रूपमे प्रशस्त अछि जे कोनो तीर्थस्थानमे भेटैत अछि ।

चीनीक चासनी बना कऽ ओकरा निरन्तर औँटलासँ अत्यन्त गाढ़ भेलापर गोल-गोल मिठाइ बनाओल जाइछ । एकरा **चीनीक लड्डू**[10]/**सिरनी** कहल जाइत छैक ।

चाउरक चिक्कस **चौरठ/चौरठा/चौरट्ठा** कहल जाइत छैक । चासनीमे बरक्कति हेतु चौरट्ठा सेहो अल्प मात्रामे मिलाओल जाइत छैक । तिलसँ युक्त चीनीक लड्डूकेँ **गुलाब रेवड़ी/तिलकुट** कहल जाइत छैक । चिनिया बदामपर जमाओल गाढ़ चासनीसँ बनल मधुरकेँ **बदामपापड़ी** कहल जाइत छैक । चासनीमे सतुआ मिला कऽ गर्ममे ओकर तार खिचलासँ बनल मधुरकेँ **सनपापड़ी** कहल जाइत अछि । चीनीक एकटा अत्यन्त फोँक मधुर **हवामिठाइ** होइत अछि ।

मैदासँ निर्मित मधुर

पानिमे घोरल मैदाकेँ **मैदानी** कहल जाइछ । ओरिकाक छेद द्वारा मैदानीक लत्तीकेँ गर्म घीमे खसाय-अनेक अन्तर्वृत्तयुक्त मिठाइ बनाओल जाइत अछि । एकरा मधुर करबाक हेतु चासनीमे डुबाओल जाइत छैक । एहि मिठाइकेँ **जिलेबी** कहल जाइत छैक । पैघ जिलेबीकेँ **जिलेबा** कहल जाइत छैक । किनारीसँ युक्त जिलेबीकेँ **अमिरती/इमरती/इमरिती/इमिरती** कहल जाइछ ।

जिलेबी बनयबाक हेतु दू तीन दिनक बासि मैदानीक उपयोग होइत छैक । मैदानी टटका रहलापर कम चासनी सोखैत छैक । टटका मैदानीसँ बनल जिलेबी तेँ कम मधुर होइछ । एकरा **छेनाह** कहल जाइत छैक ।

मैदाक अनेक परतसँ युक्त आयताकार मिठाइकेँ **खाजा** कहल जाइत छैक । एकर पात सभकेँ **बीट/बीड़** कहल जाइत छैक । बीड़ बनयबाक हेतु दूटा संलग्न भागक बीचमे तेल ओ सुक्खल मैदाक **परथन** देल जाइत छैक । एहि परथनकेँ **पोत** कहल जाइत अछि । एहि मिठाइकेँ घीमे छानि चाशनीक पाग देल जाइत अछि । एहि मिठाइकेँ **खाजा** कहल-जाइत अछि । एकर पैघ आकृतिक प्रभेदकेँ **खजबा** कहल जाइत अछि । केहुनी मोताबिक खाजाकेँ **केहुनियाँ खाजा** कहल जाइछ । छोट आकृतिक प्रभेदकेँ **खजुली/खजबी** कहल जाइत अछि । कोषमे मिष्टान्नक एकटा प्रभेदकेँ **गुलाब खाजा** कहल गेल अछि ।[11]

मैदामे सोडा ओ **मेन** (घी) मिला कऽ सानल जाइत अछि । पश्चात् करीब दू इंच मोट परतक रूपमे एकरा पाटापर बेलि वर्गाकार टुकड़ाक रूपमे काटि लेल जाइत अछि । टुकड़ा सभकेँ घीमे छानि चासनीक पाग देलापर गाजा/गाँजा नामक मिठाइ बनैत अछि । छोट आकृतिक गाँजाकेँ **सकरपाला** कहल जाइत अछि ।

गाँजाक हेतु तैयार कयल मैदाकेँ हाथसँ मरदि छोट-छोट गोली काटि चाँपि कऽ गोल-गोल टिकिया बना लेल जाइत अछि । टिकियाक मध्यमे अठैंठासँ दाबि खाधि कऽ देल जाइत छैक । एकरा घीमे सिद्ध कऽ चासनीक पाग देलापर **बलुसाही/बालूसाही/बलुकसाही** नामक मिठाइ बनैत अछि । मेन ओ रंग मिला कऽ सानल मैदाक करीब दू इंच चाकर ओ पाँच इंच नाम आयताकार रोटी बेलल जाइत अछि । पोत दऽ ओकर दू तीन परत बना कऽ मोड़ि बनाओल मधुरकेँ **लवङ्गलता/लवङ्गलत्ती/लौंगलता/लौंगलत्ती** कहल जाइत छैक । मैदाक दूटा गोल पूरीक मध्य खोआ भरि कऽ चारूकातसँ गूहि कऽ घीमे छानि चीनीक पाग देलापर **चन्द्रकला** नामक मिठाइ बनैत छैक । अत्यन्त पातर कऽ घोरल मैदाकेँ गर्म घीमे खसाय छानि कऽ चीनीक पाग देलापर **घेबर** नामक मिष्टान्न बनैत अछि । मैदाक बनल सूत सन-सन टुकड़ीकेँ **सेबइ** कहल जाइछ । एकरा घीमे छानि दूध ओ चीनीक संगे रान्हि कऽ उपयोग कयल जाइछ ।

वर्णरत्नाकर मे **फिनी** नामक पकवानक उल्लेख भेल अछि ।[12] अम्बा प्रसाद सुमन मैदाक सेवइ जकाँ सूत सन टुकड़ीकेँ घीमे छानि कऽ चासनीक पाग देल वस्तुकेँ **फैनी** कहलनि अछि ।[13]

ग्रियर्सन गहूमक चिक्कस ओ चीनीक सहयोगसँ बनल पकवानकेँ **फेनी/बताशफेनी** कहलनि अछि ।[14]

बेसनसँ निर्मित मधुर

बूटक बेसनकेँ फेनि पातर कऽ छनौटापर दऽ गर्म घीपर झारल जाइत अछि । एहिसँ पानिक बुन्दक आकृतिक छोट-छोट दाना बनैत छैक । सिद्ध भेलापर चासनीक पागमे दऽ पुनः निकालि-निकालि दोसर बासनमे राखल जाइछ । एहन मधुरकेँ **बुनियाँ** कहल जाइछ । गर्मे-गर्मे बुनियाँकेँ गोल-गोल आकृतिमे बन्हलापर **बुनियाँक लड्डु/लड्डू/मेहीदाना लड्डू** बनैत छैक । पैघ-पैघ लड्डूकेँ **लाडु** आ छोट लड्डूकेँ **लडुबी** कहल जाइत छैक । वर्णरत्नाकरमे एहि हेतु **नड़िबी**[15] ओ **लिड़बी**[16] शब्द आयल अछि ।

बुनियाँकेँ दूधमे बरकओला उत्तर **सकरौड़ी** नामक मधुर बनैत छैक ।

मूँगक बेसनक बुनियासँ बनल लड्डूकेँ **मुंगबा/मुगबा/मुङबा** कहल जाइछ । मुदा आब ई शब्द बुनियाँक कोनो पैघ लड्डूक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । मूङक बेसनसँ अत्यन्त मेही बुनियाँ बना कऽ बन्हलापर बनल लड्डूकेँ **मोती चूरक लड्डू** कहल जाइछ । बेसनकेँ चीनीक संगे घीमे भूजि लड्डू बन्हलापर **बेसनक लड्डू** बनैत अछि ।

बेसनक आङुर भरि मोट लत्ती बनाय ओकर छोट-छोट टुकड़ी काटि घीमे छानि पाग देलापर **कटबी/झड़ुआ/कटुआ** नामक मधुर बनैत अछि । ओना काटि कऽ बनाओल मधुर सभक हेतु **कटबी** शब्दक व्यवहार अछि ।

खोआसँ निर्मित मधुर

खोआकेँ चीनीक संगे घोँटि शुष्क भेलापर गोल लोइया काटि चाँपि कऽ वृत्ताकार मिठाइ बनाओल जाइत अछि । ई **पेड़ा/पेणा** कहल जाइत अछि । बरक्कतिक हेतु खोआमे चौरट्ठा मिला देल जाइत छैक । चौरट्ठाक मात्रा अधिक भऽ गेलापर पेड़ाक नहि बन्हयबाक क्रिया **भखरब** होइछ । शुष्क खोआकेँ पीढ़ीपर बेलि ओकर चौखूट टुकड़ी काटल जाइत अछि। ई मिठाइ **बरफी/कटबी** कहल जाइत अछि ।

छेनासँ निर्मित मधुर

छेनाकेँ मरदि कऽ छोट-छोट गोली बना कऽ चासनीमे मद्धिम आँचपर

खौलओलापर **रसगुल्ला/रसभरी** नामक मिठाइ बनैत अछि । वर्णरत्नाकरमे एकरे हेतु संभवत: **खिरओला** (क्षीरगोलक) शब्दक प्रयोग भेल अछि । दूधमे देल रसगुल्लाकेँ **रसमलाइ** कहल जाइत छैक । बगेयाक आकृतिक दूनू कात नोखगर ओ मध्यमे चाकर छेनाक मिठाइकेँ **चमचम** कहल जाइछ । गोल आकृतिक चपता छेनाक मिठाइकेँ **छन्नाबाड़ा/छेनाबाड़ा** कहल जाइत ।

वर्णरत्नाकरमे **खिरिसा** नामक पक्वान्नक उल्लेख भेल अछि । इहो छेनेक मधुर रहल होयत । छेनाक गोलीकेँ घीमे सिद्ध कयला उत्तर ओकर रंग कत्थइ भऽ जाइत छैक । एकरा चासनीमे डूबओलासँ **पनतोआ/पनितोआ/पनितौआ/पैनतोआ** नामक मधुर बनैत अछि । नाम-नाम पनितोआकेँ **लाल जामुन/गुलजामुन/गुलाब-जामुन** कहल जाइत छैक । छेनामे कारी रंग दऽ लालजामुनक आकृतिक मधुर बनाओल जाइछ । एकरा **कालाजामुन** कहल जाइत अछि । छेनामे खोआ मिला कऽ लाल जामुनक आकृतिक मधुर बनैत अछि । एकरा **कलाकन्द** कहल जाइछ । एहि सभ प्रकारक मिठाइकेँ **पक्का रसगुल्ला** कहल जाइछ । मात्र छेनाक गोल-गोल पिण्ड बनाय सिरकामे सिद्ध कयल मिठाइकेँ **कच्चा रसगुल्ला** कहल जाइछ ।

मरदल छेनाकेँ गोली बनाय तरहत्थीपर चाँपि गोल आकृतिक बनाय मध्यमे आङुरसँ खाधिकऽ देल जाइत छैक । एकरा घीमे छानि चाशनीमे डुबओला उत्तर **खीरमोहन** नामक मधुर बनैत छैक ।

छेनाकेँ मथि कऽ चीनीक संग कड़ाहमे दऽ पाटासँ खूब घोँटल जाइछ । पश्चात् ओकरा साँचा पर ठोकि-ठोकि पातर-पातर टिकिया बना लेल जाइछ । दू-दूटा टिकियाकेँ परस्पर साटि कऽ **सन्देश** नामक मधुर बनैत अछि ।

कुम्हड़क खण्डकेँ भाफि कऽ चाशनीमे सिद्ध कयल मधुर **मोरब्बा** कहल जाइछ । एही प्रक्रियासँ धात्रीयोक मोरब्बा बनाओल जाइछ ।

वर्णरत्नाकरमे **खडनी, खण्डनी, खण्डउति, मेतिआ, अमृतकुण्डी, सरूआरी, मधुकुपी** आदि मिष्टान्नक उल्लेख अछि जकर अर्थलोप भऽ गेल अछि ।[17] मिथिला भाषा कोषमे **दलिमिस्त, भण्डा, मानसिंही, सारभाजा** आदि मिष्ठान्नक उल्लेख भेटैत अछि ।

आइकालिह रंग, सेन्ट, आकृति ओ स्थान भेदसँ मिठाइ सभक नव-नव नाम सभ भेटैत अछि मुदा ई सभ पारिभाषिक नहि बनि सकल अछि ।

पकमानसँ सम्बद्ध शब्दावली

[18]मिथिलामे पकमान भोजनक अपन विशिष्ट उपयोग देखल जाइछ । पावनि-तिहार एवं साँठ-राजक अवसरपर सामान्यतया पकमानक विशेष उपयोग देखल जाइछ ।

पक्वान्नकेँ सामान्यत: **पकमान** कहल जाइछ । तेल-घी एवं वनस्पति तेलमे छानल खाद्यान्नकेँ पकमान कहल जाइछ ।

पकमान

सुज्जीकेँ घीमे भूजि पानि ओ चीनीक योग दऽ खदकओलापर किञ्चित गील ओ मोलायम खाद्य बनैत अछि । एकरा **हलुआ** कहल जाइछ । कर-कट्टुकदेल उत्तम हलुआकेँ **महनभोग/मोहनभोग** कहल जाइछ । मैदा ओ आनो चिक्कससँ हलुआ बनाओल जाइत अछि । हलुआक हेतु प्राचीन शब्द **लपसी** (सं.लप्सिका) भेटैत अछि । गहूम, चाउर, मडुआक चिक्कसकेँ भूजि कऽ ओहिमे पानि ओ गुड़ मिला कऽ खदकौला पर लसिगर ओ गील पदार्थ बनैत अछि । एकरा **लपसी** कहल जाइत अछि ।

मेनदार गहूमक चिक्कसकेँ चीनीक संगे सानि नाम-नाम ठोकल वस्तुकेँ घीमे छनला उत्तर **खजूर/टिकड़ी टिकिया, मन्धार** नामक पकमान बनैत अछि । छोट खजूरकेँ **खजुरी** कहल जाइछ । बिनु चीनी फेँटल गहूमक चिक्कसक टिकिया बनाय चाशनीक पाग देलापर **माठ** नामक पकमान बनैत अछि जकर वर्णरत्नाकरोमे उल्लेख अछि ।[19]

चासनीमे चौरठ्ठा दऽ कड़ाहमे खूब घोँटैत गर्म कयलापर हलुआ जकाँ शुष्क भेला उत्तर ओकर छोट-छोट लोइया बनाय चकलापर देल पोस्तादानापर दबलासँ **अनरसा/अनारसा** नामक पकमान बनैत अछि । एकरे विस्तृत आकारक अन्य प्रभेद **हिलसा** कहल जाइछ ।

भार-दोरमे सँठबाक हेतु गुड़क संगे सानल गहूमक चिक्कसक लोइया काटि छोट-छोट गोल आकृतिक पूड़ी बेलल जाइत अछि । तेलमे छानि कऽ एकरा सिद्ध कयल जाइत अछि । एहि पकमानकेँ **गुड़पूरी/बेलुआ पुरी** कहल जाइत छैक । साँचपर ठोकल अग्रभागमे लोलीयुक्त पानक आकृतिक पकमानकेँ **साँच/ठकुआ/ठेकुआ/ठोकुआ/मुड़की/खबौनी** कहल जाइत छैक । छठि पावनिमे डालीपर प्रसाद रूपमे ठकुआ अनिवार्य मानल जाइत छैक । गोल ठकुआकेँ **टिकड़ी** कहल जाइछ । गुड़पूड़ीक चिक्कसमे पोस्तादाना मिलाय ढील कऽ सनला उत्तर घी वा तेलमे गोल-गोल पिंडक रूपमे खसाय छनलापर **गुलगुल्ला** नामक पकमान बनैत अछि । ई सधोरिक प्रतीक रूपमे मानल जाइछ ।

मैदाक गोल पूरी बेलि कऽ ओहिपर रड़ दऽ आधापरसँ मोड़ि कातवला भागकेँ गूहि देल जाइत छैक । गुहबाक क्रममे नहसँ खोंटि कऽ गुहलापर ओ **खोंटुआ** कहल जाइत अछि । एकरा घीमे छनलासँ **पिड़किया/पिड़ुकिया/पिड़िकिया/पिड़ाकड़ी/ पिड़ाकी/पिड़ौंकी** नामक पकमान बनैत अछि । सम्पूर्ण सोहारीपर रड़ दऽ गुहलापर ओ **पनबट्टीवला पिड़किया** कहल जाइछ । एहि पकमानमे भरल जायवला वस्तुक हेतु रड़ शब्दक व्यवहार

होइत अछि । रइक रूपमे खोआ, मलाइ, भूजल चिक्कस ओ चीनीक मिश्रण, भूजल सुज्जी ओ चीनीक मिश्रण आदिक व्यवहार होइछ । पिडुकियाक कातवला भागमे लहरदार मोड़ उत्पन्न कऽ ओकर निचला ओ उपरका भागकेँ सम्बद्ध करबाक क्रिया **गुहब/मड़ब** होइत अछि । एहि प्रकारेँ गुहल पकमान **गुहुआ** कहल जाइछ ।

गहूमक चिक्कसकेँ गुड़क संग पातर कऽ घोरि ओहि घोलकेँ गर्म तेलमे सिद्ध कयलासँ **पू/पूआ** (सं.अपूप) नामक पकमान बनैत अछि । गहूमक चिक्कस तथा चाउरक चिक्कस मिला कऽ बनाओल पूआ सकतगर होइछ । एकरा **कठपू/कठपूआ** सेहो कहल जाइत अछि । एही पूआक घोरकेँ तवपर घी वा तेलक छिटका दऽ सोहारी जकाँ पसारि कऽ बनौलापर ओ **पोच्छा पू/पोछुआ पू** कहल जाइत अछि । ई सपता-विपता पावनिमे डालीपर प्रसाद रूपमे व्यवहार कयल जाइछ ।

मैदामे दूध, केरा, चिनी एवं कटुक मशाला दऽ कऽ बनाओल उत्तम पूआकेँ **मलपू/मलपूआ/मालपूआ** कहल जाइत अछि । बिना चीनीक पूआ बना कऽ चीनीक चाशनीमे डूबा देल जाइछ आ पुन: निकालि-निकालि व्यवहार कयल जाइछ । एकरा **रसपू/रसपूआ** कहल जाइत अछि । पूआ बनायब समाप्त भेलापर बासनमे लागल चिक्कस सभकेँ घोरि कऽ लपसी बरकाओल जाइछ । एहि लपसीकेँ **लूआ** कहल जाइछ ।

भोजन ग्रहणसँ सम्बद्ध

सामान्य रूपसँ भोजनकेँ **भानस-भात / भोजन-साजन/ खान-पान** आदिसँ अभिहित कयल जाइछ ।कोनो कालमे अल्प भोजनकेँ **पनिपियाइ/पनपिया/जलपान/ जलखइ/जौर-जलखइ/जलखावा/जलघेरावा/ दानाहुनी/बासि/बसिया** कहल जाइछ । रतुका रान्हल-पकाओल वस्तु भोरमे **बसिया/ बासिकूसि** कहल जाइछ । तेसरा दिन भेने **तेबासि** कहल जाइछ । दुपहरक भोजनकेँ **कलउ/कलौआ/खाइक/मझिनी/मझनी** कहल जाइछ । बेर खसलापर तेसर-चारिम बेरक खायककेँ **बेरहट/बेरहटिया** कहल जाइछ । दिनक अवसानमे साँझक भोजन **संझौआ/बेआलू/जलखै** कहल जाइछ । रातुक भोजन **बिआरी** कहल जाइछ । दिन-रातिक भोजन **कलउ-बिआरी** कहल जाइछ । बाटक भोजन **पाथेय/पाथे** कहल जाइछ । तीर्थयात्राक बटखर्चा खाद्य-सामग्री **सम्मर/सीधा-सम्मर** कहल जाइछ ।

भोजन हेतु जे विभिन्न सामग्री बनैछ तकरा **पाक** कहल जाइछ । पाक बनयबाक प्रक्रिया **भानस/भनसा** कहल जाइछ । भानस कयनिहारकेँ **भनसीया** कहल जाइछ । भानसक स्थान **भनसार/भनसाघर** कहल जाइछ । रोटी इत्यादिकेँ अग्नि द्वारा सिद्ध करबाक क्रिया **पकायब** होइछ । रन्हबा-पकयबाक हेतु अन्नक दैनन्दिन मात्राकेँ

सिधहा/सिदहा/सीधा कहल जाइछ । रान्हल-पकाओल वस्तु **सिद्ध अन्न** कहल जाइत अछि तथा बिना रान्हल **असिद्ध** कहल जाइछ । चूड़ा, पूड़ी आदि असिद्ध अन्न मानल जाइत अछि ।

रान्हल अन्न **अपैत/सखरा/सखरी** मानल जाइत अछि । एकरा छूबि कऽ बिना हाथ धोने दोसर वस्तु नहि छूइल जाइत अछि । यदि छुइल जाइत अछि तँ ओ अशुचिक मूल मानल जाइत अछि ।

भोजन करबाक हेतु जाहि स्थानपर बैसल जाइत अछि ओतऽ बैसबासँ पूर्व जल छीटल जाइत अछि । एकरा पानिक **छिच्चा** कहल जाइत अछि । एहि छिच्चा देल स्थानकेँ हाथसँ हँसोथल जाइत अछि । एकरा **ठाँव/ठाँव बाट** कहल जाइत अछि । बैसबाक हेतु कम्मल वा जे वस्तु देल जाइत अछि से **आसन/आसनी** कहल जाइत अछि । ओना कम्मलकेँ सामान्य आसन मानल जाइत अछि । आसनक स्थानपर काठक चौकोर तकथाकेँ **पीढ़ी/पिरही** कहल जाइत अछि । युग्मशब्दक रूपमे **ठाँव-पीढ़ी** अबैत अछि जे आचार-व्यवहारक द्योतक होइछ । बहुत गोटेक संग-संग खयबाक प्रक्रिया **भोज-भात** कहल जाइछ । भोज-भातमे खढ़क एक डेढ़ बीतक नाम दण्ड आकारक बना कऽ बैसक देल जाइत अछि । एकरा **बीड़ी/बीड़ा** कहल जाइत अछि ।

विशेष संख्यामे पंक्तिबद्ध भऽ भोजन करबाक परिपाटीकेँ **पंघति/पंघत/पाँती** कहल जाइत अछि । ई पाँती जतेक बेर बैसैत अछि ओकरा **खेप** कहल जाइत अछि । एहि खेपकेँ संख्यामे गनल जाइत अछि । जाहि खेपसँ कार्य समाप्त होइछ, तकरा **पछिला खेप/अन्तिम खेप** कहल जाइछ । भोजन करबाक हेतु वस्तु थारी वा पातपर देल जाइत अछि, तकरा **परसब** कहल जाइत अछि । भोजन करबाक हेतु सूचित करैत चढ़ी **परसि दियऽ/काढ़ि दियऽ** कहल जाइत अछि । पुन: परसलापर **परसन** कहल जाइत अछि । ई परसन संख्यामे गनल जाइत अछि । दोहरा कऽ देलापर **दोहरा परसन**, तेसर बेर **तेहरा परसन** कहल जाइत अछि । अनगिनत परसनकेँ **परसन-पर-परसन** कहल जाइत अछि । सम्मिलित भोजन नहि कयला उपरान्त ओहेन व्यक्तिक भोजन जखन ओकरा घर पठा देल जाइत अछि तँ ओकरा **पारस** कहल जाइत अछि । असिद्ध अन्न पठओलापर **उपाति** कहल जाइत अछि ।

भोजन प्रारम्भ करबासँ पूर्व जे अंश भगवानक नामपर फराक निकालि लेल जाइछ ओ **नैवेद्य/नैवेद/नवेद** कहल जाइत अछि । एहि नैवेदकेँ जलसँ सिक्त कयल जाइछ । एकरा **उसरगब** तथा **भोग लगायब** कहल जाइत अछि ।

भोजन प्रारम्भ करबाक संकेतमे **नवेद दियऽ/शुरू करू** कहल जाइत अछि । दालि-भात वा दही-चूड़ाकेँ मिलाओल जाइछ । मिलयबाक एहि क्रियाकेँ **सानब** कहल

जाइछ । सनबाक भाव **सानन** कहल जाइछ । ई सानन संख्यामे गनल जाइत अछि । एक बेर जतेक अंश सानल जाइछ ओ **एक सानन** कहल जाइछ, तहिना दोसर, तेसरक व्यवहार कयल जाइत अछि । दालि आ भातकेँ सानि देला उत्तर ओ **दलिभत्ता** कहबैछ ।

भोजनमे एकसँ अधिक सामग्रीक योग अपेक्षित होइत अछि । अपेक्षाक विपरीत एकहि वस्तुक भोजनमे उपयोग भेलापर ओकरा **छुच्छ/छुच्छे** कहल जाइछ । कोनो जलीय खाद्यपदार्थक मात्रा थोड़ रहलापर भात-रोटी ओहिसँ स्पर्श करा कऽ खयबाक क्रिया **मखायब** होइछ । जे अन्न हाथसँ उठा कऽ मुँहमे देल जाइत अछि ओकर परिमाण विशेषकेँ **कओर/कौर/ढलुस** कहल जाइत अछि ।

कोनो वस्तुकेँ दाँतक माध्यमसँ मेही कऽ देबाक क्रिया **चिबायब** कहल जाइत अछि । जीहसँ सटा कऽ खयबाक क्रियाकेँ **चाटब** कहल जाइछ । कोनो वस्तुक स्वाद परीक्षणार्थ अल्प मात्रामे खयबाक क्रियाकेँ **चीखब** कहल जाइछ । जीहसँ शब्दक संग खयबाक **चटकार** कहल जाइछ । जीह तथा तारुक बीच खाद्य वस्तु राखि ग्रहण करबाक क्रियाकेँ **चूसब** कहल जाइछ ।

कोनो वस्तुकेँ दाँतसँ कटला उत्तर **काटब** कहल जाइत अछि । भरि कओर कऽ दाँतसँ खयबाक क्रिया **हबकब/हबक्का मारब** कहल जाइछ । असमग्र भक्षण करबाक क्रिया **कचरब** कहल जाइछ । दर-दर शब्द पूर्वक भक्षण करबाक क्रियाकेँ **दरदरायब** कहल जाइछ । अनेक वस्तुक पर्याप्त भोजनकेँ **कचरमकूट** कहल जाइछ ।

बड़का-बड़का कओर मारि कऽ खाययकेँ **हपक्का/हपस्सा/हप-हप** कहल जाइछ । भूखल रहने विकल भऽ खयबाक कारणेँ **हपसि** कऽ कहल जाइत अछि । भात-रोटीक संग तरल पदार्थक आधिक्य भेने **सुर-सुर** कहल जाइछ ।

अधलाहो वस्तु इच्छापूर्ण भऽ खयबाक क्रियाकेँ **भकसब/भकोसब** कहल जाइछ आ एहन भोजनकेँ **भकोसा** कहल जाइछ । जलादिक तरल यथावत्-कण्ठ विवरमे पान कऽ जयबाक क्रियाकेँ **घोंटब/गीरब** कहल जाइछ । घट-घट शब्द पूर्वक अधिक पिउबाक क्रिया **घटोसब/घटेसब** कहल जाइछ । कण्ठमे एक बेरक लेल तरल पदार्थकेँ **घोंट** कहल जाइछ । पान करबाक क्रिया **पीअब** कहल जाइछ । तरल पदार्थ जेना पानि, दूध आदि पीअल जाइछ । अनार्द्र **लाबा** प्रभृति मुँहमे फेंकि कऽ खयबाक क्रियाकेँ **फाँकब** कहल जाइछ । एकबेरमे फाँकल जायवला मात्रा **फक्का** होइछ ।

परिपूर्ण रूपेण सुभ्यस्त भऽ भोजन करबाक क्रियाकेँ **भरिपेट/भरिपेट्टा/भरिपेटा/भरिपोख/पूर्ण/अछों/अछओं** कहल जाइछ । आधा पेट भोजन कयला उपरान्त **अधपेट्टा/आधा पेट** कहल जाइछ । खयबाक पात्रमे अन्न नहि छोड़लापर **चाटि-पोछि कऽ खायब** कहल जाइत अछि । कने-कने खयबाक क्रिया **मिचरायब/मिचरा-मिचरा**

कऽ खायब कहल जाइछ । कने खा कऽ छोड़ि देबकेँ **टोङब** कहल जाइछ । एहन छूटल वस्तु **ऐंठ** कहल जाइछ । अनुच्छिष्ट वस्तु **निरैठ** कहल जाइछ । कोनो वस्तु विशेष खाइत-खाइत ओहि वस्तुसँ अनिच्छा होयब **मन उमठब** कहल जाइछ । बेसी खयनिहार **खाधुर** कहबैछ । सशंकित भऽ भोजन कयनिहार **निखुराह** कहबैछ । भोजनोपरान्त अगरयबाक क्रिया भेल **खड़मस्ती** । भोजन जँ अधसिज्जू खराब रहल तँ से **काँच-कोचिल/कुस्वाद/कुभोजन/कुचुर-कुचुर** आदिसँ अभिहित कयल जाइछ । बलपूर्वक मुँहमे प्रवेश करयबाक क्रिया **ठूसब/हूरब** कहल जाइछ । खयबा काल गारा लगबाक क्रिया विशेषण भेल **बकबक** ।

खयबाक अनिच्छाकेँ **अरुचि** कहल जाइछ । अरुचिक कारणेँ खयबाक क्रममे अन्न मुँहमे एम्हरसँ ओम्हर करैत रहैछ आ घोंटाइत नहि छैक, तँ एहना स्थितिकेँ **गलिआयब/लटिआयब/लगिआयब** कहल जाइछ तथा कंठमे अँटकि गेने गरा **लागब/गारा लागब** कहल जाइत अछि । भोजनक क्रममे अन्न कण्ठक नलीमे ऊपर बेगऽर स्थानपर चलि जाइत अछि । एकरा **सरकब** कहल जाइत अछि । जँ अन्न कण्ठसँ बाहर होअक स्थितिमे आबि जाइत अछि तँ एकरा **ओकायब/ओकिआयब** कहल जाइत अछि । यदि बाहर निकलि जाइत अछि तँ **ओक/रद्द बाइन्ति** कहल जाइत अछि । रद्द नहि भेलापर जे बैचैनी रहैछ तकरा **हदमदी** कहल जाइछ । मुँहसँ फेकबाक क्रिया **उगिलब** कहल जाइछ । एहन फेकल वस्तु **उगिला/उगिलल** कहल जाइछ । मुखस्थ वस्तुक वेगपूर्वक उद्गिरण करबाक क्रिया **थुकरब** कहल जाइछ । पेट भरलापर मुँहसँ जे ध्वनि सहित वायु निःसृत होइछ तकरा **ढेकार** कहल जाइछ । ढेकार करबाक क्रिया **ढेकरब** कहल जाइछ । अम्मत ढकारकेँ **अमचुकारी** कहल जाइछ । विशेष भोजनसँ पेटक अन्न फुललापर **अकसक** भऽ जाइछ । अति अकसकयबाक क्रिया **अफरब** कहल जाइछ । पेटमे अन्न नहि पचबाक स्थितिकेँ **अनपच/अपच** कहल जाइछ । भोजनक बाद विसूचिकाजन्य स्थितिकेँ **अनरस** कहल जाइछ ।

यात्रा कालक अल्प भक्षणकेँ **मुँह ऐंठायब** कहल जाइछ ।

कोनो वस्तुक भोजनक आकांक्षा भेने **जीह नमरब/जीह लरलर करब** कहल जाइछ । एहन लोककेँ **जिहलाह/जिहलाहि/जिहुलाह/जिहुलाहि** कहल जाइछ । कोनो वस्तुक प्रति विशेष आकांक्षा भऽ गेलापर **जी भरछब**, जीहमे पानि आबि गेलापर **जीह पनिछायब** कहल जाइछ । मुँहसँ पानि निकललापर **लेर चुअब/लेर टपकब** कहल जाइछ ।

पेट भरलापर खयबाक क्रिया बन्द कऽ देल जाइछ अछि । एकरा **हाथ बारब** कहल जाइत अछि । तरहत्थीपर जल लऽ पीअल जाइत अछि भोजनान्तमे एकरा **चुरू लेब** कहल जाइत अछि । एकर पश्चात् जलसँ हाथ-मुँहकेँ साफ कयल जाइत अछि । एकरा **अँचायब/आचमन करब** कहल जाइत अछि । जल मुँहमे भरि कऽ वेगपूर्वक बाहर

फेकबाक क्रिया **कुरुड़ करब** कहल जाइछ । युग्म शब्दक रूपमे **कुरुड़-आचमन** कहल जाइछ । नहि धोयलापर **ऐंठे हाथ-ऐंठे मुँह** कहल जाइछ । आचमन करबाकस्थान **अँचौना** कहल जाइछ । ऐंठ धोयबाक स्थान ऐंठार कहल जाइछ । जलमिश्रित विशेष ऐंठकें ऐंठ-कटार कहल जाइछ ।

दाँतमे खधोड़ि रहबाक कारणेँ खायल वस्तु अँटकि जाइछ जकरा बहार करबाक हेतु कठकीक प्रयोग कयल जाइछ । एकरा **खड़िका** कहल जाइछ । एकर पश्चात् सुपारी आदि खायल जाइछ । एकरा **मुखशुद्धि** कहल जाइछ ।

भोजनोपरान्त जे अन्न थारी वा पातपर बचि जाइछ, वा मुँहसँ सम्पर्कित वस्तु तकरा **ऐंठ/ऐंठकुठि** कहल जाइछ । बासनबला **निरैंठ** कहल जाइछ । भोज-भातमे विशेष मात्रामे पातपर अन्न छोड़ि देलापर **छूतब/छुतायब/छुतिआयब** कहल जाइछ ।

भोजनोपरान्त एक कओर मोताबिक ऐंठ कुकुरकें भोजन देल जाइछ, एकरा **कओरा/कारा** कहल जाइछ । बच्चा कोनो वस्तु देखि लैछ आ से प्राप्त नहि भेलापर ओकरा **मुँहठा होयब/निठोहर** कहल जाइछ ।

कोनो वस्तु खयबाक समयमे जँ ओ वस्तु मुँहसँ खसि पड़ैछ । एना खसबाक क्रिया ककरो **हँक्क लागब** कहल जाइछ । एकक खाइत काल दोसराक खयबाक आकांक्षा **हक लगायब** कहल जाइछ ।

विशेष अवसरक भोजन

विशेष अवसरपर समूहमे बैसि भोजन करबाक प्रक्रिया **भोज** होइछ । साधु-संन्यासीक भोज **भण्डारा** कहल जाइछ । गामक भोजकें **गौंआरी भोज** कहल जाइछ । गामक लगपास गामक व्यक्तिकें नोति कऽ खोअयबाक भोजकें **जबाही/जेबारी/जयबारी** कहल जाइछ । सभा भरिक भोजकें **सभैती भोज** कहल जाइछ । विभिन्न वर्णक भोजकें **बरबरना/बरहबरना** भोज कहल जाइछ । अन्य जाति मध्य ब्राह्मणकें खोअयबाक परिपाटी **बभनभोज** कहल जाइछ । गाछी वा अन्य स्थानपर पाक बनाय खयबाक प्रचलनकें **वनभोज/भतकुलिया/भतकुल्हिया** कहल जाइछ । अनेक व्यक्तिक संग मिलि अल्पाहार करबाक आधुनिक भोजकें **प्रीतिभोज** कहल जाइछ । चाहक व्यवहारक कारणेँ आधुनिक प्रीतिभोज टी-पार्टीक रूपेँ जानल जाइछ ।

भोज कयनिहार व्यक्ति **भोजी/भोजैत** कहबैत अछि । भोजन देबासँ पूर्व सूचना देबाक परिपाटी अछि जकरा **नोत/न्योता/न्योत/निमन्त्रण** कहल जाइछ । एहि क्रममे घर पाछू एक व्यक्तिक निमन्त्रणकें **घरजाना** कहल जाइछ । परिवारक पुरुष वर्गक निमन्त्रणकें **पुरखेदहादिया/पुरुखेक दफा** कहल जाइछ । सम्पूर्ण परिवारक निमन्त्रणकें **स्त्रिगणे-पुरूषे/सबजाना** नोत कहल जाइछ । निमन्त्रित व्यक्तिकें भोजनार्थ बजयबाक विधिकें **बिझो/बिजाहो** कहल जाइछ ।

मिथिलामे पूर्वकालहिसँ अतिथि सत्कारक प्रधानता रहल अछि । एतऽ वर तथा बरियातीकें विशेष आयोजनक संग भोजन कराओल जाइत अछि । मेही चाउरक भात थारीमे नीक जकाँ एकत्रित कऽ गोल पिण्ड आकारक बनाओल जाइछ । एकरा **सौंठब** कहल जाइछ । भारो-दोर सौंठल जाइछ । यथासाध्य नानाविध व्यञ्जन एकत्रित कऽ थारीक चारू कात सजा कऽ राखल जाइछ । एहि प्रकारेँ सजयबाक क्रिया **सँचार** कहल जाइत अछि । एहन विधानसँ योग, उचिती गीत गाबि वर तथा समधि आदिकें सिद्ध अन्न खोआओल जाइत अछि । एकरा **सौजन** कहल जाइछ । बरियातक भोरुका जलखइकें **बिखजी** कहल जाइछ । बरियातीकें भात खोअयबाक प्रथा **भतखइ** कहल जाइछ ।

विवाहक चारिम दिन चतुर्थीक रातिमे वरक संग सारवर्गकें खोआओल जाइत अछि । एहन सम्मिलित भोजनकें **सौजन/सौजनियाँ भोज** कहल जाइत अछि । भोजनक असिद्ध अन्न रहने **असौजनियाँ** कहल जाइत अछि ।

विवाहमे लोकसँ नुका कऽ वरकें खोआओल जाइत अछि । एहन भोजनकें **चोरौका** कहल जाइछ । विवाहोपरान्त चतुर्थीसँ पूर्व वर-कनियाँकें एक ठाम बैसा कऽ तरकें खीर खोआओल जाइत अछि । एकरा **महुअक/मधुक** कहल जाइछ ।

बेटी-पुतहुक नैहर-सासुर जयबाक पूर्व अथवा नैहर-सासुर अयलापर दोसराक आङनसँ भोजन भेटैछ । एहन भोजनकें **खायक/खाएक/खायक-पियक** कहल जाइछ अछि ।

अवसर विशेषपर मित्र, सम्बन्धी ओ देयादवाद आदिक बीच बिलहल जायवला विशिष्ट खाद्य पदार्थ **बैन/बयन/बयन-तिहार** कहबैछ । उपनयनक अवसरपर बरुआकें देल जायवला अन्नादि-मिष्टान **भीख** कहबैछ । उपनयन-विवाह आदिमे खाद्यान्न मँगबाक एकटा विशिष्ट विध **बिलौकी** कहबैछ । सामा भसयबाक अवसरपर बहिन द्वारा भाइक धोतीक फाँड़मे खाद्य वस्तु देबाक क्रिया **फाँपड़ भरब** कहल जाइछ । कोनो व्रत-अनुष्ठानसँ एक दिन पूर्व कयल जायवला निरामिष भोजनकें **अरबा-अरबाइन** कहल जाइछ । देवताक भाओक समय चढ़ाओल जायवला दूधक डार **छाँकी** कहबैछ ।

गर्भवती स्त्रीकें विधिवत् जे खीर, गुलगुल्ला आदि देल जाइत अछि तकरा **सधोरि/सउखक सधोरि** कहल जाइत अछि । व्रतक पश्चात् प्रथम भोजनकें **पारन** कहल जाइछ । छठि पावनिसँ एक दिन पूर्व पबनैतिन द्वारा दिनमे व्रत ओ रातिमे एक बेर भोजन करब **खरना** कहल जाइछ ।

जितिया पावनिमे रात्र्यन्तमे खयबाक प्रचलन अछि । एकरा **ओठघन/ओठङन/ओङठन/सरगही** कहल जाइत अछि ।

कोनो यज्ञ अथवा अन्य अवसरक उपरान्त सरसम्बन्धी ओतऽ जे अंश भोजनक हेतु पठाओल जाइत अछि ओकरा **भोजनी** कहल जाइत अछि । अवसर विशेषपर बन्धु-बान्धव द्वारा पठाओल अन्नादि **भार/भारदोर** कहल जाइछ ।

मुइलाक पश्चात एकादशाहसँ पूर्व दोसराक आङनसँ भोजन देबाक परिपाटी छैक । एकरा **बिगेसा** कहल जाइत अछि । वार्षिक श्राद्ध वा अन्य अवसरपर सूर्यास्तसँ पूर्व भोजन कयल जाइछ । एकरा **एकभुक्त/एकान्त/एकसंझा** कहल जाइछ । कतोक वर्गमे मृतकक अन्तिम क्रिया कऽ श्मशानसँ घुरलाक बाद प्रथम खाद्यक रूपमे दूध ग्रहण कयल जाइछ जकरा **दुधमुँह** कहल जाइछ । मृतक घरक **भोज्यान्न** मरकओर कहबैछ ।

पावनिक रूपमे **छमासिया** अथवा **बरहमसिया** रवि होइछ । ओहि दिन कखनो एके बेर नियमानुसार **अनोन** भोजन कयल जाइछ । एकरो **एकसंझा** कहल जाइछ । एक्के खाद्य सामग्री दुनू साँझ खयला उत्तर **दोसंझी** कहल जाइछ ।

प्रत्यंशकेँ **बखरा** कहल जाइछ । पावनिक बखरा **पबनोट/पबनौट/पबनउट** कहल जाइछ । दुखिताहक भोजन **पऽथ** कहल जाइछ । जगन्नाथपुरीमे मन्दिरक अङनैमे रान्हल भात प्रसादक रूपमे कीनल जाइछ । एकरा **अँटका** कहल जाइछ । नव अन्न प्रथम बेर भक्षण हेतु विधिपूर्वक धानक चूड़ा कुटि अग्नि देवताकेँ चढ़ाओल जाइत अछि । तत्पश्चात् बाले-बच्चे प्रसाद रूपमे खाइत अछि । एकरा **लवान/नवान/नेमान/नवान्न** कहल जाइछ ।

बच्चाक प्रथम बेर अन्न खयबाक संस्कारकेँ **अनपरासन/अन्नप्राशन** कहल जाइछ । भार-दोर अयला उपरान्त दोसराक आङन बाँटल खाद्यकेँ **बयन/बएन** कहल जाइछ । जतऽसँ भार आयल रहैछ, ओतऽ किछु अंश मे वैह खाद्य सामग्री सब भरिया द्वारा पठाओल जाइछ । एहन पठाओल अंश **बयन फेरुआ** कहल जाइछ ।

अवसर विशेषपर ब्राह्मणकेँ भोजन कराओल जाइछ, जकरा **ब्राह्मण-भोजन** कहल जाइछ । कुमारि कन्याक भोजन **कुमारि खोआयब** कहल जाइछ । कुमारि-ब्राह्मणक सम्मिलित भोजन **कुमारि-ब्राह्मण खोआयब** कहल जाइछ । मिथिलामे ब्राह्मण भोजन तथा कुमारि भोजनक विशिष्टता अछि । कुमार बच्चाक भोजन **भैरव भोजन** मानल जाइछ जितिया पावनि दिन ऐहब भोजनकेँ **पितरानि/पितराइनि खोआयब** कहल जाइछ । कनियाक पावनि पुजलाक पश्चात् ओकर भोजनक समयमे पाँचटा ऐहबकेँ भोजन करयबाक परिपाटीकेँ **सङ बैसब** कहल जाइछ । खयबा योग्य वस्तु **भक्ष्य** कहल जाइछ । अखाद्य वस्तु **अभक्ष** कहल जाइछ ।

सभ प्रकारक खाद्य भक्षण कयनिहार व्यक्तिकेँ **सर्वभक्षी** कहल जाइत अछि । माछ-मांसु खायवलाकेँ **मांसाहारी/साकठ/साकट** कहल जाइत । जे माछ-मासु नहि

खाइछ तकरा **शकाहारी/वैष्णव** कहल जाइछ । जे जन्मेसँ माछक स्पर्शो नहि कयने रहैछ तकरा **दुद्धा वैष्णव** कहल जाइछ । माछक प्रति आसक्ति रखनिहारकेँ **मछगिद्ध/मछगिद्धा** कहल जाइछ । फल तथा दूधपर आधारित रहबाकेँ **फलहार/फलाहार/फलहारी** कहल जाइछ । किछु नहि खयला उत्तर **निराधार** कहल जाइछ । जावत धरि किछु नहि खयने रहैछ तावत् धरि **बासिमुँह/भुखल** कहल जाइछ । नीक वस्तु खायवलाकेँ **चिकनकर/चिकनफट्ट** कहल जाइछ । खयबापर अधिक ध्यान रखनिहारकेँ **पेटू** कहल जाइछ । अधिक खयनिहारकेँ **खाधुर/पेटाह/पेटाहि/पेटमधवा** कहल जाइछ । कतबो खयला उत्तर पुनः खयनिहारकेँ **पेटकोनाह/पेटकनाह/पेटकनाहि** कहल जाइछ । बच्चाकेँ एक प्रकारक रोग होइछ **ममरखा** जाहिमे ओ विशेष खाइछ । बच्चाक अधिक खयबाक प्रवृत्तिकेँ **खौंखी** कहल जाइछ । विशेष भूख लगला उत्तर बेचैन भऽ गेलापर **डाँड-डाँड करब/भुक्खे आन्हर होयब** कहल जाइछ । अपमानित भेलो उत्तर खाय लेल दोसराक ओतऽ बैसल रहबकेँ **पेट ओरब** कहल जाइछ । एही अर्थमे **पतचट्टा** कहल जाइछ । जठरानलक ज्वालाकेँ **भूख** कहल जाइछ । पेट भरलापर खयबाक अनिच्छा होयबाक कारणेँ **अभुक्ख** कहल जाइछ । दीन-हीन वर्गकेँ **भुक्खा/भुक्खड़/भुक्खा-दुक्खा** कहल जाइछ ।

कोनो कारणे समाजमे एक दोसराक ओतऽसँ खानपान बन्द भऽ गेलापर **भतबरौअलि/भतबरी/बरा-बराऔअलि** कहल जाइछ । भात खयबाक आदान-प्रदानक व्यवहारकेँ **भतखइ** कहल जाइछ ।

कोनो वस्तु नियमित रूपेँ नहि खयलापर **बारब** शब्दक प्रयोग होइछ । नोन, अन्न तथा माछक बारब कहल जाइछ- **नोन बारब, माछ बारब, अन्न बारब** ।

स्वाद

नोन देल खाद्य सामग्री **नोनगर/नुनगर** कहल जाइछ । जाहि वस्तुमे नोन नहि देल जाइछ तकरा **अनोन/अनून/बिना नूनक** कहल जाइछ । कम नोन पड़ने **मधनोन /मदनोन** कहल जाइछ तथा विशेष नोन पड़ि गेने **अतिख/खरुछाह/खौरछाह/खौरछाइन/खरुछाइन/नुनजहुरी/नोनछराइन** कहल जाइछ ।

तेलमे छानल वस्तु **तेलही** तथा घीवक बनल वस्तु **घिवही** कहल जाइछ । तेलक मात्रा अधिक रहलापर स्वादक विकृति **तेलाइन/तेलगर** कहल जाइछ । कम खाद्य सामग्री तथा बेसी तेलक मात्रा रहैछ तँ एकरा **छह-छह** कहल जाइछ । कोनो वस्तु बनओलाक पश्चात् जे तेल लोहियामे लागल रहैछ तँ एहन तेल लागल बासन **तेलाह** कहल जाइछ । तेल जरि कऽ लोहियामे पकड़ि लैछ तँ **तेलचिटाह/तेलचिटाइन** बासन कहल जाइछ ।

वस्तुक अनुपातमे तेल वा घी लोहियामे ढारि कऽ गर्म कयल जाइछ । जखन तेलमे धुँआसन बहार होमऽ लगैछ तँ तेलक एहि स्थितिकेँ **कड़कब** कहल जाइछ । तेल कड़कलाक पश्चात् जे वस्तु लोहियामे दऽ कऽ सुसिद्ध कयल जाइछ तकरा **छनुआ** कहल जाइछ आ छनुआ बनयबाक क्रिया **छानब** होइछ । पिठार, बेसन, आदिमे लेपटा कऽ छनला उत्तर **तरुआ/चक्का** । तेलक मात्रा ओतबे देल जाइछ जाहिसँ वस्तु सिद्ध भऽ जाय । तँ बनल वस्तु **भुजिया/भुजुआ** कहल जाइछ । तेलक मात्रा कम रहलापर बनल वस्तु **मखुआ/मखौआ** कहल जाइछ ।

व्यञ्जन लोहियामे देबासँ पूर्व मशालाक अल्प मात्रा तथा तेल लोहियामे देल जाइछ । एकरा **फोड़न/तेलफोड़न** कहल जाइछ । विशेष तैलादिमे रन्हबाक प्रक्रिया **छनन-मनन/छनमन** कहल जाइछ । तेल-फोड़न दऽ कऽ व्यञ्जनकेँ भुजला उपरान्त ओहिमे मसल्ला दऽ कऽ भुजबाक क्रिया **झोलब** होइछ । झोललाक पश्चात् अन्दाजसँ जल, नोन, मसल्लाक मिश्रण **झोर** कहल जाइछ । झोरसँ युक्त करबाक क्रिया **झोरायब** होइछ । **बड़ी** तथा **माछमे** दालिक मात्रामे जल दऽ कऽ झोरयबाक क्रिया **जलायब/झोरायब** होइछ । एहि प्रक्रियासँ बनल तरकारी **रसदार/रसगर** कहल जाइछ । विशेष रस देल वस्तु **झोरगर** कहल जाइछ । जखन जलक मात्रा एतबे रहैछ जे तरकारी आ रस मिलल रहैछ, तँ एहन व्यञ्जन **लटपट** कहल जाइछ तथा रस एकदम सुखा गेलापर **सिट्ठ** कहल जाइछ । रसकेँ सुखा कऽ बनओलापर व्यंजन **बैसौआ/बैठौआ** कहल जाइछ । मसल्लाक मात्रा विशेष रहलापर जे स्वाद बनैछ तकरा **झांस** कहल जाइछ । एहन स्वादसँ युक्त तरकारी **झाँसिगर** कहल जाइछ। अत्यन्त स्वादिष्ट तरकारी **चहटगर** कहल जाइछ । हरदिक मात्रा विशेष रहलापर **हरदियानि/हरदियाइन/कचराइन** कहल जाइछ । अत्यल्प तैलादिसँ धुआँ बहकाय व्यञ्जन रन्हबाक क्रियाकेँ **झाँसब** कहल जाइछ । एहि प्रकारेँ बनल तरकारीक स्वादकेँ **झाँसाइन** कहल जाइछ । आँच ठीकसँ नहि लगलाक कारणेँ धुआँपर बनल वस्तुक उत्पन्न स्वादकेँ **धुआँइन** कहल जाइछ । एहने स्थितिमे बनल सामग्री आधा कठोर भऽ जाइछ जे पुनः सिझाओल जाइछ । एहने वस्तुकेँ **उसिझल/सोआयल** कहल जाइछ ।

एहन खाद्य पदार्थ जकरा खयला उत्तर मुँहमे काटऽ लगैछ, कण्ठ कुचकुचाय लगैछ आ बेचैनी अवस्था आनि दैछ एहि गुणकेँ **कबकब** कहल जाइछ । ओल आदिक भक्षणसँ विकार विशेष युक्त होयब **कबकबायब** होइछ । ओल, अरिकञ्च आदिक सम्बन्धजन्य विकारकेँ **कबकबी** कहल जाइछ । अंश मात्र कबकब रहने **रिबरिब** तथा एकर भाव **रिब-रिबी** कहल जाइछ । गन्ध विशेष युक्त वस्तु **कठाइन/कठाइनि** कहल जाइछ । काँसक बासनमे आम्लिक वस्तु रखलापर ओहिमे जे विकार उत्पन्न होइछ । तकरा **कसानि/अतिखानि/ अतिखाइन/आतिश/अतिखैन/अकथैन** कहल जाइछ ।

तहिना पित्तरक बासनमे रखलापर विकारजन्य वस्तुक स्वाद **पितराइनि** कहल जाइछ । मिरचाइ वा मिरचाइ देल व्यंजन खयलापर मुँहमे जेना आगिक लुत्ती जकाँ दागि दैछ, एहन स्वादकेँ **कड़ू** कहल जाइछ । कड़ू लगलापर ठोर गोल कऽ सकार ध्वन सहित बसात बहरायब **सुसुआयब** कहल जाइछ ।

तीत

नीम वा करैलक स्वादकेँ **तीत** कहल जाइछ । अंश मात्रामे तीत रहने **तितौन/तिताइन/तितगर** कहल जाइछ । विशेष मात्रामे तीत रहलापर **अक्कत तीत/हरहर नीम** कहल जाइछ ।

मसलगर वस्तु खयबाक इच्छा **चटकार** होइछ । एहन वस्तु खायवलाकेँ **चटकारी** कहल जाइछ ।

गूड़-चिन्नीक स्वाद **मीठ/मिट्ठ** कहल जाइछ । मीठ स्वादसँ युक्त वस्तु **मिठगर** कहबैछ । कम मिट्ठ वस्तु **मिठौन/मिठाँस/मिठआँस** कहल जाइछ । कोनो खाद्य सामग्रीमे पानिक मात्रा विशेष रहलापर **पनिसोह** कहल जाइछ ।

आम्लिक खाद्य वस्तु **अम्मत/खट्टा** कहल जाइछ । विशेष खट्टा रहलापर **अम्मत-चुक्क** कहल जाइछ । व्यञ्जनादिमे विशेष आमिल पड़लापर जे स्वाद होइछ तकरा **अमिजिहुल** कहल जाइछ । एकर विकासक रूप **अमिसिहुल** होइछ । आमिल देबाक क्रिया **अमिलायब** होइछ । आमिल देल वस्तु **अमिलाओल/अमिलगर/अमिलोह** कहल जाइछ ।

एकदम खट्टा प्रभेदक वस्तु **अमतौआ** कहल जाइछ । किञ्चित अम्मत वस्तु **अमताह** होइछ । अम्मत होयबाक क्रिया **अमतायब** कहल जाइछ । एकर स्वादकेँ **अमतानि/अमताइन** कहल जाइछ । खट्टा-मिट्ठाक योगसँ निर्मित स्वाद **खटमधुर/खटरस** कहल जाइछ । किञ्चित खट्टा रहने **खटतुरुस** कहल जाइछ ।

तत्काल रान्हल वस्तु **टटका** कहल जाइछ । तापयुक्त रहने वस्तु **सप्पत/गरमागरम/जरोपरो** कहल जाइछ । विशेष गर्म रहने **लहरले** कहल जाइछ । भाफ बहराइत वस्तुकेँ **भफायल** कहल जाइछ । भाफ समाप्त भऽ गेलापर **सेरायल** कहल जाइछ । हवा द्वारा ठण्ढयबाक अथवा स्वयं ठंढा होयबाक क्रिया **सेरायब** होइछ । सेरा गेलाक विशेष कालक बाद वस्तुकेँ **सेराकऽ पानि होयब** कहल जाइछ ।

रातुक रान्हल-पकाओल वस्तु भोर भेने **बासि-बसिया/बासि-कूसि** कहल जाइछ । एकर स्वाद अथवा गन्ध जे बहराइछ से **बसिआइन** कहल जाइछ ।

जे वस्तु अपन समयसँ विशेष दिन धरि रहि जाइछ, ओहिमे विकृति उत्पन्न भऽ

जाइछ, जाहिसँ ओ अपन पूर्व रूप वा स्थितिमे नहि रहि जाइछ । एहन वस्तु **सड़ल** कहल जाइछ । अंश मात्रामे सड़ल रहलापर **सड़ाइन** कहल जाइछ । एहिसँ उत्पन्न गन्ध **महकब** कहल जाइछ । एकदम गलि गेलापर **गलल-पचल** कहल जाइछ । एहन अवस्थाक गन्धकेँ **भभकब** कहल जाइछ । नीक गन्धकेँ **गमकब** कहल जाइछ । भूजा आदिमे विशेषताप लगल पर ने विशिष्ट सुगन्ध उत्पन्न होइछ तकरा **सोन्ह** कहल जाइछ । एहन गन्धयुक्त खाद्य **सोन्हगर** कहल जाइछ ।

दही आदिमे कालक आधिक्यजन्य उपरका विकारकेँ **फुफड़ी** कहल जाइछ । एहि प्रकारक विकार होयबाक क्रियाकेँ **फुफड़ब/फुफुड़िआयब/फफड़िआयब** कहल जाइछ ।

दूधक दोषसँ उत्पन्न दही-दूधक गन्ध विशेषकेँ **फोकड़ाइनि/फोकड़ानि** कहल जाइछ ।

जलगर वस्तु रन्हबाक क्रममे जे अंश बासनमे पकड़ि लैछ ताहिसँ जे गन्ध निकलैछ से **डढ़ाइन/डढ़हाइन** कहल जाइछ । दूधक जरलाहा अंश डाढ़ी कहल जाइछ । जरल दूधक गन्ध भेल **डढ़ाइन** ।

रोटी तथा पकमान आदि विशेष दिन रहलापर कठोर भऽ जाइछ जे खयबामे कठिन होइछ । एहन वस्तु **टाँट/टटायल** कहल जाइछ ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे आधुनिक मैथिली भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक आयाम अत्यन्त विस्तृत अछि । नित्य नवीन उपकरण, अन्नादिक उत्पादन तथा भोजन विन्यासक क्षेत्र, व्यक्ति एवं आचारक निरन्तर गतिशील परिवेशक कारणेँ एकर शब्दावलीमे निरन्तर परिवर्द्धन भऽ रहल अछि । मान्य रुचिक अत्यन्त व्यापक स्थितिक कारणेँ आधुनिक मैथिली भाषामे गृहीत शब्दावली निरन्तर उन्मुख होइत देखि पड़ैछ । तथापि प्राचीन पारम्परिक शब्द सेहो सर्वथा अवहेलित नहि भेल अछि । एहि शब्दावलीक क्षेत्र ओ कोष सर्वथा सम्पुष्ट अछि ।

आधुनिक जीवनक जटिलताक संगहि मैथिल भोजन-परम्परा सेहो जटिल भऽ गेल अछि । यद्यपि मैथिल भोजन पद्धतिमे क्षेत्रीयताक अक्षुण्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होइछ, मुदा काल, क्षेत्र ओ परिवेशक परिवर्तनशीलताक कारणेँ मैथिल भोजन पद्धति संक्रमणशील अछि । स्वभावतः आधुनिक मैथिली भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावली क्षेत्रीयताक सीमाकेँ नँघने आ रहल अछि । पारम्परिक सांस्कृतिक विनिमयसँ मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली निरन्तर परिवर्द्धित होइत रहल अछि ।

आधुनिक मैथिली भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अधिकांश तँ तत्सम रूपमे वा विकारयुक्त भऽ प्रचलिते अछि । रुचि, भोजन, व्यापार ओ उपकरणमे

होइत युगीन परिवर्तनक कारणेँ अनेक नवो शब्द उद्भूत भेल अछि, भाषिक संक्रमण द्वारा आबि मैथिलीमे मूले रूपमे वा विकृत भऽ पचि गेल अछि।

सन्दर्भ निर्देश :-

1. सिद्ध साहित्य-हाड़ीत भात नहि नित आवेशी
2. प्रसिद्ध कहबी: जाड़ बड़ जाड़, गोसाञि बड़ पापी तपले खिचड़ि खुआ दें गे काकी ।
3. वर्णरत्नाकर, पृ.-13
4. कृषक जीवन सम्बन्धी व्रजभाषा शब्दावली, भाग-1, पृ.-264
5. प्रसिद्ध कहबी :

   (क) बुड़िबक वरकेँ कुर्थीक अच्छत
6. प्रसिद्ध कहबी- एक तँ करैला अपने तीत दोसर चढ़ल नीमक भीत ।
7. वर्णरत्नाकर, पृ.-69
8. तत्रैव, पृ.-12
9. तत्रैव, पृ.-13
10. प्रसिद्ध कहबी- (क) चीनीक लड्डू टेढ़ो मीठ

    (ख) दिल्लीक लड्डू जेहो खाय सेहो पछताय, जे नहि खाय सेहो पछताय ।

    (ग) दुनू हाथ लड्डू ।

    (घ) लड्डू लड़य, झिल्ली झड़य ।
11. मि. भा. कोष पृ.-94
12. वर्णरत्नाकर
13. कृषक जीवन सम्बन्धी व्रजभाषा शब्दावली भाग- 1, पृ. 271
14. बिहार पी.ल. पृ.-353
15. वर्णरत्नाकर, पृ.-13
16. तत्रैव, पृ.-69
17. वर्णरत्नाकर, पृ.-13 ओ 69
18. मि.भा. कोष
19. वर्णरत्नाकर, पृ.-13

●

दशम अध्याय

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि-विचार

मैथिली ध्वनि-समूहपर ग्रियर्सन,[1] दीनबन्धुझा,[2] सुभद्रझा,[3] रमानाथझा[4] ओ गोविन्दझा[5] विचार कयने छथि । भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि समूहमे स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनि यथावत् देखल जाइत अछि ।

स्वर ध्वनि

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ (अइ), ओ, औ, (अउ), (अए-आए)** एवं **(अओ-आओ)**[6] स्वर ध्वनि श्रुतिगोचर होइछ जाहिमे प्रत्येक सानुनासिक ओ निरनुनासिक भेल करैछ ।

समस्त स्वर ध्वनि शब्दक आदिमे स्वतंत्र रूपेँ, शब्दक मध्य ओ अंतमे स्वरक अनुवर्त्ती अथवा व्यञ्जनक संगे श्रुतिगोचर होइछ । मुदा अ, ई तथा ऊ ध्वनि एकर अपवाद अछि । अ ध्वनि शब्दक अन्तमे व्यञ्जनक संग श्रुतिगोचर होइछ । ई ध्वनि शब्दमे कतहु स्वतंत्र रूपेँ श्रुतिगोचर नहि होइछ मुदा मध्य ओ अन्तमे व्यञ्जनक संगे श्रुतिगोचर होइछ । ऊ ध्वनि शब्दक आदिमे तँ स्वतंत्र रूपेँ श्रुतिगोचर होइछ मुदा मध्य ओ अन्तमे व्यञ्जन ध्वनिक संगहि श्रुतिगोचर होइछ ।

ह्रस्वतर स्वर

उच्चारणक दृष्टिएँ मैथिलीक समस्त एकल स्वर, अ, ई, उ, ए, ऐ (अए), ओ, औ (अउ) ह्रस्व तथा ह्रस्वतर स्वरूपमे श्रुतिगोचर होइछ । तथा आ दीर्घ स्वर एवं ऐ, औ संयुक्त स्वर सेहो ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरूपक श्रुतिगोचर होइछ । यथा द्रष्टव्य-

चैल- चैलची, चैलसीरी,

पौआ- पौआही

कठौत- कठौतिया,

पैच- पैचका

अगरैल- अगरैलही ।

व्यञ्जन ध्वनि

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे निम्नलिखित व्यञ्जन ध्वनि भेटैत अछि-

क् ख् ग् घ् ङ ड़्ह्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ड़् ढ़् ण्

त् थ् द् ध् न् न्ह्

प् फ् ब् भ् म् म्ह्

य् र् ल् ल्ह् व् स् ह् तथा अनुस्वार

1. दीर्घ ई शब्दक आदि मध्य ओ अन्तममे कतहु स्वतन्त्र प्रयुक्त नहि होइछ ।
2. ऊ ध्वनि, उ ध्वनिक **किञ्चित परिवर्त्तित** रूपमे उच्चरित होइछ । ई ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ । क्वचित् यथा- ऊखि । शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्वतन्त्ररूपमे कथमपि नहि ।
3. ङ, ड़्ह्, ञ, न्ह् म्ह् तथा ल्ह् ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ, मुदा मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइछ ।
4. ढ़ ध्वनिक उच्चारण ड़ ध्वनिक महाप्राण स्वरूपक (ड़्+ह) होइछ । ईहो ध्वनि शब्दक आदिमे नहि पाओल जाइछ । ड़ तथा ढ़ ध्वनि शब्दक मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइछ ।
5. ण् ध्वनिक अस्तित्व विवादास्पद अछि । यथा- माँड़ ओ माण, कूँड़ा ओ कूणा, पेड़ा ओ पेंणा, अड़ाँची ओ अणाची, भोंड़ा ओ भोणा इत्यादि ।
6. य् तथा व ध्वनि शब्दमे अपश्रुतिक रूपमे श्रुतुगोचर होइछ । इ, ई, ए ध्वनिक परवर्त्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति य तथा उ, ओ ध्वनिक अनुवर्ती अ, आ ध्वनिक अपश्रुति व श्रुतिगोचर होइछ जेना-

गूआ	- गूवा	खोआ	- खोवा
कोआ	- कोवा	दुधिआ	- दुधिया
सिलेटिआ	- सिलेटिया	पटुआ	- पटुवा
लोहिआ	- लोहिया	थरिआ	- थरिया

बटुआ	- बटुवा	पुछिआ	- पुछिया
बिड़िआ	- बिड़िया	चटुआ	- चटुवा
खोइआ	- खोइया	बतिआ	- बतिया
दौअति	- दौयति	परोड़िआ	- परोड़िया

7. सानुनासिक वर्णक अनुवर्त्ती अ वा सानुनासिक यँ, अक रूपमे उच्चरित होइत बूझि पड़ैछ, यथा–

चोइआँ	- चोइयाँ	-चोइञा
कोनिआँ	- कोनियाँ	- कोनिञा
टुइआँ	- टुइयाँ	- टुइञा
तमिआँ	- तमियाँ	- तमिञा
चिनिआँ	- चिनियाँ	- चिनिञा
अमनिआँ	- अमनियाँ	- अमनिञा

8. अनुनासिक वर्णक अनुवर्त्ती गके ङ भऽ जाइछ, यथा –

रंग - रङ
चेंगा - चेङा
टेंगरा - टेङरा
मूंग - मूङ
लौंग - लौङ

स्वर गुच्छ

मैथिली स्वर गुच्छपर विस्तृत विवेचन गोविन्दझा कयने छथि ।[1] ऐ (अइ), औ (अउ), अए/आए तथा अओ/आओ ध्वनि मैथिलीमे मौलिक अथवा संयुक्त स्वर थिक। तेँ एकरा सभकेँ स्वरगुच्छ मध्य परिगणित नहि कयल गेल अछि । ताहिसँ इतर निम्नलिखित स्वरगुच्छ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे भेटैत अछि । जेना–

अउआ/औआ	- पौआ
अइ	- सेबइ, मकइ, रइ, मुरइ
अइआ/ऐआ	- समैआ, समइआ
आइ	- केलाइ, जमाइन, पितराइन, कसाइन
आउ	- महाउर, घोरजाउर, कराउर,
इआ	- बीआ, देसरिआ, कुटिया, पिसिया, सतपुतिआ
इउ	- घिउरा, घिउ
इआइ	- पनपिआइ
इऔ	- बिऔरी, तिसिऔरी
उअ	- महुअक
उआ	- सुसुआयब, मुभुआयब,
ऊआ	- पूआ,
ओइ	- गोइठी (छोटगोइठा), धोइन,
ओइआ	- लोइआ, कोइआ, खोइआ

व्यञ्जन गुच्छ

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे व्यञ्जन गुच्छक दुइ गोट कोटि देखि पड़ैत अछि ।

(क) समवर्ण व्यञ्जन गुच्छ यथा–

क्क -	फक्का, धक्का, चुक्क, चिक्कस, मनक्का
ग्ग -	दग्गी
च्च -	खिच्चा, इच्चा, मुच्चा
ज्ज -	सुज्जी
ट्ट -	कुट्टी, खुट्टी, लट्टा, बुट्टी, खट्टा, मट्टर
त्त -	पत्ता, जित्ता, पुत्ती, दलिभत्ता
न्न -	चुन्ना, भुन्ना, बरगुन्ना ।
प्प -	खप्पा, झप्पा
ब्ब -	मोरब्बा
म्म -	अम्मत
र्र -	दुर्री, भुर्रा
ल्ल -	भुल्ला, ढल्ला, फल्ली, झिल्ली
स्स -	उस्सठ, भुस्सा, गस्सल,

एहि तरहेँ समवर्ण व्यञ्जन गुच्छ सामान्यतः वर्गक अल्पप्राण तथा सा वर्णहिटामे देखि पड़ैछ ।

(ख) विषम वर्ण व्यञ्जन गुच्छ -

विषमवर्ण व्यञ्जन गुच्छ दुइ कोटिक देखि पड़ैछ । प्रथम कोटिमे एहन व्यञ्जन गुच्छकेँ राखल जा सकैछ जाहिमे अघोष अल्प प्राण ओ महाप्राणक संयोग देखल जाइछ, यथा-

क्ख - बैसक्खा,

च्छ - पुच्छी,

ट्ठ - मिट्ठा, लट्ठा, सिट्ठी, पिट्ठी, मुट्ठी

त्थ - हत्था, कत्था

दोसर कोटिमे सघोष अल्पप्राण ओ महाप्राणक संयोग देखि पड़ैछ, यथा -

द्ध - दुद्धी, मछगिद्धा

ज्झ - मिज्झड़

सानुनासिक सघोष ओ अघोषक व्यञ्जन गुच्छ सेहो देखल जाइछ, मुदा इहो सवर्गीय प्रकृतिक भेटैछ, यथा-

ङ्ग - झिङ्गा

ङ्घ - पङ्घति

ण्ड - खण्ड

ण्ढ - ठण्ढइ

न्ध - बन्धा

ञ्झ - बञ्झा

एहि तरहेँ व्यञ्जन गुच्छमे सामान्यतः सवर्गीय प्रकृति देखि पड़ैछ । मुदा किछु शब्दमे एकर अपवादो देखल जा सकैछ, यथा- गुल्ठी, पल्थी, बाल्टी इत्यादि ।

ध्वनि परिवर्त्तन

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्त्तनक विभिन्न आयाम देखल जाइछ यथा-

आगम -

प्रा. - कडच्छु - करछु - करछुल

सं. - लसुन - लहसुन

लोप -

सं. - स्थाली - थाली - थारी

सं. - अजवायन - जमानि

सं. - सरावः - सराअ - सराय- सराइ

सं. - अपूप - पूअ, पूआ, पू

सं. - जीरकः - जीर

सं. - राजिका - राइ

सं. - लड्डूक - लड्डूअ - लड्डू

सं. - खर्जरी - खजुरी

सं. - तापिका - ताइआ - ताइ

फा. - पारसंग - पासंग

विपर्यय -

सं. - करोटि - कटोरी

सं. - सरावः - सरबा

हि. - अमरूद - अमधुर

सं. - हरिद्रा - हरदि

सं. - कवल - कलव - कलउ

विकार -

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि विकारक बहुआयामी प्रवृति देखि पड़ैत अछि । एहि ठाम किछु प्रमुख ध्वनि विकार द्रष्टव्य अछि -

क्षतिपूरक दीर्घीकरण -

सं. - पर्ण - पण्ण - पान

सं. - यन्त्र - जन्त्र - जाँत

सं. - चुक्र - चुक्क - चूक

सं. - खाद्य - खज्ज - खाजा

सं. - खर्पर - खप्पर - खापड़ि

सं. - दुग्ध - दुद्ध - दूध

सं. - अर्द्ध - अद्ध - आध

समीकरण-

सं. - प्रोष्ठी - पोट्ठी - पोठी

सं. - सूर्प - सुप्प - सूप

सं. - धान्य - धान्न - धान

सं. - आम्र - आम्म - आम

सं. - तिक्त - तित्त - तीत

सं. - पिष्टिका - पिट्ठिआ - पिट्ठी

सं. - सक्तु - सत्तु - सातु

घोषीकरण-

सं. - कर्कटि - कक्कडि - काकड़ि - काँकड़ि ।

सं. - कद्दु - कद्दू - कद्दू

सं. - शाक - साग

सं. - वट - बड़

सं. - पर्पट - पप्पड़ - पापड़

सं. - कटाह - कड़ाह - कड़ाह

अघोषीकरण -

फा. - आबखोरा - अपखोरा

अं. - टब - टप

अकारण नासिक्यीकरण-

सं. - अर्चि - अच्चि - (आचि) आँच

सं. - मुद्ग - मुग्ग - मूग - मूँग - मूङ

सं. - कृत्य - किच्च - काच - काँच

सं. - मद्गुर - मग्गुर - मागुर - मांगुर

महाप्राणी करण

सं. - पंक्ति - पंगति - पंघति

सं. - कृशर - खिच्चड़ि

सं. - शृंगी - सिङ्गी - सिङही

फा. - खरबूज: - खरभुजा

मूर्धन्यीकरण

सं. - ग्रंथि - गँठि - गेंठ, गेंठी

सं. - मृत्ति - मिट्टि - माटि

महाप्राण-ह

दधि - दहि - दही

शोभांजन - सोहांजन -सोहजान - सोहिजन

पिधानिका - पिहानिआ - पिहान - पिहना

कुम्भार - कुम्हाड़ - कुम्हड़

अन्यविकार

त्स - छ - मत्स्य - माछ

श - स - कलश - कलस

ड - ड़ - गुड - गुड़

ल - र - नारिकेल - नारिकेर

ल- न - लवण - नोन

क्ष - ख - क्षीर - खीर

संदर्भ सूची :

1. मैथिली ग्रामर, पृ.- 2-17
2. मिथिला भाषा विद्योतन, वर्ण प्रकरण
3. फा. मै. ले., अध्याय 2 एवं 3 । मैथिली व्याकरण मीमांसा, डा. सुभद्रझा, दरभंगा, 1983, पृ०-7-18
4. मिथिला भाषा प्रकाश, पृ.- 1-13 ।
5. मैथिली भाषा का विकास, अध्याय- 4
6. अए-आए कें ऐ अथवा अय-आय रूपमे तथा अओ-आओ कें औ रूपमे सेहो लिखल जाइछ ।
7. मैथिली भाषा का विकास - पृ०-86-88

एकादश अध्याय

शब्द-विचार

व्युत्पत्तिक दृष्टिएँ शब्द विचार-

व्युत्पत्तिक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दालीमे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़ एहि तीनू प्रकारक शब्द भेटैत अछि ।

रूढ़

रूढ़ शब्द ओ थिक जकर समुदायक अर्थ हो मुदा अवयवक नहि ।[1]

मात्रात्मक अभिरचनाक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे समस्त एकाक्षर शब्द रूढ़ प्रकृतिक अछि । यथा- **को, मो, जौ, घी, पू** इत्यादि ।

एकाक्षर शब्दक विवेचन करैत गोविन्दझाक कथन छनि जे एकाक्षर शब्दमे एकोटा संज्ञा अथवा विशेषण नहि अछि ।[2] मुदा से कथ्य उपर्युक्त उदाहरणसँ खण्डित भऽ जाइछ । को, मो, जौ, घी, पू एकाक्षर संज्ञा शब्द थिक ।

एकाक्षर शब्दक संख्या अवश्ये अत्यल्प अछि आ एकरा आङुरपर गनाओल जा सकैछ, तथापि अस्तित्वहीन नहि अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे रूढ़ शब्दमे द्वयक्षर शब्दक संख्या बहुत बेसी अछि । ई शब्द सभ भोजनक आधार सामग्री, उपकरण एवं भोजन-व्यापारक विशिष्ट अर्थ द्योतनक हेतु प्रयुक्त अछि । यथा- **खुद्दी, गुड़, चीनी, झोर, ताड़ी, थारी, दालि, दही, धान, पीढ़ी, बाटी, भात, भाङ, मह्नु, रह्नु, सातु** इत्यादि । द्वयक्षर शब्द सबटा रूढ़े अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे सर्वाधिक संख्यामे त्र्यक्षरे शब्द दृष्टिगोचर होइछ, यथा- **अचरा, अनार, कॉंकोड़, कठौत, कटुआ, कुटिआ, कदीमा, करैल, कनखी, कड़ाही, गहूम, गिलास, चठैल, चकला, छागर, छिपली, जामुन, टोकना, ढकना, तेतरि, तसला, तरुआ, पटुआ, पियाजु, पलौंकी, पिहना, पकुहा, बेझरा, बदाम, बोआरी, बेलना,**

बसनी, बथुआ, भाकुर, मूसर, मुरइ, मेरुखी, मखुआ, मड़ुरी, सिलौट, सुपारी, सरिसो आदि । इहो शब्द सभ सामान्यतः रूढ़े कोटिक अछि । तथापि किछु शब्द यौगिक स्वरूपक सेहो देखि पड़ैछ । यथा- **तेबर, दोबर, मलपू, रसपू** इत्यादि ।

चतुरक्षर, पञ्चाक्षर ओ षडक्षर रूढ़ शब्द सेहो भेटैछ, जाहिमे सर्वाधिक संख्या चतुरक्षर शब्द अछि । यथा- **कनखुर, तिलकुट, परिथन, पिअकुआ, पितराइन, बटलोही, मटकूड़ी,** इत्यादि ।

पंचाक्षर- **अगरैलही, कचरमकूट, सजकुम्हाड़**

षडक्षर- **गुमसड़ाइन**

यौगिक

यौगिक शब्द ओ थिक जकर अवयवक अर्थबोधक संगहि समुदायक सेहो अर्थ बोध हो ।[3]

मात्रात्मक अभिरचनाक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे यौगिक शब्द त्र्यक्षर शब्दसँ आरम्भ होइछ तथा एकर आयाम षडक्षर शब्द धरि अछि । त्र्यक्षर शब्दक उदाहरण पूर्वहि देल जा चुकल अछि । एहिना अन्यो उदाहरण द्रष्टव्य अछि ।

चतुरक्षर शब्द-**दलिपूड़ी, तमघैल**

पञ्चाक्षर शब्द-**कुसुमसारि, गुरचलना, पनबसना**

षडक्षर शब्द - **बरहबरना, घनडसिनियाँ, बरहमसिया**

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन शब्द प्रचुर संख्यामे प्रयुक्त अछि । एहि शब्दावलीमे शब्द निर्माण संज्ञा ओ विशेषणक क्रमशः संज्ञा, विशेषण वा क्रियाक योगसँ भेल देखि पड़ैछ ।

संज्ञा + संज्ञा

गहूम + जओ - गोजइ
गुड़ + पूड़ी - गुड़पूड़ी
घर + जन - घरजाना
चानन + बथुआ -चननबथुआ
चूड़ा + लाइ - चुड़लाइ
जओ + बूट - जओबुट्टा
दही + बड़ा - दहिबाड़ा

दालि + पिट्ठी - दलिपिट्ठी

दालि + पूड़ी - दलिपूड़ी

दालि + साग - दलिसग्गा

फूल + कोबी - फुलकोबी

वन + भोज - वनभोज

माछ + हाट - मछहट्टा

रस + गुल्ला - रसगुल्ला

संज्ञा + विशेषण

माँड़ + गील - मँड़गिल/मँड़गिल्ला

आँठी + अम्मत - अँठिअम्मत

संज्ञा + क्रिया

कद्दू + √कस - कद्दूकस

खापड़ि + √भूज - खपड़भुज्जू

खापड़ि +√सुख - खपड़सुक्खू

गूड़ा + √चाल - गुड़चाला

घर + √नीप - घरनिप्पा

घी + √पक - घीपक

तेल + √पक - तेलपक

दालि + √घोंट - दलिघोंटना

दिवाड़ + √लाग - दिवड़लग्गू

धान + √उसिन - धनउसिनिआ

पात + √चाट - पतचट्टा

भाड़ + √घोंट - भड़घोटना

भात + √बार - भतबरी

भाफ + √तर - भफतरुआ

माँड़ + √सटक - मँड़सटका

रस + √फाट - रसफट्टू

रोटी + √पक - रोटपक्का/रोटिपक्का

विशेषण + संज्ञा

आधा + चैली - अधचैली

आधा + पेट - अधपेटा

एक + पोट - एकपोटिया

तीन + पाओ - तिनपइ

दू + मन - दुमोनी

पाँच + सेर - पंचग्रास/पसेरी

बारह + मास - बरहमसिया

भरि + पेट - भरिपेटा

मध्यम + नोन - मधनोन

मोट + धान - मोटधाना

लाल + मुँह - ललमुहाँ

लाल +छड़ी - लालछड़ी

सात +पुत्ती - सतपुतिया

हल्लुक + धान - हल्लुकधना ।

विशेषण + विशेषण

खट्टा + मिट्ठ - खटमिट्ठी

खट्टा + मधुर - खटमधुर

विशेषण + क्रिया

आधा + खीजब - अधखिज्जू

आधा + सीझब - अधसिज्झू

क्रिया एवं संज्ञाक योगसँ बनल किछु यौगिकक उदाहरण सेहो देखि पड़ैछ, यथा-

√खा + मस्ती - खइमस्ती

√पक + तेल - पकतेल

यौगिक शब्द निर्माणमे किछु विशिष्टता देखि पड़ैछ । कखनो तँ अवयव यौगिक बनलाक पश्चातो यथावते रहि शब्दनिर्माण करैछ, यथा-

ओल + बड़ी - ओलबड़ी

पंच + ग्रास - पंचग्रास

वन + भोज - वनभोज

रस + गुल्ला - रसगुल्ला

लाल + छड़ी - लालछड़ी

मुदा एहि तरहक स्थिति अल्पे यौगिक शब्दमे देखि पड़ैछ । अधिकांश यौगिकमे अवयवक स्वरूप परिवर्तित भऽ जाइछ । ई परिवर्तन विभिन्न स्वरूपक दृष्टिगोचर होइछ, यथा–

(क) पहिल अवयवक पहिल दीर्घस्वर ह्रस्व भऽ जाइछ जेना–

आधा + पैली - अधपैली

खापड़ि + √भूज - खपड़भुज्जू

चानन + बथुआ - चननबथुआ

दालि + पिट्ठी - दलिपिट्ठी

पाँच + सेर - पँचसेरा

फूल + कोबी - फुलकोबी

लाल + मुँह - ललमुँहा

(ख) कतहु-कतहु पहिल अवयवक दोसरहु दीर्घ स्वर ह्रस्व भऽ जाइछ, यथा–

खट्टा + मिट्ठ - खटमिट्ठी

दही + बड़ा - दहिबाड़ा

रोटी + पक - रोटिपक्का

(ग) अनेक यौगिक शब्दमे दोसर अवयव यथावत देखल जाइछ यथा–

चूड़ा +लाइ - चुड़लाइ

दालि + पूड़ी - दलिपूड़ी

(घ) कतोक यौगिक शब्दमे दोसर अवयवक स्वरूपमे विभिन्न प्रकारक परिवर्तन होइछ । यथा–

खापड़ि + सुक्ख - खपड़सुक्खू

गूड़ा + चल - गुड़चाला

घर + जन - घरजाना

जौ + बूट - जौबूट्टा

दालि + साग - दलिसग्गा

बारह + मास - बरहमसिया

मोट + धान - मोटधाना

सात + पुत्ती - सतपुतिया

एहि तरहेँ देखैत छी जे यौगिक शब्दक दोसर अवयव सामान्यतः दीर्घत्व एवं बलात्मक आघातसँ प्रभावित होइछ । अनेक शब्दकक दोसर अवयवमे व्यंजनद्वित्व देखल जाइछ आ अन्तिम ह्रस्व दीर्घत्वकेँ प्राप्त करैछ ।

योगरूढ़

योगरूढ़ ओहन शब्द थिक जकर अर्थबोध हो सङहि समुदायक अर्थ विलक्षण हो । भोजन सम्बन्धी योगरूढ़ शब्दावलीमे अल्प संख्यामे कतोक शब्द भेटैत अछि–

1. **मुड़घंट**- ई शब्द मूड़ी ओ घाँटब एहि दुइ शब्दक योगसँ निर्मित अछि । मुदा ई दालिक सङ माछक मूड़ाक योगसँ निर्मित तीमन विशेष हेतु विलक्षण अर्थमे प्रयुक्त अछि ।

2. **रामझिङ्नी**- ई शब्द राम (देवता विशेष) एवं झिङ्नी (तीमन विशेष) शब्दक योगसँ बनल अछि आ रामतोरइ नामक व्यंजनक विलक्षण अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।

3. **ढकनपोरो**- ई शब्द ढाकन (बासन झँपबाक छितराह बासन विशेष) एवं पोरो (सागविशेष)क योगसँ निर्मित अछि । मुदा ई सागक एकटा विशिष्ट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

4. **चननबथुआ**- ई शब्द चानन (सुगन्धित काष्ठ विशेष) तथा बथुआ (सागविशेष)क योगसँ निर्मित अछि ई बथुआक श्वेतवर्णक प्रभेदक हेतु विलक्षण अर्थमे रूढ़ अछि ।

5. **पनपिआइ**- ई शब्द पानि (जल) तथा पिआइ (पीब) शब्दक योगसँ बनल अछि । मुदा वस्तुतः ई शब्द अल्प खाद्य ग्रहण अर्थात् अल्पाहारक विलक्षण अर्थमे रूढ़ अछि ।

6. **जलखइ** - ई शब्द जल (पानि) तथा √खाक योगसँ निर्मित अछि । मुदा ई अपन विलक्षण अर्थ पनपियाइमे रूढ़ अछि ।

7. भतखड़ - ई शब्द भात तथा खेखा सँ निर्मित अछि । मुदा एकर विशिष्ट अर्थ छैक असौजनियाँक सिद्धान्त भोजन करयबाक विधि विशेष ।

8. कलमदान - ई शब्द कलम (लेखनी) तथा दान (देब)सँ निर्मित अछि । अरबी कलम (लेखनी) एवं (आधार) सँ बनल अछि । मुदा अपन विशिष्ट अर्थमे ई धानक एक गोट विशिष्ट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

9. हंसराज - ई शब्द हंस (पक्षी विशेष) तथा राजा शब्दक योगसँ बनल अछि । मुदा अपन विलक्षण अर्थमे धानक एक गोट विशिष्ट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

10. दालचीनी - ई शब्द दारु (काष्ठ) ओ चीनी शब्दक योगसँ बनल अछि । मुदा ई मशाला विशेषक विशिष्ट अर्थमे रूढ़ अछि ।

11. तेजपात - ई शब्द तेज (गत्यात्मक क्षिप्रता) तथा पात शब्दक योगसँ बनल अछि । मशालाक एकगोट विशिष्ट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

12. कृष्णभोग - ई शब्द कृष्ण (देवता विशेष) तथा भोग (भोजन करब) शब्दक योगसँ निर्मित अछि तथा अपन विशिष्ट अर्थमे आमक एक गोट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

13. मालभोग - ई शब्द माल (मल्ल-माल) तथा भोग (भोजन करब) शब्दक योगसँ निर्मित अछि । मुदा अपन विशिष्ट अर्थमे ई धानक एक गोट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

14. राजभोग - ई शब्द राजा तथा भोग शब्दक योगसँ बनल अछि तथा धानक एक गोट विशिष्ट प्रभेदक विलक्षण अर्थक द्योतन करैछ ।

15. जलपरोड़- ई शब्द जल तथा परोड़ (तरकारी विशेष)क योगसँ निर्मित अछि, मुदा एकर विलक्षण अर्थ माछ छैक ।

16. गदहपुरैन- ई शब्द गदहा (पशुविशेष) तथा पुरैन (कमलक पात)क योगसँ बनल अछि, मुदा एकर विलक्षण अर्थ शाक विशेष छैक ।

17. भतओल - ई शब्द भात ओ ओल एहि द्विशब्दक योगसँ बनल अछि । मुदा ई ओलक बिनु कबकब स्वादक एकटा विशिष्ट प्रभेदक हेतु रूढ़ अछि ।

18. कठपू - ई शब्द काठ तथा पू (पकमान विशेष) शब्दक योगसँ बनल अछि । एकर विलक्षण अर्थ चाउरक औँटाक योगसँ निर्मित पूआक विशिष्ट प्रभेद अछि ।

एह तरहेँ योगरूढ़ शब्दक स्थितिपर विचार कयला सन्ता ई निष्कर्ष प्राप्त होइछ जे कतिपय योगरूढ़ शब्दमे कोनो ने कोनो अवयवक क्षिप्त अर्थ ध्वनित होइत रहैछ । यथा-

ढकनपोरोमे पोरो, पनपियाइमे पानि, चननबथुआमे बथुआ, जलखइमे जल, तेजपातमे पात, जलपरोड़मे जल, भतओलमे ओल, कठपू मे पू आदि । तथापि अनेक योगरूढ़ शब्दमे अवयवक अर्थ सर्वथा अविवक्षित देखि पड़ैछ, यथा- रामझिकुनी, भतखड़, कलमदान, हंसराज, दलिचीनी, कृष्णभोग, मालभोग, राजभोग, गदहपुरैन इत्यादि ।

शब्दयुग्म

दूटा सार्थक वा एकटा सार्थक ओ एकटा निरर्थक शब्दक ओ समूह जे सहचर रूपमे प्रयुक्त भऽ विशिष्ट अर्थक प्रतिपादन करैछ, शब्दयुग्म कहल जा सकैछ ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु युग्म शब्द विशिष्ट प्रकृतिक देखि पड़ैछ । एकर प्रयोग सामान्यतः समाहारार्थक देखि पड़ैछ । यथा- अरबा- अरबाइन, अल्हुआ-पतुआ, अन्न-पानि, ऐंठि-कूठि, कर-कटुक, काँच-कोचिल, काँट-कूस, कोठी-भरली, कुटिया-पिसिया, खढ़-पात, खान-पान, खायक-पीयक, खीर-खाँड़, गलल-पचल, घोर-घार, चुल्हा-चैकी, छनन-मनन, छिम्मड़ि-माकरि, जर-जलखै, जारनि-काठी, झोर-झार, टूक-टाक, ठाँव-बाट, तीमन-साजन, दहिया-फुफड़ी, धोइन-धाइन, नोन-सातु, पीढ़ी-पानि, पूड़ी-पकमान, फल-फलहरी, बयन-तिहार, बासि-कूसि, बासन-कुसन, बीया-बालि, भार-दोर, भोज-भात, भोजन-साजन, भूजा-भरीं, मर-मिठाइ, मर-मसल्ला, रोटी-बाटी, साग-पात इत्यादि ।

एहिमे किछु शब्दयुग्ममे दुनू शब्द सार्थक देखि पड़ैछ आ समाहारक अर्थमे प्रयुक्त होइछ, यथा- गलल-पचल, जारनि-काठी, पीढ़ी-पानि, पूड़ी-पकमान, बीया-बालि, धानस-भात, रोटी-बाटी, साग-पात इत्यादि ।

किछु शब्दयुग्ममे पूर्व पद अथवा उत्तर पद निरर्थक देखि पड़ैछ आ दुनू पदक अर्थ सार्थक पदक समाहारार्थक द्योतक होइछ, यथा- अरबा-अरबाइन, ऐंठ-कूठि, काँच-कोचिल, छिम्मड़ि-माकड़ि, टूक-टाक, भार-दोर, भूजा-भरीं, मर-मिठाइ, मर-मसल्ला इत्यादि ।

किछु शब्दयुग्म योगरूढ़ प्रकृतिक देखि पड़ैछ आ विशिष्ट अर्थक द्योतन करैछ, यथा- झोर-झार शब्दयुग्म भोजनक अवशिष्ट द्रव्य पदार्थक अर्थक द्योतक अछि । एहिना खान-पान ओ पीढ़ी-पानि तथा ठाँव-बाट सांस्कृतिक अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।

उद्गमक दृष्टिसँ शब्द विचार

उद्गमक दृष्टिसँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे दुइ कोटिक शब्द भेटैत अछि -

(क) परम्परागत शब्द (ख) गृहीत शब्द ।

परम्परागत शब्दसँ तात्पर्य प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक निर्माण करऽवला शब्दसमूहसँ अछि जे क्रमश: नव्य भारतीय आर्यभाषाकेँ रिक्थक रूपमे प्राप्त भेल ।

परम्परागत शब्दक कोटि विभाजनक प्रक्रिया प्राकृते कालमे आरम्भ भऽ चुकल छल । भरतक नाट्य शास्त्रमे प्राकृत शब्द समूहक तीन गोट कोटि कहल गेल अछि ।

(क) समान शब्द (ख) विभ्रष्ट शब्द आ (ग) देशीमत शब्द ।[3]

एहिमे समान शब्दसँ तात्पर्य संस्कृतक तत्सम शब्द, विभ्रष्टसँ तात्पर्य तद्‌भव शब्द ओ देशीमतसँ तात्पर्य देशोद्‌भव शब्द रहल अछि । परवर्त्ती आचार्य लोकनि सेहो एहि प्रकारक विभाजन कयलनि अछि । आधुनिक कालमे नव्य भारतीय आर्यभाषाक शब्दावलीकेँ पूर्वाचार्यलोकनिक कोटि-विभाजनक अनुसरण करैत तथा एहिमे किछु परिवर्द्धन करैत डा. सुनीति कुमार चटर्जीक कालक्रमानुसार विभाजन अछि-

(1) परम्परागत शब्दमे निम्नलिखित कोटिक शब्द अछि - (क) तद्‌भव (ख) प्राचीन तत्सम ओ अर्द्धतत्सम (ग) प्राचीनतम गृहीत तथा आर्य मूलसँ अव्याख्यात शब्द : देशी ओ (घ) फारसी ओ ग्रीक भाषाक किछु विदेशी शब्द जे संस्कृत वा प्राक् संस्कृतक कालमे गृहीत भऽ चुकल छल ।

(2) गृहीत शब्दमे परिगणित अछि- (क) प्राचीन ओ मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाक शब्द (ख) नव्य भारतीय भगिनी आर्यभाषाक शब्द (ग) भारतक आर्येतर लोकनिक भाषा (द्रविड़, कोल, तिब्बत-वर्मन भाषाभाषीक भाषा)क शब्द ओ (घ) भारतेतर देशक भाषाक शब्द समूह ।[4]

मुदा हिनक एहि अवधारणामे अर्द्धतत्सम ओ संस्कृत वा प्राक् संस्कृत कालमे गृहीत विदेशज शब्दकेँ तद्‌भवेक आलोकमे देखब बेसी सुविधाजनक अछि ।

तत्सम

संस्कृतसँ उपगत भऽ ओही रूपमे प्रचलित शब्दकेँ तत्सम, संस्कृतसम वा संस्कृतानुरूप कहल जाइछ । मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन शब्दक प्रयोग सामान्य रूपमे होइछ जेना- भोजन, स्वाद, नैवेद्य, तिल, मरीच, हींगु, कर्पूर, पालक, मधु, कील, पंचग्रास, मधुर, अक्षत, अन्न, पाक जल, इच्छापूर्ण, तृप्ति, क्षुधा इत्यादि ।

तद्‌भव

ओहन शब्द-समूह जे प्राचीन भारतीय आर्यभाषासँ व्युत्पन्न भऽ ध्वनिपरिवर्त्तनक विभिन्न प्रक्रियाकेँ आत्मसात् करैत आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक अनुकूल उच्चरित

होइछ, तद्‌भव वा संस्कृत्‌भव कहल जाइछ, जेना-

अपूप	- पूअ	- पूआ
कचुटिका	- कचुड़िया	- कचुड़ी
घृत	- घीअ	- घी, घिउ
कवल	- कउर	-कौर
चिपुट:	- चिउड़	-चूड़ा
चक्रिका	- चक्किआ	-चाकी
दधिवटक	- दहिबड़अ	-दहिबाड़ा
दुग्ध	- दुद्ध	-दूध
पर्ण	- पण्ण	-पान
पिण्ड	- पेंड	-पेंड़ा
भक्त	- भत्त	-भात
भाण्ड	- भांड	- भँड़-भँड़ा
भोज्य	- भोज्ज	- भोज
मुद्ग	- मुग्ग-मूग-मूंग	- मूङ
मद्गुर	- मग्गुर	- माङुर
मत्स्य	- मच्छ	- माछ
मूलक	- मुरअ	- मुरइ
मुसलिका	- मुसरिआ	- मूसर
सकुल	- सउर	- सौरा
सक्तुक	- सत्तुअ	-सातु, सतुआ
सर्षप	- सरसअ	-सरिसो
सूर्प	- सुप्प	- सूप

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे तद्‌भव शब्दक बाहुल्य देखल जाइत अछि । भोजन प्रक्रियाक विभिन्न स्तरमे एकर प्रयोग देखल जाइत अछि । एहन तद्‌भव शब्दमे किछुएँ संस्कृतक रूपसँ किंचिते भिन्न अछि किन्तु बहुतो शब्दमे गम्भीर ध्वनि परिवर्त्तन भेल अछि । एकर व्याख्या एना कयल जा सकैछ जे एहन शब्द समूह जे प्राकृत ओ अपभ्रंशक माध्यमसँ होइत प्राप्त भेल अछि ताहिमे ध्वनि सम्बन्धी महत् परिवर्त्तन भऽ

गेल अछि । किन्तु जे शब्द सोझे संस्कृतसँ मैथिलीमे लेल गेल अछि ताहिमे ध्वनि सम्बन्धी परिवर्त्तन अल्प भेल अछि ।

देशज शब्द

तत्सम, तद्भव ओ गृहीत शब्दसँ भिन्न शब्द-सम्पदाक हेतु देश्य, देशी, देशज, देशीमत आदि नामक प्रयोग होइत रहल अछि । वस्तुतः देशज शब्दसँ तात्पर्य अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द अछि जकर स्रोत अथवा मूल निश्चित रूपसँ ज्ञात नहि अछि ।

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे देशी मूलक शब्दक प्रयोग सेहो प्रचुरतया देखल जाइछ । एहि सबमे कतोक शब्द प्राकृत ओ अपभ्रंश परम्परासँ गृहीत भेल अछि । हेमचन्द्रक देशीनाममालामे कतोक मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्द स्पष्टतः भेटैत अछि ।

गोविन्दझा देशी शब्दपर विचार करैत कहलनि अछि जे हेमचन्द्रक देशीनाममालामे मैथिलीक देशी शब्दक संख्या शून्य अछि ।[7] मुदा एकरा सत्य नहि कहल जा सकैछ । देशी-नाममालामे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अनेक शब्द ध्वनि ओ अर्थ परिवर्तनक संग गृहीत अछि, जेना-

देशी नाममालाक शब्द ओ अर्थ	**मैथिली रूप ओ अर्थ**
कोसय[8] - लघुसरावः	कोसिया - छोट सरवा
कोइला[9] - काष्ठा ङगार	कोइला - काठक आगिक अवशेष
छल्ली[10] - त्वक्	छाल्ही - दूधक त्वक्
ढंकणी[11] - पिधानिका	ढकनी - पिधानिका, झपना
अग्घाण[12] - तृप्ति	अघान-अघायब -तृप्त होयब
गंधिओ[13] - दुर्गन्ध	गन्हायब-गन्ध-दुर्गन्ध करब

देशी शब्द भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे प्रचुर संख्यामे उपलब्ध अछि, जेना- अघायब, चकेरी, डाली, दौड़ी, टोकना, ढाकी, धुथरी, पथिया, मौनी इत्यादि ।

मैथिलीक देशी शब्दमे किछु शब्द एहन अछि जे अन्यान्य भगिनी भाषामे सेहो समान अर्थमे अथवा किंचित भिन्न अर्थमे प्रचलित अछि । परन्तु बहुतो संज्ञा, विशेषण आ धातु एहन अछि जे सर्वथा मैथिलीक अपन देशज शब्द कहल जा सकैत अछि ।

गृहीत शब्द

गृहीत शब्दक हेतु भाषा वैज्ञानिकलोकनि विदेशी अथवा विदेशज शब्दक प्रयोग कयने छथि संस्कृतसँ भिन्न भाषासँ जे शब्द आबि मिथिला भाषामे गृहीत भऽ गेल अछि से विदेशी शब्द थिक ।[14]

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन गृहीत शब्दक तीन गोट कोटि कयल जा सकैछ-

(क) तुर्की, अरबी ओ फारसीसँ गृहीत शब्द जेना- शराब, सुराही, दारू, देग, बर्फी, मसल्ला, मैदा, हलुआ, खरभुज्जा, मेवा, बदाम (फा. बादाम), पिस्ता (फा. पिस्त), किसमिस (फा. किशमिस), काजू (फा. कजी-वक्रता), शकरपाला (फा. शक्करपारः), रिकबी - (फा. रिकबी)

(ख) यूरोपीय भाषासँ गृहीत शब्द जेना- गिलास, टप (अं टब), पाओरोटी, परात, बुइयाम (पुर्तगाली), बाल्टी, बिस्कुट आदि ।

(ग) अन्य भाषासँ गृहीत शब्द जेना- फुलकी, कतहु कचौरी (बंगाल), सोहारीक अर्थमे रोटी, खाना, डलना, रसोइ, आदि (हिन्दीसँ), लिच्ची, चिन्नी (चीनी भाषासँ), मिसरी[15] (यूनानी भाषासँ)

संकर शब्द

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु शब्द एहनो अछि जे विदेशज ओ देशज शब्दक संयोगसँ निर्मित भेल अछि । एहन शब्द सभकेँ संकर शब्द कहल जा सकैछ, जेना-

(जर्मन) - पाव+(मै.) रोटी = पाओरोटी
(मै.) - बालू+(फा.) साही = बालूसाही
(मै.) - सौर+(फा.) बचवा = सौरबचवा
(तमिल) - कच (दालि)+(पूरिका) = कचौरी

अर्थक दृष्टिएँ शब्द विचार-

अर्थक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञा, विशेषण, क्रिया ओ अव्यय एहि चारि कोटिक शब्द भेटैत अछि ।

संज्ञा

ग्रियर्सन स्वरूपक आधरपर मैथिली संज्ञाक तीन गोट कोटि कयने छथि-लघु दीर्घ ओ दीर्घतम ।[16]

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञा शब्दक तीनू कोटि भेटैत अछि, जेना-

लघु	दीर्घ	दीर्घतम
भाकुर	भकुरा	भकुरबा
लाडु	लड्डू	लड्डुआ

मूसर	मुसरा	मुसरबा
पू	पूआ	पुअबा
कठौत	कठौता	कठौतबा
चालनि	चलनी	चलनिआँ
माछुर	मछुरा	मछुरबा

मुदा अनेक संज्ञा शब्दक दुइए कोटिक रूप देखि पड़ैछ । लघु-दीर्घ, लघु दीर्घतम वा दीर्घ-दीर्घतम । यथा-

लघु-दीर्घ

चौरठ	चौरट्ठा
हरदि	हरदी
खापड़ि	खपड़ी
चालनि	चलना
चिक्कस	चिकसा
तसला	तसलबा

लघु-दीर्घतम

पान	पनमा
भात	भतबा
रहु	रहुआ
सातु	सतुआ

दीर्घ-दीर्घतम

कद्दू	कदुआ
बाटी	बटिया
बट्टा	बटबा
टाढ़ी	टढ़िया
थारी	थरिया
पीढ़ी	पिढ़िया

विशेषण

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे विशेषण शब्दक बहुल प्रयोग होइत अछि । किछु विशेषण सामान्य कोटिक अछि किन्तु बहुतो विशेषण भोजन-व्यापार ओ एकर अंगोपांगक वैशिष्ट्य सूचक अछि जे स्वाद, रंग, आकार इत्यादिक अर्थ व्यक्त करैत अछि । यथा- कबछुआ, तुलबुलिया, सतपुतिया आदि ।

कतोक एहनो विशेषण अछि जे भोजने सम्बन्धी शब्दावलीक रूपमे प्रयुक्त होइत अछि, यथा- अनोन, अतिखाइन, अम्मत-चुक्क, कचकूह, कसाइन, कोनाह, खटतुरुस, खटमधुर, खरुआइन, डव़ाइन, तीत-अक्कत, फोकराइन, बिसाइन, मधनोन, हरहरनीम इत्यादि ।

किछु विशेषण अनुरणात्मक अछि । यथा- गजगज, कबकब, चिटचिट, फरहर, गलगल, पलपल, रिबरिब इत्यादि ।

क्रिया

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे क्रियापदक बहुल प्रयोग देखि पड़ैछ । भोजन-व्यापारमे विभिन्न स्थितिक सूक्ष्मतया निदर्शनक हेतु पारिभाषिक कोटिक क्रियापदक व्यवहार होइछ, यथा- अघायब, अजबारब, अफरब, अलगब, अरुआयब, अरबब, औंसब, उधियायब, उसिझब, खरकट्टब, खीजब, गुमसब, घटोसब, चालब, झौंसब, डधरायब, डोकब, ढेकरब, ढकोसब, गुरकब, बिसायब, पसायब, पजारब, पैंचब, फटकब, बोकरब, बेलब, भकसब, भखरब, भाड़ब, मसकब, लहब, लाड़ब, समसब, सरबब, हदमदायब, पनिछायब, छुतायब इत्यादि।

एहि क्रियापदमे क्रियाक अकर्मक ओ सकर्मक दुनू स्वरूप भेटैत अछि । जाहिमे सकर्मकक बाहुल्य अछि ।

अकर्मक क्रिया

अफरब, उधियायब, उसिझब, ओकिआयब, खुदखुदायब, गेनहायब, टूटब, टभकब, ढकरब, थुकरब, पड़ब, फाटब, फूलब, बरकब, बोकरब, भुभुआयब, भखरब, महकब, मसकब, सेरायब, परसायब इत्यादि ।

सकर्मक क्रिया

अँचायब, उझिलब, उसिनब, काटब, कचरब, कूटब, खोंटब, खीजब गीड़ब, घटोसब, घोरब, घाँटब, घोंटब, चाटब, चोभब, चीखब, चालब, छानब, जोखब, झाँखब, झोरब, झाँपब, परसब, टभकायब, डधरायब, डोकब, तरब, दरड़ब, दकरब, निसायब,

पजारब, पलटब, पाड़ब, पैंचब, पसायब, पकायब, पीसब, फटकब, फेनब, बनायब, बरकायब, भकोसब, रान्हब, लोकब, हबकब, इत्यादि ।

सरल एवं संयुक्त क्रिया

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ओना तँ अधिकांश सरल क्रियाक व्यवहार होइछ, मुदा अनेक संयुक्त क्रियाक प्रयोग सेहो देखल जाइछ, यथा- **गारा लागब, चट ओदरब, भोग लगायब, लोइया काटब, हाथ बारब**, इत्यादि ।

नामधातु

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अनेक विशिष्ट अर्थक द्योतक पारिभाषिक नामधातुक प्रयोग दृष्टिगोचर होइछ, यथा- **अलसायब, अमिलायब, अमतायब, कदुआयब, खटायब, खुदिआयब, गलिआयब, चिकनायब, चिमरायब, चौरायब, झोरायब, पनिआयब, फेनब, फुफड़िआयब, बजरिआयब, बलुआयब, बसिआयब, भाफब, मसुआयब, रिबरिबायब, लटिआयब, लसिआयब, सिमसिमायब**, इत्यादि ।

किछु नामधातुमे अनुकरणात्मक ध्वनि सेहो दृष्टिगोचर होइछ, यथा -

कुहकुहायब, छुछुआयब, टटायब, धुधुआयब, फनफनायब, फफनायब, फुफुआयब, धुधुआयब, सुसुआयब इत्यादि ।

अव्यय

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अव्यय भाषाक सामान्ये प्रकृतिक अछि । मुदा किछु अव्यय पारिभाषिक प्रकृतिक सेहो भेटैछ, यथा- **कुचुर-कुचुर, घबर-घबर, थुकुर-थुकुर, घसर-घसर, डाँउ-डाँउ, बक-बक, हबर-हबर** इत्यादि ।

एहि प्रकारक अव्ययमे एक्के शब्दक पुनरावृत्ति क्रियाक विशेषताक हेतु प्रयुक्त होइछ ।

स्वार्थक शब्द

स्वार्थक शब्दावलीसँ तात्पर्य एहन शब्द समूहसँ अछि जकर विशिष्ट अर्थ यथावत् बनल रहैत छैक मुदा ओहि विशिष्ट अर्थसँ सम्बद्ध सूक्ष्म वा अल्प परिवर्त्तित अर्थक द्योतन स्वार्थिक प्रत्ययक योगसँ होइत छैक ।

1. एहन शब्दमे किछु तँ संज्ञाक लघु-दीर्घ आ दीर्घतम रूप थिक । यथा-

तसला-तसलबा, लाडु-लड़ुआ इत्यादि ।

2. किछु स्वार्थिक शब्द समूहमे पैघत्व ओ लघुत्वक भिन्नता देखल जाइछ ।

जेना- **थार-थारी, बोआर- बोआरी, कठौता-कठौती, पोठा-पोठी, कोहा-कोही, थैल-थैली, ढकना-ढकनी, कटोरा-कटोरी, तसला-तसली, छाँछ-छाँछी, करछु-करछुल्ली, कूड़ा-कुड़नी, चङेरा-चङेरी, मटकूड़-मटकूड़ी, सोबरना-सोबरनी** आदि ।

3. किछु स्वार्थिक शब्द समूहमे आधिक्य अथवा अल्पत्वक अर्थद्योतन होइछ यथा- गील-गिलगर, **अम्मत-अमताह, मधुर-मधुराँठ** इत्यादि ।

पर्यायवाची शब्द

एकहि अर्थक द्योतक भिन्न शब्दकेँ परस्पर पर्यायवाची शब्द कहल जाइछ तथापि सारतः समानार्थी होइतहुँ स्वतंत्र सत्तासँ युक्त प्रत्येक शब्द किञ्चित भिन्न स्वरूपक अर्थद्योतक होइते अछि । तेँ सामान्यतः एके शब्द भेदवला ओ दु अथवा दुसँ अधिक शब्द जकर सामान्य अर्थ कमसँ कम एकटा मुख्य विवक्षासँ युक्त हो, पर्याय कहल जाइत अछि ।[1]

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अनेक पर्यायवाची शब्द समूह भेटैत अछि । जेना-

झिंगा-इचना, कुम्हड़-भतुआ, धाठि-बेसन, तीमन-तरकारी इत्यादि ।

तथापि **फटओन** ओ **छेना** यद्यपि पर्यायक रूपमे व्यवहृत अछि आ एकर दुनूक मुख्य विवक्षा दूधक फटला उत्तर प्राप्त सार अंश छैक । मुदा **फटओन** स्वतः फाटल दूधक सार अंशक हेतु रूढ़ अछि तँ **छेना** प्रयत्नपूर्वक फाड़ल सार अंशक हेतु । एतावता अर्थ, प्रयोग आदिमे किञ्चित भिन्नतासँ बहुतो तथाकथित पर्यायकेँ पर्यायवत् कहब अधिक समीचीन अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ई प्रवृत्ति देखल जाइछ जे- जे पर्याय जनमुखसँ दूर हटि जाइछ ओ क्रमशः लुप्त भेल चल जाइछ ।

वैकल्पिक शब्द ओ मानकीकरणक समस्या

एके शब्दक बहुरूप उच्चारण कोनो भाषाक शाश्वत प्रवृत्ति थिक । एहीपर विचार करैत महाभाष्यकार पतञ्जलि कहने छलाह जे 'भूयांसोऽपशब्दाः अल्पीयांसः शब्दाः एकैकस्याहि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः तद्यथा गौरित्यस्य शब्दस्य गावी गोणी गोता गोपोतलिकेत्येवमवयोऽपभ्रंशाः ।'[8] एहिमे शब्दसँ महाभाष्यकारक तात्पर्य पाणिनीय व्याकरणसँ सिद्ध शब्द छल आ अपशब्दसँ तात्पर्य अपाणिनीय लोकोच्चरित असाधु शब्द ।

पतञ्जलि भाषामे उच्चरित एहन वैकल्पिक शब्द-स्वरूपकेँ देखने छलाह । एहन शब्दस्वरूपक संख्या बहुत होइत छैक आ पतञ्जलि एहि समस्याक जाहि स्वरूपक चित्रण कयलनि, ताही रूपमे ई समस्या एखनहुँ वर्त्तमान अछि आ भविष्योमे भाषाक शब्दमे रहत ।

साधारणत: एकहि अर्थक द्योतक एकटा सामान्य शब्दक ध्वन्यन्तर संयुक्त विभिन्न प्रकारक उच्चारण देखल जाइत अछि । एहन उच्चारण-वैभिन्यसँ प्रभावित शब्द समूहकेँ वैकल्पिक शब्द कहब उचित । एके शब्द वर्त्तनी भेदसँ सेहो लिखित भाषामे वैकल्पिक स्वरूपक दृष्टिगोचर होइछ ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्दक वैकल्पिक रूपक बाहुल्य अछि । ई वैकल्पिक रूप सभ वक्ता, श्रोता ओ लेखकक आधारपर दुइ कोटिमे विभक्त कयल जा सकैछ–

(क) उच्चारण भेदसँ प्रभावित

(ख) वर्त्तनी भेदसँ प्रभावित

उच्चारण भेदसँ प्रभावित

1. अपनिहिति जन्य विकल्प जेना- **दालि-दाइल, पानि-पाइन, घाठि-घाइठ, धामि-धाइम, आँसु-आँउस** इत्यादि ।
2. अघोष - सघोषक विकल्प जेना - **डेकची-डेगची** इत्यादि ।
3. अल्पप्राण -महाप्राणक विकल्प जेना- **गमला-घमला, सीक-सीख, घाटि-घाठि,** इत्यादि ।
4. सानुनासिक- निरनुनासिकक विकल्प जेना- **सरहच्ची-सरहँची** इत्यादि ।
5. वर्गक चतुर्थ वर्ण तथा अह परक तद्वर्गीय तृतीय वर्णक विकल्प जेना- **दुद्धा - दुदहा - दुधहा, सीधा - सिदहा-सिधहा** इत्यादि ।
6. ढ़ तथा स्वरभक्ति युक्त ड़ह ध्वनिक विकल्प जेना- **पीढ़ी- पिड़ही, कढ़ी-कड़ही, नेढ़ा-नेड़हा, ढेढ़ी-ढेड़ही, मूढ़ी-मुरही** इत्यादि ।
7. तवर्ग - टवर्गक विकल्प जेना- **तेकुना-टेकुना, देगची-डेगची** इत्यादि ।
8. ड़ह, म्ह, ल्ह, न्ह, व्यञ्जनक यथावत् तथा पृथक्कृत स्वरूपक विकल्प यथा- **घोड़्हा-घोड़हा-घोंघा, थिम्हा-थिमहा,** गेन्हारी-गेनहारी इत्यादि ।
9. र तथा ड़ ध्वनिक विकल्प जेना- **कुरड़ा-कुररा, कुड़ड़ा-कुड़रा, नरिया-नड़िया, गोरा-गोड़ा, करैल-कड़ैल, थिउरा-थिउड़ा, तिलपरड़ी-तिलपड़री, परोर-परोड़, गेन्हारी-गेन्हाड़ी** इत्यादि ।
10. ल तथा र ध्वनिक विकल्प जेना- **रसून-लसून** इत्यादि ।
11. ल ध्वनिक अल्प प्राण ओ महाप्राणक विकल्प जेना- **अल्लू-अल्हू** इत्यादि ।

12. र तथा ड़ उभयवर्णयुत शब्दक विकल्प जेना-

कर्रा-करड़ा-कड़रा-कड़ड़ा-कररा-कड़्ड़ा, कुर्रा-कुररा-कुरड़ा-कुड़रा-कुड़ड़ा-कुर्ड़ा, किर्री-किररी-किरड़ी-किड़री-किड़ड़ी, ढुर्री-ढुररी-ढुरड़ी-ढुड़री-ढुर्ड़ी इत्यादि ।

(ख) वर्त्तनी भेदसँ प्रभावित

1. **अइ-ऐ** तथा **अउ-औ** केर विकल्प जेना- गरइ-गरै । कलउ-कलौ, इत्यादि ।
2. **अए-ऐ, आए-आय, अओ-औ, आओ-आव** केर विकल्प जेना- मयदा-मैदा, खायक-खाएक, कओर-कौर, केराओ-केराव, इत्यादि ।
3. ई ध्वनिक अनुवर्ती सानुनासिक आ ध्वनिक विकल्प जेना- **कोनिआँ-कोनियाँ-कोनिञा झिंगुनिआँ-झिंगुनियाँ-झिंगुनिञा** इत्यादि ।
4. पञ्चम वर्ग संयोग तथा अनुस्वारक विकल्प-सतञ्जा-सतंजा । **मूङ्ग**-मूंग इत्यादि ।
5. ँड़-ण क विकल्प - यद्यपि मैथिली ध्वनि समूहमे ण ध्वनिक अस्तित्व नहि अछि तथापि वर्त्तनी भेदसँ एहन विकल्प देखल जाइछ । जेना- **अड़ाँची-अणाची, माँड़-माण** इत्यादि ।

अर्थ परिवर्त्तन

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे परम्परागत शब्दक व्यवहार आदि कालहिसँ भऽ रहल अछि । स्वभावत: बहुतो शब्दक मूल अर्थमे परिवर्त्तन भेल अछि । एतऽ अर्थ परिवर्त्तनक कतिपय उदाहरण निदर्शनार्थ प्रस्तुत अछि ।

अर्थ विस्तार

शब्दक अर्थमे होइत समयानुसारी परिवर्त्तनक कारणेँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अनेक शब्दक अर्थ सम्प्रति व्यापक भऽ गेल अछि । जेना-पूर्वमे तिल नामक अन्न विशेषसँ प्राप्त चिकनइक अर्थमे तैल शब्दक व्यवहार छल । मुदा आइ काल्हि सरिसो, नारियर, गहुआ, राइ, तीसी, अंडी आदि विभिन्न अन्नसँ प्राप्त चिकनइयुक्त द्रव पदार्थकेँ तेल कहल जाइछ । **चिक्कस** (सं.) शब्द जओसँ बनल भोज्य पदार्थक हेतु प्रयुक्त छल । मुदा सम्प्रति ई कोनो अन्नकेँ पीसि कऽ प्राप्त पदार्थक अर्थ अभिव्यक्त करैत अछि ।[19]

अर्थ संकोच

भोज्य सम्बन्धी शब्दावलीमे बहुतो ठाम अर्थ संकोच देखि पड़ैत अछि । जेना-पहिने **पर्ण** शब्दक अर्थ पात छल । अर्थात् कोनो वृक्षलताक पातक हेतु पर्ण शब्दक व्यवहार छल । मुदा आइकाल्हि पर्णसँ व्युत्पन्न पान शब्द केवल लता विशेषक पातक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि आ एहि तरहेँ पर्ण शब्दमे अर्थ संकोच भेल अछि ।

गुण्डा शब्द (सं. गुण्डक) धूराक अर्थमे प्रयुक्त छल । सम्प्रति एकर अर्थ धानकें कुटला उत्तर चाउरक वाह्यावरणसँ प्राप्त मँहीं पदार्थ विशेषमे संकुचित भऽ गेल अछि ।[20] एहिना मुण्ड शब्द माथक हेतु प्रयुक्त छल । मैथिलीमे मूड़ा शब्द माछक माथक हेतु संकुचित अर्थमे प्रयुक्त होइछ । धान (सं. धान्य) शब्द अन्न मात्रक द्योतक छल । मुदा आब अन्न विशेषक संकुचित अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।[21]

अर्थादेश

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थादेशक सेहो कतिपय उदाहरण देखल जा सकैछ । जेना-पूरी शब्द देशीनाम माला 6/26 मे तन्तु वाचक उपकरणक हेतु प्रयुक्त, भेल अछि । सम्प्रति ई शब्द पकमान विशेषक हेतु रूढ़ अछि । पायस साम्प्रतिक भाषामे खीरक हेतु रूढ़ अछि जे दूध-चिनी ओ चाउरक संयोगसँ निर्मित होइछ । गृहस्थ रत्नाकरमे **पायसम् दुग्ध यवागु:** (पृ. 358) कहल गेल अछि । अर्थात् दूध ओ जवक संयोगसँ निर्मित खाद्यान्नकें **पायस** कहल जाइत छल । एहि तरहें पायसमे सेहो अर्थादेश भेल अछि । एहिना **मानस** (सं.महानस) शब्द भनसाघरक हेतु प्रयुक्त छल । जे सम्प्रति भोजन निर्माणक हेतु परिवर्तित अर्थक बोधक अछि । एहिना **घोर** (सं. घोल:-तत्त्व सस्नेहम जलम् मथितम् घोल मुच्यते-ब्यूटर मिल्क हैभिंग नो वाटर इन इट (संस्कृत, इंगलिश डिक्सनरी भी.एस. आप्टे) जल रहित नेनुक हेतु व्यवहृत छल । मुदा सम्प्रति ई मक्खन महला उत्तर बचल अवशिष्ट जलीय पदार्थक हेतु प्रयुक्त होइछ ।

अनोन शब्द नोन रहित तथा **बिसनोन** शब्द अत्यधिक नोनसँ युक्त खाद्य पदार्थक हेतु व्यवहृत रहल अछि । मुदा सम्प्रति **अनोन-बिसनोन** शब्द युग्मक रूपमे व्यवहृत अछि । भोजन व्यापारसँ सम्बद्ध शब्द होइतहुँ एकर प्रयोग आब भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे नहिये जकाँ अछि । सम्प्रति अनोन-बिसनोन बाजबसँ कटूक्तिपूर्ण वचनक बोध होइछ । एहि तरहें अनोन-बिसनोनमे भेल अर्थादेशक कारणें ई शब्दे क्षेत्र परिवर्तन कऽ लेलक अछि आ एकर मूल अर्थ विलोपमान भऽ गेल छैक ।

संदर्भ निर्देश :

1. मिथिला भाषा प्रकाश, पृ.-17
2. मैथिली भाषा का विकास, पृ.-97
3. मिथिला भाषा प्रकाश, पृ.-17
4. तत्रैव, पृ.-18
5. नाट्यशास्त्र -भरत, 17/3
   त्रिविधँ तच्च विज्ञेयं नाट्ययोग समासत:
   समान शब्द विभ्रष्ट देशीमतमथापि वा ॥
6. औरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज- डा. सुनीतिकुमारचटर्जी, रूपा एण्ड कम्पनी, कोलकाता- 12, 1975, पृ.-195-197
7. मैथिली भाषा का विकास- पृ.-134
8. देशीनाममाला- हेमचन्द्र, सम्पादक आर. पीशेल-भाग-1, गोवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई, 1880, 2/47
9. तत्रैव, 2 / 49
10. तत्रैव, 3 / 24
11. तत्रैव, 4 / 14
12. तत्रैव, 1 / 19
13. तत्रैव, 2 / 83
14. मिथिला भाषा प्रकाश- पृ.-15
15. वर्णरत्नाकर, सं. सुनीतिकुमार चटर्जी, भूमिका
16. मैथिली ग्रामर-जी. ए. ग्रियर्सन, रॉयल एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, द्वितीय संस्करण, 1906, पृ.-20-23
17. हिन्दी पर्यायोंका भाषगत अध्ययन- डा. बदरीनाथ कपूर, प्रयाग, 1965, पृ.-10
18. द व्याकरण महाभाष्य आफ पतञ्जलि, वाल्यूम-1, एफ. कीलहार्न, पूना, 1962, पृ.-2
19. फा. मै. लै., पृ.-635
20. तत्रैव, पृ.-634
21. तत्रैव, पृ.-626 ।

द्वादश अध्याय

उपसर्ग ओ प्रत्यय विचार

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे शब्दक साधनमे सामान्ये रूपेँ उपसर्ग ओ प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि । साधित शब्दक निष्पत्तिक दिशामे एहि दूनूक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि ।

उपसर्ग

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक साधित शब्दावलीमे उपसर्गक स्थिति अत्यन्त अल्पसंख्यक अछि । बहुत कम शब्दमे खास कऽ तत्सममूलक शब्दहिमे उपसर्गसँ शब्द निष्पन्न देखल जाइछ । एहि प्रकारक उपसर्ग सेहो संस्कृतेसँ परिगृहीत बुझना जाइछ- यथा-

कु- **कुभोजन, कुस्वाद, कुसिझल**

सु- **सुअन्न, सुपक्क, सुभोजन, सुस्वादु**

निरैठ (निर+ऐंठ) शब्दमे निर् उपसर्ग यद्यपि संस्कृतमूलक देखि पड़ैछ, मुदा ई मैथिली शब्द ऐंठसँ शब्द-साधन करैत देखि पड़ैछ ।

सामासिक शब्द **अनोन, अनोना, असौजनिआ** आदिमे अ उपसर्गवत् प्रयुक्त अछि मुदा एकरा उपसर्ग मानल जाय वा नहि से विचारणीय अछि । फारसीक **बे** उपसर्गसँ साधित शब्द **बेलसि** भेटैत अछि ।

प्रत्यय

भोजनसँ सम्बद्ध शब्दावलीक निर्माणमे प्रत्यय विधान अत्यन्त महत्वपूर्ण दृष्टिगोचर होइछ । प्रत्यय विधानक स्थिति अत्यन्त विशृंखलित ओ अतिव्याप्त देखि पड़ैछ । बहुसंख्यक कृत् ओ तद्धित प्रत्यय शब्द-साधनमे लागल देखि पड़ैछ । किछु प्रत्यय तँ कृदन्त ओ तद्धितान्त दूहू प्रकारक शब्दक निर्माण करैछ । यथा-

कृत **अनि** - चालनि, बाढ़नि

तद्धित **अनि**- मडुअनि

कृत् **आ** - कुच्चा, गाड़ा, चोभा, दरड़ा, भकोसा, मसका

तद्धित आ - कतिका, गहुमा, बैसक्खा ।

कृत् इआ - कुटिआ (√कूट+इआ- कुटिआ) : कुटबाक प्रक्रिया

तद्धित इआ - कुटिआ (कुट्टी+इआ-कुटिया): काटल अंश

एहि प्रकारक प्रत्ययकेँ कृदन्त ओ तद्धितान्त दुहू प्रकारक शब्दक निर्माणमे सहायक होयबाक कारणेँ उभयनिष्ठ प्रत्यय कहल जा सकैछ ।

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे लगभग पन्द्रह गोट एहि प्रकारक प्रत्ययक स्थिति देखल गेल अछि जे कृदन्त आ तद्धितान्त दूहू प्रकारक शब्दक साधनक क्षमता रखैछ । तथापि इहो उल्लेखनीय अछि जे ई सभटा प्रत्यय जीवन्त नहि अछि आ ने अधिकाधिक शब्द -निर्माणक क्षमते रखैत देखि पड़ैछ । किछु प्रत्यय अवश्य जीवन्त प्रकृतिक अछि आ एहन प्रत्ययक शब्द-निष्पत्तिक क्षमता सबल अछि। यथा- **आ, आइन, इआ, ई, हा** इत्यादि । एहिमे **आ, ई** तथा **इआ** प्रत्यय संज्ञाक रूप-परिवर्तन क्रमशः लघुसँ दीर्घ दिसि करबाक क्रममे अधिकांश शब्दावली निष्पन्न करैछ । द्रष्टव्य अछि उभयनिष्ठ प्रत्ययक स्वरूप ओ ओकर शब्द निर्माण-क्षमता-

उभयनिष्ठ प्रत्यय

अओन - तद्धित स्वरूपमे ई प्रत्यय अल्पार्थक विशेषण शब्दक निर्माण करैत देखि, पड़ैछ, यथा- तीत - तितओन, मीठ-मिठओन

कृत् स्वरूपमे ई भावार्थक एवं द्रव्यार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- √फाट-फटओन, √बना- बनओन

अनि - एहि प्रत्ययसँ '-क साधन' कृदन्त शब्दक निर्माण देखि पड़ैछ यथा- √चाल-चालनि, √बाढ़-बाढ़नि, √लाड़- लाड़नि

तद्धितक स्वरूपमे ई मडुअनि (मडुआक सदृश खाद्यान्न विशेष)- मे देखि पड़ैछ, यथा- मडुआ-मडुअनि

आ - कृत स्वरूपमे ई प्रत्यय क्रियार्थक संज्ञाक निर्माण करैत अछि, यथा-

√उसिन-उसिना । √कुच-कुच्चा । √खरड़-खरड़ा । √गार-गारा । √चोभ-चोभा । √छाँट- छट्टा । √टूट- टुट्टा । √थकुच- थकुचा । √दरड़- दरड़ा । √पका-पक्का । √पोछ- पोच्छा । √फाँड़- फाँड़ा । √फुट- फुट्टा । √भकोस- भकोसा । √भूज-भूजा । √सान-साना । √हबक- हबक्का । √हपक- हपक्का ।

तद्धित स्वरूपमे ई प्रभेदार्थक विशेषणक निर्माण करैछ यथा- उज्जर-उजरा । काँच-कच्चा । कातिक-कतिका । गहूम-गहुमा । नीर-नीरा । भदइ-भदइआ । वैशाख-वैशक्खा ।

किछु संज्ञा शब्दमे ई युक्तार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- कौर-कौरा । भूख-भुक्खा ।

संज्ञाक स्वरूप निर्माणमे सेहो ई सहायक अछि, यथा-कलउ-कलउआ । चिक्कस-चिकसा । चौरठ-चौरठा, चौरट्ठा । जिलेबी-जिलेबा । ढाकन-ढकना । पुच्छ-पुछड़ा । भाकुर-भकुरा । रहु-रहुआ । सातु-सतुआ । सीरा-सिरूआ । हाथर-हथरा ।

आइन- कृत स्वरूपमे ई प्रत्यय धातु √गुमसक संगे आबि 'गंध विशेष'क अर्थ निरूपण करैत अछि । एहि प्रत्ययक योगसँ √गुमस धातुसँ दू इ गोट शब्द बनैत अछि- गुमसाइन तथा गुमसराइन । एहि दूहू शब्दमे अपर शब्दमे 'र' ध्वनिक आगम विचारणीय अछि । डा. सुभद्रझा लोहराइन शब्दमे पितराइनक सादृश्यकेँ 'र' ध्वनिक आगमक कारण मानने छथि ।[1] सम्भवत: गुमसराइनमे सेहो यैह सादृश्य क्रियाशील हो ।

तद्धित प्रत्ययक रूपमे ई प्रत्यय अत्यन्त जीवन्त अछि आ एकर शब्द साधन क्षमता अत्यन्त व्यापक देखि पड़ैत अछि ।[2] एहि रूपमे ई स्वादसँ युक्त अर्थद्योतन करैछ । यथा- अम्मत-अमताइन । आतिक-अतिखाइन । इच्छा-इछाइन । कचरा-कचराइन । काँस-कँसाइन । कषाय-कसाइन । काठ-कठाइन । झौंस-झौंसाइन । डाढ़ी-डढ़ाइन । तीत-तिताइन । दूध-दुधाइन । धूआँ-धुँआइन । नोन-नोनाइन । नोनछर-नोनछराइन । पित्तर-पितराइन । फोकड़- फोकराइन । बिस-बिसाइन ।[3] माछ-मछाइन । लोह-लोहाइन । हरदि-हरदिआइन ।

लोहक संगे ई प्रत्यय लोहराइन शब्दक सेहो निर्माण करैछ करैछ जाहिमे 'र' ध्वनिक आगमकेँ पितराइनक सादृश्य जन्य मानल गेल अछि ।

हरियरक संग ई प्रत्यय हरिआइन शब्दक निर्माण करैछ जाहिमे हरियर शब्दक अन्तिम दूटा व्यञ्जन लोपक पश्चात् प्रत्यय लगैत छैक ।

इआ/इआँ - ई अत्यन्त जीवन्त प्रत्यय अछि तथा कृत ओ तद्धित दूहू स्वरूपमे शब्द साधन करैछ । कृत् स्वरूपमे ई व्यवसायार्थक शब्दक निर्माण करैछ । यथा-

√उसन- उसिनिआँ । √कूट-कुटिया । √नीप-निपिआ । √पीस-पिसिआ ।

√फटक-फटकिआ । √बड़बड़-बड़बड़िआ । √भूज-भुजिआ ।

तद्धित स्वरूपमे ई प्रत्यय किछु शब्दमे स्वार्थक प्रत्ययक रूपमे संज्ञाक लघु, दीर्घ ओ दीर्घतम स्वरूप निर्माणमे सहायक देखि पड़ैछ, यथा- कुट्टी-कुटिया ।

खीर-खिरिया । गलबल-गलबलिया । चालनि-चलनिआँ । छौंछ-छौंछिया । ढक-ढकिआ । नादि-नदिआ । पाथी'-पथिआ । पोठी-पोठिआ । बाला- बलिआ । बाटी- बटिआ ।

किछु शब्दमे रंग ओ गंध एवं आकृतिक सूचक अर्थ निष्पन्न करैछ । यथा- आँठी- अँठिआ । कपूर-कपुरिआ । कुलहड़ि-कुलहड़िआ । कोहा-कोहिआ । टिकुली-टिकुलिआ । ठाढ़-ठढ़िआ । परोर-परोड़िआ । बुन-बुनिआ । मुट्ठी- मुठिआ । मिरचाइ-मिरचइआ । सजमनि-सजमनिआँ । सिनुर-सिनुरिआ । सिलेट-सिलेटिआ । सीप-सिपिआ । सुपारी-सुपरिया ।

किछु शब्दमे ई 'ताहिसँ निर्मित' अर्थक द्योतन करैछ । यथा- ताम-तमिआँ । पित्तर-पितरिआ । लोह-लोहिआ ।

यौगिक शब्दमे ई द्विगु समासिक शब्दक संग देखि पड़ैछ । यथा- एक चोट-एकचोटिआ । एकपोट- एकपोटिआ ।

भानस शब्दमे ई प्रत्यय व्यवसायार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ । यथा- भानस-भनसीआ (भानस कयनिहार)

ई - ई प्रत्यय स्वार्थिक प्रकृतिक लघु एवं अल्पार्थक सूचक अछि तथा साधित ओ असाधित दूहू प्रकारक शब्दमे लगैत देखि पड़ैछ तथा अत्यन्त सजीव प्रकृतिक अछि- कराह-कराही । कोहा-कोही । चङेरा-चङेरी । चालनि-चलनी । छौंछ-छौंछी । छोटका-छोटकी । डगरा-डगरी । डाला-डाली । डेगचा-डेगची । बाढ़नि-बढ़नी । तसला-तसली । थार-थारी । दउरा-दउरी । नकुब्बा-नकुब्बी । बाढ़नि-बढ़नी । बीअनि-बीनी । लोढ़ा-लोढ़ी । सोबर्ना-सोबर्नी ।

किछु शब्दमे ई स्थानार्थक विशेषणक निर्माण करैत देखि पड़ैछ- कानपुर-कानपुरी । जयवार- जयवारी । पहाड़-पहाड़ी । पेन-पेनी (डोकाक पेनी) । देस-देसी ।

किछु रंग सूचक शब्दक संग ई भावार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- पीयर-पीरी । हरिअर-हरियरी ।

कतहु-कतहु ई संज्ञाक दीर्घ स्वरूपक निर्माणमे सेहो सहायक देखि पड़ैछ, यथा- करेज-करेजी ।

कतोक संज्ञा शब्दसँ ई '-सँ निर्मित' अर्थक द्योतक अथवा सादृश्य सूचक शब्दक निर्माण करैछ, यथा- नीमक-निमकी । बैगन-बैगनी । मखान-मखानी ।

किछु धातुमे ई कृत् प्रत्ययक स्वरूपमे संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- √फुफड़-फुफड़ी ।

ऊ - ई प्रत्यय सामान्यतः यौगिक शब्दसँ शब्द साधित करैत देखि पड़ैछ । यौगिक शब्दक अपर अवयवक अन्तिम व्यञ्जनमे ई द्वित्व उत्पन्न कऽ दैछ तथा तद्धितान्त ओ कृदन्त दूहू प्रकारक शब्दक निर्माण करैछ, यथा- खापड़ि+√सुख+√उ - खपड़सुक्खू । दिबाड़+√लाग+ऊ- दिबड़लग्गू । आधा+खिज्आ+ऊ- अधखिज्जू ।

औआ - ई युक्तार्थक कृदन्त ओ तद्धितान्तक निर्माण करैत देखि पड़ैछ, यथा- अम्मत-अमतौआ । √गमक-गमकौआ । √भिज-भिजौआ । मिट्ठ- मिठौआ । √ठला धातुक संग विशिष्ट बनबैत अछि- √ठला+औआ = ठलबा ।

औटा -भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ई प्रत्यय कृत स्वरूपक देखि पड़ैछ आ '-क साधन' अर्थक द्योतन करैछ, यथा- √छान-छनौटा ।

अन्यत्र ई तद्धित स्वरूपमे सेहो देखि पड़ैछ । यथा-ऊपर-उपरौटा । तर-तरौटा ।

औनी- कृत स्वरूपमे ई प्रत्यय संज्ञाक निर्माण करैत देखि पड़ैछ, यथा-√खा-खबौनी । पच-पचौनी ।

औंस - एहि प्रत्ययसँ अवशिष्ट अर्थक द्योतक संज्ञाक निर्माण होइत देखि पड़ैछ यथा- √कूट- कुटौंस । √चाल-चलौंस ।

'चालनि' सँ ई प्रत्यय चलौंसक समानार्थक चलनौंस तद्धितान्तक निर्माण करैछ । एहिना अल्पार्थक विशेषण सेहो विशेषणसँ बनबैछ । यथा- मीठ-मिठौंस ।

खी - कृत् स्वरूपमे ई प्रत्यय √खा धातुसँ खाँरू तथा तद्धित स्वरूपमे कनसँ कनखी शब्द व्युत्पन्न करैत देखि पड़ैछ ।

ठी- ई प्रत्यय कृत् स्वरूपमे √सुख धातुसँ सुखठी/सुकठी । विशेषणक निर्माण करैछ ।

तद्धित स्वरूपमे ई '-सँ सम्बद्ध' अर्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- तिल-तिलठी । मुँह- मुँहठी ।

किछु शब्दमे लघ्वर्थक स्वार्थिक शब्दकेँ निष्पन्न करैछ, यथा-सौरा-सौराठी ।

नी - कृत् स्वरूपमे ई प्रत्यय '-क निर्मित' 'उपकरण सूचक' अर्थक द्योतन करैछ, यथा- √चाट-चटनी । √बूक-बुकनी । √मथ-मथनी ।

ई संज्ञाक दीर्घ स्वरूपक निर्माण कतोक धातुक योगसँ करैत देखि पड़ैछ तथा 'क साधन' अर्थ प्रदान करैत अछि । यथा- √चाल-चलनी । √चास-चासनी । √बाढ़-बढ़नी ।

कतोक ठाम ई व्यवसायार्थक संज्ञा शब्दक निर्माण करैछ, यथा- √कुट-कुटनी । √पिस-पिसनी ।

तद्धित स्वरूपमे लघ्वर्थक स्वार्थिक शब्दक निर्माण करैछ, यथा- कूड़ा-कुड़नी (छोट कूड़ा)

सीरा शब्दसँ ई '-सँ निर्मित' अर्थक द्योतक संज्ञा शब्द बनबैत अछि, यथा- सीरा- सिरनी ।

हा- ई प्रत्यय कृत् स्वरूपमे दुइ गोट शब्दमे युक्तार्थक संज्ञाक निर्माण करैत देखि पड़ैछ । यथा- √फुट-फुटहा । √बाज-बजहा (मत्स्यविशेष)

तद्धित स्वरूपमे ई प्रत्यय '-सँ निर्मित', '-सँ युक्त', '-सँ सम्बद्ध', 'आकृतिक' आदि अर्थक विशेषण शब्दक निर्माण करैछ यथा- कल-कलहा । काँस-कँसहा । खट्टा-खटहा । गोड़-गोड़हा । चर-चरहा । ताम-तमहा । दूध-दुधहा । धान-धनहा । पेट-पेटहा । फूल-फुलहा । भोर-भोरहा । लट्टा-लटहा । सूप-सुपहा ।

उभयनिष्ठ प्रत्ययक अतिरिक्त जे कृत् ओ तद्धित प्रत्यय भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे दृष्टिगोचर भेल अछि, ताहिमे किछु तँ एकाधिक शब्दकेँ निष्पन्न करैछ आ किछु प्रत्यय मात्र एकेटा शब्द-निर्माणमे सहायक देखि पड़ैछ । एहि आधारपर भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे प्राप्त तद्धित ओ कृत् प्रत्ययकेँ चारि भागमे बाँटल जा सकैछ-

(क) बहुल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय

(ख) एकल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय

(ग) बहुल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय

(घ) एकल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय ।

बहुल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय

अउ- एहि प्रत्ययसँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे दुइ गोट शब्द निष्पन्न देखि पड़ैछ, यथा- डोम-डोमउ । साम-समउ ।

आइ- ई प्रत्यय विशेषणसँ भावार्थक संज्ञाक निर्माण करैत अछि, यथा अम्मत-अमताइ, खट्टा- खटाइ । मधुर-मधुराइ ।

आठ- ई प्रत्यय पैघत्वक सूचक स्वार्थिक प्रत्यय थिक, यथा- माडुर-मडुराठ । सिङही-सिङहाठ । कतहु-कतहु ई संज्ञाक स्वरूपक निर्माणमे सेहो सहायक देखि पड़ैछ, यथा-जड़ि-जड़िआठ । सूप-सुपाठ जेना- काँच-कँचाठ । तहु किंचिदर्थक विशेषण बनबैछ ।

आह- ई प्रत्यय अल्पार्थक सूचक स्वार्थिक प्रकृतिक अछि तथा विशेषणसँ संज्ञा निर्माण करैछ, यथा- अम्मत-अमताह । खट्टा-खटाह । चिम्मड़-चिमड़ाह । पीलु-पिलुआह । मधुर-मधुराह ।

संज्ञासँ विशेषण निर्माणमे ई युक्तार्थक देखि पड़ैछ । यथा- कोन-कोनाह । खुद्दी-खुदिआह । पेट-पेटाह । बालु-बलुआह । मुस्सा-मुसाह । भोर-भोराह । माटि-मटिआह । रोड़-रोड़ाह । सन-सनाह । सीर-सिराह । सोर-सोराह ।

आहा- ई प्रभेद विशेषणक निर्माण करैत अछि, यथा- गलल-गललाहा । पाकल-पकलाहा । सड़ल-सड़लाहा । उसिनल-उसिनलाह ।

उक- ई प्रत्यय संज्ञासँ समयसूचक विशेषण शब्दक निर्माण करैत देखि पड़ैछ, यथा- भोर-भोरुक । राति-रातुक ।

एठ- एहिसँ संज्ञा शब्दसँ सम्बद्ध अर्थ सूचक संज्ञाक निर्माण होइछ । यथा- अरबा-अरबेठ । नाङरि-नङरेठ ।

औनी- ई प्रत्यय भावार्थक संज्ञा तथा स्थानसूचक विशेषण निर्माण करैत देखि पड़ैछ यथा- कषाय-कसौनी । पोखरि- पोखरौनी ।

का- ई संज्ञा, विशेषण तथा भूतकालिक कृदन्तसँ प्रभेदार्थक विशेषणक निर्माण करैछ, यथा- तीत-तितका । धारी-धरिका । पाकल-पकलका । मिठ-मिठका । मेहीं-मेहिंक्का । मोट-मोटका । सीझल-सिझलका ।

गर- ई स्वार्थिक प्रकृतिक अत्यन्त जीवन्त प्रत्यय तथा आधिक्यक अभिव्यञ्जक अछि, । यथा- काठ-कठगर । गील-गिलगर । चिक्कन-चिकनगर । छल्ही-छल्हिगर । झाँस-झँसिगर । झोर-झोरगर । तेल-तेलगर । दूध-दुधगर । नोन-नोनगर । पानि-पनिगर । मिट्ठ-मिठगर । सोन्ह-सोन्हगर । फोंक-फोंकगर ।

दान- ई स्थान सूचक संज्ञा शब्दक निर्माण करैछ । यथा- पान-पानदान । पीक-पिकदान ।

दार- ई प्रत्यय युक्तार्थक सूचक अछि । यथा- टोंटी-टोंटीदार । मेन-मेनदार । रस-रसदार । डा. सुभद्रझा एकर स्रोत आर्यभाषाक 'धार' मानने छथि ।[5]

बा- ई स्वार्थिक प्रत्यय संज्ञाक दीर्घतम स्वरूप निर्माणमे सहायक होइछ । यथा- भाकुर-भकुरबा । लड्डू-लडुब्बा । साँचा-सँचबा । मारा-मरबा ।

विभिन्न शब्दसँ ई आकृतिसूचक विशेषणक सेहो निर्माण करैछ, यथा- केरा-केरबा । खरभुज-खरभुजबा । ताग-तगबा ।

'मूङ' शब्दक संग ई सम्बन्धार्थक संज्ञाक निर्माण करैत देखि पड़ैछ । यथा- मूङ-मुङबा (मिष्टान्न विशेष)

ड़ा- ई प्रत्यय अंगार्थक संज्ञासँ स्थनार्थक संज्ञाक निर्माण करैत देखि पड़ैछ, यथा- पुच्छी-पुछड़ा ।

री- ई सम्बन्धसूचक विशेषण ओ संज्ञाक निष्पति देखबैत अछि, यथा- गौँआ-गौआरी ।

बार- एहि प्रत्ययसँ समानार्थक सूचक शब्द निष्पन्न होइत देखि पड़ैछ, यथा- कूड़ा-कुड़बार । चिन-चिनवारमे ई स्थानसूचक अर्थ दैछ । चिन शब्दक अर्थ उह्य अछि ।

ही- ई प्रत्यय माष (मास विशेष)सँ मषही (माषमे उत्पन्न), माछसँ मछही, दालिसँ दलिही, दूध-दुधही, घीब-घिबही, तेल-तेलही (सम्बन्धार्थक विशेषण) शब्द निष्पन्न करैछ ।

एकल प्रयुक्त तद्धित प्रत्यय

संख्याक दृष्टिमे एहि प्रकारक प्रत्यय अनल्पे अछि । ई सभ कोनो खास एकटा शब्दक स्वरूप ओ अर्थमे परिवर्तन आनि दैत दृष्टिगोचर होइछ । यथा-

अओठ- पूस-पुसओठ (पूस मासमे नेनाकेँ बगियासँ सेदबाक विधि) ।

अठ- चाउर-चउरठ (चाउरक चिक्कस)

अन्नी- गोड़हा-गोरहन्नी (छोट गोड़हा)

आठ - भैंस-भैंसाठ (बकेन महींसक दूध)

आँठ- मधुर-मधुराँठ (अल्प मधुर)

आय- तेल-तेलाय (तेलक मृत्तिकापात्र)

आर- ऐंठ-ऐंठार (ऐंठ स्थल)

इल- आम-आमिल (आमक सुखौंत)

इला- फोंक-फोंकिला (फोंक सदृश)

उकी- डाँट-डँटुकी (पातर डाँट)

उब्बा- नाक-नकुब्बा (नाकसँ युक्त)

उल्ली- कड़ाह-कड़हुल्ली (छोट कड़ाही)

उली- काठ-कठुली (छोट कठौत)

ऐती- सभा-सभैती (सभा भरि)

ओरि- साध-सधोरि (गर्भिणीकेँ दोसराक ओतय देल भोजन-मिष्टान्नादि)

औआ- साँझ-सँझौआ (साँझ परहक)

औकी- सीधा-सिधौकी (सीधा रखबाक पात्र)

औंझी- कषाय-कसौंझी (आमक खाद्य विशेष) ।

औट- पावनि-पवनौट (पावनिक अवसरपर पसारीकेँ देल पकमान)

औड़- उखड़ि-उखरौड़ (उखरि लग खसल अन्न)

कुन- तार-तारकुन (ताड़क फड़)

कूह- काँच-कँचकूह (किञ्चित काँच)

खा- कान-कनखा (कान्ह लगक भाग)

चन्ना- भाकुर-भकुरचन्ना (छोटभाकुर)

चा- फोंक-फोकचा(मत्स्यादिक फेफड़ावला भाग)

चुनी- गरइ-गरचुनी (छोट गरइ)

छुरड़ा- पानि-पनिछुरड़ा (अत्यन्त जलगर)

टा- खप्पा-खपटा (पाकल माटिक टुकड़ी)

म- काठ-कठम (किञ्चित कठोर आमादि)

ला- देस-देसला (देशक)

ली- छीपा-छिपली (छोट छीपा)

सी- माली-मलसी (तेल रखबाक मृत्तिका पात्रविशेष)

सोह- पानि-पनिसोह (पानि जकाँ स्वाद)

हट- बेर-बेरहट (बेरू पहरक भोजन)

बहुल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय

अ- ई प्रत्यय क्रियार्थक संज्ञाक निर्माण करैत अछि, यथा- √छाँट-छाँट । √झाँप-झाँप । √झाँस-झाँस । √टूट-टूट । √पाक-पाक । √रान्ह-रान्ह ।

अक- ई प्रत्यय संज्ञा शब्दक निर्माण करैछ, यथा- √खा+ अक-खायक । √पी-पीअक । पीयक । √बैस+अक-बैसक

अन- ई प्रत्यय कर्मार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- √जोड़-जोड़न । √फटक-फटकन । √फोड़-फोड़न ।

अल- ई प्रत्यय भूतकालिक कृदन्त शब्द निर्मित करैछ, यथा- √पाक-पाकल । √गल-गलल । √पच-पचल । √सीझ-सीझल ।

आन- ई प्रत्यय व्यापारबोधक संज्ञाक निर्माण करैछ । यथा-
√उधि-उधियान । √कुट-कुटान । √पिस-पिसान ।,

आओन- ई प्रत्यय ओनिसँ सम्बद्ध अर्थक द्योतक संज्ञा शब्दक निर्माण करैछ । यथा- √पिस-पिसाओन । √फटक-फटकाओन ।

उआ- ई प्रत्यय अत्यन्त जीवन्त अछि तथा विभिन्न क्रियापदसँ विशेषण शब्दक निर्माण

करैछ यथा- √गुह-गुहुआ । √घोर-घोरुआ । √चीर-चिरुआ । √छान-छनुआ । √छिल-छिलुआ । √ठोक-ठोकुआ । √ढार-ढरुआ । √तर-तरुआ । √पोछ-पोछुआ । √बघार-बघरुआ । √बेल-बेलुआ । √भर-भरुआ । √भूज-भुजुआ । √मह-महुआ । √माख-मखुआ । √रान्ह-रन्हुआ ।

औना- ई प्रत्यय स्थानवाची संज्ञाक निर्माण करैत देखि पड़ैछ । यथा- √अंचा-अचौना । माँड़+√पसा-मड़पसौना ।

ना- ई प्रत्यय उपकरण अर्थक संज्ञाक निर्माण करैछ । यथा- दालि+√घोंट-दलिघोंटना । √बेल-बेलना ।

नी- ई प्रत्यय सेहो क्रियार्थक संज्ञाक निर्माण करैछ, यथा- √फांक-फकनी ।

एकल प्रयुक्त कृत् प्रत्यय

एहि प्रत्ययक संख्या अत्यल्पे अछि । यथा-

आगा- √खोध-खोधागा (नक्काशी)

हुका- √रीन्ह-रिन्हुका (रान्हल वस्तु)

औंत- √सुखा-सुखौंत (सुखलापर घटल वजन)

धुर- √खा-खाधुर (अधिक खयनिहार)

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे किछु शब्दक साधनमे एकाधिक प्रत्ययक योग देखल जा सकैछ, यथा- अम्मत+आह+आ - अमताह । आम+इल+गर- अमिलगर । करछु+ल+ली- करछुल्ली । √खोर+ना+ठी-खोरनाठी । √गल+अल+आहा- गललाहा । गोड़+हा+अन्नी- गोड़हन्नी । घी+अ+ही- घिवही । √चाल+अनि+औंस-चलनौंस । तेल+आह+ई-तेलही । दूध+आह+ई-दुधही । √भुज+ना+ठी- भुजनाठी । पेट+आह+ई-पेटही । मधुर+आह+आ/इ- मधुराहा-मधुराही । हल्लुक+आह+आ-हल्लुकाहा ।

एहि शब्दावलीक शब्द-साधनमे प्रयुक्त अनेक प्रत्यय वस्तुतः मूल शब्दक विकसित रूप थिक । मैथिलीमे अबैत-अबैत जखन कोनो यौगिक शब्दक अपर अवयवक ध्वनि परिवर्त्तनक कारणेँ अर्थ दुरूह भऽ गेलैक अथवा लुप्त भऽ गेलैक, तखन एहन अवयवक अवशिष्ट ध्वनिकेँ साम्प्रतिक स्थितिमे अर्थहीन होयबाक कारणेँ प्रत्यय मानबाक बाध्यता भऽ जाइत छैक जखन कि एखनो ई अवयव अपन मूल अर्थक द्योतन करैत देखि पड़ैछ, यथा-

हन- √खा-खइहन । घाठि-घठिहन । तेल-तेलहन । दालि-दलिहन । बीआ-बीहन । मूल-मुलहन/मुड़हन । ई प्रत्यय अन्नसँ निष्पन्न अछि ।

एहिना पकमान शब्दमे 'मान' अवयव स्वयं अर्थशून्य होयबाक कारणेँ यद्यपि प्रत्ययक सदृश बुझना जाइछ मुदा पक्व+अन्न-पक्वान्न-पकमानक विकासक अनुरूप एकरो अन्ने शब्दक विकसित रूप कहल जा सकैछ । एहि प्रकारक अन्य प्रत्यय सभ अछि-

औट- एहि प्रत्ययक मूल 'पट-बट' शब्द बुझना जाइछ, यथा-आम+औट-अमौट । सील+औट-सिलौट (शिलापट > सिलबट > सिलओट > सिलौट) । प्रायः एकर सादृश्येसँ (पावनि+औट) पवनौट शब्द निष्पन्न भेल अछि ।

औरी- एहि प्रत्ययक मूल 'वटी' बुझना जाइछ । ई प्रत्यय अत्यन्त जीवन्त अछि तथा युक्तार्थक शब्दक निर्माण करैछ । यथा- आद-अदौरी । कच(दालि)-कचौरी । घाम-घमौरी (फल विशेष) । चाउर-चरौरी । तिल-तिलौरी । तीसी-तिसिऔरी । दाना-दनौरी । फूल-फुलौरी । बीआ-बिऔरी । मुरइ-मुरौड़ी । शक्कर-सकरौड़ी ।

एहि ठाम सजमनिसँ सजौड़ीक निर्माणमे अन्तिम दुइ गोट व्यञ्जनक लोप विशिष्ट प्रकृतिक देखि पड़ैछ ।

हर- एहि प्रत्ययक मूल 'घट' बुझना जाइछ तथा एही अर्थक द्योतक शब्दक निर्माणमे ई सहायक देखि पड़ैछ, यथा- छूल-छुलहर । छर-छरहर । पुर-पुरहर । भाँड़-भड़हर । एहि प्रकारक स्थिति जाउर प्रत्ययमे सेहो देखि पड़ैछ । वस्तुतः जाउर प्रत्यय चाउर शब्दक घोषीकृत रूप थिक मुदा घोषीकृत रूपमे अर्थहीन होयबाक कारणेँ एकरा प्रत्यय मानबाक बाध्यता छैक, द्रष्टव्य- घोर-घोरजाउर । मट्ठा-मठजाउर ।

मैथिली प्रत्यय विधानपर विचार करबाक हेतु केरजान शब्दक निष्पति अत्यन्त आकर्षक अछि । दीनबन्धुझा एकरा निष्पन्न करबाक हेतु अजान प्रत्ययकेँ शब्द साधनक कारण मानैत छथि' । यथा- केरा+अजान- केरजान । मुदा वस्तुतः ई शब्द यौगिक मूल कदली+उद्यान-कदलीज्जान-केरीज्जान-केरजानसँ विकसित भेल बुझना जाइछ ।

एहि तरहक स्थिति आनो एकल प्रयोज्य वा अल्प प्रयोज्य प्रत्ययक संगे होयत, से सहजहि अनुमान्य अछि । परम्परागत यौगिक शब्दक विकासक कारणेँ मैथिली रूपमे ओकर अवयव तेना घसा गेल छैक जे अर्थहीन होयबाक कारणें ओकरा प्रत्यय मानबाक बाध्यता भऽ जाइत छैक मुदा प्रत्ययक जे शब्द-साधक-धर्म छैक तकर नितान्त अभाव एहन प्रत्ययमे देखि पड़ैछ । स्वभावतः प्रत्यय विधानमे एकल प्रयुक्त वा अल्प प्रयुक्त प्रत्यय द्वारा शब्द-साधनमे जीवन्तताक स्थिति नहि देखि पड़ैछ । यथा- 'चट' प्रत्ययक स्थिति द्रष्टव्य अछि । एहिसँ शब्द बनल देखि पड़ैछ- नोन+चट-नोनचट । भुन्ना+चट-भुनचट । पात+चट-पटचट /हाथ+चट-हथचट ।

एहि ठाम चटकेँ प्रत्यय स्वरूपमे नहि मानबाक हेतु सेहो एहि प्रकारक व्याख्या अछि । नून+√चाट-नुनचट । भूमि+√चाट-भुनचट । पात+√चाट-पतचट । हाथ+√चाट-हथचट ।

एहि तरहेँ देखैत छी जे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रत्यय विधानक प्रकृति जटिल अछि । प्रस्तुत अध्ययनसँ एहि विधानक स्पर्शटा संभव भऽ सकल अछि । एकरा ने पूर्ण कहल जा सकैछ आ ने अन्तिमे आ ने निर्दुष्टे । वस्तुतः एहिमे अनेक वैचारिक बिन्दु सभ छैक, यथा- प्रत्ययक मूल, ऐतिहासिक विकासक्रम, शब्द साधन क्षमता, एके प्रत्ययक विभिन्न-मूलकताक कारणेँ भिन्न-भिन्न अर्थक द्योतनमे समर्थ होयबाक प्रवृत्ति, एकल प्रयुक्त प्रत्यय एवं यौगिक शब्दसँ विकसित प्रत्यय-स्वरूपक प्रत्यय-अवधारणा इत्यादि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक व्याकरण ओ भाषातात्त्विक विवेचनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे भाषाक स्वर ओ व्यञ्जन ध्वनि यथावत् अछि तथा ह्रस्वत्तर स्वर सेहो प्रयुक्त अछि । एहि शब्दावलीमे अनेक स्वरगुच्छ वर्त्तमान देखि पड़ैछ, जाहिमे स्वरक अधिकतम संख्या तीन अछि । किछु अपवादकेँ छोड़ि व्यञ्जनगुच्छ सामान्यतः सवर्गीय प्रकृतिक दृष्टिगोचर होइछ । एहि शब्दावलीमे मात्रात्मक अभिरचनाक दृष्टिएँ एकाक्षरसँ षडक्षर धरि शब्द भेटैत अछि । यौगिक शब्द त्र्यक्षर वा अधिक अक्षरसँ युक्त होइत अछि । एकर विभिन्न स्वरूप देखि पड़ैछ । संज्ञा ओ संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया, विशेषण ओ संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया एवं क्रिया ओ संज्ञाक योगसँ यौगिक शब्दक निर्माण भेल देखि पड़ैछ । यौगिक शब्द निर्माणक क्रममे प्रथम अवयव ओ द्वितीय अवयवक स्वरूपमे किञ्चित परिवर्त्तन देखल जाइछ । योगरूढ़ शब्द सेहो भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे पर्याप्त ओ पारिभाषिक कोटिक अछि । एहि शब्दावलीमे अनेक शब्दयुग्मक अपर अवयव सार्थक नहि देखि पड़ैछ । किछुए शब्दयुग्ममे दुनू अवयव सामान्यतः समाहारार्थक अछि । किछु शब्दयुग्मक प्रकृति योगरूढ़ जकाँ अछि ।

उद्‌गमक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे परम्परागत ओ गृहीत दुनू प्रकार शब्द समाहित अछि । गृहीत शब्दमे तुर्की, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, चीनी, यूनानी आदि विदेशी भाषा तथा बंगला, हिन्दी आदि स्वदेशी भाषाक शब्द देखि पड़ैछ । किछु शब्द संकर कोटिक अछि जे भाषिक समन्वयक अपूर्व दृष्टान्त अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञाक तीन गोट रूप भेटैत अछि - लघु, दीर्घ तथा दीर्घतम । किछु शब्दक तीनू स्वरूप नहिओ भेटैत अछि । एहि शब्दावलीमे अनेक विशेषण पारिभाषिक ओ सूक्ष्म अर्थक द्योतक अछि । किछु विशेषण विशिष्ट आ खास कऽ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीटामे प्रयुक्त होइछ । किछु विशेषण अनुरणात्मक प्रकृतिक अछि । एहि शब्दावलीमे सूक्ष्म अर्थक द्योतक अकर्मक, सकर्मक, नामधातु, सरल एवं संयुक्त क्रियाक प्रयोग भेटैछ । एकर अनेक अव्यय अनुरणात्मक प्रकृतिक अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे पैघत्व ओ लघुत्वक भिन्नता, आधिक्य ओ अल्पत्वक सूचक अनेक शब्द स्वार्थक प्रत्ययक योगसँ बनल देखि पड़ैछ । एहिमे पर्यायवाची शब्दक दुइ गोट कोटि भेटैछ - पर्याय ओ पर्यायवत् ।

वर्त्तनी ओ उच्चारण भेदक कारणेँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे मानकीकरणक समस्या देखि पड़ैछ अछि, जे भाषाक सामान्य समस्या थिक । एहि शब्दावलीमे शब्दसाधनामे उपसर्गक अत्यल्प प्रयोग देखि पड़ैछ । मुदा प्रत्ययक स्थिति अति व्याप्त अछि । बहुश: एकल प्रयोज्य ओ बहुल प्रयोज्य तद्धित ओ कृत् प्रत्यय शब्दसाधनामे सहायक देखि पड़ैछ, जाहिमे किछु तँ अत्यन्त जीवन्त प्रकृतिक अछि, मुदा कतोक प्रत्ययक शब्दसाधन-क्षमता सीमितो अछि । किछु संस्कृतक मूल शब्द परिवर्त्तित स्वरूपमे प्रत्ययक स्थितिकेँ प्राप्त कऽ लेलक अछि । ध्वनि ओ अर्थ परिवर्त्तनक विभिन्न दिशा भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे देखि पड़ैछ ।

सन्दर्भ-निर्देश

1. फा. मै.ले., पृ० 206
2. एहि सम्बन्धमे एक गोट लोककथाक उदाहरण द्रष्टव्य अछि, यथा- एकटा छौंड़ा रहय । ओ बगियाक गाछ तर बगिया खाइत रहय । ओतऽ एकटा ठकिकन बुढ़िया पहुँचल । एकरासँ बगिया मङलकइ । ताहिपर छौंड़ा कहलकइ- तें कथीमे लेबयँ । बुढ़िया कहलकइ जे-हाथ पर लेब तँ हथाइन भऽ जायत, पैर पर लेब तँ पयराइन भऽ जायत । माथ पर लेब तँ मथाइन भऽ जायत, खोंइछमे लेब तँ खोंइछाइन भऽ जायत । छौंड़ा बाजल- तखन कथीमे लेबयँ ? बुढ़िया कहलकइ जे धोकड़ामे धऽ दे । एहि क्रममे बुढ़िया छौंड़ाकेँ धोकड़ामे कसि कऽ विदा भऽ जाइत अछि (कथा आगुओ चलैत अछि ।
3. सम्भवत: इ शब्द बिसौंढ़ीसँ सम्बद्ध होयत ।
4. यद्यपि ई शब्द साम्प्रतिक मैथिलीमे लुप्त अछि । मुदा नेपालीमे एखनो नपनाक अर्थमे प्रयुक्त अछि । सम्भवत: पथियाक पैथ स्वरूपमे ई मैथिलीमे जीवन्त रहल होयत मुदा क्रमश: अप्रचलित भऽ गेल होयत ।
5. फा. मै.लै., पृ.-255
6. यद्यपि झाँसब क्रिया अप्रचलित अछि मुदा युग्मक क्रियाक रूपमे झाँसब-झाँसब प्रचलित अछि जकर अपर भागसँ झाँसक विकास विचारणीय अछि ।
7. दीनबन्धुझा एतऽ 'ल्ली' प्रत्यय कहने छथि जे समीचीन नहि बुझना जाइछ । द्रष्टव्य मिथिला भाषा विद्योतन, पृ.-55.
8. तत्रैव, पृ.-83

उपसंहार

मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि से स्पष्ट होइत अछि ।

भारतीय भोजन परम्पराक उल्लेख विभिन्न प्राचीन वाङ्मयमे भेटैत अछि । एहिसँ भारतीय भोजन सामग्री ओ विन्यासक हेतु प्रयुक्त शब्दावलीक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक दिग्दर्शन होइत अछि । भारतीय भोजन पद्धतिमे विधि-निषेधक विचार आदिकालेसँ होइत देखि पड़ैछ तथापि विधि-निषेधक स्थितिमे निरन्तर परिवर्त्तन सेहो होइत रहल अछि ।

मैथिल भोजन परम्परा भारतीय भोजन परम्पराक अनुसरणपरक होइतहुँ, दुहुक आधारभूत तत्त्व एक होइतहुँ, किछु अर्थमे विशिष्ट अछि जे एहि ठामक भौगोलिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक अनुकूलनक कारणेँ भेल अछि । कालगत अन्तर्जातीय ओ अन्तरप्रान्तीय सम्पर्क, औद्योगिक विकास एवं अन्य विविध कारणसँ मिथिलाक भोजन पद्धतिक स्वरूप ओ शब्दावली प्रभावित भेल जा रहल अछि जकर परिणाम आधुनिक भाषामे प्रचलित-खाना, नाश्ता, कचौरी, रसोइघर, प्लेट, ग्लास, आदि शब्दमे देखल जा सकैछ । स्पष्टे मैथिल रुचिपर युगानुकूल प्रभाव पड़ल अछि आ भोजन सम्बन्धी शब्दावली प्रभावित होइत जा रहल अछि । सम्प्रति पारम्परिक भोजन प्रणाली ओ आधुनिक रुचि-परिवर्त्तनक संक्रमण देखल जाइत अछि । ग्राम्य क्षेत्रमे पारम्परिक भोजन प्रणाली बहुत किछु रक्षित रहल अछि किन्तु नगर-सांस्कृतिक प्रसारक संग ओहिमे परिवर्त्तनक गति देखल जाइछ ।

मैथिलीक प्रादुर्भावकालेसँ साहित्यमे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक यत्र-तत्र प्रयोग होइत रहल अछि । मैथिल निबन्धकारलोकनिक संस्कृत ग्रन्थमे शब्दक व्याख्याक हेतु मैथिली पर्यायक उपयोग देखि पड़ैछ । चर्यापद, प्राकृत-पैङ्गलम् आदि ग्रन्थमे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रसंगत: उल्लेख भेल अछि । मैथिलीक आदि रचनाकार कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर ओ धूर्त्तसमागममे तँ भोजन

सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलीक पुष्कल ओ सुसंगठित निवेश भेल अछि । आदिकालीन भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे कतोक अर्थलोपक स्थितिमे यथा-झष, नेत इत्यादि; कतोक शब्द लोपक स्थितिमे, यथा-बीची, कातोलि, वोवलि, कूर, खण्डउति, वाडसि, नायर, मिलन्धि, सरुआरी, मधुकुपी इत्यादि; कतोक ध्वनि परिवर्त्तनक स्थितिमे, यथा- करहल, खडनी, वरली चिउला, पिप्पली, जिरक, शुंठी, इत्यादि; तथा कतोक शब्द अर्थ परिवर्त्तनक स्थितिमे, यथा बिरओला, लेसन इत्यादि अछि ।

मध्यकालीन अवहट्ठ रचना, पदावली ओ नाट्य साहित्य तथा आधुनिक युगक महाकाव्य, मुक्तक काव्य, कथा, उपन्यास, निबन्ध, नाटक ओ लोकसाहित्य आदि विभिन्न विधामे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग एकर मानव जीवनक सन्निकटताक कारणेँ स्वाभाविक रूपेँ होइत देखि पड़ैत अछि ।

आधुनिक मैथिली भाषामे भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक स्रोत भोजनसँ सम्बद्ध उपकरण, आधार सामग्री ओ कार्य व्यापार अछि । निरन्तर वैज्ञानिक अनुसंधानक कारणेँ उपकरणमे अनेक अप्रयुक्त होयबाक स्थितिमे देखि पड़ैछ, खास कऽ कुटान ओ पिसानसँ सम्बद्ध उपकरण ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे धातु, पाथर, माटि, काठ, बाँस ओ तृणक उपकरणक व्यवहार होइत रहल अछि, मुदा बहुतो उपकरण आधुनिक जीवनमे अप्रयुक्त होयबाक कारणेँ एहिसँ सम्बद्ध शब्दावली लोपक स्थितिमे देखि पड़ैछ ।

भोजनक आधार सामग्रीमे विभिन्न प्रकारक अन्न, व्यञ्जन, फल इत्यादि अबैत अछि । एहि सभक पारम्परिक प्रयोग ओ शब्दावलीमे परिवर्तनक स्थिति अत्यल्प देखि पड़ैछ । भोजनक कार्य व्यापारसँ सम्बद्ध शब्दावली सेहो आधुनिक जीवनमे विकासक प्रक्रियामे अछि ।

एहि तरहेँ मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक क्षेत्र व्यापक होयबाक संगहि निरन्तर विकासमान अछि ।

एहि शब्दावलीक अध्ययनक क्रममे शब्दावली-संकलन ओ व्याख्यासँ मैथिलीक एहि क्षेत्रक विपुल शब्द-सामर्थ्यक बोध होइत अछि । संगहि अनेक सांस्कृतिक ओ समाजशास्त्रीय पक्षपर प्रकाश पड़ैत अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे रूढ़ शब्द एकाक्षरसँ त्र्यक्षर धरि भेटल अछि । यौगिक शब्द न्यूनतम त्र्यक्षरसँ आरम्भ होइछ । ई शब्द सभ संज्ञाक संगे- संज्ञा, विशेषण ओ क्रिया; विशेषणक संगे- संज्ञा, विशेषण, ओ क्रिया तथा क्रिया ओ संज्ञाक योगसँ निष्पन्न भेटैत अछि । भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे विशिष्ट पारिभाषिक कोटिक अनेक योगरूढ़ शब्द विलक्षण अर्थक संग प्रयुक्त भेटैत अछि ।

भोजन समबन्धी शब्दावलीमे उद्‌गमक दृष्टिएँ परम्परागत तत्सम, तद्‌भव ओ देशज तथा गृहीत विदेशज शब्दक स्थिति देखि पड़ैछ । गृहीत शब्दावलीमे फारसी, ग्रीक, अरबी, तुर्की ओ अन्य भाषाक शब्दक स्थिति देखि पड़ैछ जे ऐतिहासिक संक्रमणक द्योतक अछि । एही संक्रमणसँ प्रभावित मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अनेक संकर शब्द सेहो देखि पड़ैछ ।

अर्थक दृष्टिएँ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे संज्ञा, विशेषण, क्रिया ओ अव्यय शब्दक अवस्थिति देखि पड़ैछ । संज्ञाक तीन गोट स्वरूप क्रमशः लघु, दीर्घ ओ दीर्घतम भेटैछ । मुदा कतोक शब्दक दू अथवा एक्कोटा स्वरूप सम्प्रति प्रचलित भेटैछ । स्वाद, रंग, आकार इत्यादिक द्योतक विशिष्ट विशेषण शब्दक प्रयोग भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे विशेष देखि पड़ैछ । एहिमे अनेक अनुरणात्मक प्रकृतिक अछि । एहि शब्दावलीमे भोजन व्यापारक विभिन्न स्थितिक निदर्शनक हेतु विशिष्ट पारिभाषिक कोटिक अनेक क्रियापदक प्रयोग होइछ । अकर्मक, सकर्मक, नामधातु, सरल एवं संयुक्त क्रियापदक प्रयोग देखि पड़ैछ । अव्यय सेहो अनुरणात्मक ओ पुनरावृत्तिपरक भेटैछ ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे स्वार्थिक प्रत्ययक योगसँ आधिक्यक ओ अल्पत्वक सूचक वा संज्ञाक विभिन्न रूपक सूचक स्वार्थक शब्द समूह भेटैत अछि । अनेक शब्दक पर्याय ओ पर्यायवत् रूप सेहो भेटैत अछि ।

लोकजगतक प्रत्यक्ष सम्पर्कसँ गृहीत भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे उच्चारण भेद ओ वर्त्तनी भेदसँ सम्बद्ध वैकल्पिक शब्द समूहक आधिक्य देखि पड़ैछ, जकर मानकीकरणक आवश्यकता व्याकरण ओ भाषतात्विक समस्या अछि । भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अर्थ परिवर्तनक प्रक्रिया सेहो बहुशः दृष्टिगोचर होइछ ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक शब्द निर्माणमे सहायक उपसर्ग ओ प्रत्ययमे उपसर्गक स्थिति अल्पसंख्यक अछि । ई संस्कृतपरक शब्दहिटामे देखि पड़ैछ तथा स्वयं सेहो संस्कृतेसँ परिगृहीत भेटैत अछि । संस्कृत उपसर्ग मैथिली शब्दोकेँ प्रभावित करैछ, तकरो एकाधटा उदाहरण भेटि जाइछ ।

मुदा एहि शब्दावलीमे प्रत्यय विधानक स्थिति अत्यन्त व्यापक ओ विशृंखल देखि पड़ैछ । कतोक परम्परागत शब्द घसा कऽ साम्प्रतिक मैथिली शब्दावलीमे प्रत्यय सदृश दृष्टिगोचर होइछ । किछु प्रत्यय तँ अत्यन्त जीवन्त प्रकृतिक देखि पड़ैछ जकर शब्द-साधन-क्षमता अत्यन्त व्यापक छैक । मुदा कतोक प्रत्यय एक वा दू गोट शब्द मात्रकेँ देखि पड़ैछ । किछु प्रत्यय कृत् बनबैत प्रकृतिक अछि आ किछु तद्धित प्रकृतिक, तँ किछु उभयनिष्ठ कोटिक अछि तथा कृदन्त ओ तद्धितान्त दूनू प्रकारक शब्द निष्पन्न करैत अछि । किछु प्रत्यय संज्ञाक विभिन्न रूपकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु प्रयुक्त देखि

पड़ैत अछि । किछु प्रत्यय लगला उत्तर शब्दक मौलिक प्रकृतिमे परिवर्त्तन दृष्टिगोचर होइछ । किछु प्रत्यय संयुक्त स्वरूपक सेहो भेटैछ । अर्थात् शब्दक निष्पतिमे अनेक प्रत्ययक क्रमिक योगसँ क्रमिक शब्द निष्पत्तिक शृंखला देखि पड़ैछ, यथा– (आम-इल-गर) अमिलगर इत्यादि ।

यद्यपि यथासाध्य मैथिली शब्दकोषक समृद्धि ओ भाषातात्त्विक अध्ययनक दृष्टिएँ प्रस्तुत ग्रन्थमे प्रचुर सामग्रीक संचय कयल गेल अछि, तथापि एतबेपर 'इत्यलम्' नहि कहल जा सकैत अछि ।

●

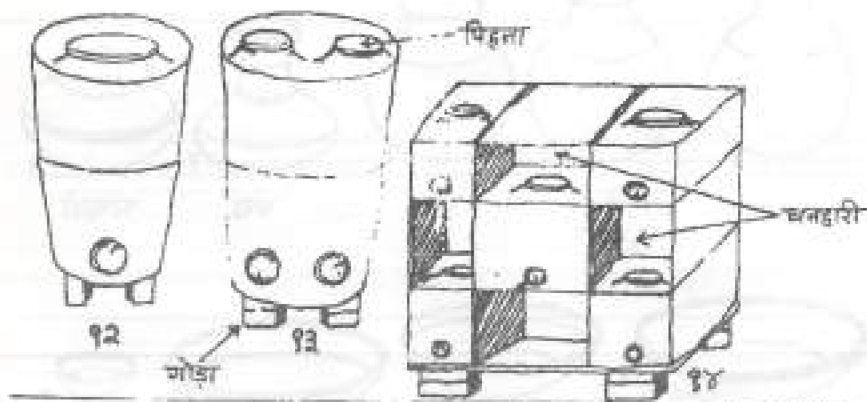
परिशिष्ट– क

कतिपय उपकरणक रेखाचित्र

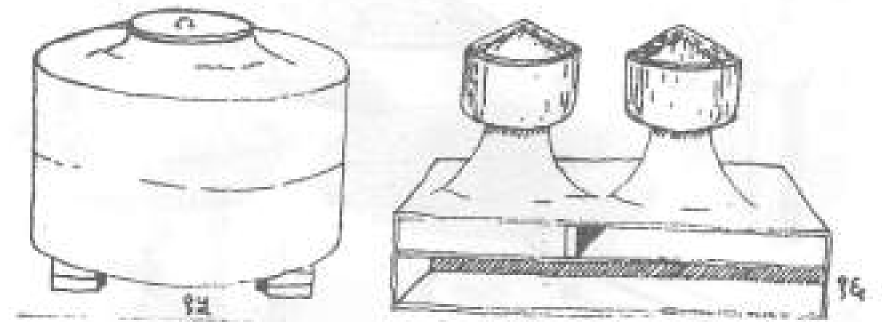




चूल्हि (एक चुल्हिया) चूल्हि (दु चुल्हिया)



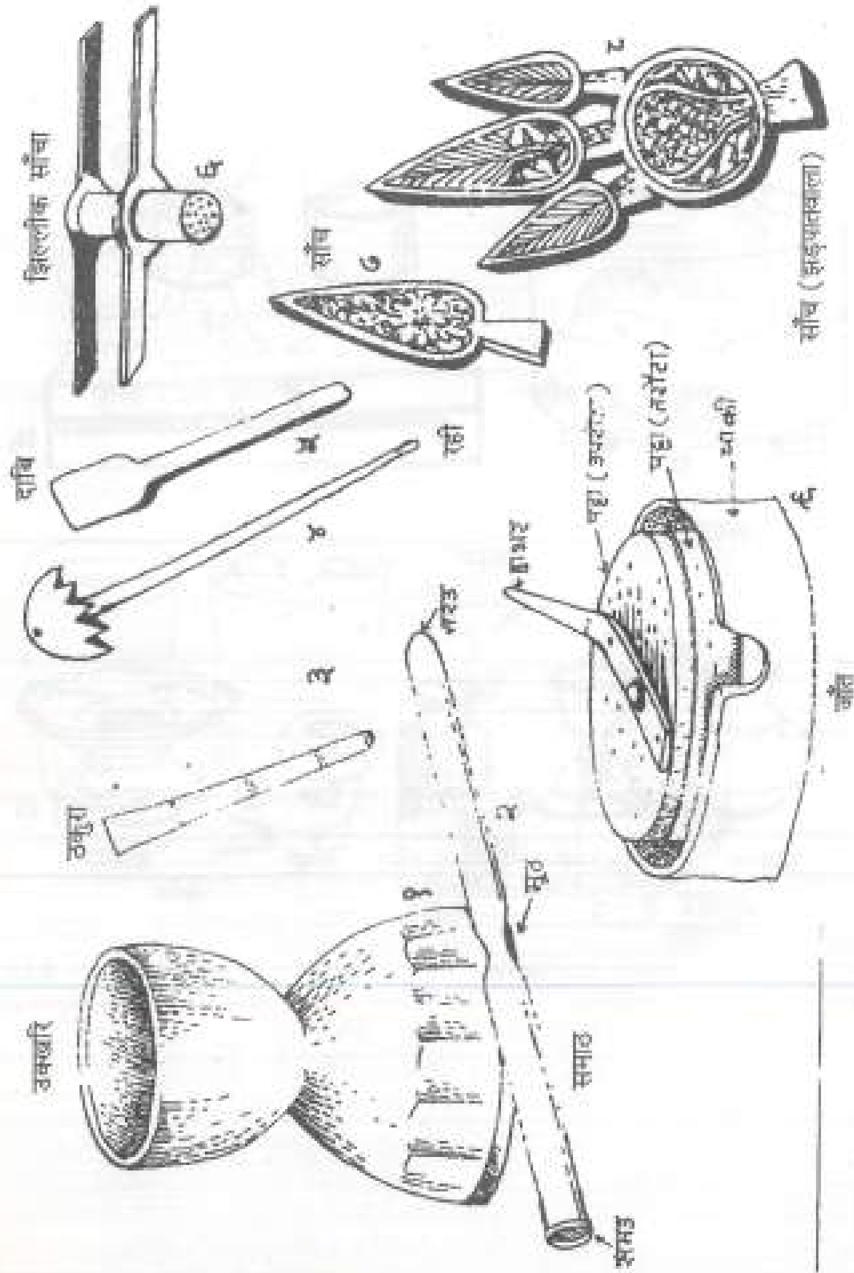
कोठी (एक मुहँ) कोठी (दु मुहँ) पचकोठिया

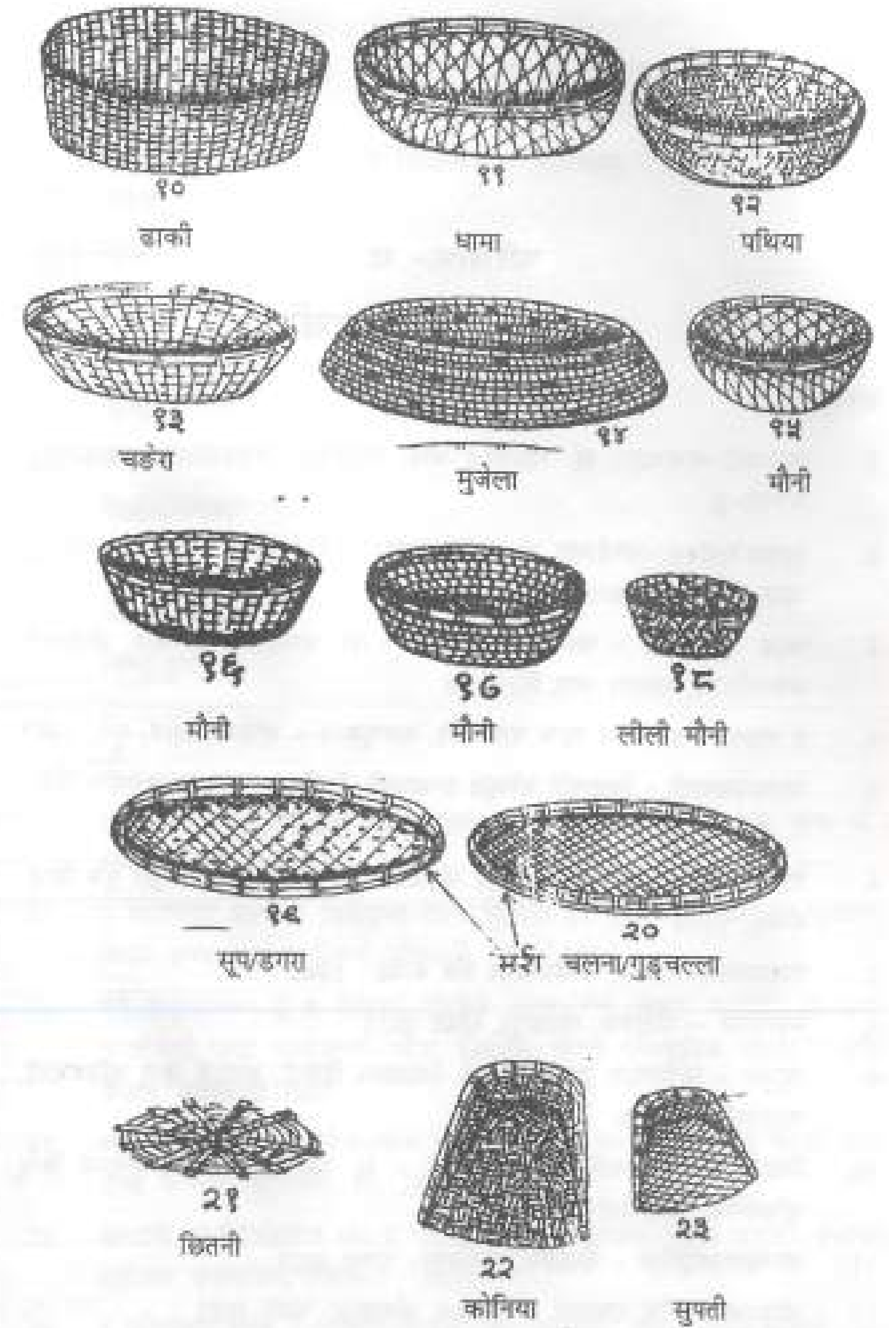


जवरा मोड़ा



सोवरना पिकदानी छिलुआ लोटा तामा डाबर





१०
ढाकी
११
धामा
१२
पथिया
१३
चङेरा
१४
मुजेला
१५
मौनी
१६
मौनी
१७
मौनी
१८
लौली मौनी
१९
सूप/डगरा
२०
चलना/गुड़चल्ला
२१
छितनी
२२
कोनिया
२३
सुपती

परिशिष्ट- ख

अधीत ग्रन्थक सूची

संस्कृत

1. कादम्बरी-बाणभट्ट, सं. मोहनदेव पन्त, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली-6
2. गृहस्थ रत्नाकर -चण्डेश्वर, सं-कमलकृष्ण स्मृतितीर्थ, रोएल एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकता, 1928
3. चरक सूत्र स्थान - चरक संहिता, भाग-1 सं. जयदेव विद्यालंकार, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर दिल्ली, 6
4. द व्याकरण महाभाष्य आफ पतञ्जलि, वाल्यूम-1 - एफ.कीलहार्न, पूना, 1962
5. दानवाक्यावली - विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली, द्वितीय भाग, स.डा.जयमन्त मिश्र-पं. आनन्दमिश्र, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा।
6. देशीनाममाला - हेमचन्द्र, सं. आर. पीसेल-भाग-1, गोभर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई, 1880
7. नाट्यशास्त्र - भरत, निर्णयसागर प्रेस बम्बई- 1943
8. महाभारत - गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2023
9. रघुवंश - कालिदास ग्रन्थावली, सं. रेवाप्रसाद द्विवेदी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी 5, 1976
10. विक्रमोर्वशीय - कालिदास ग्रन्थावली - स. रेवाप्रसाद द्विवेदी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी- 5, 1976
11. श्रीमद्भगवद्गीता - गीताप्रेस, गोरखपुर- संवत 2023
12. श्रीमद्वाल्मिकीय रामायण - गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2023
13. शैवसर्वस्वसारप्रमाणभूतपुराणसंग्रह - विद्यापति संस्कृत ग्रन्थावली- द्वितीय भाग, सं. डा. जयमन्त मिश्र, पं. आनन्दझा, कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
14. सुश्रुतसंहिता - सं. अतिदेव विद्यालंकार, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहरनगर, दिल्ली-7

श्रुति-स्मृति-पुराण

15. अग्नि पुराण
16. अथर्ववेद
17. ऋग्वेद
18. छान्दोग्योपनिषद
19. तैत्तरीयोपनिषद
20. मनुस्मृति
21. याज्ञवल्क्यस्मृति
22. विष्णु पुराण
23. श्रीमद्भागवत पुराण

अङरेजी

24. इण्डिया इन द एज ऑफ कालिदास - बी. एस. उपाध्याय, एस. चन्द्र क., रामनगर, नयी दिल्ली- 1, 1968
25. ए एकाउण्ट आफ द डिस्ट्रिक्ट आफ पूर्णिया इन 1809-10, फ्रांसिस बुकनन, बिहार एण्ड, उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना, 1928
26. एन इन्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज आफ नौर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी-जी.ए. ग्रियर्सन, रोएल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता 1881
27. औरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज- डा सुनीति कुमार चटर्जी, रूपा एण्ड कम्पनी, कलकता-32, 1975
28. कचहरी टेकनिक्लिटीज और ए ग्लोसरी आफ हिन्दुस्तान, पेट्रीक कार्नेगी, सेकेण्ड एडीशन, इलाहाबाद मिशनप्रेस- 1877
29. द फौरमेशन आफ द मैथिली लैंग्वेज- डा. सुभद्रझा, लुजाक एण्ड कम्पनी, 46, ग्रेट रसेल स्ट्रीट, लन्दन, 1958

30. द स्टूडेण्ट्स संस्कृत इँगलिस डिक्शनरी- वी.एस.आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली-7
31. बिहार पीजैन्ट लाइफ-ग्रियर्सन, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, 24 बी. अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली- 6, 1975
32. भास-ए स्टडी-ए.डी.पुसलकर, मुन्सीराम मनोहरलाल, नयीसड़क, दिल्ली-6, 1968
33. मैथिली ग्रामर- जी.ए. ग्रियर्सन, रोएल एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकता, द्वितीय संस्करण, 1976
34. रूरल एण्ड एग्रीकल्चरल ग्लैसरी फौर द नौर्थ इस्टर्न प्रोभिन्सेज एण्ड अवध-विलियम क्रुक, सेकण्ड एडीशन, सुपरिनटेनडैन्ट ऑफ गोभर्नमेंट प्रिंटिंग, इण्डिया, कलकत्ता, 1888

हिन्दी

35. कवि कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति-डा. गायत्री वर्मा- हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पो.बा.न.-70, पिशाचमोचन, वाराणसी
36. कृषक जीवन सम्बन्धी व्रजभाषा शब्दावली, भाग-1 एवं 2, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960-61
37. ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली- डा. हरिहर प्रसाद गुप्त, राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई, 1959
38. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज-डा. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 1, 1965
39. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका-रामजी उपाध्याय, देवभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1966
40. वेदकालीन समाज- डा. शिवदत्त ज्ञानी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी- 1, 1976
41. हिन्दी पर्यायों का भाषागत अध्ययन- डा. बदरीनाथ कपूर, प्रयाग, 1965

मैथिली

42. अगिलही एवं अन्यकथा- कुमार गङ्गानन्द सिंह, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, 1966
43. अतिगीत - रवीन्द्रनाथठाकुर, पूर्वाचल प्रकाशन, न्यू पुनाइचक, पटना-1
44. अम्बचरित (पूर्वभाग)-सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, कचौरीगली वाराणसी
45. अरिपन-रूपनारायणचौधरी 'अनूप' नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा
46. अलंकार दर्पण, भाग-2 सीतारामझा, मास्टर खेलाड़ी लाल एण्ड सन्स, कचौरीगली, वाराणसी, 1341 साल
47. आँखिक सोझा, राजानन्दझा, पोहद्दी, दरभंगा- 2003
48. अंगरेजीफूलक चिट्ठी, रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, दरभंगा, 2002
49. - इन्टरमीडिएट मैथिली गद्य-पद्य संग्रह, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
50. एक खीरा : तीन फाँक- रामदेवझा, सुधा प्रकाशन, दरभंगा, 1965
51. एकांकी चयनिका- तन्त्रनाथझा, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा
52. एकांकी संग्रह-सं.- सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली अकादमी, पटना, 1977
53. ऋतुप्रिया- चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, मिश्रटोला, दरभंगा, 1976
54. कथा संग्रह- मैथिली अकादमी, पटना, 1977
55. कन्यादान -हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर बाजितपुर, वैशाली, 1982
56. कविता कलाप-सं. शंकरकुमारझा, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा 1970
57. कविता कुसुम-सं. रमानाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1373 साल
58. कविता संग्रह-मैथिली अकादमी, पटना- 1977
59. कविवर जीवनझा रचनावली- सं. रामदेवझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1980
60. कीचक वध-तन्त्रनाथझा, राजकुमारगंज, दरभंगा, सन् 1372 साल
61. कीर्तिलता- विद्यापति, सं. बाबूराम सक्सेना, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1929
62. कृष्णजन्म-मनबोध, सं. सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मंदिर, राजकुमारगंज दरभंगा
63. कोशी गीत-ब्रजेश्वर मल्लिक, मल्लिक सदन, बड़गाँव, मधेपुरा
64. खट्टरककाक तरंग- हरिमोहनझा, भारतीभवन, एक्जिबीशन रोड, पटना, 1976
65. गीतक फुलवारी- परमानन्द एवं महारुद्र, भवानी प्रकाशन, 1985
66. गीतनाद-सं. विभूति आनन्द, भवानी प्रकाशन, पटना, 1986
67. गुदगुदी-चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, साल 1364

68. गोविन्द गीतांजलि -सं. सुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा

69. चर्चरी- हरिमोहनझा, मैथिली प्रकाशन, 6/1 वामन पाड़ लेन, कलकत्ता- 19, 1960

70. चन्द्र रचनावली- सं. विश्वेश्वरमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981

71. चित्रा-यात्री, अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति- 1 बी. सर पी.सी. बनर्जी रोड, प्रयाग, 1390 साल

72. चीनीक लड्डू-ईशनाथझा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1964

73. छौंक-हरिश्चन्द्रझा, हरीश' ग्रन्थालय प्रकाशन, टावर चौक, दरभंगा, 1964

74. जीरो पावर, चन्द्रनाथमिश्र अमर, नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 2008

75. जट-जटिन- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना- 1971

76. जमीनेमे फूटै छै अंकुर- दयानन्दमिश्र, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, दरभंगा, 2010

77. टूटल तागक एकटा ओर-महेन्द्र मलंगिया, श्रीजानकी पुस्तक भण्डार, जानकीपथ, जनकपुरधाम, 1983

78. डाक वचनामृत- 1-4 भाग, कन्हैयालाल कृष्णदास, कचहरी चौक, लहेरियासराय

79. तेसर कनियाँ- व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' कर्णगोष्ठी, 1 डी ओमदा राजा लेन, कलकत्ता 15, 1986

80. द्वादशी- काशीकान्तमिश्र 'मधुप' शतदलसंघ, कोर्थु, दरभंगा, 1979

81. द्विरागमन- हरिमोहनझा, पुस्तक भण्डार, पटना- 4

82. दुखिया बाबाक खटरास- राजेश्वरझा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1972

83. दू पत्र- उपेन्द्रनाथझा 'व्यास'

84. धातुपाठ- दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1949-50

85. धूर्त्तसमागम-ज्योतिरीश्वर, मिथिला परम्परागत नाटक संग्रह, प्रथम खण्ड-सं. शशिनाथझा, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1985

86. नवतुरिया-यात्री, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1965

87. नीतिपद्यावली- जनार्दनझा 'जनसीदन', पुस्तक भण्डार, पटना

88. प्रणम्य देवता- हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर बाजितपुर, वैशाली

89. प्रतिनिधि एकांकी- सं. चन्द्रनाथमिश्र' अमर', मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन, मिश्रटोला, दरभंगा, 1980

90. प्रतिपदा- सुरेन्द्रझा' सुमन' , मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा, 1984

91. पत्रहीन नग्न गाछ- यात्री, मैथिली एकेडमी, इलाहाबाद, 1967

92. पसिझैत पाथर, रामदेवझा, संकल्प लोक लहेरियासराय, दरभंगा, 1989

93. प्रेरणा पुञ्ज- काशीकान्तमिश्र' मधुप', मैथिली अकादमी, पटना, 1980

94. पृथ्वीपुत्र-ललित, विद्यापति. प्रकाशन, दरभंगा, 1964

95. बसात-गोविन्दझा, दरभंगा प्रेस कं. लिमिटेड, 1958

96. बौद्धगानमे तान्त्रिक सिद्धान्त, जयधारी सिंह, मधुबनी, 1969

97. भलमानुस-योगानन्दझा, पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, सन् 1352 साल

98. भाषणत्रयी- सं. देवेन्द्रझा, मैथिली अकादमी, पटना 1983

99. मधुश्रावणी पूजा कथा- तेजनाथझा, कन्हैया लाल कृष्णदास, लहेरियासराय, दरभंगा, 1975

100. मनुक सन्तान- रामदेवझा, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, 1968

101. मनोरथ- भाग्यनारायणझा, छात्र पुस्तक भण्डार, मधुबनी

102. मिथिला भाषा कोष- दीनबन्धुझा, इसहपुर, सरिसब पाही, दरभंगा, शाके 1872

103. मिथिला भाषा प्रकाश- रमानाथझा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, 1964

104. मिथिला भाषा रामायण-चन्दाझा, मैथिली अकादमी, पटना- 1977

105. मिथिला भाषा विद्योतन-दीनबन्धुझा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1353 साल

106. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता (द्वितीय भाग)- म.म. उमेश मिश्र, वैदेही समिति, दरभंगा

107. मैथिलीक आरम्भिक कथा- सं. रमानन्दझा' रमण', अधीत प्रकाशन, प्रोफेसर्स क्वार्टर, पटना, 1978

108. मैथिली काव्य षटरस-सीतारामझा, मास्टर प्रकाशन भवन, वाराणसी, 2025

109. मैथिली भाषा का विकास -गोविन्दझा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना- 4, 1974

110. मैथिली लोकगीत- रामइकबालसिंह राकेश-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं. 2012

111. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2002

112. मैथिली व्याकरण मीमांसा- सुभद्रझा, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा 1983
113. मैथिली साहित्यक इतिहास- दुर्गानाथझा 'श्रीश', भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1977
114. मिथिला संस्कार गीत- कामेश्वरीदेवी, मैथिली अकादमी, पटना
115. रंगशाला- हरिमोहनझा, पुस्तक भण्डार, पटना
116. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण- लालदास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1999
117. राजा शिवसिंह-गोविन्दझा, 2/6, राजवंशीनगर, पटना-1
118. राधाविरह- काशीकान्तमिश्र 'मधुप'- हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर, पूवारि डेउढ़ी, दरभंगा 1969
119. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर, रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, दरभंगा, 2002
120. रुक्मिणी परिणय- बबुआजीझा 'अज्ञात', मैथिली अकादमी, पटना 1980
121. लोकजीवन ओ लोक साहित्य- योगानन्दझा, कीर्तिलता कोआपरेटिव सोसाइटी कबिलपुर लहेरियासराय, दरभंगा, 1986
122. लोचन- सं. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', भैरवस्थान विद्यापति गोष्ठी, रैयाम, 1960
123. लोचनकृत रागतरंगिणी- सं. शशिनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
124. वर्णरत्नाकर-ज्योतिरीश्वर- सं. सुनीतिकुमार चटर्जी एवं बबुआजीमिश्र, एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1940
125. विद्यापति- मित्र मजुमदार
126. विद्यापति अनुशीलन एवं मूल्यांकन, सं. वीरेन्द्र श्रीवास्तव, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना- 3, 1976
127. विद्यापति कालीन मिथिला- इन्द्रकान्तझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1986
128. विद्यापति गीतावली- सं. गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना- 1981
129. विदागरी- चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1971
130. वीर नरेन्द्र नाटक- जीवनाथझा, दीनबन्धु पुस्तकालय, इसहपुर, सरिसबपाही, दरभंगा, 1956
131. वृहत् मैथिली शब्दकोष- जयकान्तमिश्र- इण्डियन इन्स्टीच्यूट आफ एडभान्स्ड स्टडीज, शिमला- 5, 1973

132. शिक्षा सोपान- कुशेश्वरकुमर, साहित्य कार्यालय, कुमरवाजितपुर, मुजफ्फरपुर, संवत 1993
133. सोहाग- प्रभुनारायणझा 'प्रदीप', ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1971
134. संकलन- सं. शैलेन्द्रमोहनझा, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय 1967
135. संकलन- मैथिली अकादमी, पटना 1977
136. सन्धि समास, शंकरदेवझा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2008
137. हरगौरी विवाह नाटक-जगज्ज्योतिर्मल्ल, सं. रामदेवझा- मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, 1982
138. क्षमादान- विन्देश्वर मण्डल, मैथिली रंगमंच, अपूर्व मित्ररोड, कलकत्ता- 26

पत्र-पत्रिका

धर्मयुग, हिन्दी साप्ताहिक, बम्बइ

मिथिला मिहिर, पटना

मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना

स्वदेश मासिक, दरभंगा

ऋचा (हस्तलिखित, पत्रिका), दरभंगा



डा. ललिताझा

जन्म - 3 फरवरी 1951, पनिचोभ, दरभंगा

शिक्षा - एम. ए. मैथिली, 1976
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
पी-एच. डी, 1988
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

वृत्ति - सेवानिवृत्त शिक्षिका

अभिरुचि - लेखन एवं रंगकर्म

* विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे रचना प्रकाशित
* 1976मे ल.ना.मि.वि., दरभंगामे आयोजित युवा महोत्सवमे मैथिली एकांकीमे अभिनय हेतु पुरस्कृत
* 1976मे चेतना समिति, पटनाक रंगमंचपर 'पसिझैत पाथर' नाटकमे चम्पाक अभिनय हेतु प्रशंसित
* 1994मे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा कोलकातामे आयोजित 'इण्डिजीनस ओरल नैरेटिव फॉर्म्स इन ईस्टर्न इण्डियन लैंग्वेजेज' विषयक राष्ट्रिय सेमिनारमे सहभागिता

स्थायी पता - द्वारा- शिवकान्तझा (अधिवक्ता)
ग्राम+पो. - हावी-भौआर
जिला - दरभंगा (बिहार)

